हेमा मालिनी

एक अनकही कहानी

भावना सोमाया

भूमिका : गुलजार

हेमा मालिनी

एक अनकही कहानी

भावना सोमाया

भूमिका

गुलजार

मेरी दोनों बहनों—जीजी प्रवीणा ठक्कर एवं सरला रजनी को,
जो मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा रही हैं।

आभार

माधुरी पुजारी का, उनके असीम धैर्य के लिए, जिससे उन्होंने इसके हाथ से लिखे कई मसौदों को पूरी लगन से टाइप किया।

दीपा कर्मालकर का, संबंधों को जाँचने और सही सुधार करने के लिए।

कैथरीन लुईस का, समन्वय में सहायता के लिए, और हेमा की कजन प्रभा राघवन का, हेमा की फाइल तसवीरों को छाँटने के लिए।

प्रस्तावना

यह मेरी खुशकिस्मती है कि मैं एक ऐसी पुस्तक के साथ जुड़ रहा हूँ, जिसमें मेरे दो पसंदीदा लोग शामिल हैं, अभिनेत्री और डांसर हेमा मालिनी, और पत्रकार के साथ ही दोस्त भावना सोमाया।

हेमा और मैंने न जाने कितनी स्क्रिप्ट्स के साथ कई दशकों का सफर तय किया है। चार फिल्मों में उन्हें निर्देशित करनेवाले फिल्मकार के तौर पर मैं कह सकता हूँ कि वह उतनी ही अच्छी हैं, जितनी कि स्क्रिप्ट अच्छी या बुरी है या फिर डायरेक्टर अच्छा या बुरा है।

उनकी खूबसूरती और स्टारडम को लेकर काफी कुछ लिखा गया है, लेकिन बतौर फिल्मकार जो बात मुझे आकर्षित करती है, वह है उनकी शान। वह जहाँ भी रहती हैं, उनके चारों ओर एक प्रभामंडल का एहसास होता है और ज्यादातर कलाकारों में जहाँ इस प्रभामंडल का विस्तार उनकी रचनात्मकता से लेकर उनके व्यक्तित्व तक होता है, वहीं उनके मामले में यह गौरव रीयल से रील तक जाता दिखाई देता है। उनकी कोई भी पुरानी या नई फिल्म को ले लीजिए, चाहे 'शोले' में उन्होंने देहात की ताँगेवाली की भूमिका निभाई या रामकली में डकैत बनी हों, उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

यह एक गलतफहमी है कि हेमा शर्मीली और अंतर्मुखी हैं। मैं जब पहली बार 'अंदाज' के सेट पर उनसे मिला तो मुझे लगा कि वह उत्साही और आत्म—निर्भर हैं। उस फिल्म के डायलॉग मैंने लिखे थे और निर्देशक रमेश सिप्पी चाहते थे कि मैं उन्हें समझाऊँ कि उनकी आवाज कैसी होनी चाहिए।

अलग—अलग सीन पर उनके साथ काम करते हुए मैंने पाया कि डायलॉग को याद करने के लिहाज से उनका दिमाग बहुत तेज है और उनके सामने अपना मकसद एकदम साफ रहता है। कई साल पहले, 1971 में ही उन्होंने मुझे बताया था कि चाहे वह अपनी फिल्मों के साथ कितनी ही व्यस्त क्यों न हो जाएँ, वह डांस करना कभी नहीं छोड़ेंगी। उन्होंने कहा था, ''मैं साल में कम—से—कम दो परफॉर्मेंस जरूर दूँगी।''

आज मुझे उनकी साफ सोच और दूरंदेशी पर ताज्जबु होता है। उनके अंदर जैसी एकाग्रता है, उसके लिए असाधारण अनुशासन और दृढ संकल्प की जरूरत होती है। इस किताब में कहीं उन्होंने कहा भी है कि नृत्य उनके लिए भक्ति है, यह बात अपने दायरे को लगातार बढ़ाते रहने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और प्रयासों से साफ हो जाती है। फिल्मी हस्तियों में विरले ही ऐसा देखने को मिलता है कि वे सिनेमा के बाहर दूसरी चीजों में अपनी दिलचस्पी को आगे बढ़ाते हैं, क्योंकि शो बिजनेस का पेशा बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। लेकिन अदाकारा के तौर पर एक शानदार कॅरियर, शादी और बच्चों के बावजूद हेमा ने डांस के लिए अपने उत्साह को बनाए रखा है।

इसमें कोई शक नहीं कि हिंदी सिनेमा के इतिहास में हेमा मालिनी ने नंबर वन स्टार के तौर पर सबसे लंबे समय तक राज किया है। न तो उनसे पहले और न ही उनके बाद, किसी को उनके जैसा मुकाम या यश मिला और इसका श्रेय सिर्फ उन्हें ही जाता है। उन्होंने अपने स्टारडम का कभी बेजा इस्तेमाल नहीं किया। इसके उलट, कई मजबूरियों और मुश्किलों के बावजूद उन्होंने टेलीविजन, निर्देशन और इस समय संसद् जैसे अलग—अलग माध्यमों को खँगालने के लिए एड़ी—चोटी का जोर लगा दिया।

गुलज़ार 'किनारा' में हेमा मालिनी का निर्देशन करते हुए।

मीडिया उन्हें पारंपरिक महिला के तौर पर पेश करता है, लेकिन जिंदगी में उनके फैसले सिद्ध करते हैं कि वह उन नारे लगानेवाली ज्यादातर स्त्रीवादियों के मुकाबले कहीं ज्यादा खुले विचारों की हैं, जिन्हें हम जानते हैं। उनकी गैर—परंपरागत शादी संभव नहीं थी, अगर उनके अंदर उस रास्ते पर चलने का हौसला नहीं होता, जिस पर अब तक कोई नहीं चला था। और जिस तरह उन्होंने इस विचित्र रिश्ते को बरसों तक निभाया है, वह उनकी हिम्मत और ताकत के बारे में बहुत कुछ बताता है।

हेमा के व्यक्तित्व का एक बड़ा मिलनसार और स्नेह से भरा पक्ष भी है, जिसे वह बाहर के लोगों से बड़े जतन से छिपा लेती हैं। मैंने उनके जोश में उबाल की झलक अपनी शूटिंग के दौरान देखी है। उन दिनों उनकी सबसे करीबी सहयोगी उनकी मौसी (उनकी माँ की सबसे छोटी बहन) हुआ करती थीं, जिन्हें हेमा के साथ काम करनेवाले प्यार से शांता आंटी कहकर बुलाया करते थे। मैं उन्हें कैप्टन आंटी कहता था, क्योंकि बाहर की शूटिंग में वे अकसर सन कैप पहना करती थीं। 'खूशबू', 'किनारा' और फिर आगे चलकर 'मीरा' के दौरान मैं उन दोनों महिलाओं के बीच का करीबी गवाह रहा हूँ। जब दोनों साथ हुआ करती थीं, तब सेट पर खूब हँसी—मजाक हुआ करता था। एक वही थीं, जिनके आगे हेमा अपने हथियार डाल दिया करती थीं।

एक बात हेमा के बारे में बड़ी हैरान करनेवाली है कि उनके अंदर गंभीर हो जाने की क्षमता अचानक पैदा हो जाती है। उनके साथ होने पर अजनबियों को बेहद असहजता महसूस होती थी और वह भी उन्हें सहमी महसूस कराने की कोई कोशिश नहीं करती थीं। एक बार उन्होंने मेरे सामने कबूल किया था कि वह इतनी खिंची—खिंची सी नहीं रहना चाहती हैं, लेकिन लोगों के बीच जाते ही, उनके हाव—भाव स्वत: सतर्क हो जाते हैं। वह जब मुझे यह सब बता रही थीं, तब उनके चेहरे पर जो भाव थे, वह मुझे आज भी याद है। उस समय वह एकदम असहाय दिख रही थीं।

'नमकीन' के सेट पर मेरी हिरोइन शबाना आजमी ने बरसों पहले 1980 में मुझे लेखिका भावना सोमाया से मिलवाया था। पहली ही मुलाकात में वह मुझे अच्छी लगीं, खास तौर पर उनका सरनेम सोमाया। उसे सुनकर इतना अच्छा लगा कि मैंने सोच लिया कि कभी—न—कभी अपनी किसी फिल्म में अपने किरदार का नाम सोमाया जरूर रखूँगा।

पिछले कुछ वर्षों में सोमाया ने मुझ पर ज्ञान से भरे कई फीचर लिखे, मेरे कॅरियर पर पैनी नजर रखी और रचनात्मक आलोचना भी की। जहाँ तक मेरी बात है तो मैं उनके कॉलम और किताबों को बखूबी जानता हूँ और उनके लिखने के अंदाज को लेख के आखिर में छपे उनके नाम को पढ़े बिना ही पहचान लेता हूँ। फिल्मों की निष्पक्ष समीक्षा और विचारधारा से जुड़े मुद्दों पर उनकी निर्भीकता का मैं प्रशंसक रहा हूँ।

एक पत्रकार के तौर पर सोमाया की पैनी नजर का योगदान इस किताब में रहा है। वह उस सुपरस्टार की चिंता और स्त्री के अकेलेपन को अद्भुत करुणा और गंभीरता से दिखाती हैं। इस किताब में राज खोलनेवाले ऐसे अनेक

पल आते हैं, जब पढ़नेवाले को इस अदाकारा की तनहाई का एहसास होता है; लेकिन लेखिका ने अपनी तरफ से उन पलों को सनसनीखेज बनाने की कोई कोशिश नहीं की है।

इसके बजाय लेखिका ने उस मौन द्रष्टा की तरह छोटी—छोटी कहानियों को इस तरह पिरोया है, जैसे वह फंतासी और कल्पना के उलझे ताने—बाने से आगे बढ़ता जा रहा हो। वह रील को रियल और रियल को रील में इस हद तक घुलते—मिलते रहने देती हैं कि कई बार यह तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि मुख्य किरदार और उसकी कहानी कहनेवाली में से कौन क्या है।

यह जीवनी हेमा मालिनी के जीवन के कई दौर का उल्लेख करती है। इसमें पुराने दशकों, कई मूड और बदले पैटर्न की खुशबू है। उनमें से कुछ हिला देने की क्षमता रखते हैं। शुरुआती दिन, जिनमें उनकी माँ जय चक्रवर्ती अमानगुड़ी पहुँची थीं और फिर आगे चलकर जब हेमा फिल्मी दुनिया के जंगल में खुद को फिट करने में जुटी थीं। धर्मेंद्र के लिए उनका आकर्षण, अपनी गुरु माँ से उनका लगाव और बार—बार भगवान् कृष्ण को लेकर उनका जुनून ऐसे दिलचस्प खुलासे हैं, जिन्हें एक—दूसरे के साथ बखूबी जोड़ा गया है। कुछ अध्यायों का सार बेहतरीन ढंग से निकाला गया है।

सोमाया ने हेमा मालिनी के जीवन को उतनी ही खूबसूरती के साथ शब्दों में ढाला है, जितनी खूबसूरती से जया चक्रवर्ती ने अपनी बेटी को असल जिंदगी में ढाला। दोनों को मेरी ओर से बधाई।

—गुलजार

मुंबई, जुलाई 2006

अपनी बात

किसी जीवनी के लिए राजी होना मन की दशा को बताता है। इसका मतलब है कि आप अपने पहले जो कुछ किया, उस पर चिंतन के लिए तैयार हैं। मैं यह सोचती थी कि पीछे पलटकर न देखने का मतलब है बचकर भागना, इसलिए मैं काफी हद तक इसके लिए तैयार थी। मैं जब तक अपनी सारी कमियों के साथ खुद को स्वीकार नहीं करती, तब तक पूरी ईमानदारी के साथ अपने संबंधों को अपने चाहनेवालों के साथ कैसे पूरा कर सकती हूँ? मेरी बेटियों ने कहा कि मुझे ऐसा करना चाहिए। कम—से—कम इस तरीके से वे सबकुछ समझ सकेंगी, जो मेरे साथ हुआ, जब वे मेरी जिंदगी में नहीं आई थीं।

मैंने थोड़ा समय लिया, खुद से पूछा कि क्या मैं अपनी निजी जिंदगी को अजनबियों के साथ साझा करने को तैयार हूँ, तो मैं थोड़ा हिचकिचाई। अपने फैंस से अपनी फिल्मों के जरिए जुड़ना एक बात है, जबकि अपने दिल के टूटने और उस संघर्ष को खोलकर रख देना एकदम अलग, जिसने इस सपने को साकार किया। समय गुजरता गया...फिर एक शाम, मैं जब गोरेगाँव में अपने नए घर की तरफ ड्राइव करती जा रही थी, तब मैंने गहरे लाल सूरज को समंदर में डूबते देखा। उस पल ने मुझे एहसास कराया कि सबसे बेहतरीन चीज का भी किसी—न—किसी दिन अंत होता है। न जाने कैसे एक संकल्प पैदा हुआ और मैंने अपना मन बना लिया।

मेरी माँ अकसर कहा करती थीं कि हमें लगता है कि हम ही फैसले करते हैं। लेकिन हर बार होनी ही हमारी उँगली थामे हमें अपने कर्म की दिशा में ले जाती है। मैंने अपने जीवन और कॅरियर में जो कुछ हासिल किया, वह सब एक महिला की लगन और समर्पण के बिना संभव नहीं था, और महिला थीं मेरी माँ। मेरी जिंदगी में आनेवाले हर मोड़ का संकेत, चाहे वह रुपहले परदे पर हो या फिर स्टेज पर, उन्हीं से मिलता था। इस किताब के जरिए मैंने अपने जीवन के अलग—अलग दौर से परदा उठाने का अंतिम फैसला किया, उससे पहले मुझे उनकी इजाजत लेनी थी। हमेशा की तरह, उन्होंने अपनी खरी—खरी बातों से मुझे चौंका दिया। ''तुम्हें तो यह बहुत पहले कर देना चाहिए था और तुम्हें लोगों की प्रतिक्रिया से डरने की जरूरत नहीं, क्योंकि तुम इसे अपने तरीके से कर सकती हो, जैसा तुमने हमेशा किया है।''

मुझे लगता है, मैंने वही किया है, अपने दिल से कहा है। यह तुम्हारे लिए है अम्मा!

—हेमा मालिनी

मुंबई, जुलाई 2006

परिचय

1970 के दशक के आखिर में मैंने जब फिल्म पत्रकार के तौर पर अपने कॅरियर की शुरुआत की थी, तब हेमा मालिनी हिंदी फिल्मों पर राज करनेवाली मल्लिका थीं। 'ड्रीम गर्ल' के नाम से मशहूर हेमा कैमरे पर जब—जब अपनी जादुई मुसकान को बिखेरती थीं, तब—तब फिल्म देखनेवाले सबकुछ भूल जाते थे। फ्रेम में उनके आते ही उनकी मृगनयनी जैसी आँखें और चिरपरिचित आवाज परदे पर जान डाल देती थी। उनके फैंस के लिए वह एक ऐसी आदर्श महिला थीं, जिसे कोई भी अपनी माँ के सामने बहू बनाकर ले जा सकता था।

स्क्रीन के अलावा फिल्म स्टूडियो और सार्वजनिक कार्यक्रमों में हेमा अपनी दमदार मौजूदगी दर्ज कराती थीं। लाव—लश्कर के साथ चलनेवाली हेमा के चेहरे पर एक सख्त हाव—भाव रहता था और शायद ही कभी वह किसी को देखकर मुसकराती थीं। जैसे कोई नियम हो, वह आसानी से किसी से मिलती नहीं थीं, और उनमें फिल्मकार और पत्रकार भी शामिल थे।

और आश्चर्यजनक रूप से दोनों का ही काम उनके बिना नहीं चलता था। फिल्मकारों का इस वजह से, क्योंकि फिल्मी दुनिया में हेमा सबसे ज्यादा बिकनेवाली स्टार थीं, और पत्रकारों के लिए इस कारण, क्योंकि वह उस दशक की सबसे विवादित स्टार थीं।

एक उभरती पत्रकार के लिए, जिसका शो बिजनेस से नाता जुड़ ही रहा था, हेमा मालिनी एक डरा देनेवाला अनुभव थीं। मुझे इस एक्ट्रेस के साथ की पहली मुलाकात बड़ी अच्छी तरह याद है। उनकी नई फिल्म 'हम तेरे आशिक हैं' की शूटिंग अँधेरी स्टूडियो में चल रही थी और मुझे इस पर स्टोरी करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। मुझे निर्देश मिले थे कि उस महीने की कवर स्टोरी के लिए मुझे उनका एक बयान लेकर आना है। मुझे उस नौकरी में कुछ ही महीने हुए थे, और काम पूरा किए बिना ऑफिस लौटने की बात सोचकर भी मैं काँप रही थी। मैं किसी तरह हेमा का ध्यान खींचने में कामयाब रही, जब वह सेट से बाहर आ रही थीं। मैं उनकी कार के किनारे खड़ी थी, उन्होंने खामोशी से मेरे सवाल को सुना और फिर मुझे ऐसी कठोर दृष्टि से देखा कि मुझे लकवा मार गया।

बहुत बाद में उन्होंने मेरे संपादक को बताया कि मेरे सवाल का उन्होंने जवाब नहीं दिया, क्योंकि मैंने उनसे उस वक्त बात करने की कोशिश की, जब वह चल रही थीं और उनके मुताबिक वह बैड मैनर था।

मैंने तय कर लिया कि मैं हेमा मालिनी से दूर ही रहूँगी। लेकिन काम की मजबूरी के चलते समय—समय पर हमारे रास्ते टकराते रहे और थोड़ी देर के लिए ही सही, लेकिन मेरा उनसे आमना—सामना होता रहा, और न जाने क्यों, हर बार शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रियाएँ ही मिलीं।

कुछ एक मिसाल दूँ तो गुलजार की फिल्म 'देवदास' के सेट पर जो रिलीज नहीं हुई, हेमा इस वजह से मुझ से चिढ़ गईं, क्योंकि जब वह अपनी आँखों में ग्लिसरीन डाल रही थीं, तब मैं उन्हें घूर रही थी...'द बर्निंग ट्रेन' के सेट पर, वह इस बात पर बिफर गईं कि मैंने उनके चेहरे से आँसू की बूँद को छलकते देख लिया, जिसे रुक जाना चाहिए था और 'रजिया सुल्तान' के सेट पर इस वजह से, क्योंकि मैं अपने उस सहयोगी के साथ थी, जो उनका इंटरव्यू कर रहा था और मैं उस चर्चा में शामिल हो गई।

करीब एक दशक बाद, जब मैं एक जीवनी की बुकलेट लिख रही थी, जो उस 'दुद' मैगजीन का हिस्सा थी, जिसकी संपादक मैं थी, तब हेमा और मेरे बीच युद्धविराम हुआ। उनके लंबे कॅरियर पर बहुत विस्तार से किए गए इंटरव्यू में उन्होंने अपने बचपन, शादी और बच्चों पर चौंकानेवाली ईमानदारी से बात की।

कुछ साल बाद हमारी मुलाकात फिर से हुई, जब हेमा ने बतौर निर्देशक अपनी पहली फिल्म 'दिल आशना है'

पूरी की। वह थकी हुई लग रही थीं, लेकिन इतना महत्त्व मिलने के कारण एक उत्साह भी था। उन्होंने भोलेपन से कहा, ''अपनी पहली फिल्म बना लेने का मुझ में रोमांच है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि दूसरे डायरेक्टर इसके बाद भी मुझे एक्टिंग का काम देने से हिचकिचाएँगे नहीं।''

जीवन के हर मोड़ पर हेमा में निखार आ रहा था, उनकी जानकारी बढ़ रही थी और वह संपूर्ण होती जा रही थीं। साल 2000 की सर्दियों में जब उन्होंने तिरुवनंतपुरम के केरल फिल्म फेस्टिवल में मेरी पहली किताब 'टेक 25' रिलीज की, तब ऊपर लिखी बातों को मेरी पिछली किताब 'सलाम बॉलीवुड' में पढ़ने का जिक्र किया और हम बीती बातों लेकर दिल खोलकर हँसे। केरल के खूबसूरत माहौल में वह गरम दोपहर थी और दो स्त्रियों के साथ ही दो पेशेवरों के तौर पर हमारी नजदीकियाँ बढ़ गईं।

एक साल बाद वह अपनी नृत्य नाटिका 'द्रौपदी' की तैयारी कर रही थीं। उन्होंने मुझे उसके प्रीमियर वादन के लिए बुलाया था और उन्हें जिस प्रकार दिखाया गया था, उसकी जटिलताओं पर अपने अखबार में एक विचारोत्तेजक कॉलम लिखा। एक दिन सुबह—सुबह उन्होंने उस लेख पर धन्यवाद देने के लिए मुझे फोन किया और यह भी कहा कि क्या डांसर के रूप में उनके जीवन सफर को बताते हुए एक किताब लिखने पर मैं विचार कर सकती हूँ। ''आज हर कोई मुझे सिर्फ एक फिल्म स्टार के रूप में याद करता है, लेकिन अपने डांस के बिना हेमा मालिनी की बात पूरी नहीं हो सकती...मैं छह साल की उम्र से ही डांस कर रही हूँ और आज भी याद है कि मैंने कब किसी नई 'अदावु' (डांस स्टेप) को सीखा था। डांस मेरा सबसे पुराना और सबसे भरोसेमंद साथी है। मैं नहीं चाहती कि जब तक मैं दुनिया को अपने सारे त्याग के बारे में बता न दूँ, तब तक मेरी सारी स्मृतियाँ बिखर जाएँ। कलाकार होने के नाते हम अपने फैंस के ऋणी हैं। हम जब तक अपनी कठिनाइयों को नहीं बताएँगे, तब तक वे अपने जीवन में वैसी ही चुनौतियाँ का सामना करने के लिए प्रेरित कैसे होंगे?''

यह किताब उस अभिनेत्री के बारे में है, जिसने परदे पर अलग—अलग भूमिकाओं को निभाया और हर भूमिका के साथ निखरी तथा बदलती चली गई। कुछ लोगों का आरोप है कि महज अपनी खूबसूरती के चलते वह अपने लंबे कॅरियर में टिक सकीं। दूसरों ने स्क्रीन पर उनकी तड़क—भड़कवाली मौजूदगी को उनकी सफलता का राज बताया, लेकिन सभी इस बात पर सहमत थे कि वह बेहद समर्पित, अनुशासित और बेहिसाब किस्मत वाली हैं।

यह उस कलाकार के बारे में है, जिसके लिए डांस सिर्फ एक जुनून नहीं जीने का तरीका है। कला के इस माध्यम से वह सांसारिक जगत् से अलौकिक दुनिया में चली जाती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि यह किताब उस स्त्री हेमा मालिनी के बारे में बताती है। यह उनके घर पर महीनों तक हमारे बीच होनेवाली अनगिनत बातचीत का परिणाम है। अलग—अलग माहौल और अलग—अलग मूड में बिताए गए लम्हों का झोंका यादों को ताजा कर देता है। धर्मेंद्र के खाने की पसंद को जब वह विस्तार से बताती थीं, तब डाइनिंग टेबल ठहाकों की गूँज कानों में फिर से सुनाई देने लगती है। धर्मेंद्र के लोनावाला फार्महाउस पर लस्सी के साथ गरम पराँठे मिलते हैं और वे सब सीधे कटोरी से घी पीते हैं।

वह खिली धूप वाली दोपहर जब हम उनके बरामदे में झूले पर बैठकर सांसारिक घरेलू मुद्दों पर बातचीत किया करते थे, तब हेमा दार्शनिक अंदाज में आ जाती थीं और 'कर्म' के विषय में बात करने लगी थीं। इस दौरान उनकी नजरें उड़ान भरते कौवों की सीध में क्षितिज पर टिकी रहती थीं...मुझे वह मायूस करनेवाली शाम याद है, जब हम डिनर पर मिले थे और ऊपर उनके कमरे में देर रात तक बातचीत कर रहे थे। वह सबकुछ बता देने के मूड में थीं और तब उन्होंने स्टारडम की मुश्किलों को बताया कि नंबर एक की अभिनेत्री होने के क्या—क्या नुकसान हैं। उनके बैठक के कमरे में जब उनकी माँ जया चक्रवर्ती अपनी पसंदीदा कुरसी पर बैठी होती थीं, उनके दो पालतू

डॉग उनके पैरों के पास बैठे होते थे, तब हम तीनों ने एक साथ न जाने कितनी दोपहर बिताईं...और जब फोन की घंटियाँ लगातार बजती रहती थीं, हेमा गहरी साँस लेती थीं और कहती थीं, ये घर पागल कर देगा।

अपनी ठेठ भारतीय बनावट और एकदम पारंपरिक पालन—पोषण के कारण, कोई भी उन्हें रूढिवादी सोचवाला मान सकता है। लेकिन आप जब उनसे बात करेंगे, तब पता चलेगा कि वह न केवल प्रगतिशील हैं, बल्कि उनमें सेंस ऑफ ह्यूमर भी अच्छा—खासा है। उनमें एक स्वाभाविक सौम्यता है, जिसके कारण वह धैर्य और शांति से मुश्किल, जटिल अनुभवों को झेलकर आगे बढ़ जाती हैं। उनका जीवन ऐसा है कि हर मुश्किल को वह एक अवसर में बदल देती हैं।

उनके अनगिनत रंग और कई मूड हैं। एक स्तर पर वह साधारण दक्षिण भारतीय लड़की हैं, जो दही—चावल खाकर, अपने बच्चों और परिवार के बीच रहकर खुश हैं। दूसरी तरफ, वह कृष्ण की पूर्ण भक्त हैं, जो अपने स्वामी के लिए 'माधुर्य भाव' से ओत—प्रोत है। मैं कह नहीं सकती कि इस किताब ने उनके सारे रंगों को समेटा है या नहीं। किसी भी लेखक के लिए उनकी सोच को उस रूप में समझना आसान नहीं, जिस रूप में वह खुद देखती हैं। आप कोशिश कर सकते हैं, लेकिन अंत में लेखक अपने ही विचारों को सामने रखता है। यह किताब भी अपवाद नहीं है। यह हेमा मालिनी को लेकर मेरी सोच है। उनके जीवन के बीते दिनों की झलक और उसके बाद की यादें, इतनी आसानी से समेटी नहीं जा सकती हैं।

—भावना सोमाया

1

श्लोकों की गूँज और टाटू काज़ी की ध्वनि

बचपन से ही हेमा टाटू काज़ी की तान की आदी हो गई थीं। नृत्य उनकी पहचान का हिस्सा हो गया था और उनका प्रिय साथी भी।

बहुत साल पहले की बात है। वह अगस्त की बादलों भरी सुबह थी। वी.एस.आर. चक्रवर्ती अपनी पत्नी जया को छोड़ने दिल्ली रेलवे स्टेशन आए थे। उन्हें उदासी घेर रही थी। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि वे इस वक्त इतने उदास हो जाएँगे।

जया को सात महीनों का गर्भ था और बच्चे के जन्म के लिए वे अपनी माँ के घर तमिलनाडु जा रही थीं। उनके साथ उनके सुपुत्र कन्नन और जगन्नाथ भी थे। बड़े की उम्र उस वक्त चार साल थी, जबकि छोटा दो साल का था।

भीड़ भरे प्लेटफॉर्म को पार करते हुए चक्रवर्ती जब रेलगाड़ी में अपने परिवार के लिए जगह बना रहे थे, उन्होंने अपनी पत्नी के भावों को एक बार फिर महसूस किया।

रेल के डिब्बे में बैठी जया निहायत तनहा लग रही थीं। अपने पति से अलग होने के इसी लमहे का डर उन्हें काफी वक्त से परेशान कर रहा था और इसी वजह से वे अपनी माँ के पास जाने के इस कार्यक्रम को लगातार टालती रही थीं। लेकिन अब इस यात्रा को और टाला नहीं जा सकता था। उन्हें जाना ही था। जया की आँखों में आँसू उमड़ पड़े, लेकिन उन्होंने उन आँसुओं को रोक लिया। उनके इस संयम को मन—ही—मन सराहने से चक्रवर्ती खुद को रोक नहीं सके। दरअसल जया हमेशा मजबूत रहनेवाली महिला थीं और यह चक्रवर्ती के उनके प्रति आकर्षण का एक अहम पहलू था।

जब गाड़ी ने आखिरी सीटी बजाई तो चक्रवर्ती डिब्बे से नीचे उतरकर खिड़की के पास खड़े हो गए और अपनी पत्नी को देखने लगे। जया ने आसमानी साड़ी पहनी हुई थी, अपने लंबे चमकीले बालों का जूड़ा बना रखा था और काजल लगी उनकी दो खूबसूरत आँखों के बीच सिंदूर की बिंदी चमक रही थी। जया का सौंदर्य चमत्कृत कर रहा था। जब रेल गाड़ी धीरे—धीरे प्लेटफॉर्म छोड़ने लगी, तब चक्रवर्ती ने एक टीस महसूस की। उन्हें एहसास हुआ कि अगले चार महीनों तक वे अपनी पत्नी को नहीं देख सकेंगे।

राजधानी की सबसे चर्चित बाल कलाकार।

छोटी हेमा अपनी एक शुरुआती नृत्य प्रस्तुति में।

रेल में खिड़की के पास बैठी जया ने अपने कस्बे अमानगुडी के बारे में सोचा, जो त्रिचिनापल्ली में है। वहाँ उनका घर एक पुराने मंदिर की बगल में था, जो पेड़ों से घिरा हुआ था। हर सुबह मंदिर की घंटियों की आवाजों के बीच जागना उस वैष्णव परिवार की परंपरा थी। जया के पिता पारसारथी आयंगर एक धार्मिक व्यक्ति थे और उनके बच्चे हर दिन मंदिर की आरती में शामिल होते हुए बड़े हुए थे। पंडितजी गायत्री श्लोक का उच्चारण करते और बच्चे उनके पीछे उसे दोहराते। जया को मंत्रोच्चारण की ध्वनि काफी पसंद थी, खासतौर पर 'लक्ष्मी सूत्रम्' की, जिसमें देवी लक्ष्मी के अलग—अलग अवतारों के बारे में विस्तार से बताया गया है।

खास प्रार्थनाएँ खास त्योहारों के लिए तय थीं। दशहरा जया का पसंदीदा त्योहार था और लगभग पाँच सालों के बाद वे दशहरे के त्योहार से पहले अपनी माँ के घर लौट रही थीं।

दक्षिण भारत में यह परंपरा है कि हफ्तों पहले से ही लोग गोलू (नवरात्र) के त्योहार के लिए तैयारियाँ करने लगते हैं। परदे और कारपेट साफ किए जाते हैं, कमरों की रँगाई की जाती है और दरवाजों को चमेली (जैस्मिन) के फूलों से सजा दिया जाता है। त्योहारों के इन पावन दिनों के दौरान देवी—देवताओं की पूजा के लिए एक खास कमरा सुरक्षित कर दिया जाता है। नौ चरणोंवाला एक खास सेट डिजाइन किया जाता है, जो नवरात्र के नौ दिनों को दरशाता है। सफेद कपड़े में लिपटा प्रत्येक चरण एक अलग विषय—वस्तु प्रदर्शित करता है और उसी के हिसाब से उसे सजाया जाता है।

नौ लगातार दिनों तक हर शाम को पूरे घर में मिट्टी के दीये जलाए जाते हैं। देवी—देवताओं का मनोरंजन करने के लिए पड़ोस के घरों से छोटे बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रम करने के लिए बुलाया जाता है। उन बच्चों को उपहार भी दिए जाते हैं। त्योहार में कोई व्यवधान न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए घर की मालकिन परिवार के हर सदस्य को अलग—अलग जिम्मेदारियाँ सौंप देती हैं। इस साल जया को पूजावाले कमरे की दीवारों को सजाने का काम दिया गया था और उन्होंने उन दीवारों पर देवियों के ऐसे चित्र उकेरे कि कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

चूँकि जया का कोई खास साथी नहीं था, ऐसे में वह अपना अधिकांश समय वायलिन का अभ्यास करने और दीवारों पर पेंटिंग करने में बिताती थीं। उन्हें इन कामों में काफी आनंद आता था। उन दिनों काफी कम महिलाएँ पेंटिंग करती थीं और आगंतुक जब उनके बनाए देवी लक्ष्मी, दुर्गा और सरस्वती के चित्र देखते थे तो सराहना किए बगैर नहीं रह पाते थे।

जया को अपना बनाया वह चित्र खास पसंद था, जिसमें देवी लक्ष्मी कमल पर खड़ी हैं और गले में हार धारण किए हुए हैं। यह एक संयोग ही था कि इन बातों के कुछ दिनों बाद 15 अक्तूबर की आधी रात को, यानी दशहरा को जया ने अपने तीसरे बच्चे को जन्म दिया। वह एक बहुत खूबसूरत बच्ची थी। जया ने उसका नाम 'हेमा

मालिनी' रखा। इस शब्द का मतलब होता है 'दिव्य' और इसे एक लक्ष्मी सूत्रम् से लिया गया है। हेमा मालिनी बताती हैं, ''मेरी माँ ने मुझे बाद में बताया कि उन्होंने दीवारों पर देवियों की पेंटिंग इसलिए बनाई, क्योंकि वे अपने सपनों में लगातार उन्हें देखती थीं।''

बचपन में हेमा हमेशा अपने बड़े भाइयों के साथ रहती थीं और चूँकि वे सबसे छोटी थीं, ऐसे में वे दोनों हेमा को तंग किया करते थे। ''मैं हर वक्त उनके पीछे लगी रहती थी, लेकिन उनके मुश्किल और बेढब खेलों में शामिल नहीं हो पाती थी। मेरी माँ मुझे उनके साथ धूप में खेलने से मना करती थीं। वह मुझे खींच कर घर ले आतीं और बालों में तेल चुपड़ देतीं। उसके बाद नहा—धोकर आराम करते हुए मैं अपने भाइयों का इंतजार करती थी कि उनसे उस दिन की उनकी धमा—चौकड़ी की कहानी सुन सकूँ।''

जब हेमा बड़ी हुईं तो उन्हें पता चला कि उनकी माँ ने उनके भविष्य के लिए कुछ खास सपने सजाकर रखे हैं। ये सपने शायद जया की अपनी उन दबी हुई इच्छाओं के अवशेष थे, जिन्हें वे अपने विवाह की वेदी पर कुर्बान कर चुकी थीं। अब वह अपनी उन आकांक्षाओं को अपनी बेटी के माध्यम से पूरा करना चाहती थीं। जया एक ऐसे परिवार में पली—बढ़ी थीं, जहाँ उनके हर तरफ संगीत—ही—संगीत था। ऐसे में यह कोई अचरजवाली बात नहीं थी कि वह सभी कलात्मक कामों के प्रति काफी आकर्षित थीं। उनका मन पढ़ने में काफी लगता था और वह काफी अच्छी लेखिका भी थीं। तमिल पत्रिकाओं में वह नियमित रूप से कॉलम भी लिखती थीं। शास्त्रीय कला में वे दक्ष थीं और काफी सहजता के साथ वायलिन बजा लेती थीं। हालाँकि, इन चीजों को अपना कॅरियर बनाने की उनकी कोई इच्छा या महत्त्वाकांक्षा नहीं थी, लेकिन अपनी बेटी के लिए उन्होंने यह तय कर लिया था कि वे उसे नृत्यांगना बनाएँगी। यह उनका सपना था और उनका लक्ष्य भी।

चक्रवर्ती ने कुछ समय तक श्रम एवं रोजगार मंत्रालय में काम किया। बाद में उन्होंने दिल्ली में कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) में नौकरी कर ली और वहाँ लंबे समय तक अपनी सेवा दी। अपने बेटों कन्नन और जगन्नाथ की जिम्मेदारी उन्होंने खुद ले रखी थी, जबकि अपनी बिटिया का उत्तरदायित्व अपनी सक्षम पत्नी जया को दे रखा था। जया ने अपने मन की बात सुनी और अपनी नन्ही बेटी को भरतनाट्यम के औपचारिक प्रशिक्षण के लिए गुरु तारा रामास्वामी के पास ले गईं। हेमा ने जब पहली बार अदावु किया तो उनके घुटनों को काफी चोट पहुँची; लेकिन उन्हें एक भी दिन अपनी कक्षाएँ छोड़ने की अनुमति नहीं मिली। उनकी माँ ने बड़े आराम से समझाया, ''तुम्हें इसकी आदत पड़ जाएगी।'' और माँ ने ठीक ही कहा था। कुछ ही हफ्तों के भीतर हेमा बिना किसी शिकायत के नृत्य करने लगी थीं और साल बीतने से पहले—पहले वह सभाओं में भी प्रस्तुति देने लगी थीं।

चूँकि उनका परिवार दिल्ली में रहता था, ऐसे में गण्यमान्य लोगों के समक्ष प्रस्तुति देने के मौके अकसर आते थे। इस दौरान हेमा ने तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद और महारानी एलिजाबेथ के सामने भी अपनी नृत्य कला का प्रदर्शन किया। उन दिनों कम उम्र के कलाकारों की संख्या अधिक नहीं थी, ऐसे में हेमा की गिनती दिल्ली के सर्वाधिक चर्चित बाल कलाकारों में होने लगी। हेमा मालिनी उन दिनों को याद करते हुए बताती हैं, ''लोगों की प्रतिक्रिया और प्रशंसा मुझे अच्छी लगती थी और कुछ समय के लिए मैं अपने घुटनों के दर्द को भूल जाती थी।''

''वक्त बीतने के साथ प्रस्तुतियाँ मेरे जीवन का हिस्सा बन गई हैं। बचपन में स्टेज पर जाने से पहले अम्मा मुझे एक गुरुमंत्र देती थीं, जो मेरे लिए चमत्कार की तरह काम करता था। वह कहतीं, 'ध्यान एकाग्र करो, घबराओ मत, गलतियाँ मत करो।' वह मुझे नटराज की मूर्ति के सामने झुकने के लिए कहतीं और शांतिपूर्वक एक प्रार्थना करतीं। परदा उठने से ठीक पहले मेरे पेट में कुछ होने लगता। उसके बाद जब संगीत शुरू होता और रोशनी हो जाती, तब मैं फिर से खुद को पूरे नियंत्रण में पाती। मुझमें इस बात से आत्मविश्वास आता कि अम्मा मेरी रक्षा कर

रही हैं और उनकी उपस्थिति मात्र से मैं निश्चिंत हो जाती कि कुछ भी गलत नहीं हो सकता।''

दिल्ली में चक्रवर्ती परिवार गोल मार्केट के नजदीक एक कॉलोनी में अपने सरकारी आवास में रहता था। घर के बाहर अच्छे तरीके से कटाई किया हुआ एक लॉन था। इसके अलावा वहाँ एक बरामदा था, जिसमें खंभे थे। हर शाम को परिवार एक साथ वहीं बैठता था। रसोई और अन्य कमरों के बीच एक लंबा गलियारा था। हेमा याद करती हैं, ''अम्मा का काफी वक्त रसोई में खाना बनाने में बीतता था। हम सभी एक साथ खाते थे। हमारी प्लेटें थोड़ा ऊँची लकड़ी की चौकी पर रखी होती थीं। कभी—कभी जब अप्पा को काम से लौटने में देर हो जाती तो अम्मा उनका इंतजार करतीं; लेकिन वे हमारे साथ बैठती थीं और पूछ—पूछकर हमें खाना खिलाती थीं।''

हेमा आगे बताती हैं, ''सफाई करने और नारियल पीसने के लिए अम्मा ने एक नौकरानी रखी थी। रसोई के कामों में अप्पा हमेशा अम्मा की मदद करते थे। रात में खाने के बाद जब हम बच्चे खेलने के लिए भागते तो अप्पा बरतन साफ करने में उनकी सहायता करते; लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि घर का काम करने या खाना पकाना सीखने के लिए मुझ पर कभी दबाव नहीं डाला गया। बिस्तर उठाने और उन्हें चारपाइयों पर लगाने जैसे कठिन काम अप्पा के जिम्मे थे और बाद में बड़े भाई कन्नन ने यह जिम्मेदारी ले ली।''

इतने सारे साल बीत जाने के बावजूद जब भी हेमा दिल्ली में होती हैं, उनके बचपन की यादें उनके मन में उमड़ने लगती हैं। ''जब हम बच्चे थे तो जब भी हमें रेलवे स्टेशन जाना होता, तब अप्पा दो गाड़ियाँ किराए पर लाते। एक ताँगा, जिस पर हमारा सामान जाता था और एक विक्टोरिया, जिस पर हम लोग बैठकर जाते। अप्पा दोनों को एक—दूसरे के साथ चलने की ताकीद करते, ताकि वह सामान पर नजर रख सकें। विक्टोरिया बेहद साफ—सुथरी व चमकदार हुआ करती। मुझे और मेरे भाइयों को उन शानदार यात्राओं का इंतजार रहता। हालाँकि जैसे ही हम स्टेशन पहुँचते, हमारी वह शानो—शौकत खत्म हो जाती। दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हमेशा ही काफी भीड़ और शोरगुल होता। जब रेल आती तो लोग एक—दूसरे को धक्का देते हुए डिब्बे में चढ़ने की कोशिश करते। उन दिनों सीटों के रिजर्वेशन जैसा कुछ भी नहीं था। यात्री लोग डिब्बों में चढ़कर जगह घेर लेते। हम लोग घर से पुरानी चादरें ले जाते और सीटों पर बिछा देते, ताकि कोई भी उन पर कब्जा न कर सके। मुझे खिड़की के पास बैठना बेहद पसंद था। ठंडी हवाएँ मेरे चेहरे पर पड़तीं और मेरे दिमाग में गाने चलते रहते।...

''मुझे दिल्ली के जाड़ों के दिन याद हैं और वे ऊनी कपड़े भी याद हैं, जो अप्पा हमारे लिए खरीदकर लाते। उनमें हमें इतना मजा आता कि हम एक के ऊपर एक स्वेटर पहन लेते। जाड़े के महीनों के दौरान इतनी ठंड पड़ती कि सब लोग आमतौर पर घर के भीतर ही रहते, हालाँकि मैं नृत्य की अपनी कक्षाएँ नहीं छोड़ सकती थी। जाड़े में नृत्य करना काफी कठिन होता है। जब तक आप मंच पर होते हैं, स्वयं को काफी सुरक्षित महसूस करते हैं; लेकिन जैसे ही आप उससे उतरते हैं, ठंड आपकी हड्डियों तक को कँपकँपा देती है। ऐसे मौकों पर अप्पा मुझे एक भारी ओवरकोट में लपेट देते थे और उसकी बेल्ट मजबूती से बाँध देते थे।''

हेमा के पास दिल्ली की गरमियों से भी जुड़ी कुछ अच्छी यादें हैं। हेमा बताती हैं, ''गरमियों में सभी लोग छत पर सोते थे। ऊपर होता खुला आसमान और तारे। मैं और मेरे भाई छुपा—छुपी का खेल बहुत खेलते थे और जब बारिश होती, अप्पा नृत्य की कक्षा में साइकिल से ले जाते समय मुझे ढँकने के लिए एक छतरी पकड़े रहते। डांस स्कूल काफी दूर था और उन दिनों साइकिल ही हमारे आने—जाने का इकलौता साधन थी।''

जिस दिन साइकिल ठीक नहीं होती, उस दिन चक्रवर्ती और उनकी बिटिया बस से जाते। बस स्टॉप से घर तक का रास्ता दूर था और उन्हें पैदल वापस लौटना होता था। इस दौरान हेमा अपने अप्पा का हाथ मजबूती से थामे रहतीं। अप्पा का मानना था कि टहलना इनसान के शरीर के लिए सबसे बेहतर व्यायाम है। वह इसे अपनी 'नटराज यातायात सेवा' कहते थे। घर में सभी लोग नियमित तौर पर टहला करते। मैं अपनी नृत्य की कक्षा से घर पैदल आती। मेरे भाई घर से स्कूल पैदल जाते और रोजमर्रा का सामान लेने के लिए अम्मा पैदल ही बाजार जातीं। उन दिनों कोई भी छोटी दूरी के लिए कोई सवारी नहीं खोजता था। कुछ लोग तिपहियों से जरूर चलते थे, लेकिन अप्पा ने हमें उनका इस्तेमाल करने से मना किया था। उनका मानना था कि ये लोग काफी खराब तरीके से गाड़ी चलाते हैं। पैदल चल—चलकर दूर तक जाना अभी भी मेरी स्मृति में अंकित है। पैदल चलते वक्त मेरे और अप्पा के बीच शायद ही कभी बातचीत होती, लेकिन उस चुप्पी के भीतर एक गहरा संबंध छिपा था। वह कभी भी अपने प्यार और दुलार को प्रदर्शित नहीं करते थे, लेकिन मेरे हाथों पर उनकी मजबूत पकड़ मुझे बहुत हौसला देती थी।''

पारिवारिक फोटो : हेमा अपने पिता वी.एस.आर. चक्रवर्ती और माँ जया के साथ।

उनके भाई आर.कन्नन और आर. जगननाथन भी फोटो में शामिल हैं।

सामाजिक कार्यक्रमों में यह परिवार काफी कम जाता था, लेकिन वे लोग कोई भी नृत्य कार्यक्रम नहीं छोड़ते थे। उस समय की हिंदी सिनेमा की जानी—मानी स्टार वैजयंती माला एक बार दिल्ली के सप्रू हाउस में भरतनाट्यम कर रही थीं और चक्रवर्ती परिवार उनका नृत्य देखने गया था। मंच पर वैजयंती माला की चपलता देखने लायक थी। आज भी हेमा को उनकी वह कांजीवरम साड़ी, उनकी चमकती काली आँखें और उनकी लंबी पतली उँगलियाँ याद हैं। ''वे किसी और ही दुनिया की लग रही थीं। नृत्य के बाद उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और मेरा उत्साह बढ़ाने के लिए कुछ शब्द मुझसे कहे। वह मेरे लिए जादुई क्षण था और मेरी माँ के लिए भी।''

चक्रवर्ती परिवार एक नृत्यांगना के तौर पर वैजयंती माला का काफी बड़ा प्रशंसक था। हेमा को याद है कि उसके माता—पिता अकसर घर पर वैजयंती माला के नृत्यों की चर्चा करते रहते थे। ''अप्पा यह देखने और समझने की कोशिश करते कि किस तरह ऐसे शो आयोजित किए जा सकते हैं; लेकिन अम्मा की रुचि नृत्य में अधिक रहती।'' जया चक्रवर्ती के लिए हर नृत्य कार्यक्रम हेमा को एक बेहतरीन नृत्यांगना के रूप में ढालने का एक मौका होता। जब वे लोग घर पहुँचते, वह उस नृत्य के बारे में काफी विस्तार से बात करतीं। वे बतातीं कि उस नृत्यांगना ने कहाँ अच्छा किया और कहाँ वह कमजोर लगी। इन सारी बहसों में हेमा चुप होकर सारी बातें सुनती रहतीं, अपने माता—पिता के विचारों को ग्रहण करती रहतीं और उनके अवचेतन में बड़ी—बड़ी उपलब्धियों की भूख बढ़ती जाती। जया चक्रवर्ती ने अपनी बेटी के लिए बड़े ख्वाब सजा रखे थे और उसके लिए वह हर त्याग एवं समर्पण को तैयार थीं। इन सपनों को पूरा करने के लिए वे अथक परिश्रम करती थीं। वे हेमा के चलने के तरीके पर नजर रखतीं। वे देखतीं कि हेमा किस तरह चल रही है। वे हेमा को बतातीं कि अपने कंधों को पीछे करके कैसे चलना चाहिए और किस तरह एक नारी की तरह सुरुचिपूर्ण ढंग के साथ बैठना चाहिए। रात में बिस्तर पर जाने से पहले या सुबह स्कूल जाने से पहले तैयार करते समय जया हमेशा हेमा के नृत्य के सबक दुहरवातीं। धीरे—धीरे यह हेमा की आदत बन गई और फिर हेमा चाहे जहाँ भी जाएँ, चाहे जो भी करें, अनायास ही अपने अदावू, मुद्रा और अभिनय का अभ्यास करती रहतीं।

हेमा वह एक खास पल नहीं बता सकतीं, जब उन्होंने नृत्य को अपना लिया; लेकिन धीरे—धीरे नृत्य में उन्हें आनंद आने लगा। उन्हें फर्श पर टाटू काझी की ध्वनि की आदत हो गई, जिसे वह सम्मोहित करनेवाला बताती हैं। दिल्ली में त्रिवेणी कला संगम एक प्रतिष्ठित नृत्य शिक्षण संस्थान था और गुरु रामास्वामी पिल्लई से शिक्षा ग्रहण करना सौभाग्य माना जाता था। हेमा को वहाँ जाना पसंद था, लेकिन वह हर वक्त नृत्य में ही व्यस्त नहीं रहना

चाहती थीं। अपनी उम्र के बाकी बच्चों की तरह वह खेलना चाहती थीं, खिड़की पर खड़े होकर आने—जानेवालों को देखना चाहती थीं, कुछ खाली वक्त बिताना चाहती थीं, बूढ़ी औरतों की गप्पें सुनना चाहती थीं या अपने भाइयों के साथ चिपके रहना चाहती थीं; लेकिन उनकी दिनचर्या इतनी व्यस्त थी कि ऐसी चीजों के लिए उनके पास वक्त ही नहीं बचता था।

अपने बड़े भाइयों के साथ हेमा ने मद्रासी हायर सेकंडरी स्कूल में पढ़ाई की, लेकिन अपनी कक्षा के बाकी बच्चों के साथ उनकी ज्यादा बातचीत नहीं होती थी। अगर वे स्कूल में नहीं होतीं तो घर पर होमवर्क करने में व्यस्त होतीं। जब वह होमवर्क कर लेतीं तो फिर उन्हें नृत्य की कक्षा के लिए जाना होता। कई बार कोई दोस्त या साथी न होना उन्हें खलता; लेकिन वे काफी शरमीली थीं। ऐसे में उन्हें नहीं पता था कि किसी से कैसे दोस्ती की जाए। हेमा बताती हैं, ''जब मैं पड़ोस में बच्चों को खेलते—हँसते देखती तो मुझे अचरज होता कि वे किस बात पर हँस रहे हैं। मैं उनकी खुशी को समझ नहीं पाती थी और यह भी तय है कि वे भी मुझे बिल्कुल अजीब समझते होंगे। कई बार ऐसा होता कि मैं उनकी तरह बनने की कोशिश करती और शरारतें करती। ऐसे में मेरी माँ को गुस्सा आ जाता।''

ऐसे मौकों पर जया अपनी बच्ची को समझाने का एक अलग और रचनात्मक तरीका अपनातीं। जब भी हेमा अपनी माँ का कहा नहीं मानतीं या उन्हें नाराज कर देतीं, जया उन्हें भरतनाट्यम के तीन आइटम करने के लिए कहतीं—अलारिपु, जातिस्वरम् और शब्दम्।

हेमा उन नृत्यों में इतनी दक्ष हो गई थीं कि अगर वे तुरंत सोकर उठी हों, तब भी आँखें बंद करके उन्हें आसानी से निभा लेतीं। उस समय तक हेमा थोड़ा असहयोग दिखाने लगतीं और इस बात पर जोर देतीं कि वह कमरा बंद करके नृत्य करेंगी। जया विरोध नहीं कर पातीं और हेमा की बात मान लेतीं। हेमा अपनी आँखों में शरारत भरी चमक लिये बताती हैं, ''जब मैं अपने कमरे में पहुँच जाती तो फिर जोर—जोर से गीत गाती और फर्श पर जोर—जोर से पैर पटकती। मैं ऐसा अभिनय करती जैसे मैं नृत्य कर रही हूँ; लेकिन मैं केवल पैरों का इस्तेमाल कर रही होती, हाथों की भंगिमा नहीं बनाती। ऐसा करने से मुझे ताकत और उपलब्धि का आभास होता कि मैं अपनी माँ के साथ धोखा कर ले रही हूँ। उस समय मैं इतनी छोटी थी कि मुझे इस अमूल्य कला के अपमान का पता नहीं चला था। यह आभास तो काफी बाद में हुआ...।''

उन दिनों हेमा का ध्यान भटकने की प्रमुख वजह थे उनके भाई जगन्नाथ। बड़े भैया कन्नन, जो हमेशा गंभीर रहते, उन्हें संरक्षण देते थे; लेकिन जगन्नाथ अकसर हेमा को परेशान करने और चिढ़ाने के तरीके तलाशते रहते। हेमा मुसकराते हुए बताती हैं, ''वे मुझे चिढ़ाने के लिए नए—नए तरीके तलाशते रहते। जब भी मैं नाचना शुरू करती, वह पास खड़े होकर मुँह बनाते। जाहिर है, मुझे हँसी आ जाती और अम्मा डाँटने लगतीं कि मैं ध्यान नहीं दे रही हूँ। यह हर रोज होता था। इन कामों के पीछे जगन भैया का एक ही मकसद होता था—अम्मा से मुझे डाँट खिलाना। जब अम्मा डाँटने लगतीं तो वह जगन भैया की खुशी का पल होता। वह मेरे पास आकर खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगते और मैं रोना शुरू कर देती। देखने में ये बातें बचकानी लगती हैं, लेकिन बड़े होते समय काफी अहम भी हैं।''

चक्रवर्ती परिवार की कॉलोनी में किसी से कोई खास बातचीत नहीं होती थी, हालाँकि भट्टाचार्य परिवार को इसका अपवाद माना जा सकता है। वे लोग कुछ दूरी पर रहते थे। उनके परिवार में भी एक लड़की थी, जो हेमा की ही उम्र की थी और कभी—कभी दोनों परिवार साथ खाना खाने के लिए एक—दूसरे के घर आया—जाया करते थे। बच्चों के लिए यह काफी खुशी का मौका होता था और वे चारों मिलकर हुड़दंग मचा देते; लेकिन अकसर उन खुशियों में बाधा पड़ जाती, क्योंकि हेमा को कुछ और जगहों पर जाना होता था। जया चक्रवर्ती ने हेमा का नामांकन

संगीत की भी एक कक्षा में करा रखा था; क्योंकि उनका मानना था कि सुर और ताल की मूलभूत जानकारी उन्हें एक सक्षम नृत्यांगना बनने में मदद करेगी। जया चाहती थीं कि हेमा संगीत में अकादमिक डिग्री हासिल करें और उनको खुश करने के लिए हेमा ने संगीत की तीसरी व चौथी परीक्षाओं में हिस्सा भी लिया, लेकिन आखिरी परीक्षा उन्हें छोड़नी पड़ी। हेमा बताती हैं, ''मेरी व्यस्तता काफी अधिक हो गई थी। ऐसे में मैं कला के एक और रूप को नहीं अपना सकती थी। अम्मा निराश थीं; लेकिन कुछ समय बाद वह समझ गईं और दबाव डालना बंद कर दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि मेरे लिए एक ही माध्यम में आगे बढ़ना अधिक बेहतर था, न कि कई दिशाओं में बिखर जाना।''

लेकिन हेमा के बड़े होने के दौरान संगीत उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बना रहा। हेमा याद करती हैं, ''अम्मा की वायलिन की धुन और अप्पा के श्लोकों के उच्चारणों के बीच हमारी सुबह होती और दैनिक कार्यों को निबटाते समय भी हम अवचेतन रूप से उनकी प्रतिध्वनियों के साथ जुड़े रहते। हालाँकि संगीत से मेरा कभी उस तरह का नाता नहीं रहा, जिस तरह नृत्य का रहा है। नृत्य मेरी पहचान था, मेरा साथी था। मुझे नहीं पता कि मेरी माँ भी अपने संगीत के बारे में ऐसा ही महसूस करती थीं या नहीं या शायद उन्होंने कभी इस बात को व्यक्त ही नहीं किया; क्योंकि उनकी परिस्थितियाँ बिल्कुल अलग थीं।''

तेरह साल की उम्र में शादी होने के बाद जया पर शादी और बच्चों की जिम्मेदारियाँ आ गई थीं; लेकिन चक्रवर्ती इतने संवेदनशील थे कि उन्होंने विभिन्न कलाओं के प्रति जया के रुझान को रोजमर्रा के कामों के बोझ के तले दबने नहीं दिया। पति के साथ की वजह से जया ने मैट्रिकुलेशन किया और फिर बाद में हिंदी भाषा में विशिष्ट योग्यता हासिल करने के लिए भी नामांकन कराया (जया हिंदी विषय में 'प्रभाकर' थीं)। जब चक्रवर्ती को पता चला कि उनकी पत्नी की पेंटिंग में रुचि है तो वे उनके लिए एक ईजल खरीद लाए, ताकि वह खाली वक्त का सही इस्तेमाल कर सकें। कुछ सालों बाद जया की रुचि लेखन की तरफ हुई, तब चक्रवर्ती ने उन्हें अपने विचारों को कागज पर उतारने के लिए प्रेरित किया।

हेमा को याद है कि उनके बड़े होने के दौरान उनकी माँ अपने समय का सही तरीके से इस्तेमाल करती थीं। हेमा बताती हैं, ''उनकी कई क्षेत्रों में रुचि थी और मैं यह सोचकर हैरान हो जाती थी कि वे किस तरह से अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभाते हुए भी इन कामों के लिए वक्त निकाल लेती थीं। वे गाना गाती थीं, खाना पकाती थीं, मेरी नृत्य कक्षाओं पर नजर रखती थीं और यही नहीं, हिंदी का ट्यूशन भी पढ़ाती थीं। हमारे घर काफी लोग आते थे और अहम बात यह है कि जो अतिथि अप्पा से मिलनेवाले आते थे, वे अम्मा से मिलनेवाले अतिथियों से बिल्कुल अलग होते थे।''

हेमा के पिता के अतिथि शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोग होते थे और औपचारिक वेशभूषा में आते थे। उनमें से कुछ तो धोती पहन के भी आते थे और उनके माथे पर 'नमन' का चिह्न बना होता था। वे आध्यात्मिक गुरुजन होते थे और अपने क्षेत्र से संबंधित चर्चा करते थे। वे सत्र साल भर में तीन बार होते थे और दो दिनों तक चलते थे। चर्चा से एक दिन पहले बाहर लॉन में रंगीन पंडाल लगा दिया जाता था। पड़ोस के बच्चों के लिए यह संकेत होता था कि वे आकर खुली जगह में खेल सकते हैं; लेकिन चर्चा में प्रवेश केवल दक्षिण भारतीय समुदाय के लोगों को ही मिलता था। चक्रवर्ती, जो मद्रास में रहनेवाले विद्वानों से जुड़े रहते थे, को इन आयोजनों का जिम्मा मिलता था। वे सत्र दो दिनों तक चलते थे और उनमें चर्चा के लिए भगवद्गीता, भागवतम और रामायण सहित विभिन्न विषय शामिल किए जाते थे। आयंगर परंपराओं को जाननेवाले प्रशिक्षित रसोइयों को पंडितों का भोजन बनाने के लिए बुलाया जाता था।

जब सत्र शुरू होते थे, बच्चे पहली पंक्ति में एकत्र हो जाते थे। गतिविधियों से मंत्रमुग्ध बच्चे लाउडस्पीकरों के नजदीक बैठने की कोशिश करते थे। हेमा बताती हैं, ''वे विद्वान् बेहतरीन वक्ता होते थे और भले ही हमें उनकी बातें समझ में न आती हों, हम संस्कृत श्लोकों और उसके बाद उनके तमिल व अंग्रेजी अनुवादों को सुनकर ही मंत्रमुग्ध हो जाते थे। बाद में, जब हम बड़े हुए, तब हमें पता चला कि वे लोग आचार्य रामानुज के अनुयायी थे और उनकी शिक्षाएँ उनके दर्शन पर आधारित थीं। हेमा आगे बताती हैं, ''वैष्णव परिवार से संबंधित होने के कारण धर्म के प्रति मेरी आस्था स्वाभाविक है। इस्कॉन मंदिर और भगवान् कृष्ण के प्रति मेरे गहरे लगाव की यही वजह है। यह समर्पण सालों—साल की श्रद्ध व आस्था की वजह से उत्पन्न हुआ है। पिता के अतिथियों के लिए मेरे मन में काफी आदर भाव होता था; लेकिन मैं अम्मा के अतिथियों के प्रति भी काफी आकर्षित होती थी।''

हेमा की माँ से मिलनेवाले लोग संगीत और कला के क्षेत्र से ताल्लुक रखते थे। वे लोग हेमा के अभिभूत कर देनेवाले सौंदर्य और उनकी प्रतिभा के कायल थे। हेमा याद करती हैं, ''मुझे कभी सीधे—सीधे इस बारे में नहीं बताया गया, लेकिन कभी—कभी अम्मा का कोई मित्र मेरी प्रशंसा करता सुनाई पड़ जाता था। ऐसे में अम्मा तुरंत विषयांतर कर देतीं। वे नहीं चाहती थीं कि यह सब सुनकर मेरा दिमाग सातवें आसमान पर पहुँच जाए। इन सारे वर्षों के दौरान कभी भी उन्होंने खुले तौर पर मेरी प्रशंसा नहीं की। जब मैं उनसे इस बारे में पूछती, तब भी वे कुछ कहने के लिए तैयार नहीं होती थीं। अधिक—से—अधिक वे कहतीं, 'तुम ठीक—ठाक कर लेती हो।' लेकिन अम्मा इतनी सी बात ही इतने भरोसे के साथ कहतीं कि इससे तुरंत अपने ऊपर मेरा भरोसा बढ़ जाता।''

❑

2

कॉस्ट्यूम्स और कैमरा

दिल्ली में रहने से हेमा को अनेक गणमान्य व्यक्तियों के सामने अपना कला प्रदर्शन करने का अवसर मिला। नृत्य के अलावा हेमा ने और भी चीजों में सक्रियता से भाग लिया। यहाँ हेमा को मशहूर कार्टूनिस्ट शंकर के साथ देख सकते हैं।

एक स्टार का जन्म हुआ : फिल्म 'काला और गोरा' की एक तसवीर में हेमा।

हेमा घुँघरू बाँधते हुए शाम की अपनी नृत्य कक्षा के लिए तैयार हो रही थीं, जब उन्होंने देखा कि कमरे के बाहर उनकी माँ उनके नृत्य शिक्षक से बातचीत कर रही थीं। उसके बाद दोनों ने एक—दूसरे को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और उनकी राहें जुदा हो गईं। छोटी हेमा के लिए यह एक संकेत था कि उसकी माँ ने एक बार फिर उसके शिक्षक को हटा दिया है। उत्कृष्ट शिक्षक की तलाश में जया हर छह महीने में हेमा का शिक्षक बदल देती थीं। अन्य नर्तकों या नृत्यांगनाओं के उलट, जो पूरे जीवन किसी एक गुरु के सान्निध्य में शिक्षा ग्रहण करते हैं, हेमा को अपने लंबे और विस्तृत कॅरियर में कई शिक्षकों से सीखने का अवसर मिला।

शुरुआत में हेमा को एक सामान्य कक्षा में डाला गया था, जहाँ वह कई अन्य बच्चों के साथ नृत्य सीखती थीं। हेमा याद करती हैं, ''वे काफी मस्ती भरे दिन थे। जब भी हम किसी स्टेप को भूल जाते थे तो किसी दूसरे के पीछे छिप जाते थे, ताकि गुरुजी हमें देख न सकें।''

एक साल बाद हेमा की माँ उनको लेकर श्रीमती इंदिरा के पास पहुँचीं, जो कला क्षेत्र की छात्रा थीं और अपने काम में निपुण थीं; लेकिन वह काफी कड़ाई से पेश आती थीं। हेमा याद करती हैं, ''उन्होंने मुझ में कला क्षेत्र शैली में भरतनाट्यम की मजबूत नींव रखी। यह प्राइवेट ट्यूशन का मेरा पहला मौका था और उनकी निगाहों से बचकर मैं कोई गलती नहीं कर सकती थी। इसमें कोई शक नहीं है कि उनके साथ सीखते हुए मैं काफी आगे बढ़ती; लेकिन वह मेरे साथ इतनी सख्ती से पेश आतीं कि मैं खुद को सहज अनुभव नहीं कर पाती थी।

हेमा के अगले शिक्षक थे दिल्ली के त्रिवेणी कला संगम के सिक्किल रामास्वामी पिल्लई। हेमा बताती हैं, ''वे बुजुर्ग थे और काफी दया भावना वाले भी थे। एक मायने में वह मेरे पहले गुरु थे।'' उस समय थोड़े—थोड़े वक्त के लिए हेमा ने थिरुवलपुथुर स्वामीनाथ पिल्लई, माइलापोर गौरी अम्मल और अरुणाचलम पिल्लई से भी प्रशिक्षण लिया। विडंबना यह थी कि इन सभी शिक्षकों ने बेहतरीन तरीके से उन्हें प्रशिक्षित करने का प्रयास तो किया, लेकिन जया के ऊँचे मानकों पर खरे नहीं उतर सके।

बाद के वर्षों में हेमा ने गुरु वेमपट्टी चिन्ना सत्यम् से कुचिपुड़ी और गुरु नतनम् गोपाल कृष्णन से मोहिनी अट्टम सीखा।

शिक्षकों के लगातार बदले जाने की वजह से हेमा परेशान हो गईं। हर बार एक नए शिक्षक के तौर—तरीके और मिजाज के साथ तालमेल बिठाना हेमा के लिए दिक्कत की वजह बन जाता था। ऐसा नहीं था कि जया को हेमा की यह समस्या समझ में नहीं आती थी; लेकिन जया ने अपनी बिटिया के लिए जो ऊँचा ख्वाब देख रखा था, उसे हासिल करने की राह में ऐसी बाधाएँ तो आनी ही थीं। परिवार को जया के विवेक पर पूरा भरोसा था और सबने उनका पूरा साथ भी दिया। जया ने हेमा के मन में प्राचीन परंपराओं और उसकी मिथकीय व सामाजिक जड़ों के प्रति श्रद्धा का भाव जगाया।

मूल रूप से भरतनाट्यम मंदिरों में किया जाता था और रुक्मिणीदेवी अरुंडेल (कलाक्षेत्र की संस्थापक) के अथक प्रयासों से 1930 के दशक के बाद के वर्षों में इसे अंततः एक परफॉर्मिंग आर्ट का दर्जा हासिल हुआ। जया ने 'नाट्यशास्त्र' का गहन अध्ययन किया था और इस बात पर काफी काम किया कि अपने नृत्य में हेमा नाट्य एवं अभिनय दोनों की बेहतरीन अभिव्यक्ति कर सकें। कालांतर में जया ने अपने पति को इस बात के लिए मना लिया कि उन्होंने अपनी बिटिया में प्रतिभा की जो झलक देखी है, उसे तभी आगे बढ़ाया जा सकता है, जब परिवार दिल्ली छोड़कर मद्रास में बस जाए।

यह निर्णय इतना आसान भी नहीं था। इसके लिए चक्रवर्ती को ई.एस.आई.सी. में कहकर अपना ट्रांसफर तो कराना ही पड़ता और चूँकि उनके दोनों बेटे पढ़ाई कर रहे थे, ऐसे में उनकी पढ़ाई में भी व्यवधान पड़ता। कन्नन दिल्ली के हंसराज कॉलेज से विज्ञान की पढ़ाई कर रहे थे, जबकि उनसे छोटे जगन्नाथ मद्रासी हायर सेकंडरी स्कूल में अपनी शिक्षा पूरी कर रहे थे। काफी मंथन के बाद चक्रवर्ती ने एक कड़ा फैसला किया—परिवार मद्रास जाएगा, पहले केवल पत्नी और बिटिया के साथ; उनके दो बेटे अपनी नानी के साथ दिल्ली में ही रह गए।

वर्ष 1962 की गरमियों में चक्रवर्ती परिवार मय सामान के मद्रास चला गया। हेमा को नए स्कूल में दाखिल कराया गया, जिसका नाम था रोसरी मैट्रिकुलेशन, लेकिन समय के साथ जैसे—जैसे नृत्य प्रदर्शन के लिए हेमा की यात्राएँ बढ़ीं, उनके लिए अपनी पढ़ाई और नृत्य के बीच तालमेल बिठाना कठिन हो गया। ऐसे में चक्रवर्ती ने हेमा का दाखिला आंध्र मैट्रिकुलेशन में करा दिया, जो आज के पत्राचार कोर्स के बराबर माना जा सकता है।

मद्रास में भी हेमा के लिए कुशल शिक्षक की तलाश जारी रही। जया ने कई शिक्षकों से संपर्क किया, लेकिन कहीं—न—कहीं कुछ—न—कुछ कमी रह जाती। महज कुछ लोग ही उनकी उम्मीदों पर खरे उतर सके। हेमा

अपने भीतर शास्त्रीय नृत्य का मजबूत आधार रखने में तीन गुरुओं का योगदान मानती हैं—गुरु किट्टप्पा पिल्लई, जिनसे उन्होंने भरतनाट्यम सीखा, गुरु वेमपट्टी चिन्ना सत्यम, जिनसे उन्होंने कुचिपुड़ी सीखा और गुरु नातनम गोपाल कृष्णन, जिनसे उन्होंने मोहिनी अट्टम सीखा। गुरु किट्टप्पा पिल्लई से उनकी मुलाकात वैजयंती माला की एक नृत्य प्रस्तुति के दौरान हुई थी। परिवार वैजयंती माला के विशुद्ध शास्त्रीय नृत्य से काफी प्रभावित हुआ और गुरु से मुलाकात की इच्छा जाहिर की। हेमा बताती हैं, ''वह हमारे लिए बहुत खास दिन था, जब गुरु किट्टप्पा पिल्लई हमारे घर आए और मुझे शिक्षा देने के लिए तैयार हो गए। उनका व्यवहार मित्रवत् था और उनसे नृत्य सीखने में मुझे काफी आनंद आया।''

इस तरह हेमा के जीवन में एक नए दौर की शुरुआत हुई, जब उन्होंने भरतनाट्यम का गूढ़ और सहज रूप सीखना आरंभ किया और पिछले कई सालों में पहली बार ऐसा हुआ, जब जया को हेमा का शिक्षक बदलने की जरूरत महसूस नहीं हुई। आखिरकार एक संपूर्ण गुरु की उनकी तलाश पूरी हुई। इसके बाद किट्प्पा पिल्लई जब तक जीवित रहे, हेमा को नृत्य का प्रशिक्षण देते रहे।

हेमा बताती हैं, ''गुरु—शिष्य के तौर पर हमारा ऐसा सामंजस्य और तालमेल बन गया था कि ज्ञान लेने के लिए मुझे और कहीं जाने की या और किसी से संपर्क करने की जरूरत ही महसूस नहीं हुई। उनसे मिलने के बाद ही मुझे यह पता चला कि जिस तरह से कोई शिष्य हमेशा संपूर्ण गुरु की तलाश में लगा रहता है, उसी तरह से गुरु भी हमेशा एक ऐसे योग्य और पात्र शिष्य की तलाश में रहता है, जिसे वह अपना ज्ञान दे सके। आध्यात्मिक गुरु हों या फिर नृत्य गुरु, दोनों के लिए ही यह सच होता है। जिंदगी वाकई बहुत अजीब होती है। कई बार हम गुरु की तलाश में पूरी जिंदगी लगा देते हैं, लेकिन वह नहीं मिलता। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे दोनों ही मिले, वह भी जीवन के उस मोड़ पर, जब मुझे उनकी जरूरत सबसे ज्यादा थी। पहले मेरे नृत्य गुरु किट्टप्पा पिल्लई और उसके काफी वर्षों बाद मेरी आध्यात्मिक गुरु माँ इंदिराजी।''

मजेदार बात यह है कि फिल्मों के निर्माता हेमा से तब से ही संपर्क साधने लगे थे, जब वह महज 14 साल की थीं। फिल्में बनानेवाले आमतौर पर रंगमंच के कलाकारों को चुन लेते हैं और उन्हें फिल्मों में मौका देते हैं। चूँकि हेमा एक जाना—पहचाना चेहरा बन चुकी थीं, ऐसे में अकसर फिल्म जगत् से जुड़े लोगों की ओर से प्रस्ताव आते रहते थे। तमिल फिल्म में डांस आइटम करने का पहला प्रस्ताव उन्हें निर्माता वेल्लु मणि ने दिया, उसके बाद एक तेलुगू फिल्म में डांस आइटम करने का प्रस्ताव आया। हेमा बताती हैं, ''तब हम छोटे थे, तो सिनेमा हॉल जाने का कोई खास मौका नहीं मिला। मेरे माता—पिता भी सिनेमा नहीं जाते थे; लेकिन ए.आई.एफ.ए.सी.एस. हॉल इसका अपवाद था। यह कनॉट प्लेस में हमारे घर से थोड़ी ही दूरी पर था। वह एक सुंदर थिएटर था, जिसमें बाल फिल्में दिखाई जाती थीं। रविवार की सुबह अप्पा हमें वहाँ ले जाते थे। फिल्म के बाद अकसर हम पास के उडुपी रेस्तराँ में लंच करते थे। खाना तो कमोबेश वैसा ही होता था, जैसा हम घर में खाते थे, लेकिन उसे पेश करने का तरीका खास होता था। यही बात हमें बहुत आकर्षित करती थी। यही नहीं, केवल यही एकमात्र अवसर होता था, जब मुझे और मेरे भाइयों को कॉफी की जगह कोक पीने का अवसर मिलता था।''

हेमा बताती हैं, ''ए.आई.एफ.ए.सी.एस. के अलावा एक जगह याद आती है, वह है रीगल सिनेमा। वह भी कनॉट प्लेस में ही था। वहाँ देखी पहली फिल्म, जो मुझे याद आती है, वह थी वैजयंती माला की 'नागिन'। मुझे वह फिल्म देखने में काफी मजा आया, क्योंकि उसमें बेहतरीन नृत्य—संगीत था। कुछ सालों बाद जब मैं स्कूल से घर लौट रही थी, मैंने रीगल के बाहर 'हरियाली और रास्ता' का पोस्टर लगा देखा। मैंने अम्मा से गुजारिश की कि वे मुझे यह फिल्म दिखाएँ; लेकिन वे तैयार नहीं हुईं। जब मैंने काफी मिन्नतें कीं तो उन्होंने मुझे भाई के साथ वह

फिल्म देखने के लिए भेज दिया। मुझे उसकी कहानी ज्यादा समझ में नहीं आई। मुझे उस फिल्म से जो याद आता है, वह है उसकी हरदम रोती रहनेवाली गायिका, जिसकी वजह से वहाँ बैठे सारे दर्शक काफी दु:खी हो गए थे। उसके बाद मैं तब तक सिनेमा हॉल नहीं गई, जब तक मैं फिल्मों में खुद नहीं आ गई। परिवार में जिस मनोरंजन को बढ़ावा दिया जाता था, वे थे संगीत और नृत्य के कार्यक्रम।''

हेमा एक नृत्य आधारित फोटो शूट के लिए अभ्यास करती हुई।

जया चाहती थीं कि उनकी बेटी नृत्यांगना बने। उन्होंने नहीं सोचा था कि उनकी बेटी कभी फिल्मों में कॅरियर बनाएगी। लेकिन नियति को शायद कुछ और ही मंजूर था।

कन्नन और जगन अब तक अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर चुके थे और अपने परिवार के पास मद्रास आ गए थे। जगन कानून की पढ़ाई कर रहे थे, जबकि कन्नन कॉलेज में लेक्चरर के तौर पर काम कर रहे थे। दोनों भाई अपने जीवन में आगे बढ़ रहे थे, लेकिन अपनी छोटी बहन की जिंदगी में आ रहे बदलावों से पूरी तरह जुड़े हुए थे।

एक दिन एक तमिल फिल्म निर्देशक चक्रवर्ती निवास पर आया, साथ लाया हेमा को नायिका के तौर पर पेश करने का प्रस्ताव। चक्रवर्ती उस प्रस्ताव से आकर्षित नहीं हुए और सीधे—सीधे उसे अस्वीकार कर दिया; हालाँकि जया ने सलाह दी कि संभावनाओं पर विचार करने में कोई हर्ज नहीं है। जया को फिल्मी दुनिया के बारे में जानकारी नहीं थी, लेकिन उनके कई मित्र इससे संबद्ध थे। जया ने उन लोगों से इस बारे में राय ली। उन्होंने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और बताया कि वह व्यक्ति तमिल फिल्मों का बड़ा नाम है। चक्रवर्ती ने अपनी पत्नी के सुझाव को अस्वीकार करने का प्रयास किया, लेकिन जया ने आश्वस्त किया कि प्रस्ताव से पूरी तरह संतुष्ट हो जाने के बाद ही कोई फैसला लिया जाएगा। अपने पहले फिल्मी ऑफर के बारे में याद करते हुए हेमा बताती हैं, ''अप्पा मेरे फिल्मों में काम करने के पक्षधर नहीं थे; लेकिन अम्मा को अपनी बात मनवाने के तरीके पता थे। और अगर सच कहूँ तो फिल्मों में काम करने की इच्छा मेरी भी नहीं थी; लेकिन अम्मा ने भरोसा दिया कि अगर तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा तो फिर पहली फिल्म पूरी करने के बाद तुम काम न करना। मैं छोटी थी, फिर भी अम्मा ने मेरी पसंद की आजादी का सम्मान किया। मेरे लिए यह एक बड़ी सांत्वना की बात थी।''

निर्माता ने भव्य तरीके से फिल्म की घोषणा की। अपनी दो नायिकाओं के बारे में बड़ी—बड़ी बातें कीं; पहली —हेमा और दूसरी—जे. जयललिता, जो बाद में तमिलनाडु की मुख्यमंत्री बनीं। उनकी सलाह पर जया चक्रवर्ती हेमा का नाम बदलकर 'सुजाता' करने के लिए तैयार हो गईं, क्योंकि निर्माता का मानना था कि फिल्म नायिका के लिए 'हेमा मालिनी' नाम सही नहीं था। हेमा बताती हैं, ''हालाँकि अम्मा इस फैसले से खुश नहीं थीं, लेकिन निर्माता के निर्णय पर विश्वास करते हुए सहमत हो गईं। अगर हम पीछे देखें तो हमारे सोच के साथ यह पहला समझौता था। मेरी माँ ने मेरे लिए एक नाम चुना था। पूरे परिवार ने उस पर मुहर लगाई थी। तो फिर एक अजनबी कैसे इसे बदल सकता था?''

घोषणा होने के तुरंत बाद ही फिल्म की शूटिंग शुरू हो गई। दोनों नायिकाओं को बड़े—बड़े कपड़ों में ढँक दिया गया और उन्हें मनोरंजक विग पहना दी गईं। हेमा धीरे से कहती हैं, ''पवादई दवानी (आधी साड़ी) पहनने के बाद मैंने खुद को देखा और डरावना महसूस किया; लेकिन किसी ने मेरी राय नहीं पूछी और मैं चुप ही रहती थी।''

लेकिन उनके भीतर—ही—भीतर एक भय जैसा बढ़ रहा था। हेमा की उस समय जो उम्र थी और उनके आसपास जो कुछ घटित हो रहा था, उसकी वजह से वे खुद को छोटे दायरे में समेटती जा रही थीं।

फिर मदुरई में शूटिंग के पहले शिड्यूल के पूरा होने के कुछ महीने बाद चक्रवर्ती परिवार ने अखबार में पढ़ा कि निर्माता ने उस फिल्म से हेमा को निकाल कर किसी दूसरे को रख लिया है। हेमा याद करती हैं, ''यह एक गहरा आघात था। मुझे लगा जैसे किसी ने चेहरे पर जोरदार तमाचा जड़ दिया हो। हमने तो उस फिल्म में मुझे लेने के लिए दबाव डाला नहीं था, तो फिर बिना कोई तर्क दिए मुझे उस फिल्म से अचानक कैसे निकाल दिया गया?'' अपना गुस्सा जाहिर करते हुए हेमा यह भी बताती हैं कि ''अंदर—ही—अंदर मैं उस बवाल से छुटकारा मिलने की वजह से राहत महसूस कर रही थी; लेकिन जिस तरीके से यह हुआ, वह काफी अपमानजनक लगा।'' हेमा याद करती हैं, ''ऐसा लगा जैसे मुझे खारिज कर दिया गया है और मेरी माँ अपमानित अनुभव कर रही थीं। हम तो उनके पास फिल्म में काम माँगने नहीं गए थे। वे स्वयं चलकर आए थे। और अब अचानक मुझे फिल्म से बाहर कर दिया था। निर्माता ने साफ—साफ शब्दों में कह दिया था, 'इस लड़की में स्टार बनने लायक गुण नहीं हैं।' मैं अपमानित महसूस कर रही थी; लेकिन अवसाद भरे कुछ दिनों के बाद मैं अपने दु:ख से बाहर निकलने में कामयाब हो गई। लेकिन मेरी माँ इससे नहीं उबर सकीं। वह एक दृढ इच्छा—शक्तिवाली महिला थीं और उनका स्वाभिमान इस अपमान को पचा नहीं पा रहा था।''

हेमा बताती हैं, ''मैं अपनी माँ के उन दिनों के दु:ख भरे भावों को कभी नहीं भूल सकती। जया अपने रोजमर्रा के कामों में लगी रहती थीं, लेकिन इस वाकए से वह उबर नहीं सकी थीं। वे अकसर कहीं बैठी हुई मिलतीं, लेकिन विचारों में खोई हुईं।'' हालाँकि हेमा की उस समय उम्र ज्यादा नहीं हुई थी, लेकिन वे यह महसूस कर सकती थीं कि उनकी अम्मा किस मनोदशा से गुजर रही हैं। हेमा भावुक होते हुए याद करती हैं, ''मैं उनकी सबसे अनमोल संपत्ति थी और किसी अजनबी द्वारा मुझे इस तरह से खारिज कर दिए जाने को वह स्वीकार नहीं कर सकीं।''

जया के गहरे क्षोभ और अकेलेपन ने हेमा के भीतर जैसे संकल्प भर दिया। हेमा कहती हैं, ''यह मेरा दृढ विश्वास है कि जब आप किसी को चुनौती देते हैं तो वह व्यक्ति हमेशा मौके पर उठ खड़ा होता है।'' हेमा ने चुनौती को स्वीकार करने और अपनी माँ के स्वाभिमान को फिर से मजबूत करने का दृढ निश्चय कर लिया। एक शाम जब जया दु:खी थीं और कमरे में बैठी बाहर देख रही थीं, तब हेमा वहाँ पहुँचीं और अपनी माँ से कहा, ''मैं अभिनेत्री बनूँगी। मैं फिल्मों में काम करूँगी। आप जो कहेंगी, मैं वही करूँगी और कामयाबी हासिल करूँगी।'' यही हेमा के जीवन का निर्णायक क्षण था।

हेमा बताती हैं, ''सुनने में अवास्तविक लगेगा, लेकिन यही वह पहला मौका था, जब मैंने भगवान् श्री कृष्ण से सीधी बात की। मैंने उनसे कहा, 'आप मुझे इस परिस्थिति में ले आए हैं और अब यह आप पर ही है कि मुझे इस अपमानजनक दशा से बाहर निकालें। मेरे समक्ष जो चुनौतियाँ पेश की गई हैं, उनसे निबटने योग्य बनाने का जिम्मा आपका ही है। मैंने उनसे विनती की कि वे मुझे मजबूती दें। यह संपूर्ण समर्पण था और ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली। कोई इस बात का विश्वास नहीं करेगा, लेकिन अगले कुछ ही दिनों के भीतर चीजें बेहतर होने लगीं।''

केवल चौदह वर्ष की उम्र में ही हेमा को

तमिल फिल्मों के निर्माताओं से नायिका के रोल के लिए प्रस्ताव आने लगे थे।

हेमा के गॉडफादर अनंत स्वामी अचानक ही एक दिन उनके घर पहुँच गए। उस निर्माता के इनके जीवन से बाहर निकलने का स्वामी के आगमन से जैसे कोई संबंध हो। नियति अपना खेल दिखा रही थी और चक्रवर्ती परिवार को केवल उसमें सही दिशा की तलाश करनी थी। इसके बाद इतनी तेजी से घटनाएँ घटित हुईं कि उनकी प्रतिक्रिया के लिए भी समय नहीं था।

जाने—माने फिल्म निर्माता और भरतनाट्यम नृत्यांगना पद्मा सुब्रह्मण्यम के पिता के. सुब्रह्मण्यम, जो चक्रवर्ती के पारिवारिक मित्र थे, ने एक डांस कंसर्ट आयोजित किया था। उसी में अनंत स्वामी ने हेमा मालिनी को पहली बार देखा था। उन्होंने अपने आवास पर हेमा के लिए एक खास नृत्य कार्यक्रम आयोजित किया, ताकि नृत्य से संबंधित विभिन्न संस्थाओं और समीक्षकों से उनका परिचय कराया जा सके। वह कार्यक्रम काफी सफल रहा और इसके बाद नृत्य संगठनों के बीच हेमा को 'दिल्ली हेमा मालिनी' के नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि मद्रास में पहले से ही हेमा मालिनी के नाम से एक नृत्यांगना थीं।

हेमा की प्रस्तुति से प्रभावित होकर अनंत स्वामी उनके घर आए और उन्हें बताया कि वे एक हिंदी फिल्म बनाने जा रहे हैं। स्वामी ने पूछा, ''क्या हिंदी सिनेमा के सुपर स्टार राज कपूर के साथ हेमा बतौर हिरोइन काम करना चाहेंगी?'' जया और चक्रवर्ती के पास इस सवाल के जवाब में कोई शब्द ही नहीं थे। उधर हेमा ने माँ—बाप से राय लिये बिना तुरंत ही 'हाँ' कर दी। हेमा का साहस देखकर स्वामी चकित हो गए, लेकिन यह दिखाया नहीं। जब वे चले गए तो परिवार में इस बात की आशंका उठी कि वह कोई धूर्त व्यक्ति तो नहीं है, जो उन्हें ठग रहा है। लेकिन जब कुछ दिनों के बाद अनंत स्वामी मुंबई (तत्कालीन बंबई) के तीन एयर टिकट लेकर आए तो उन पर संदेह का कोई कारण नहीं बचा। वे उन लोगों को राज कपूर से मिलवाने ले जाना चाहते थे। हेमा बताती हैं, ''शुरू से ही उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि फैसला राज कपूर लेंगे। हमें कोई आपत्ति नहीं थी। बॉम्बे की यात्रा में अम्मा और जगन्नाथ मेरे साथ थे। वह बॉम्बे की हमारी पहली यात्रा थी, वह भी फ्लाइट से। मैं और मेरा भाई इस बात को लेकर काफी उत्साहित थे और हमारी खुशी छिपाए नहीं छिप रही थी।''

एक दक्षिण भारतीय निर्माता ने राज कपूर के साथ काफी डेट्स साइन किए थे और वह तुरंत एक फिल्म शुरू करना चाह रहे थे। राज कपूर की ब्लॉकबस्टर 'संगम' को अधिक समय नहीं हुआ था। ऐसे में नायिका सुंदर होनी चाहिए थी, साथ ही एक कुशल नर्तकी भी। संक्षेप में कहें तो नायिका राज कपूर की पूर्व नायिका वैजयंती माला का विकल्प होनी चाहिए थी। पहली नजर में हेमा मालिनी उपयुक्त लग रही थीं; लेकिन स्क्रीन टेस्ट के बाद ही अंतिम फैसला होना था।

देवनार के आर.के. स्टूडियो में स्क्रीन टेस्ट आयोजित किया गया। हेमा काफी नर्वस थीं, मेकअप रूम काफी बड़ा था। हेमा के साथ उनकी माँ भी वहाँ मौजूद थीं। मेकअप मैन माधव पई, ड्रेसमैन विष्णु और स्पॉट बॉय हनुमान ने उनकी सारी जिम्मेदारी ले ली। वे अपने—अपने क्षेत्र में धुरंधर थे और उन्होंने हेमा के प्रति संरक्षित महसूस किया। हेमा को विष्णु ड्रेस रूम में ले गए और वहाँ पद्मिनी एवं वैजयंती माला जैसी ख्यातिनाम नायिकाओं द्वारा पहने गए कॉस्ट्यूम दिखाए, जो वहाँ टाँगे गए थे। विष्णु ने कहा, ''एक दिन तुम्हारे कॉस्ट्यूम भी इनकी बगल में टाँगे जाएँगे।''

हेमा उनके अनुराग को याद करके भावुक हो जाती हैं। वे बताती हैं कि उनका मेकअप करने के दौरान माधव दादा ने धीरे—धीरे उनका आत्मविश्वास बढ़ाया, ताकि वह टेस्ट शॉट के लिए तैयार हो सकें। उन्होंने कहा, ''डरो मत, यह सोचकर अभिनय करो कि उस कमरे में तुम्हारे अलावा कोई नहीं है। अपना हृदय खोल दो और देखो, कैसे लाइट्स तुम्हारे चेहरे पर चमकती हैं।'' दादा की इन बातों की वजह से कुछ वक्त के लिए सारी चिंताएँ छूमंतर हो गईं; लेकिन सेट पर जैसे ही वह अपनी जगह पर पहुँचीं, डर फिर उभर आया।

जया चक्रवर्ती अनुबंध के लिए तैयार हो गईं, पर वह राज कपूरजी के सुपर स्टार वाले ओहदे से सर्वथा अनभिज्ञ थीं। ''हमें हिंदी फिल्मों और राज जी के स्टेटस के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। हमारे लिए एक ही बात मायने रखती थी कि दक्षिण भारत के उस निर्माता को सबक सिखाया जाए।'' हेमा जोर देकर कहती हैं। वास्तव में अभिनय के क्षेत्र के किसी लंबे कॅरियर की मेरी कोई योजना या महत्त्वाकांक्षा ही नहीं थी। मैं तो सोचती थी कि एक या दो फिल्में करूँगी और बस, उसके बाद अलविदा। मैं नहीं कह सकती कि उस समय मेरी माँ के मन में क्या चल रहा था, पर 'सपनों का सौदागर' के लिए साइन करने के बाद उन्हें एक शांतिपूर्ण अनुभव जरूर हो रहा था।''

अनुबंध के पूरी तरह से पक्के हो जाने के बाद हेमा और जयाजी मद्रास लौट गईं। तब तक उन्हें इस बात का अनुमान तक नहीं था कि जल्द ही उन्हें एक नए शहर में शिफ्ट होना होगा। संभवत: जयाजी को थोड़ा—बहुत अनुमान था, पर अपने पति की नाराजगी से बचने के लिए उन्होंने इसका जिक्र किसी से नहीं किया। यह सत्य था कि उस घर में कोई भी निर्णय चक्रवर्तीजी की स्वीकृति के बाद ही अमल में लाया जाता था; पर चक्रवर्तीजी भी इस बात के लिए तारीफ के काबिल हैं कि वे सदैव अपनी पत्नी के मत का ध्यान रखते हुए ही फैसले लेते थे।

''मेरे पिता हमारे फैसले से कतई खुश नहीं थे और उन्होंने अपनी नाराजगी जाहिर भी की। इसके कारण परिवार में काफी तनाव बन गया। पर एक दिन उन्होंने खुद ही हथियार डाल दिए और परिवार के साथ खाने में शामिल हो गए। मैं अब भी नहीं जानती कि झगड़े को कैसे सुलझाया गया, परंतु हमें आगे बढ़ने की अनुमति तो मिल ही गई।'' यह वाकया सुनाते समय हेमा की आँखों में चमक—सी आ जाती है।

ऐसा कतई नहीं था कि चक्रवर्तीजी अपनी पत्नी के प्रति सहयोगपूर्ण नहीं थे। वे हमेशा हेमा के नृत्य सीखने को प्रोत्साहित करते थे और नृत्य की विधाओं और कलाकारों के साथ हेमा का परिचय कराने के साथ—साथ उसके कार्यक्रमों में भी उनकी भागीदारी रहती थी। (यह परंपरा आज भी उनके बड़े पुत्र कन्नन ने जारी रखी है।) ''मेरे डांस शोज के संदर्भ में मेरे अभिभावकों की जिम्मेदारियाँ भलीभाँति बाँटी गई थीं। अप्पा थिएटर के साथ समन्वय, ऑर्केस्ट्रा और कई सारे स्रोतों में से शोध के आधार पर जुटाए गए 'आईल' की नृत्य में नाटकीय रूप से प्रस्तुति का जिम्मा सँभालते थे और अम्मा का दायित्व था मेरी साज—सज्जा, शृंगार और कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना। जब भी मैं स्टेज पर होती तो दोनों मेरे दाएँ—बाएँ ही होते। अम्मा मेरे हर कदम पर नजर रखतीं और अप्पा की निगाहें दर्शकों की अभिव्यक्ति पर होती थीं। जब भी कोई मेरी प्रशंसा करता तो उनका चेहरा आनंद से भर उठता। बात बस, इतनी सी थी कि वे फिल्मों में मेरे काम करने के प्रति सहज नहीं हो पा रहे थे। उन दिनों उनका सारा

ध्यान इस बात पर था कि उनके ऑफिस के सहकर्मी क्या कहेंगे। यह संभव है कि किसी ने कुछ भी नहीं कहा, पर उनके लिए यह एक संवेदनशील मामला था और एक परिवार के रूप में हम उनकी चिंता का सम्मान करते थे।''

उस समय चक्रवर्तीजी अपने कॅरियर के अत्यंत व्यस्त दौर से गुजर रहे थे और साल के एक विशेष सत्र के दौरान घर पर उनकी उपस्थिति भी काफी अनियमित हो जाती थी। पूरा परिवार इस बात के लिए अभ्यस्त था कि उन तनावपूर्ण महीनों के दौरान उन्हें तंग न किया जाए। पर धीरे—धीरे कुछ नियम बदल भी रहे थे। हेमा की बंबई यात्राओं के दौरान जयाजी का उसके साथ जाना जरूरी हो गया था। इस कारण चक्रवर्तीजी थोड़े बेचैन—से हो गए थे; पर वे इसे छुपा भी रहे थे। जयाजी के लिए भी एक अनजान शहर में जवान पुत्री के साथ सामंजस्य कायम करना आसान नहीं था। वे हेमा की एक और अग्नि—परीक्षा के लिए भी तैयार नहीं थीं। तमिल फिल्म इंडस्ट्री के साथ अपने कड़वे अनुभव के उपरांत हेमा अब तुलनात्मक रूप से थोड़ी कम शरमीली थी; पर अभी भी थोड़ी अन्यमनस्कता बाकी थी। ''मैं काफी लंबी और पतली थी और आज की तरह उस जमाने में छरहरा होना सेक्सी नहीं कहलाता था।'' हिंदी फिल्म निर्माता के लिए यह एक राहत की बात थी कि हेमा इस भाषा से पूर्व परिचित थीं; हालाँकि उनके बोलने के ढंग में एक दक्षिण भारतीय लहजा था, पर यह कोई बड़ी बात नहीं थी। शूटिंग के पहले दिन निर्देशक महेश कौल ने जान—बूझकर हेमा के दृश्यों में संख्या अत्यंत कम रखी थी और उनमें डायलॉग तो थे ही नहीं। यह हेमा को उसके वातावरण, उसकी वेशभूषा और उसके चरित्र के साथ ढलने के लिए समय देने का उनका अपना तरीका था। इस फिल्म में हेमा का किरदार एक खानाबदोश (जिप्सी) लड़की का था।

परंतु शूटिंग के दूसरे ही दिन हेमा को अनुभव हुआ कि फिल्म शूटिंग बच्चों का खेल नहीं है। उसे राज कपूरजी के साथ एक दृश्य करना था, जिसमें वह उन पर लंबे देहाती संवादों की बौछार करते हुए एक जंगली बिल्ली की तरह झपटती है। पिछली शाम को दिए गए संवादों को कंठस्थ करके हेमा इस दृश्य के लिए तैयार थी, पर निर्देशक यह चाहते थे कि हेमा कंधों को झटकते समय भाव प्रकट करे। किंतु हेमा संवादों के साथ भंगिमाओं को समन्वित करने में असफल साबित हो रही थीं। उस दृश्य के चौदह रीटेक लिये गए और निर्देशक के प्रत्येक 'वंस मोर' (फिर से एक बार) कहने के साथ ही हेमा का आत्मविश्वास क्रमश: छूमंतर होता जा रहा था। अपनी कनखियों से वह अनंत स्वामी को रील की बरबादी के लिए कैमरामैन को घूरते हुए देखती थी और इसका अपराध—बोध हेमा को सता रहा था। वह अपनी माँ के भीतर बढ़ते तनाव और निर्देशक की झुँझलाहट को भी साफ देख पा रही थीं। इस दयनीय स्थिति को भाँपकर वे अपनी माँ के कानों में तमिल में फुसफुसाते हुए कहने लगीं कि वे फिल्म में काम नहीं करना चाहतीं और उन्हें घर वापस चले जाना चाहिए। जयाजी ने उन्हें खूब डाँटा और कहा कि इस तरह की मूर्खतापूर्ण बातें सोचने की बजाय उसे निर्देशक के दिशा—निर्देशों पर ध्यान देना चाहिए, ''तुम वह क्यों नहीं समझ पा रही हो, जो वे कह रहे हैं? आखिर यह इतना मुश्किल भी तो नहीं है।''

अपनी पहली फिल्म 'सपनों का सौदागर' के एक दृश्य में हेमा प्रसिद्ध एक्टर राज कपूर के साथ।

उसी क्षण हेमा के अंतर्मन में एक नए संकल्प ने जन्म लिया और पंद्रहवें टेक में दृश्य ओ.के. हो गया। सेट पर उपस्थित सभी लोगों ने राहत की साँस ली। हेमा का मन तो फूट—फूटकर रोने को हो रहा था; पर उन्होंने अपने आँसू रोक लिये और चुपचाप एक कोने में बैठी थीं, जब निर्देशक ने उन्हें अपने पास बुलाया। हेमा का दिल एक बार फिर बैठ गया। उन्हें लगा, शायद दृश्य के साथ सबकुछ ठीक—ठाक नहीं था और एक और टेक लेना पड़ेगा। हेमा के आते ही महेश कौल ने मुसकराते हुए गमले से एक गुलाब निकालकर उन्हें दिया। ''इस फूल को देखो और उन भावनाओं को अनुभव करो, जो यह तुम्हारे भीतर पैदा करता है। तुम जब खुश होगी तो इसके साथ तुम्हारा व्यवहार एकदम अलग होगा और जब उदास होगी तो एकदम दूसरी तरह का। अभिनय की माँग है अपनी भावनाओं को परखना और उन्हें कैमरे तक संप्रेषित करना।'' हेमा कहती हैं कि कई कलाकारों ने जरूर एक्टिंग स्कूलों में अभिनय सीखा होगा, परंतु उन्होंने तो अपने निर्देशक से ही सेट पर आमने—सामने होकर अभिनय का ज्ञान प्राप्त किया। ''महेश कौल मेरे अभिनय गुरु थे और उस फिल्म में आनेवाले सभी दृश्यों को उन्होंने खुद मेरे सामने प्रदर्शित किया। वह एक कठोर शिक्षक थे और चाहे जो कुछ भी जो जाए, वे किसी भी दृश्य को तब तक पूरा नहीं मानते थे, जब तक वे पूरी तरह से संतुष्ट न हो जाएँ। इसमें लगनेवाले समय की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। ऐसा सिर्फ मेरे साथ नहीं था। मेरे साथ काम करनेवाले सभी लोगों पर यही बात लागू होती थी। कभी—कभी वे बहुत रूखे हो जाते थे और कभी एकदम से नरम। जब भी वे मुझे किसी दृश्य के प्रति उलझन में और संघर्ष करते हुए देखते थे, वे उसे इस तरह से समझाते थे जैसे कोई बच्चे को समझाता है और फिर सबकुछ एकदम आसान हो जाता था।'' यह सब बताते हुए हेमा आज अभिभूत—सी हो जाती हैं। जैसे—जैसे फिल्म का काम आगे बढ़ा, निर्माता ने हेमा को उर्दू सिखाने के लिए एक मौलवी को नियुक्त किया, ताकि उनका लहजा अच्छा हो सके। हेमा को भी इस खूबसूरत जुबान के बारीक पहलुओं को सीखने में काफी आनंद आया।

उधर जयाजी की अनुपस्थिति में चक्रवर्तीजी ने घर की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी और इसमें लड़कों ने बखूबी उनका साथ दिया। हेमा के छोटे भाई जगन ने एकदम से उन्हें तंग करना बंद कर दिया। ''यह मेरे लिए एकदम से चौंकानेवाला था।'' हेमा बताती हैं, ''मैं जगन के साथ बिताए उन धमाकेदार पलों को याद करने लगी थी, जब वह मेरी नृत्य और संगीत (जिसमें मैं 'जाति' लिखा करती थी) की पुस्तकों को फाड़ देता था और बदला लेने के लिए मैं उसके चेहरे पर स्याही की बोतल उड़ेलकर भाग जाया करती थी, ताकि अम्मा की पिटाई से बच सकूँ। अचानक ही वे निर्दोष—से पल मेरी जिंदगी से गायब हो गए थे। जब भी मैं बंबई से शूटिंग के बाद घर आती तो सबसे पहले दौड़कर अपने कमरे में जाती थी। यह देखने कि मेरी 'जाति' की किताबें ठीक—ठाक हैं कि नहीं। वे हमेशा अछूती ही होती थीं। यह मेरे जीवन में एक नए दौर की शुरुआत जैसा था।''

❑

3

स्टारडम की सुगंध

अधिक से अधिक फिल्में करते हुए हेमा की कैमरे को लेकर झिझक भी खत्म हो गई। फिल्म 'शराफत' के एक दृश्य में हेमा।

जगन अपने निवास—स्थान में आए अचानक परिवर्तन के कारण अव्यवस्थित हो गया था। जयाजी का लगभग सारा समय अब हेमा के साथ ही गुजरता था और दूसरे भाई—बहन अभी इस चीज के लिए न तो पूरी तरह से तैयार थे और न ही अभ्यस्त थे। उन सबके लिए यह परेशानियों भरा दौर था। परंतु जल्द ही पूरे परिवार ने अपने आप को सिनेमा जगत् की अनवरत चर्चा के अनुरूप ढाल लिया। जयाजी अब चक्रवर्तीजी से नया घर ढूँढ़ने, वाहन आदि की व्यवस्था, महीने के खर्चों, यहाँ तक कि हेमा के नए एवं विस्तृत वार्डरोब के लिए अलग बजट के बारे में भी खुल कर चर्चा करने लगी थीं। उन दिनों उन्होंने एक नया काम शुरू किया था और बंबई में रहनेवाले सभी दोस्तों, रिश्तेदारों एवं पहचानवालों के नंबर एक डायरी में लिखती रहती थीं। ''एक दिन यह बहुत काम आएगा।'' पूछने पर यह उनका एक दार्शनिक—सा जवाब होता था।

जैसे—जैसे बंबई के लिए महाप्रस्थान का समय निकट आ रहा था, जयाजी और हेमा दोनों के अंदर की घबराहट बढ़ रही थी। अपने घर की यादों, परिवार के खुशनुमा माहौल से एक झटके में विलग हो जाना किसी के लिए भी आसान नहीं था। बंबई में उनका ज्यादातर समय स्टूडियो के दमघोंटू वातावरण में व्यतीत होता था और ऐसे में परिवार के पास वापस आने की चाह बनी रहती थी।

जब जयाजी वापस घर लौटीं तो घर की हवा में एक अलग सी खुशबू घुल गई। चक्रवर्तीजी और दोनों लड़के उनका सान्निध्य पाकर खिल—से उठे। जयाजी ने भी उन्हें बंबई के फिल्मी जगत् की चटखारेदार कहानियों के साथ पसंदीदा जायकेदार खाना खिलाते हुए खुश करने में कोई कोर—कसर नहीं छोड़ी थी। ''मेरे दोनों अभिभावक एक—दूसरे से एकदम अलग थे, जैसे कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव; परंतु इसके बावजूद उनका आपसी सामंजस्य लाजवाब था।'' हेमा याद करती हैं, ''शायद कला और संगीत के प्रति उनके अटूट प्रेम ने उन्हें एक अदृश्य डोरी से बाँध रखा था। अप्पा को नृत्य और नाटक के बारे में काफी कुछ मालूम था, पर उन्होंने कभी हम पर खुलकर जाहिर नहीं किया। उनके उलट अम्मा स्वत:स्फूर्त और साहसी प्रवृत्ति की थीं। एक बार जब वे कुछ करने की ठान लेती थीं तो संसार की कोई भी शक्ति उनके निश्चय को डिगा नहीं पाती थी।'' यह जयाजी का दृढ संकल्प ही था,

जिसने सारे परिवार को बंबई के लिए अंतत: मना ही लिया।

शुरुआत में हेमा और उनकी माँ हेमा के संरक्षक अनंत स्वामी के चेंबूर (मुंबई का पूर्वी उपनगर) में स्थित आवास में ठहरे। वहाँ वे अनंतजी के परिवार के साथ लगभग एक साल तक रुके। ''वे लोग वाकई में शानदार आतिथेय थे; परंतु व्यावहारिक तौर पर किसी परिवार के साथ लंबे समय तक रहना अटपटा—सा होता है। एक साल के अंदर ही मैंने कई सारी फिल्में साइन कर ली थीं और अब मुझे नियमित रूप से शूटिंग के लिए जाना होता था। इसके लिए हमें बांद्रा में एक फ्लैट की आवश्यकता महसूस हुई और हम लोग वहीं आ गए।'' उनके द्वारा किराए पर लिया गया पहला अपार्टमेंट मलाबार हिल की एक गगनचुंबी इमारत में था। यह एक प्रसिद्ध इलाका था, परंतु हेमा और जयाजी यहाँ के वातावरण में हमेशा असहजता महसूस करती थीं।

''मैं अपनी सारी जिंदगी भूतल पर स्थित मकान में रहती आई थी और अब सबसे ऊँचे माले से सूर्योदय देखना काफी अजीब सा लगता था। खिड़की से नीचे सड़कों पर कारों के तेजी से गुजरते देखने का नजारा सुंदर तो था, पर वह हमें यह भी एहसास करा देता था कि लोगों से भरे इस बंबई शहर में ऐसा कोई नहीं है, जिसे आप अपना कह सकें। जब आप एक बड़े से भरे—पूरे परिवार में रहने के अभ्यस्त हों तो उनके बिना गुजारा करना मुश्किल होता है। अगर परिवार का एक भी सदस्य बाहर हो तो सबकुछ उजड़ा—उजड़ा—सा लगता है। इससे पहले हमारा परिवार कभी अलग नहीं हुआ था और अब मुझे अपने भाइयों के साथ रहने की कोशिश सता रही थी। दिन तो स्टूडियो के अंदर किसी तरह बीत जाता था, पर शाम ढलते ही हम माँ—बेटी इस अनजान शहर में बहुत अकेलापन महसूस करती थीं। अप्पा समय—समय पर हमसे मिलने आते रहते थे और उन्हें इस किराए के फ्लैट में होनेवाली हमारी असहजता का अनुमान हो गया था और उन्होंने तेजी के साथ पश्चिमी उपनगरों में एक बँगले की खोज शुरू कर दी। जैसे ही उन्हें जुहू में एक उपयुक्त घर मिल गया, हम वहीं शिफ्ट कर गए।''

नया घर चक्रवर्ती परिवार के दिल्ली और मद्रास स्थित आवासों का अजीब सा मिश्रण जैसा था। घर के चारों ओर पर्याप्त रूप से हरियाली थी, पर सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि यह भूतल पर स्थित था। ''स्टूडियो जाने और आने के क्रम में मैं हमेशा जुहू चौपाटी से होकर गुजरती थी और मुझे समंदर को देखना बहुत अच्छा लगता था।... मुझे बीच की सुगंध से प्यार—सा हो गया था। उन दिनों बालू और पानी दोनों बिल्कुल अलग रंग के थे। बालू सुनहरा दिखता था तो पानी गहरे हरे रंग का।''

कुछ ही समय के अंतराल में हेमा ने अपने आप को बंबई में स्थापित कर लिया और उनके भाई एवं पिता भी सदा के लिए वहीं आ गए। फिल्म स्टूडियो और सिनेमाघरों में हेमा के द्वारा पैदा की जानेवाली सनसनी का रंच मात्र भी असर चक्रवर्ती घराने के दैनिक कार्यकलाप पर नहीं पड़ा था। वहाँ आज भी दिन की शुरुआत देवोपासना से होती है और अंत परिवार के सभी सदस्यों के एक साथ बैठकर शाकाहारी भोजन का आनंद उठाते हुए। चक्रवर्ती बाबू परिवार के पितृ पुरुष थे और हर किसी के सपने को पूरा करने के लिए कृतसंकल्प थे।

उन्हें अपने पुत्रों से सदैव उच्च अपेक्षाएँ थीं और अब, जब उनकी बेटी एक कलात्मक कॅरियर में पूरी तरह से रच—बस गई थी तो हेमा से भी वे उसी तरह के उच्च प्रदर्शन की आस रखते थे। ''अप्पा अपने पूरे जीवनकाल में एक कठिन परिश्रमी व्यक्ति थे और अपनी संतानों से भी इसी तरह के आचरण की अपेक्षा उन्हें थी। मेरी पहली फिल्म व्यावसायिक रूप से कोई खास सफल नहीं थी, परंतु बॉक्स ऑफिस पर इसके ठंडे प्रदर्शन के बावजूद मुझे ढेर सारी फिल्में मिल चुकी थीं और उनमें से ज्यादातर सफल भी रहीं। मैं नहीं जानती, क्यों; पर शायद किसी ने भी 'सपनों का सौदागर' की असफलता का कोई शोक नहीं मनाया। न तो राज कपूर साहब, न मेरे निर्माता गण—कोई भी चिंतित नहीं था और मुझे तो उस वक्त बॉक्स ऑफिस पर फिल्म की सफलता या असफलता का कोई ज्ञान ही

नहीं था।''

भाग्य की देवी जैसे हेमा पर मुसकरा रही थी और ज्यादातर बड़े निर्माताओं की फिल्में हेमा को शुरुआत में ही मिल गईं। उन्होंने मदन मोहला की 'शराफत' एवं विजय आनंद की 'जॉनी मेरा नाम' में काम किया और दोनों ही फिल्में जबरदस्त हिट साबित हुईं। ''असित दा को हमेशा अपने तकनीकी कौशल की बजाय फिल्म की कहानी पर ज्यादा विश्वास होता था। उनकी सभी फिल्मों का भावनात्मक पहलू बहुत मजबूत रहता था।'' 'जॉनी मेरा नाम' का जिक्र करते हुए हेमा मानती हैं कि यह सही वक्त पर सही कलाकारों के साथ बनी एक शानदार फिल्म थी। सन् 1970 में इस फिल्म के रिलीज होने के बाद से देव आनंद और हेमा ने आठ फिल्में एक साथ कीं। 'तेरे मेरे सपने' (1971), 'शरीफ बदमाश', 'छुपा रुस्तम' और 'जोशीला' (1973), 'अमीर गरीब' (1974), 'जानेमन' (1976), 'सच्चे का बोलबाला' (1989) और दशकों बाद बनी 'सेंसर' (2001), पर इनमें से कोई भी 'जॉनी मेरा नाम' की जादुई सफलता को छू तक नहीं पाई।

'जॉनी मेरा नाम' का यादगार गीत 'ओ मेरे राजा...' बिहार की राजधानी पटना से 100 कि.मी. दक्षिण—पूर्व में स्थित राजगीर की स्काई ट्रॉली पर फिल्माया गया था। कलाकारों को एक रोप वे के द्वारा पहाड़ी के दूसरी ओर बने बौद्ध मंदिर (स्तूप) तक जाना था और उस वक्त यातायात का एक यही साधन उपलब्ध था। रास्तें में ही विजय आनंद ने अचानक रोप वे पर ही गीत की कुछ पंक्तियों को शूट करने का तय कर लिया। अचानक फिल्मांकन की सहजता के लिए उन्होंने हेमा को देव साहब की गोद में बैठने को कहा। रोप वे ट्रॉली को इस दूरी को तय करने में कुछ ही मिनट लगने थे; परंतु एक शरारती व्यक्ति ने बीच रास्ते में रोप वे का विद्युत् प्रवाह बंद कर दिया। ट्रॉली रुक गई और हेमा तथा देव साहब बीच आकाश में ही अटक गए। हेमा, जिन्हें ऊँचाई से डर लगने का आंतरिक भय है, अत्यंत भयभीत हो उठीं। उनका ध्यान बँटाने के लिए देव साहब उन्हें काफी देर तक चुटकुले सुनाते रहे। जल्द ही दोषी व्यक्ति पकड़ा गया, ट्रॉली फिर से चल पड़ी। हेमा कहती हैं, ''आज भी जब मैं यह फिल्म देखती हूँ तो उस दृश्य से जुड़ा डर लौट—सा आता है।...यह एक वाकई मजेदार बात है कि जब भी आप किसी पुरानी फिल्म के अंश या फोटोग्राफ देखते हैं तो लगभग भुला दी गई बातें एकदम से पूरे दिलो—दिमाग पर छा जाती हैं।''
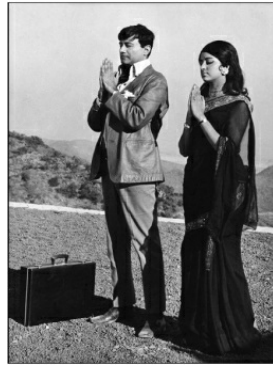
हेमा मालिनी की देव आनंद के साथ सबसे कामयाब फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' ***का एक दृश्य।***

जैसे—जैसे हेमा का करियर बढ़ता गया, उनके संरक्षक अनंत स्वामी को एक खतरा—सा महसूस होने लगा और अपनी उपस्थिति के महत्त्व को बनाए रखने के लिए उन्होंने हेमा और जयाजी तक सूचना पहुँचाना बंद कर दिया। जयाजी उनके व्यवहार के प्रति हमेशा आशंकित रहती थी; परंतु यह रिश्ता एकदम से नहीं तोड़ा जा सकता था, क्योंकि वे एक अनुबंध के तहत जुड़े हुए थे। उन्होंने बिना कोई सवाल पूछे कई महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर दिए थे और अब उससे निकलने का कोई आसान रास्ता नहीं था। शुरू में जयाजी ने हेमा को इस आसन्न

तनाव से दूर रखने का हरसंभव प्रयत्न किया; परंतु शीघ्र ही दबाव इतना बढ़ गया कि उनके लिए अकेले इतना कुछ झेलना संभव नहीं रहा। लेखकों और निर्देशकों की लगातार शिकायतें आ रही थीं कि उन्हें हेमा तक पहुँचने से रोका जा रहा है और जयाजी को हेमा को मिलनेवाली भुगतान राशि या शूटिंग के कार्यक्रम की कोई जानकारी नहीं थी।

हिंदी सिनेमा की मलिका : कठोर परिश्रम और निष्ठा से मिली सफलता।

''एक दिन मेरी माँ और वे (अनंत स्वामी) एक—दूसरे से गरमागरम बहस में उलझे पड़े थे। उस बहस का कोई नतीजा निकलता दीख ही नहीं रहा था। हताशा में मेरी माँ ने अनंत स्वामी के हाथ से अनुबंध के कागजात छीन लिये और उसके टुकड़े—टुकड़े कर डाले। अनंत स्वामी को उनसे इसकी कोई अपेक्षा ही नहीं थी, न ही अम्मा ने ऐसा कुछ करने का सोचा था। अम्मा का यह कदम अत्यंत भीषण दबाव में उठाया गया था। वे एक शेरनी की तरह अपने शावक की रक्षा कर रही थीं। एकाएक एक बंधन, जो पूरे जन्म साथ चलनेवाला लगता था, टूट गया। मैं और मेरी माँ अब आजाद थे। यह एक उल्लास का क्षण था और शायद इसका यही एक तरीका बचा रह गया था।''

इन सबके बाद एक लंबी कानूनी प्रक्रिया चली, जिसका तीनों संबद्ध व्यक्तियों के अंतर्मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। कई दिनों तक किसी के अंदर इसके परिणामों के बारे में बात करने का साहस ही नहीं हुआ। मीडिया ने इसे एक ड्रामा की तरह बढ़ा—चढ़ाकर प्रस्तुत किया और कई दिनों तक यह पहले पन्ने की सुर्खियों में छपता रहा; परंतु उनमें से किसी ने कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दिखाई और शीघ्र ही मामला ठंडा पड़ गया। आज हेमा इस सारे मामले को रफा—दफा करने का विचार रखती हैं। ''हम बिना किसी बड़े गिले—शिकवे के अलग—अलग रास्तों पर चल पड़े और मैं आज भी यह मानती हूँ कि अनंत स्वामी एक अच्छे दिलवाले इनसान थे और अगर उनका साथ न मिला होता तो मैं कभी भी फिल्मों में नहीं आ पाती।'' हेमा एक निर्णायक स्वर में कहती चली जाती हैं।

अनंत स्वामी की अनुपस्थिति में जयाजी ने अपनी बेटी के करियर को मैनेज करने की जिम्मेदारी भी सँभालनी शुरू कर दी। अब वे खुद ही हेमा की पेमेंट्स और शूटिंग के तरीकों का हिसाब—किताब रखने लगीं। जयाजी की यह नई भूमिका दोनों महिलाओं के लिए परेशानी का कारण भी बन गई थी, क्योंकि जयाजी जिन तारीखों के लिए किसी निर्माता को 'हाँ' कहती थीं, हेमा उन्हीं दिनों किन्हीं अन्य निर्माता के साथ काम करना चाहती थीं। पर ये सब बड़े ही मामूली झगड़े थे और जल्द ही सुलझा लिये जाते थे। हेमा कहती हैं कि उनके फिल्मी करियर में बार—बार आनेवाले उतार—चढ़ाव के बावजूद उनका अपनी माँ के साथ रिश्ता अंत तक सौहार्दपूर्ण ही रहा। ''वे मेरे लिए सांत्वना का स्रोत थीं। उनसे मुझे बल मिलता था और एक तरह से वे ही मेरा लक्ष्य भी थीं।''

जब हेमा और उनका परिवार जुहू के बँगले में रह रहा था, तभी चक्रवर्ती बाबू ने जुहू विले पार्ले डेवलपमेंट स्कीम के तहत 12वें रोड पर स्थित तीन मंजिले एक बँगले को खरीद लिया। यह ठीक वैसा ही घर था, जिसका सपना चक्रवर्तीजी ने अपनी बेटी के घर के रूप में देखा था। यह एक शांत—सी गली में गुलमोहर के वृक्षों से आच्छादित जगह पर बना हुआ था। बँगले की चारदीवारी के आस—पास एक बड़ा सा बगीचा भी था। तीन तलों में

फैले इस बँगले में पूरे चक्रवर्ती परिवार (आनेवाले समय में इसमें जयाजी का मायका भी शामिल हो गया) के रहने के लिए पर्याप्त जगह थी। सभी शयन कक्ष ऊपरी तल पर बने थे और भूतल रसोई, भोजन कक्ष, कार्यालय एवं कर्मचारियों के रहने की जगह दो भागों में बाँटकर बनाए गए थे।

हर रोज सुबह—सवेरे इस बँगले पर फिल्म निर्माताओं का मेला—सा लगा रहता था, जो हेमा को साइन करने के लिए लालायित रहते थे और अपने प्रस्तावों को पेश करने के लिए लंबी प्रतीक्षा को भी तत्पर रहते थे। हर कोई जानता था कि हेमा शूटिंग के लिए हर रोज सुबह नौ बजे अपने घर से ही निकलती हैं। पौने नौ बजे उनका मेकअप मैन और हेयर ड्रेसर अपने पूरे ताम—झाम के साथ नीचे आते और कार में बैठ जाते थे। नौ से सवा नौ के बीच हेमा स्वयं नीचे उतरतीं और बिना किसी की तरफ देखे चुपचाप बरामदे में आकर कार में बैठ जाती थीं। वे सभी निर्मातागण हर रोज आते रहते, जब तक कि हेमा अनुगृहीत होकर उनकी फिल्म के लिए 'हाँ' न कर दें। मोबाइल और इंटरनेट के जमाने में सितारों का यह जलवा आज तो जैसे अकल्पनीय ही है।

हेमा उस जमाने में हिंदी सिनेमा की सम्राज्ञी थीं और सिनेमा जगत् के सभी बड़े पुरुष सितारे—धर्मेंद्र, जीतेंद्र, संजीव कुमार सहित उनकी खूबसूरती के परवाने बने हुए थे। इस सबके कारण फिल्म के सेट पर कई ऐसे वाकए हो जाते थे, जब ये सितारे इस चुंबकीय आकर्षण को सहन नहीं कर पाते और खुलकर हेमा के साथ फ्लर्ट करते नजर आते थे। कभी—कभी ये प्रस्ताव दबी—छुपी आवाज में पर्चियों पर लिखकर और आँखों के इशारे से भी प्रस्तुत किए जाते थे। हेमा के निजी कर्मियों—मेकअप मैन, हेयर ड्रेसर आदि का उपयोग संदेशवाहक के रूप में किया जाता और कभी सहकर्मी और परिवार के सदस्यों के माध्यम से गंभीर प्रस्ताव भेजे जाते थे। मजेदार बात यह थी कि चक्रवर्ती बाबू को प्रस्तावकों की इस भीड़ में से कोई भी स्वीकार्य नहीं था। वे उत्तर भारतीय फिल्मी नायकों के प्रति अपनी घृणा और पूर्वग्रह को छिपाने का कोई प्रयास भी नहीं करते, हालाँकि इसके लिए उनके पास एक ठोस कारण भी था।

चक्रवर्ती बाबू और जयाजी उन दिनों की स्टार अभिनेत्री वैजयंती माला के बारे में फिल्मी गलियारों में होनेवाली चटकदार गप्पबाजियों को लेकर अत्यंत चिंतित रहते थे। वैजयंती माला एक प्रतिष्ठित आयंगर ब्राह्मण परिवार से आती थीं और हेमा के अभिभावकों के लिए वे एक आदर्श थीं; परंतु एक उत्तर भारतीय फिल्मी कालाकार के साथ उनके अफेयर की चर्चा इस छवि को धूमिल कर रही थी। हेमा के अभिभावक यह नहीं चाहते थे कि हेमा के साथ भी यही इतिहास दोहराया जाए।

हेमा की जगह और कोई भी अन्य स्त्री पुरुष जाति के अपने प्रति इस अथाह आकर्षण को देखकर गर्वित हो जाती और फूली न समाती; पर हेमा इन प्रेम प्रस्तावों के कारण अपनी जिंदगी में होनेवाली उथल—पुथल को लेकर बहुत भयभीत—सी रहती थीं। ''मेरे पास पैसा था, प्रसिद्धि थी, पर मन की शांति खो—सी गई थी। मैं दिन—रात शूटिंग में ही व्यस्त रहा करती थी और मेरे पास रुकने या विचार करने का समय था ही नहीं।'' हेमा के कॅरियर में तेज गति से हो रहे परिवर्तनों के प्रति उनके अभिभावकों के मन में मिश्रित—से भाव थे और अपने अति संरक्षण के जोश में जयाजी परिवार या कुल के बाहर के किसी भी व्यक्ति के साथ हेमा की निकटता बरदाश्त नहीं कर पाती थीं।

शूटिंग के समय भी अगर हेमा सेट पर किसी हीरो के साथ मित्रवत् व्यवहार करती थीं तो जयाजी को वह नागवार गुजरता था।

वे हेमा के लगभग सभी दृश्यों के समय उपस्थित रहती थीं और जब हेमा के किसी हीरो के साथ अंतरंग दृश्य फिल्माए जाने होते थे तो निर्देशकों को जयाजी के अचानक आ धमकने का भय सताता रहता था।

‘‘एक सीमा के बाहर यह दम घुटने जैसा था; पर यह स्थिति हमने स्वयं पैदा की थी। अपने पूरे पालन—पोषण के दौरान मैंने कभी किसी निजी स्थान के बारे में विचार ही नहीं किया था और अब इसके लिए माँग करना मेरे लिए संभव नहीं था। बाकी अभिनेत्रियाँ अपने कई सारे राज सबसे छुपाकर रखती थीं, पर मैं ऐसा नहीं कर पाई। मेरी तो अम्मा के साथ हर छोटी—बड़ी बात को साझा करने की आदत—सी पड़ चुकी थी।’’

किसी दृश्य के बीच में अगर हेमा अपनी माँ का चेहरा सख्त होते देखती थीं तो उनके हाव—भाव जकड़—से जाते थे। निर्देशकों को यह सब हताश कर देता था। वे हेमा से अपने दृश्यों में और भाव लाने की विनती करने लगते थे और पीठ पीछे इसके बारे में शिकायतें भी होती रहती थीं।

हेमा मालिनी और धर्मेंद्र : हिंदी सिनेमा का सबसे खूबसूरत जोड़ा 'तुम हसीन, मैं जवान' के एक दृश्य में।

इन सब बातों का जयाजी के सख्त पहरे पर कोई असर नहीं पड़ा। फिल्म निर्माताओं और निर्देशकों के लिए हेमा से अपने नायकों के साथ गहन आलिंगन जैसे दृश्यों को फिल्माना असंभव—सा हो गया था। जैसे ही कोई अभिनेता उनके पास आते थे, वे सिमट—सी जाती थीं। फिल्म पत्रिकाओं ने उन पर 'ठंडी मालिनी' और 'आइस मेडन' जैसे लेबल चस्पाँ करने शुरू कर दिए और हेमा ने इसका कोई खास प्रतिरोध भी नहीं किया, ''उन्हें मेरे बारे में कोई भी राय बनाने का हक था। सच्चाई यह है कि मैं तो सारी यूनिट के साथ घुलना—मिलना चाहती थी; पर तमाम प्रयासों के बावजूद मैं अपना संकोच छोड़ नहीं पाती थी। मैं आशा करती थी कि दूसरे लोग मेरी इस दुविधा को समझेंगे और इसे स्वीकार करते हुए भी मुझे अपनाएँगे; पर ऐसा हो न सका।'' हेमा कुछ सोचते हुए कहती हैं। ''शायद वे मेरे सितारेवाली छवि के कारण सशंकित हो जाते हैं।''

हेमा और धर्मेंद्र के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वे पहली बार सन् 1969 में एक फिल्म के प्रीमियर के दौरान मिले। दोनों यह मानते हैं कि उनमें पहली नजर में ही एक—दूसरे के लिए आकर्षण महसूस हो गया था। धर्मेंद्र ने अपनी बगल में बैठे शशि कपूर के कान में फुसफुसाते हुए कहा था, ''कुडी चंगी है।'' हेमा, जो पंजाबी के कुछ शब्द जानती थीं, यह सुनकर शरमा—सी गईं। यह एक संयोग ही है कि उसी साल उन दोनों ने एक साथ चार फिल्में साइन कीं, जिनमें से पहली—'तुम हसीं मैं जवाँ' 1970 में प्रदर्शित हुई। 'नया जमाना' 1971, 'राजा जानी' और 'शराफत' 1972 में प्रदर्शित हुईं।

धर्मेंद्र और हेमा का यह प्रेम 'सीता और गीता' फिल्म के सेट पर खुलकर बढ़ा और इस फिल्म के निर्देशक रमेश सिप्पी इस जोड़ी के साझा राजदार बनकर उभरे। धर्मेंद्र को हेमा की जो बात सबसे अधिक पसंद थी, वह थी उनकी खूबसूरती और उनकी सादगी। हेमा मानती हैं कि वह धर्मेंद्र की उपस्थिति में हमेशा सहज महसूस किया करती थीं। शायद बहुत लोगों को मालूम न हो, पर सच यह है कि 'सीता और गीता' की नायिका के रूप में हेमा पहली पसंद नहीं थीं। यह भूमिका शुरू में उस जमाने की सदाबहार अभिनेत्री मुमताज को दी जाने वाली थी; परंतु उनकी तारीखें नहीं मिलने के कारण यह फिल्म हेमा की झोली में आ गई। जब रमेश सिप्पी ने हेमा से इस भूमिका के लिए संपर्क किया तो दोहरे चरित्र की कठिनाइयों की वजह से वे हिचक रही थीं।

''सादगीवाला चरित्र तो आसान था, पर कॉमेडीवाले चरित्र को करना आसान नहीं था। इसके लिए मुझे कई सारे अटपटे काम जैसे कि रस्सी पर चलना, ऊँची कूद और पंखे पर बैठना आदि करने थे। जब भी मुझे ये कलाबाजियाँ करनी होती थीं, मैं हमेशा सिप्पीजी से इसे करके दिखाने पर जोर दिया करती थी। इस कारण उन्हें सीढ़ी पर चढ़ने, पंखे के डैनों पर बैठकर पैर हिलाने का काम भी करना पड़ा। इन सभी दृश्यों में मैंने उनकी नकल ही उतारी है।'' यह सब कहते हुए हेमा की मुसकान देखने लायक थी।

इस फिल्म के दो साल बाद 'शोले' की शूटिंग के समय इस जोड़ी के बीच की 'केमिस्ट्री' सेट पर उपस्थित हर व्यक्ति को साफ—साफ दिखाई देने लगी थी। ये दोनों ही कलाकार काफी सफल और आकर्षक व्यक्तित्व के थे। धर्मेंद्र हिंदी सिनेमा जगत् के बेताज बादशाह थे। हेमा की गिनती तो देश भर की सबसे योग्य कुमारी कन्या के रूप में होती थी। इस फिल्म के फिल्मांकन में काफी वक्त भी लगा था। कहा जाता है कि जब बँगलौर में इसकी शूटिंग चल रही थी तो धर्मेंद्र कई बार लाइनमैन से विनती करते थे कि वह गलतियाँ करे और उन्हें बार—बार हेमा को बाँहों में भरने का अवसर मिल सके। उनके इस फलते—फूलते रोमांस की सच्ची—झूठी कहानियाँ दूसरी फिल्मों के सेट से भी लगातार आ रही थीं और इस सब के कारण हेमा के घर का अंदरूनी तनाव चरम पर पहुँच गया था।

जैसे—जैसे हेमा का धर्मेंद्र के प्रति आकर्षण बढ़ता गया, इसका असर उनके परिवार के साथ रिश्तों में बढ़ते तनाव के रूप में दिखने लगा था। हेमा के भाई और पिता इस बाँके जवान जाट हीरो के हेमा के प्रति किसी भी तरह के झुकाव को नापसंद करते थे। जयाजी की नाराजगी कुछ कम दृश्य थी, परंतु दिल के किसी कोने से वे भी अपने पति की चिंताओं से सहमत ही थीं। फिर भी, तनाव के न बढ़ने देने की चिंता के कारण वे कभी भी अपने मनोभावों को प्रदर्शित नहीं करती थीं। फिर भी, जब कभी हेमा से जुड़ी अंतरंग खबरें प्रकाशित होती थीं, घर में कलह हो ही जाता था। चक्रवर्ती बाबू जयाजी से सवाल—जवाब करते और माँ को अपनी बेटी की रक्षा के लिए सबकुछ समझाना पड़ता था। इन झगड़ों का उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ने लगा था। शायद इसे संयोग ही कहें, पर उसी कालखंड में जयाजी की छोटी बहन शांता अपने दांपत्य विच्छेद के कारण अपने मायके वापस आ गईं। जयाजी के आग्रह के बाद चक्रवर्ती बाबू ने शांता को अपने साथ रहकर हेमा की साथी बनने के लिए मना लिया। इस निर्णय ने बुआ और भतीजी दोनों को काफी राहत प्रदान की। पहली बार हेमा को कोई ऐसा साथी मिला, जिससे वह खुलकर अपने दिल की बातें कह सकें और शांता को भी बदले हुए वातावरण ने अपने पुराने जख्मों पर मलहम लगाने का अवसर प्रदान किया। पर सबसे बड़ी बात थी कि इस नई व्यवस्था के कारण जयाजी को चैन की साँस मिली।

जयाजी ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय यह लिया कि अब उन्होंने हेमा के साथ शूटिंग पर जाना छोड़ दिया और उनकी जगह शांता अब हेमा की परछाईं बन हर जगह जाने लगीं। जयाजी अब फिल्म के निर्माता—निर्देशकों के साथ बैठकर तारीख आदि तय करने का काम करने लगीं; पर उन्हें हेमा से बिल्कुल ही अलग रहना गवारा नहीं थी। इसलिए वे अकसर सुबह का काम निपटाकर दिन के समय शूटिंग पर पहुँच जाया करती थीं। जब वे ऐसा नहीं कर पातीं तो हेमा को घर पर लंच करने के लिए बुला लिया करती थीं।

हेमा को अपने समय का यह अतिक्रमण कतई पसंद नहीं था; परंतु वह रोज की इस रुकावट के बाद भी अपनी माँ की आज्ञाओं को टाल नहीं पाती थीं। यह सबकुछ एक दु:स्वप्न बनता जा रहा था। शूटिंग काफी देर तक रुकी रहती थी और निर्मातागण समय की इस बेतहाशा बरबादी को कतई स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। भोजन अवकाश के बढ़े हुए अंतराल के कारण शूटिंग भी देर से खत्म होती थी और यह अभिनेताओं को भी नागवार गुजरता था। हेमा को उम्मीद थी कि उनकी माँ फिल्म निर्माण की बढ़ती जटिलताओं को समझेंगी और इस तरह की माँगों को कम कर देंगी; परंतु जयाजी उस वक्त एक झंझावात वाले दौर से गुजर रही थीं और उन्हें हेमा का सहारा चाहिए था। अपनी बेटी के दैनिक कार्यक्रमों से विलग होते ही उन्हें पहचान खो जाने का अनुभव होता था और जरा सी बात पर विस्फोटक वातावरण बन जाता था। हेमा इस तरह के अतिवादी व्यवहार को समझ नहीं पा रही थीं और उनके अंदर घर पहुँचकर होनेवाली पूछताछ का भय समाता जा रहा था।

जयाजी को शक था कि हेमा शूटिंग के बाद अपना समय कहीं और बिताती हैं। हेमा को हर बार अपनी सफाई

पेश करना आपत्तिजनक लगता था। एक दिन वह अपनी शूटिंग से वापस आकर अपने ऊपर माले के कमरे में मेकअप उतार ही रही थीं कि जयाजी हमेशा की तरह उसके कक्ष में घुस आईं और सवालों की बौछार—सी लगा दी। हेमा के जेहन में कुछ अजीब सा घटा और उन्होंने कुरसी पर बैठे—बैठे शांत स्वरों में अपनी माँ को फिल्मी दुनिया छोड़ने का अपना फैसला सुना दिया। ''मैंने उनसे कहा कि मैं रोज—रोज के तानों और दबावों से तंग आ चुकी हूँ और इसे झेलना मेरे वश का नहीं है। यह शायद पहली बार था, जब मैंने उनसे एक वयस्क के रूप में बात की थी और मैं साफ देख सकती थी कि इससे वे बहुत आहत हुई थीं। पर शायद मेरे लिए स्पष्ट निर्णय करने का समय आ चुका था। मैंने उन्हें याद दिलाया कि मैंने फिल्म लाइन उनके सपनों को पूरा करने के लिए ज्वॉइन की थी। अब यह निर्णय भी उन्हीं को करना था कि मैं उनके दिए लक्ष्यों को पाने के लिए संघर्ष करूँ या सदा के लिए इस रुपहली दुनिया को अलविदा कह दूँ। इसके बाद उन्होंने सारे मामले की गंभीरता को समझा और अपने कदम पीछे खींच लिये। शायद आज मैं उनके दृष्टिकोण को उस समय की तुलना में ज्यादा अच्छी तरह समझ सकती हूँ। उनके लिए अपनी इस सबसे खास संतान से विलग होना आसान नहीं था। यह मेरे लिए भी आसान नहीं था; पर गर्भनाल जैसा यह बंधन कभी तो टूटना ही था। शायद यही स्टारडम की नियति (या कीमत) होती है। एक सीमा के बाद कुछ निकटतम बंधनों को काटना ही होता है, ताकि रॉकेट निर्बाध रूप से ऊँचाइयों को छू सके ।''

हेमा से अलग होने के कारण उत्पन्न एकाकीपन ने जयाजी को स्वाभाविक रूप से आहत कर दिया था। हेमा को परिवार और बाकी दुनिया के आक्षेपों से बचाने की जिम्मेदारी ने उन्हें कई तरह की अवांछित चिंताओं के बोझ तले दबा—सा दिया था। एकमात्र शख्स, जिसके विरुद्ध उन्होंने कभी बगावत नहीं की, वे थे चक्रवर्ती बाबू। वे उनके निर्णयों पर हमेशा आँखें बंद करके विश्वास कर लिया करती थीं। हेमा याद करते हुए बताती हैं, ''मैं करीब बीस साल की ही थी और अप्पा मेरे विवाह की चिंता को लेकर व्यग्र हुए जा रहे थे। वे भावी जीवन साथियों के चित्र मेरी सहमति के लिए मेरे पास लाते ही रहते थे। मैं अनमने ढंग से उनपर एक नजर डाल लेती थी और बिना कुछ कहे उन्हें वापस कर देती थी। मेरे पिता हमेशा पूछते थे कि मैंने क्या सोचा या मेरा क्या जवाब है। मेरे पास कभी कोई उत्तर होता ही नहीं था।...

''मेरे मन में धर्मेंद्रजी के प्रति आकर्षण था, पर इसे खुलकर कह पाने का साहस मुझमें नहीं था। मेरे मन में यह बात भी थी कि उनके शादीशुदा होने के कारण यह रिश्ता व्यर्थ—सा ही था; पर अपनी असाधारण परिस्थितियों के कारण मैं उनका साथ छोड़ना भी नहीं चाहती थी। फिल्मी सेट पर बने एक निर्दोष मित्रता के रिश्ते ने धीरे—धीरे अत्यधिक लगाव का स्वरूप ले लिया था। वह मुझे हँसाते रहते और मैं अपने आप के बारे में अच्छा अनुभव करने लगी थी। जब भी वे मेरे आस—पास रहते, मैं हमेशा चहकती रहती। चूँकि हम कई सारी फिल्में एक साथ कर रहे थे, इसलिए परिस्थितियाँ भी कुछ ऐसी बन गई थीं कि हम हर वक्त साथ ही रह रहे थे।'' हेमा ललक के साथ कहती हैं।

धर्मेंद्र की ओर आकर्षित हेमा अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में झिझकती थीं। उनके साथ होने भर से खुश और अच्छा महसूस करती थीं। यहां

फिल्म 'हम तेरे आशिक हैं' के एक दृश्य में हेमा।

उनकी जोड़ी चमत्कारिक परिणाम वाली थी और फिल्मकार उन्हें एक साथ साइन करने के लिए लालायित रहते थे। प्रमोद चक्रवर्ती ने इस जोड़ी के साथ चार फिल्में ('नया जमाना', 'जुगनू', 'ड्रीम गर्ल' और 'आजाद') कीं तो साथ ही दुलाल गुहा की तीन फिल्मों ('दोस्त', 'प्रतिज्ञा' और 'दिल का हीरा') में भी इस जोड़ी ने धूम मचाई। इस जोड़ी को साथ लेकर फिल्म बनानेवालों की तो लंबी लिस्ट है, जैसे कि रामानंद सागर (चरस), एम.ए. थिरुमुगम (माँ), मनमोहन देसाई (चाचा—भतीजा), रवि चोपड़ा (द बर्निंग ट्रेन), बासु चटर्जी (दिल्लगी), मोहन सहगल ('राजा जानी' और 'सम्राट'), हरमेश मल्होत्रा (पत्थर और पायल), उमेश मेहरा (अलीबाबा और चालीस चोर) और बिस्वजीत चटर्जी (कहते हैं मुझे राजा)। इस जोड़ी की परदे पर की केमिस्ट्री में एक जादुई अंदाज था और दर्शक तो जैसे इनके दीवाने ही हो चले थे।

और फिर एक दिन दृश्य के बीचोबीच धर्मेंद्र ने हेमा से पूछा, ''क्या तुम मुझसे प्यार करती हो?''

''मेरा दिल धक्क से रह गया और मैं तुरंत कोई उत्तर न दे सकी। और फिर मैंने कहा, 'मैं उसी आदमी से प्यार करूँगी, जो मुझसे शादी करेगा।' उन्होंने फिर जोर दिया, 'यह तो कोई जवाब न हुआ।' और मैंने प्रत्युत्तर देते हुए कह दिया, 'हाँ, मेरा जवाब तो यही है'।' हेमा परिणय पूर्व के उन दिनों को फिर से दोहराते हुए कहती हैं।

यह उस समय का सबसे चर्चित संबंध बन गया था। गॉसिपवाली फिल्मी पत्रिकाओं में कई शरारतपूर्ण खबरें छपती थीं और इस सबसे घर की शांति भंग हो गई थी। प्रिंट मीडिया में होनेवाले लगातार आक्रमण ने सबों को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। हेमा के परिवार पर उनके अत्यधिक दमन का आरोप लगाया जाता था तो धर्मेंद्र के बारे में कहा जा रहा था कि वे जान—बूझकर अपने परिवार को परदे के पीछे ही रखना चाहते हैं। इसके बाद के कई वर्षों में भी कभी किसी ने धर्मेंद्र की पहली पत्नी (प्रकाश कौर) को किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में उनके साथ जाते नहीं देखा, निकटतम पारिवारिक कार्यक्रम ही इसके अपवाद थे। इस तरह का नकारात्मक प्रचार हर किसी संबंधित व्यक्ति के लिए असमंजस का माहौल पैदा कर रहा था। चक्रवर्ती बाबू हेमा के विवाह में हो रहे इस अत्यधिक विलंब के कारण चिंतित रहने लगे और उन्होंने ज्योतिषियों की शरण में जाना भी शुरू कर दिया।

उसी समय के आस—पास हेमा को 'चरस' फिल्म की शूटिंग के लिए लंबे समय के लिए देश से बाहर माल्टा जाना था। ''मेरे पिता शूटिंग के लिए मेरे साथ जाने पर एकदम से आमादा हो गए थे। ऐसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था।'' हेमा कहती हैं। इसके बावजूद हेमा शहर से बाहर जाने को उत्सुक थीं, क्योंकि इसके कारण उन्हें मीडिया की चुभती निगाहों और घर पर उपजते तनाव से छुटकारा मिलता नजर आ रहा था।

माल्टा में भी चीजें उतनी आसान नहीं थीं और यहाँ एक अलग तरह का दबाव झेलना पड़ रहा था। चक्रवर्ती बाबू हेमा के नायक (धर्मेंद्र) पर चौबीस घंटे नजर रखते थे और अपनी बेटी के साथ किसी भी तरह के शारीरिक या सामाजिक संपर्क पर उनकी कड़ी आपत्ति रहती थी। उन दिनों फिल्म के कलाकार होटल से शूटिंग की लोकेशन तक प्राय: एक ही कार में जाते थे। चक्रवर्ती बाबू को यह पसंद नहीं था, क्योंकि इसके कारण उन्हें धर्मेंद्र के साथ एक ही कार में बैठना पड़ता था और वहाँ हेमा भी होती थीं। उनका हर संभव प्रयास रहता था कि दोनों अलग—अलग रहें। ''जैसे ही मैं कार में बैठती, वे तमिल में मुझे चेतावनी देते हुए कोने की सीट पर बैठने को कहते और स्वयं मेरी बगल में आ जाते; पर धर्मजी भी अप्पा से कुछ कम नहीं थे। अंतिम समय में कोई—न—कोई बहाना करके वे मेरी तरफवाले दरवाजे से अंदर आ जाते। अब मैं बीच में धकेल दी जाती और वे मेरी बगल में बैठ जाते। आज इस तरह की बचकाना हरकतों पर हँसी आती है; पर यकीन मानिए, उस वक्त यह सब कतई मजाकिया नहीं था। मैं ऐसे दो पुरुषों के बीच फँस गई थी, जिनसे मैं बहुत प्यार करती थी और उन दोनों के बीच सुलह कराने का

कोई तरीका मेरे पास नहीं था।''

मजे की बात तो यह थी कि चक्रवर्ती बाबू को धर्मेंद्र के बारे में कोई खास आपत्ति भी नहीं थी, सिवाय इसके कि वे उनकी बेटी हेमा से प्यार करते थे। वास्तव में फुरसत के कुछ पलों में, जब वे एक—दूसरे के विरुद्ध खड़े नहीं होते थे, उनकी आपस में खूब जमती भी थी। दृश्यों के फिल्मांकन के बीच के छोटे अंतराल में हेमा दोनों को गप्पें लड़ाते पाती थीं और तब उनका मन करता था कि काश, यह माहौल हमेशा बना रहे। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात थी कि चक्रवर्ती परिवार में हर कोई धर्मेंद्र को पसंद करता था; पर दामाद के रूप में अपनाने को तैयार नहीं था और इसके कारण बिल्कुल स्पष्ट थे।

उस समय तक हेमा के भाई भी अपने कामों में जम गए थे। कन्नन स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में स्टाफ ऑफीसर हो गए थे और उनकी पोस्टिंग कलकत्ता में हो गई थी। उनकी शादी परिवार के द्वारा चुनी गई एक आयंगर लड़की प्रभा से हुई थी। दूसरे भाई जगन्नाथ न्यू इंडिया इंश्योरेंस की बंबई शाखा में कार्यरत थे और उनकी शादी एक गुजराती सहकर्मी स्मिता के साथ हुई थी। अब पूरे परिवार में चिंता का एकमात्र कारण हेमा का अविवाहित होना था और यह धीरे—धीरे एक संवेदनशील विषय बनता जा रहा था। जयाजी ने तो अपनी बेटी के लिए उपयुक्त वर खोजना अपना नया मिशन ही बना लिया था। उन्होंने लेखक—निर्देशक गिरीश कर्नाड को अपनी दो स्व—निर्मित फिल्मों ('स्वामी' और 'रत्नदीप') के लिए अनुबंधित कर लिया था, क्योंकि उनकी नजर में गिरीश उनकी खूबसूरत बेटी के लिए एक योग्य वर थे। इसी कारण से उन्होंने नवोदित कलाकार धीरज कुमार को पहले एक कलाकार और फिर एक निर्माता के रूप में प्रोत्साहन दिया। परंतु हेमा को इस सब में कोई रुचि नहीं थी और जयाजी की सारी योजना धरी—की—धरी रह गई।

हेमा की स्थिति तो कुछ और ही थी। दिन भर एक सुपर स्टार के रूप में रूमानी गानों ओर दृश्यों में अभिनय तो करती रहती थीं, पर शाम को पैकअप के बाद उन्हें अपनी खुद की प्रेम कहानी आगे बढ़ती नजर ही नहीं आती थी। यह सब याद करते हुए हेमा मानती हैं कि सपने बेचने की अपनी होड़ के कारण हिंदी सिनेमा जगत् प्रेम प्रसंगों पर कुछ ज्यादा ही जोर देता है और इसके कारण वे लोग जो प्यार में नहीं होते हैं, उन्हें लगता है कि उनसे कुछ छूट रहा है। अपनी हमउम्र बाकी सभी लड़कियों की तरह हेमा के अंतर्मन में भी सपनों के एक राजकुमार की छवि अंकित थी और धर्मेंद्र इस कसौटी पर एकदम खरे उतरते थे। उन दोनों के बीच का यह आकर्षण दोनों तरफ से था और जिन परिस्थितियों में वे काम करते थे, उसमें इस तरह के लगाव के ढेर सारे कारण भरे पड़े थे।

''मैंने धर्मेंद्र से दूर जाने का बहुत प्रयास किया, पर ऐसा हो न सका। एक इनसान के रूप में उनमें कुछ तो खास बात थी, जिसके कारण इस बंधन को तोड़ना मेरे लिए कठिन था।'' हेमा कुछ सोचते हुए कहती हैं। हेमा के परिवार का सोच था कि बदलते दौर के साथ हेमा का यह क्षणिक आकर्षण खत्म हो जाएगा और वे धर्मेंद्र को छोड़ आगे बढ़ जाएँगी; पर समय बीतने के साथ ही वे दोनों और नजदीक आते गए। हेमा अपनी भावनाओं को परिवार के साथ अभिव्यक्त करने में सफल नहीं हो पा रही थीं। ''मैं नहीं जानती कि कितने लोग इस बात पर यकीन करेंगे; पर सच मानिए, मैंने उनसे शादी करने के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। आज भी मैं यह नहीं कह सकती कि जो कुछ भी हुआ, क्या वही सर्वोत्तम विकल्प था? कोई भी सोच—समझ कर प्यार में नहीं पड़ता। यह बस, हो जाता है। जब भी मैं अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी तो मैं हमेशा उन्हीं की तरह के किसी अन्य पुरुष की कल्पना करती थी—आकर्षक, सुदृढ और शांत मुखड़ेवाला; पर यह व्यक्ति कभी धर्मेंद्र नहीं होते। पर शायद नियति का तय किया हुआ था कि वह व्यक्ति धर्मेंद्र ही होंगे। हमने आपस में कभी कोई वायदे नहीं किए; भविष्य के बारे में कभी सोचा ही नहीं; कभी कोई स्थायी योजना बनाई ही नहीं। वास्तव में, यह पारंपरिक तरीके का प्रेम था ही

नहीं। उनकी फ्लर्टवाली छवि हो सकती है, पर उन्होंने मेरे साथ कभी फ्लर्ट किया ही नहीं और न मैंने ऐसा कुछ किया। मैं तो जानती ही नहीं थी कि फ्लर्ट कैसे किया जाता है। मैं सिर्फ यह जानती थी कि उनके साथ रहने, उनके साथ बात करने में मुझे खुशी मिलती है और यह खुशी ही मेरे लिए सबकुछ थी। मेरा इरादा कभी किसी को पीड़ा पहुँचाने का नहीं था।'' वे स्पष्ट तौर पर स्वीकार करती हैं।

❑

4

प्रेम और विरोध

फिल्म 'देवदास' में हेमा और धर्मेंद्र—एक यादगार फिल्म।

एक पुत्री के रूप में हेमा ने अपने अभिभावकों को हमेशा प्रशंसा की नजर से देखा था और हालाँकि वे किसी को भी आहत नहीं करना चाहती थीं, फिर भी अनचाहे में ही सही, उन्होंने अपने पिता को पीड़ा पहुँचा ही दी थी। चक्रवर्ती बाबू ने अपने को कई तरीकों से व्यस्त कर लिया था—घंटों तक पढ़ते रहना, परिवार के साथ समय बिताना आदि; पर उनका हृदय अपनी पुत्री के लिए दुखता ही रहता था। हेमा कहती हैं कि उन्होंने मद्रास स्थित नाट्‌य विहार कला केंद्र की स्थापना इन्हीं चिंताओं से ध्यान हटाने के लिए की थी और यह उनकी शुरुआती योजना में कभी भी शामिल नहीं था।

कुछ साल पहले जब उन्होंने हेमा की कमाई से जुहूवाले बँगले को खरीदा था, उसी समय उन्होंने मद्रास के कस्तूरी रंगा रोड पर भी एक बड़ी सी जमीन खरीदी थी, जहाँ वे अपनी बेटी के लिए एक स्वप्न महल का निर्माण करना चाहते थे। आनेवाले समय में वे इस प्रोजेक्ट को लेकर इतना उत्साहित हो गए थे कि इसके निर्माण कार्य की निजी देख—रेख के लिए मद्रास में ही रहने लगे। वहाँ काम करनेवाले कामगारों के लिए चक्रवर्ती बाबू को चिलचिलाती धूप और घनघोर बारिश में भी छाता लिये खड़े देखना एक आम बात थी।

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान ही वे मद्रास में कई महीनों तक अकेले अपने परिवार से दूर ही रहे थे। अपने समय की उत्पादकता को बनाए रखने के लिए चक्रवर्ती बाबू ने दो और प्रोजेक्ट शुरू कर दिए थे। उनमें से पहला था उनके पिता श्रीशैल चक्रवर्ती (हेमा के दादा), जो कि तमिल प्रबंध और संस्कृत काव्य के जाने—माने ज्ञाता थे, के प्रति एक श्रद्‌धांजलि। श्री शैल बाबू ने अपने जीवन काल में आचार्य रामानुज के दर्शन और विशिष्टाद्‌वैत वाद पर बहुत कुछ लिखा था। चक्रवर्ती बाबू और उनके छोटे भाई वासुदेव दोनों ही संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे और उन्होंने अपने पिता के लेखों के संपादन एवं उनके संक्षिप्त स्वरूप के प्रकाशन का भार उठा लिया। यह पुस्तक मद्रास में सन् 1974 में विमोचित की गई और जाने—माने समीक्षकों एवं मीडिया से अच्छी समालोचना भी मिली। यह पुस्तक आज भी कई विश्वविद्यालयों में संस्कृत के छात्रों को पढ़ाई जाती है।

दूसरा प्रोजेक्ट था परंपरागत कलाओं के अन्वेषण के प्रति चक्रवर्ती बाबू का समर्पण। इसके लिए चक्रवर्ती बाबू

ने अस्थानीय संगीतकारों, कलाकारों एवं नृत्य निर्देशकों से संपर्क साधा और उन्हें चुनिंदा नृत्य कार्यक्रमों में कीर्तनों एवं जावलियों को समाहित करने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे हेमा के भरतनाटयम् कार्यक्रमों में शामिल किए जा सकें। चक्रवर्ती बाबू के इन रचनाओं के प्रति आकर्षित होने का एक रोचक कारण था। जब उन्होंने पाया कि हेमा के नृत्य कार्यक्रमों में उनके दैनिक प्रार्थनावाले विष्णु श्लोक शामिल हैं तो उन्होंने और रचनाओं को इसमें शामिल करने का प्रयास शुरू किया। हेमा कहती हैं, ''मैं जब कभी भी बाहर से शूटिंग करके लौटती थी तो अप्पा मुझे कार्यक्रमों के लिए एक नई प्रस्तुति के साथ चकित कर देते थे। अंडाल की तिरुपवई, त्यागराज के कीर्तन, उताकड के पदम...मैं नहीं जानती कि वे इन सब के लिए कहाँ से नए—नए संगीतकार एवं निर्देशक खोज लाते थे, परंतु उनके नृत्य कार्यक्रमों में हमेशा नयापन रहता था। कुछ ही दिनों के अभ्यास के बाद वे इनमें महारत हासिल कर लेते थे और हम नए कार्यक्रमों के लिए तैयार हो जाते थे। मुझे इन चुनौतियों में आनंद आने लगा था और मैंने इस विषय में अपने पिता के बेहतरीन निर्णय के आगे आत्मसमर्पण कर दिया था।''

शुरुआत में हेमा मंच पर सिर्फ भरत नाट्यम की रचनाएँ ही प्रस्तुत करती थीं, परंतु जैसे—जैसे उनके कार्यक्रम लोकप्रिय होते गए, प्रायोजकों ने इन कार्यक्रमों की हलकी—फुलकी प्रस्तुतियाँ शामिल करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया। ''उन सभी लोगों—जो मुझ तक पहुँचना चाहते थे, पर पहुँच नहीं पाते थे—ने इन नृत्य कार्यक्रमों को मुझ तक पहुँचने का आसान जरिया समझ लिया था। ज्यादातर को नृत्य में खास रुचि नहीं थी। अत: तमिल और तेलुगु में प्रस्तुति कुछ ही पल के बाद उन्हें भारी लगने लगती थी। आधे कार्यक्रम के बाद ही हिंदी गानों की माँग उठने लगती थी; शायद उनमें से किसी को भी पता न हो कि अधिकांश शास्त्रीय कला स्वरूप संस्कृत में ही थे और उनका संबंध मंदिरों से था। प्रायोजकों ने अम्मा से इसका हल निकालने के लिए कहा। अम्मा ने 'लीजेंड ऑफ मीरा' के 'पग घुँघरू बाँध...' को शामिल कर लिया। इससे कुछ राहत तो मिली, परंतु सितारों की चमक से बँधे दर्शकों को तो फिल्मी गानों की चाहत थी और मैं इसके लिए कतई तैयार नहीं थी। मेरा स्पष्ट रूप से कहना था कि अगर आइटम नंबर देखने हैं तो उन्हें सिनेमाघरों में ही जाना चाहिए।'' हेमा दृढतापूर्वक कहती हैं।

इसमें थोड़ा समय तो लगा, परंतु अंतत: हेमा ने अपने कार्यक्रमों के लिए दर्शक वर्ग तैयार कर ही लिया। बाद के वर्षों में इन्हीं सफल कार्यक्रमों की आधारशिला के बल पर हेमा प्रख्यात फिल्म और मंच के नृत्य निर्देशक भूषण लखंदरी के दिशा निर्देशन में नृत्य—नाटिकाओं का निर्माण कर सकीं। ये नृत्य—नाटिकाएँ भारत की महान् नारियों, जैसे कि सावित्री, दुर्गा, मीरा, द्रौपदी आदि पर आधारित थे। भगवान् रंगनाथ की दीवानी मीरा चक्रवर्ती बाबू का सार्वकालिक प्रिय चरित्र थीं। ''अप्पा इस विषय को इतनी अच्छी तरह जानते थे कि वे स्क्रिप्ट को बेहतर बनाने के लिए हमेशा ठोस सुझाव देते थे। मैं हमेशा उनके सुझावों का आदर करती थी और उनके साथ बिताए हुए समय का आनंद उठाती थी।'' हेमा याद करते हुए बताती हैं। हेमा की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए चक्रवर्ती बाबू ने नाट्य विहार कला केंद्र की एक शाखा बंबई में भी खोलने की आवश्यकता महसूस की। ''यह कहा जा सकता है कि मैंने अपने जीवन में अप्पा को बड़ी देर से पहचाना। हमारे बचपन के दिनों में मैं और मेरे भाई अप्पा से दूरी बनाए रखते थे। इसका एक कारण तो यह था कि वे हमेशा व्यस्त रहा करते थे और दूसरा यह कि हम प्राय: अम्मा के माध्यम से ही उनसे संवाद करना पसंद करते थे। उन दिनों जब भी हमारे अभिभावकों में कोई बहस होती थी तो मुझे लगता था कि अम्मा ही सही हैं। आज मैं अपने इस पूर्वग्रह के लिए खुद को ही दोषी पाती हूँ, क्योंकि हम लोग अधिकांश समय अम्मा के साथ ही व्यतीत करते थे। अत: स्वाभाविक तौर पर कुछ ज्यादा ही था। एक बच्चे के तौर पर वे हमें ऑफिस जानेवाले, अखबार पढ़नेवाले और हमारे रिपोर्ट कार्ड पर हस्ताक्षर करनेवाले व्यक्ति ही दिखते थे; परंतु सेवानिवृत्ति के बाद हमने उनका एक बदला ही रूप देखा। पहले वे शहर से बाहर होनेवाली शूटिंग पर

जाने से हिचकिचाते थे, पर जैसे—जैसे अम्मा तारीखों को मैनेज करने के बोझ से दबती गईं, अप्पा स्वेच्छा से मेरे साथ शूटिंग पर जाने लगे। हमने 'कुदरत' और 'महबूबा' जैसी फिल्मों के सेट पर काफी अच्छा समय बिताया। उनके साथ रहने से मुझे काफी शांति मिलती थी। उन्हें अपने अंतिम समय तक सही—गलत की बहुत अच्छी पहचान थी।'' यह सब कहते हुए हेमा बहुत भावुक हो जाती हैं। वे अपने पिता की आँखों की पुतली जैसी थीं। पर चक्रवर्ती बाबू ने कभी उसकी खातिर भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। जब भी हेमा का नाम विवादों में घसीटा जाता तो उन्हें बहुत पीड़ा होती थी।

हेमा के साथ जुड़े विवाद और फिल्मी सितारों के साथ जोड़े जाने का क्रम अनवरत चल रहा था और इसके कारण काफी असंतोष पैदा हो रहा था। इनसे उपजे तनाव के कारण फिल्मों की शूटिंग भी प्रभावित हो रही थी। इन्हीं कहानियों में से एक संजीव कुमार से हेमा के रिश्ते के बारे में भी कहा जाता है कि जब संजीव की माँ हेमा के रिश्ते का प्रस्ताव लेकर गईं तो जयाजी ने यह कहकर मना कर दिया कि हेमा घर बसाने के लिए अभी बहुत छोटी है। संजीव भी हार माननेवालों में से नहीं थे और उन्होंने जीतेंद्र, जो उस समय हेमा के साथ कई फिल्मों में काम कर रहे थे, से हेमा तक अपनी बात पहुँचाने को कहा। कहा जाता है कि जीतेंद्र ने पूरी ईमानदारी के साथ अपने मित्र के गुणों की चर्चा हेमा से की। ''वे सादगी—पसंद व्यक्ति थे और सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी कि वे अविवाहित थे।'' हेमा ने इन सबसे सहमति जताई और अपने प्रति संजीव की भावनाओं के प्रति सम्मान भी जताया। वे संजीव को पसंद तो करती थीं, पर इतना नहीं कि उनके साथ सारा जीवन बिता सकें और हेमा ने यह कहने का साहस भी जुटा लिया।
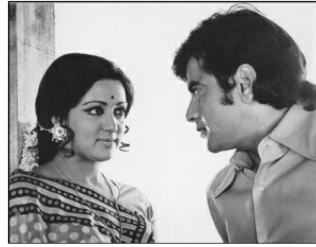
फिल्म 'दुलहन' के एक दृश्य में हेमा मालिनी जीतेंद्र के साथ।

यह कहा जाता है कि संजीव हेमा के द्वारा रिश्ता ठुकराए जाने को सहन नहीं कर सके और काफी अधिक शराब पीने लगे। उनके मित्रों ने जीतेंद्र पर हेमा के प्रेम के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया; परंतु हेमा को जाननेवाले सभी लोग यह मानते हैं कि जीतेंद्र का पक्ष इस मामले में काफी हद तक पारदर्शी था। जब उन्होंने पूरी तरह से यह जान लिया कि हेमा के मन में संजीव के प्रति कोई आकर्षण नहीं है, तभी उन्होंने अपनी चाहत के बारे में उन्हें बताया। उस समय वे दोनों बँगलौर में सी.वी. राजेंद्रन की फिल्म 'दुलहन' की शूटिंग कर रहे थे और काफी समय एक—दूसरे के साथ व्यतीत करते थे। सेट पर रहनेवाले हर किसी को पता था कि जीतेंद्र हेमा के प्यार में पूरी तरह आसक्त थे। उनके इरादे भी काफी अच्छे थे और वे हेमा के साथ शादी करना चाहते थे। हेमा के करीबी लोगों ने भी उन्हें एक योग्य वर पाया, जो काफी खूबसूरत, समझदार, विचारवान और कुँवारे भी थे। हेमा ने खुलकर कुछ नहीं कहा था, पर उनका झुकाव इस रिश्ते के प्रति हो रहा था। शूटिंग खत्म होने के बाद जीतेंद्र ने जरा भी समय बरबाद नहीं किया। उन्होंने तुरंत अपने अभिभावकों को मद्रास बुलाया और हेमा से भी ऐसा ही करने को कहा।

उसी शाम को दोनों परिवार हेमा के बँगले पर रिश्ता पक्का करने के लिए इकट्ठा हुए। चक्रवर्ती बाबू हालाँकि घर पर ही थे, पर उन्होंने नीचे आने से और कोई भी बात करने से मना कर दिया। दूसरी तरफ, हेमा और जीतेंद्र को

लगातार उनके चाहनेवालों के फोन आ रहे थे। शोभा सिप्पी, जो उस समय विमान परिचारिका थीं, जीतेंद्र की लंबे अरसे से गर्लफ्रैंड थीं और जैसा सब जानते हैं, धर्मेंद्र हेमा के दीवाने थे ही। दोनों ने उनसे कोई भी फैसला जल्दबाजी में न लेने का आग्रह किया; लेकिन जीतेंद्र नहीं माने और उन्होंने हेमा के सामने तिरुपति जाकर विवाह करने का प्रस्ताव रख दिया। थोड़े समय के लिए हेमा भी सहमत हो गईं, परंतु फिर कुछ ऐसा हुआ कि हेमा पीछे हट गईं। चाहे हम इसे भय कहें, सावधानी कहें या समर्पण के प्रति हिचकिचाहट, परंतु हेमा ने निर्णय के लिए कुछ समय देने का आग्रह किया। जीतेंद्र निराश तो हुए, परंतु अंततः मान गए। इसके बाद इस जोड़ी के बीच क्या घटित हुआ, इसके बारे में कई तरह की अटकलबाजियाँ लगती रही हैं। कुछ लोगों ने हेमा के स्पष्ट निर्णय न ले पाने को दोषी ठहराया तो कुछ अन्य जीतेंद्र को निर्णय लेने में धैर्य खो देने को जिम्मेदार ठहराते हैं। इस जोड़ी के अलग होने की सही वजह इतने वर्षों के बाद भी रहस्य ही बनी हुई है; परंतु इसमें कोई शक नहीं है कि कई दिल टूटे थे। अटकलों का यह दौर 31 अक्तूबर, 1974 को खत्म हुआ, जब जीतेंद्र ने शोभा सिप्पी के साथ शादी कर ली।

यह उस साल का सबसे बड़ा फिल्मी स्कैंडल था और समाचार—पत्रों की सुर्खियों में छाया हुआ था। निर्मातागण इस बात के लिए हमेशा कृतज्ञ रहेंगे कि इस सारे नकारात्मक प्रचार का इस जोड़ी के साथ काम करने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक छोटे से अटपटे से विराम के बाद इन दोनों ने कई नई फिल्में साइन कीं, जैसे कि 'ज्योति', 'मुलजिम' (1981), 'हम तेरे आशिक' (1982) से लेकर सालों बाद बनी 'जान हथेली पर' (1987)। इस मामले में भी इस सारी उठा—पटक का उनके स्टारडम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे अब भी निर्माताओं की पहली पसंद बनी हुई थीं।

घरेलू मोरचे पर चक्रवर्ती बाबू इस सारे प्रकरण से अपमानित—सा महसूस कर रहे थे और पूरे घर में एक मनहूसियत—सी छा गई थी। जयाजी तो यह भी सोचने लगी थीं कि समय की नजाकत को देखते हुए परंपराओं से परे हटकर धर्मेंद्र को ही दामाद मान लेना चाहिए। काफी सोच—विचार के बाद उन्होंने अपने पति के सामने यह बात रखी। परंतु चक्रवर्ती बाबू इस सुझाव को सुनते ही क्षुब्ध हो उठे। वे मानते थे कि थोड़ी देर की खुशी के लिए वे अपनी बेटी के संपूर्ण भविष्य को दाँव पर नहीं लगा सकते। वे हेमा के साथ धर्मेंद्र की शादी को ऐसी ही अस्थायी खुशी मानते थे और इसपर अंतिम समय तक दृढ रहे। वे मानते थे कि हेमा पर लगा लांछन धीरे—धीरे खत्म हो जाएगा, परंतु धर्मेंद्र के साथ रिश्ता कभी सफल नहीं हो पाएगा।

हेमा अपने मन की शांति के लिए परिवार के द्वारा लिये गए किसी भी निर्णय के लिए तैयार हो गई थीं। वे हर कीमत पर शांति चाहती थीं। उन्होंने अपने पिता से भी कह दिया—आप जैसा कहेंगे, वैसा ही करूँगी। चक्रवर्ती बाबू ने इस समस्या का व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए अपनी बेटी के लिए भावी आयंगर उम्मीदवारों की लाइन लगा दी। वे हर रविवार योग्य पेशेवर लोगों, इंजीनियरों और आई.ए.एस. अधिकारियों को चाय के लिए घर बुलाते थे। ''जब मेरी बारी आती थी तो मुझे बातचीत के लिए कमरे में बुलाया जाता था। मेरी उपस्थिति में वे सभी भावी वर इस कदर घबरा जाते थे कि उनके हाथ में थमे कप और प्लेट थरथरा जाते थे।'' हेमा विस्मय के साथ कहती हैं।

थोड़ी सी टूटी—फूटी बातचीत के बाद चक्रवर्ती बाबू भी इस बात से सहमत हो जाते कि ये उम्मीदवार हेमा की उम्मीदों पर खरे नहीं उतर पाएँगे। वह काफी आगे निकल चुकी थीं और उनमें से किसी के लिए भी उनकी बराबरी करना संभव नहीं था। शायद सफलता की यही कीमत होती है। हेमा कहती हैं, ''बेमेल लोगों को सुरक्षित क्षेत्र में एक साथ प्रवेश नहीं मिलता और यह रास्ता इतना कठिन है कि इसे अकेले पार नहीं किया जा सकता।'' यह एक रहस्य जैसा है कि उस समय कोई भी बड़ा उद्योगपति, राजनेता या कलाकार इस अप्रतिम सुंदरी का हाथ माँगने के

लिए आगे नहीं आया और न ही उसके परिवार के लोग कोई शाही खानदानवाला वर खोज पाए, क्योंकि ऐसा कुछ भी नहीं हो सका। अत: हेमा को उसी दुनिया में अपने प्रियतम की तलाश करनी पड़ रही थी, जिसे वे अच्छी तरह जानती थीं। धर्मेंद्र के एक बड़ा फिल्मी सितारा होने के कारण वह अब भी फिल्मी दुनिया की कालिमा से बची हुई थीं; पर यह तथ्य उन्हें फिलहाल मीडिया की चुभती निगाहों से कोई राहत नहीं दिलाने वाला था।

अपने पिता वी.एस.आर. चक्रवर्ती के साथ निजी समय में कुछ पल बिताती हेमा।

चक्रवर्ती बाबू अपने प्रयास कर रहे थे; पर इन बीच के वर्षों में हेमा की लोकप्रियता निर्बाध रूप से बढ़ती जा रही थी। एक स्त्री कलाकार के रूप में मिलनेवाली राशि अभूतपूर्व थी। एक सीमा तक चक्रवर्ती बाबू ने हेमा की बढ़ती हुई आय का प्रबंध करने की कोशिश की; पर कुछ समय के बाद इस सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी से भी वह भार उठाया नहीं जा रहा था। हेमा के चार्टर्ड एकाउंटेंट ने इस समस्या का हल निकालने का हर संभव प्रयास किया, परंतु कागजी कामकाज जटिल होता जा रहा था। इस बढ़ते हुए दबाव ने चक्रवर्ती बाबू को एक चिंतित व्यक्ति के रूप में बदल दिया। हेमा को आज भी नाक पर चश्मा चढ़ाए हुए, कागजों की भीड़ में घिरे और फाइलों पर झुके हुए पिता याद हैं। ''जब मैं सुबह शूटिंग के लिए बाहर जाने लगती थी तो वे मुझे अपने पास बिठाकर टैक्स की समस्याओं को समझने के लिए कहा करते थे। मैं कहती थी कि जब तक आप हैं, मुझे ऐसा करने की जरूरत नहीं है। अप्पा क्रोधित हो जाते थे और कहते थे कि यह तुम्हारा पैसा है और तुम्हें इसका ध्यान रखना चाहिए। वे हमेशा कहते थे कि व्यक्ति को अपनी आय का निवेश करने के लिए पर्याप्त समय निकालना चाहिए, तभी हम अपना भविष्य सुरक्षित कर पाएँगे। दुर्भाग्यवश, मैं इस बात की गहराई को, अपने जीवन को काफी देर से समझ सकी, जब वे हमारे बीच से जा चुके थे।''

निर्माता एस.एन. जैन द्वारा आयोजित हेमा के जन्मदिन की पार्टी में (बाँए से दाँए)

धर्मेंद्र, हेमा मालिनी, श्रीमति अख्तर आरिफ, एस.एन. जैन और राज कुमार।

जुलाई 1978 का मानसून चक्रवर्ती परिवार के लिए मनहूसियत भरा था और दुर्भाग्यवश यह महा संकट एक प्रशंसक के रूप में आया। हेमा का एक पाकिस्तानी प्रशंसक सप्ताह भर से एक झलक पाने के लिए उनके बँगले के बाहर इंतजार कर रहा था। हर रोज वह हेमा की कार को दरवाजे से निकलते देखता, पर कभी भी उनसे मुलाकात का अवसर नहीं मिल पाता। कई दिनों तक वह सुबह से शाम तक—जब हेमा काम से लौटती थीं—उनका इंतजार करता रहता था; पर हेमा के सुरक्षा गार्डों ने गेट के अंदर उसे जाने नहीं दिया। एक सुबह उसकी इस हरकत से परेशान होकर सुरक्षा गार्डों ने उसके साथ कठोर व्यवहार दिखाया। यह उस पाकिस्तानी प्रशंसक को काफी नागवार गुजरा।

20 जुलाई की अर्धरात्रि को जब कमरे की अधिकांश बत्तियाँ बुझ चुकी थीं, उस व्यक्ति ने चारदीवारी लाँघकर बँगले के बगीचे में प्रवेश कर लिया। वह सीधा पहली मंजिल पर पहुँचा, जहाँ उसके अनुमान से हेमा का शयनकक्ष होना चाहिए था; पर वह हेमा के भाई जगन्नाथ का कमरा था, जहाँ उनकी नौकरानी उनके छोटे बच्चे को सुला रही थी। जब उसने परदे के पीछे अजीब सी परछाईं देखी तो जाँच—पड़ताल के लिए दरवाजे तक गई और एक अपरिचित व्यक्ति को देख चिल्ला उठी।

कुछ ही क्षणों में पूरा बँगला रोशनी से नहा उठा। चक्रवर्ती बाबू दौड़ते हुए अपने कमरे से निकले और उस व्यक्ति पर कूद पड़े। उन्होंने हिंदी फिल्म के किसी हीरो की तरह उसपर घूसों की बरसात कर दी। परंतु उस व्यक्ति के पास एक लंबा सा चाकू था, जिससे वह हर किसी को डरा रहा था। किसी तरह उसे घर के नौकरों ने धर दबोचा और चक्रवर्ती बाबू पुलिस को फोन करने के लिए नीचे दौड़े। जब वे दुबारा सीढ़ियाँ लाँघते हुए ऊपर पहुँचे तो बुरी तरह से हाँफ रहे थे। उस समय तक हेमा भी कोलहल सुनकर नीचे भागीं और अपने पिता का दम घुटते देख काँप उठीं। परिवारवाले उन्हें कमरे के अंदर ले गए; पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

हेमा की गोद में—सिर रखे हुए भयभीत आँखों के साथ चक्रवर्ती बाबू हरेक साँस के लिए संघर्ष कर रहे थे और इससे पहले कि परिवार में कोई कुछ जानता, वे इस संसार को छोड़कर जा चुके थे। कुछ ही देर में डॉक्टर भी आ गए और उन्होंने उसे एक मधुमेह—आधारित हृदय आघात बताया। हेमा की जिंदगी की वह सबसे मनहूस तारीख थी 20 जुलाई, 1978।

कई सालों तक हेमा अपने पिता के देहांत के बारे में बात भी नहीं कर पाती थीं और फिल्मों में इस तरह का दृश्य करना उनके लिए संभव नहीं हो पाता था। अपने मन के किसी कोने से वह अपने पागल प्रशंसक के कारण हुई इस त्रासदी के लिए खुद को उत्तरदायी मानती थीं। आज वे जब पूरी तरह से परिपक्व हो चुकी हैं तो इस घटना की वास्तविकता को अच्छी तरह समझ पाती हैं। ''कुछ ही लोग यह समझ पाते हैं कि एक सफल एवं लोकप्रिय पुत्री के अभिभावकों को क्या—क्या झेलना पड़ता है। सामाजिक एवं आर्थिक दबावों का भार बहुत अधिक होता है और इसे सह पाना हर किसी के वश की बात नहीं होती।'' यह कहते हुए हेमा थोड़ा उदास हो जाती हैं।

चक्रवर्ती बाबू के देहांत के दो साल बाद हेमा ने धर्मेंद्र के साथ शादी कर ली। थोड़ी देर के लिए जयाजी को लगा कि ऐसा करके वह अपने पति की यादों के साथ विश्वासघात कर रही हैं, परंतु हेमा की गुरु माँ ने परिवार को विश्वास दिलाया कि यह एक उपयुक्त निर्णय है और चाहे यह अटपटा—सा लगे, पर उन परिस्थितियों में यह गठबंधन ही एकमात्र विकल्प था। उससे होनेवाली कठिनाइयाँ बाद में भी हल की जा सकती थीं।

हेमा मालिनी और धर्मेंद्र ने एक साधारण आयंगर विधि से 2 मई, 1980 को शादी कर ली।

हेमा कहती हैं, ''जहाँ तक मैं समझती हूँ, मैंने जान—बूझकर कभी आहत नहीं किया। जीवन—साथी की पसंद शायद इसका अपवाद हो सकती है। यह एक बहुत कठिन निर्णय था और यह पूरे परिवार के लिए स्वीकार करना आसान नहीं था; हालाँकि मैं यह सोचती हूँ कि अगर मैं परिवार की एकमात्र पुत्री न होती या मैं सार्वजनिक जीवन में न होती तो भी क्या यह इतना ही पीड़ादायक होता? मेरा अनुमान है कि यह निर्णय अवश्यंभावी ऐसा नहीं था कि उन्होंने मुझे गुलाबों के फूल देकर या चाँदनी रातों में सैर कराकर रिझाया था। इसके विपरीत, उन्होंने कभी मेरी प्रशंसा नहीं की। वे मेरी प्रशंसा पीठ पीछे ही करते थे। जब भी मैं उन्हें कुछ कहने के लिए टोकती तो वे कहते—तुम ठीक—ठाक लग रही हो या सबकुछ ठीक है। यह बिल्कुल मेरी माँ जैसा ही था। ऐसा लगता था कि मैं अपनी माँ के संरक्षण से अपने प्रियतम के संरक्षण में आ गई हूँ और बाकी सबकुछ वैसे ही है। कभी—कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं उनके प्रति इसलिए भी आकर्षित हुई, क्योंकि वे काफी हद तक मेरी माँ की तरह थे—मजबूत और एकदम शांत।''

वह बेहद मुश्किलों भरा समय था, जब हेमा और धर्मेंद्र एक—दूसरे के लिए अपनी चाहत को लेकर पल भर के लिए भी डगमगा जाते, तो उनका रिश्ता टूट गया होता; लेकिन वे चट्टान की तरह खड़े रहे। प्यार और जिम्मेदारी के बीच फँसा यह जोड़ा एक—दूसरे का खामोशी से साथ देता रहा। धर्मेंद्र हेमा से कहते रहे कि वह उन पर भरोसा करें और धैर्य रखें। हेमा को उनके इरादों पर भरोसा था और वह किसी भी आलोचना को सहने के लिए तैयार थीं। उन दिनों, जब धर्मेंद्र ने हेमा को आश्वस्त किया कि वह कोई हल निकाल लेंगे, तब हेमा को लग रहा था कि वे शायद बैंगलोर जाकर बस जाएँगे। ''वह मेरे सपनों का शहर है और मैं कल्पना करती थी कि वहाँ मैं पूरी तरह खुश रहूँगी। उस समय मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम बॉम्बे में रहेंगे। लेकिन मैंने इतनी सारी बातें भी नहीं सोची थीं, जैसे शादी और माँ बनने के बाद काम कर सकूँगी। मेरे पास पहले के अनुबंध थे, जिन्हें पूरा करना था। इसके अलावा मैंने कभी नहीं कहा कि मैं फिल्मों से विदा ले रही हूँ। यह बुद्धिमानी भरा कदम था, क्योंकि मैंने जो भी प्लान किया है, वह कभी कारगर नहीं हुआ।''

हेमा और धर्मेंद्र की शादी की एक दुर्लभ फोटो। शादी की खबर शादी हो जाने के

कुछ हफ्तों बाद ही सार्वजनिक की गई थी।
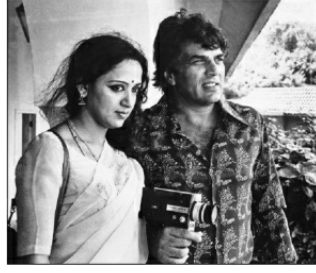
हेमा और धर्मेंद्र : 'हम साथ बिताए समय को हमेशा हर्ष के साथ याद करेंगे।'

हेमा और धर्मेंद्र : हम साथ बिताए समय को हमेशा हर्ष के साथ याद करेंगे।

ये अटकलें उस दिन खत्म हो गईं, जिस दिन उन्होंने अपनी शादी का ऐलान किया। यह 2 मई, 1980 के कुछ हफ्ते बाद की बात है, जब उन्होंने आधिकारिक तौर पर जुहू में हेमा के बँगले पर आयंगर परंपरा के अनुसार एक गुपचुप समारोह में शादी कर ली थी और इस शादी में धर्मेंद्र के पिता समेत सिर्फ उनका परिवार शामिल हुआ था। दंपती को शांति और सम्मान की दरकार थी। इसका कुछ श्रेय उन्हें जाता है और कुछ उनकी अच्छी किस्मत को कि वे विवादों को पीछे छोड़ एक हो गए। शायद हॉलीवुड में ऐसी परिस्थिति इतनी विस्फोटक नहीं होती। ''लेकिन हमारे समाज में लोगों को दूसरों की निजी जिंदगी में झाँकने में ज्यादा मजा आता है,'' हेमा ने हैरत जताते हुए कहा, ''हम सभी को प्राइवेसी का अधिकार है और इसका सम्मान करना चाहिए। किसी भी बाहरी व्यक्ति को पूरी बात जाने बिना नैतिक फैसला सुनाने का अधिकार नहीं है। आज भी, कई गंभीर इंटरव्यू में, अपरिपक्व पत्रकार मेरी जिंदगी की बीती बातों पर सवाल पूछते हैं, लेकिन मैं नाराज हुए बिना ही उनके सवाल को टाल देती हूँ...जब कोई प्यार में होता है, तब वह उसके खूबसूरत अनुभव को बाँटना चाहता है, लेकिन छत पर चढ़कर प्यार का इजहार करना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। आखिर इतनी अंतरंग बातों पर कोई सबके बीच चर्चा क्यों करे? वैसे भी प्यार के साथ कुछ जिम्मेदारियाँ भी आ जाती हैं। ''जरूरी नहीं कि सारी बातों की चर्चा तह तक हो। खास तौर पर प्रेस में। मेरे इतने बरसों के कॅरियर में कभी—कभी किसी को—स्टार के साथ मेरी नहीं बनी, कभी—कभी किसी फिल्म निर्माता के साथ अनबन हुई, लेकिन इससे हमारे काम पर फर्क नहीं पड़ा। आज को—स्टार्स के बीच हलकी नोक—झोंक पर शूटिंग कैंसिल कर दी जाती है। किसी को प्रोड्यूसर के नुकसान की परवाह नहीं होती। आपको यह तब समझ आता है, जब आप खुद प्रोड्यूसर बन जाते हैं। प्यार जीवन का सबसे कीमती तोहफा है, लेकिन इसकी अपनी एक जगह है। यह आपके काम के रास्ते में नहीं आ सकता और अगर आता है, तो यह प्यार नहीं है, बल्कि शौक है।'' वे पुरजोर ढंग से कहती हैं।

हेमा मानती हैं कि कुछ अनुभव बरदाश्त करने के लिए होते हैं। यह भाग्य है। धर्मेंद्र के प्रति उनका आकर्षण पूर्व

निर्धारित था। यह कि उनका आर्कषण अपनी किसी दूसरे हीरो की बजाय उनके प्रति ही होगा, ईश्वरीय था। यह कि वह सामाजिक दबावों और नैतिक आरोपों का जोखिम उठाने को तैयार थीं, ईश्वर की इच्छा थी। वह कहती हैं, ''ऐसा कुछ भी सिर्फ चाह लेने से साकार नहीं होता, इसके लिए चाहत की आग दोनों तरफ होनी चाहिए।''

शादी के बाद हेमा और धर्मेंद्र : शादी जैसी कुछ चीजें पूर्वनिर्धारित और ईश्वरकृत होती हैं।

वह दूसरी शादियों की पहली महिला कहे जाने का कड़ा विरोध करती हैं। उन्हें यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आती। ऐसा नहीं कि मैं कोई ट्रेंड सेट करने निकली थी। यह तो भावनाओं और संबंध को तुच्छ बतानेवाली बात है। हमसे पहले और हमारे बाद भी कई सारे संबंध बने, लेकिन हमारे बीच जो कुछ था, वह सच्चा था और इस वजह से ही यह चल भी सका। इसी तरह की परिस्थिति में खुद को पानेवाली महिलाओं के लिए मुझे जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, न ही मेरी तुलना किसी से की जा सकती है। अलग—अलग लोगों के जीवन की परिस्थितियाँ अलग—अलग होती हैं और मुझे किसी तरह का कोई अफसोस नहीं है। धरमजी को मेरी क्षमता पर पूरा भरोसा है। इतने बरसों बाद भी वह मेरी तरफ वैसे ही देखते हैं, जैसे तब देखा था, जब हम पहली बार मिले थे। वह मेरे खास होने का एहसास कराते हैं।'' कहीं दूर नजरें जमाए खुशी से वे बोलीं।

❑

5

ऐतिहासिक क्षण

कुछ फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अपनी सफलता और असफलता से हटकर इसके कलाकारों के लिए जीवनभर खास रहती हैं। फिल्म 'रामकली' के एक दृश्य में हेमा।

हेमा मानती हैं कि फिल्में अपने कलाकारों के जीवन में बड़े संदेश लेकर आती हैं। वे कहती हैं कि श्रीकृष्ण और गुरु माँ इंदिराजी के प्रति उनकी भक्ति का यह परिणाम था कि उन्हें 'मीरा' फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने का अवसर मिला 'मीरा' फिल्म बनाए जाने का निर्णय होने के पीछे भी एक अत्यंत रोचक कहानी है। जब हेमा की होनेवाली भाभी स्मिता ने उन्हें उनके परिवार की गुरु माँ इंदिराजी से मिलवाया था, उस वक्त हेमा एक अत्यंत ही परेशानी भरे दौर से गुजर रही थीं। यह वही समय था, जब मीडिया में हेमा और धर्मेंद्र के बीच के संबंधों की खबरें छाई हुई थीं। कई बार तो ऐसे भी अवसर आए कि धर्मेंद्र ने कई नामी—गिरामी स्तंभकारों को हेमा के बारे में अपमानजनक टिप्पणी करने पर पीट डाला। वे दीवानगी की हद तक हेमा के प्रति अधिकार—भाव रखते थे; परंतु कुछ स्पष्ट कारणों के चलते किसी प्रकार का वचन देने में खुद को अक्षम पा रहे थे। हेमा इस सबके कारण अत्यंत पीड़ा में थी।

एक दिन जब वे शूटिंग के लिए निकल ही रही थीं कि उनके पास स्टूडियो से फोन आया कि शूटिंग रद्द हो गई हैं। ''मैंने यह जानकारी किसी को भी नहीं दी। सौभाग्यवश उस दिन मेरे स्टाफ को मेरे साथ नहीं जाना था और उनकी योजना मुझसे स्टूडियो में ही मिलने की थी। मैं कार में बैठ गई और ड्राइवर से चलने को कहा। उसे मेरे परिवार का स्पष्ट निर्देश था कि वह मुझे अकेली लेकर कहीं भी न जाए। शुरू में तो उसने बहुत आना—कानी की, पर जब मैंने जोर देकर कहा तो वह मान ही गया। जब हम चेंबूर के पास पहुँचे तो मैंने उससे पुणे ले चलने को कहा। वह स्तब्ध तो हो गया, पर उसने मेरा विरोध नहीं किया। मैं अपने इस साहसिक कार्य पर खुद भी अचंभित हो रही थी; पर कुछ ऐसा था, जो मुझे खींचे जा रहा था।''

पुणे में हेमा सीधे माँ इंदिराजी के आश्रम जा पहुँचीं। आश्रम के भक्तजन उन्हें देखकर आश्चर्यचकित थे, क्योंकि उनके आने की कोई पूर्व सूचना उनके पास नहीं थी। वे हेमा को तब तक अंदर जाने नहीं दे सकते थे, जब तक वे माँ से इंटरकॉम पर यह ज्ञात न कर लें कि क्या वे उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। माँ ने उनसे हेमा को अंदर ले आने को कहा। ''जब मैं कक्ष के अंदर पहुँची तो माँ अपने शिष्यों को प्रवचन दे रही थीं। वे मुसकराईं और मुझे अपनी

बगल में बैठने का इशारा किया। मैंने प्रवचन में भाग लिया और उसके खत्म हो जाने के बाद भी वहीं बैठी रही। मुझे याद नहीं कि हमने क्या बातें कीं, पर मैंने पूरा दिन उनके साथ ही व्यतीत किया। हमने साथ में ही दिन का भोजन किया और बाद में आश्रम में ही विश्राम भी किया। उन्होंने मुझसे किसी प्रकार का कोई प्रश्न नहीं पूछा। मैं उनके सान्निध्य मात्र से ही स्वस्थ अनुभव कर रही थी।'' यह हेमा के जीवन का अल्पज्ञात पहलू है, जो वह हमारे साथ बाँट रही थीं।

उस समय तक हेमा का परिवार भी यह जान चुका था कि उनकी शूटिंग रद्द हो चुकी है। उन्होंने उन सभी मित्रों और संबंधियों को फोन किया, जहाँ उनके जाने की संभावना हो सकती थी। घबराहट में उन्होंने धर्मेंद्र को भी फोन किया; पर उन्हें भी पता नहीं था कि हेमा कहाँ गई थीं। अंतत: जयाजी को ही माँ इंदिराजी के पुणे स्थित आश्रम में संपर्क करने की याद आई। माँ ने जयाजी से कहा कि वे अपनी बेटी के लिए चिंतित न हों, क्योंकि वह पूरी तरह सुरक्षित थीं और उनके पास ही थीं। उन्होंने यह भी कहा कि हेमा अब आश्रम में ही शांति प्रवास कर सुबह बंबई लौटेगी। ''उन्होंने इसमें यह भी जोड़ दिया कि जब मैं वापस लौटूँ तो कोई मुझसे किसी तरह का प्रश्न न पूछे। और बदलाव के तौर पर किसी ने पूछा भी नहीं।'' हेमा मुक्ति के उस अनुभव को याद कर मुसकरा देती हैं।

अपनी गुरु माँ, माँ इंदिराजी से आशीष प्राप्त करते हुए।

धैर्य और विनीत के साथ माँ ने हेमा को आध्यात्म का मार्ग दिखाया।

इस प्रकरण के बाद हेमा जब भी परेशानी अनुभव करतीं, वे माँ इंदिराजी की शरण में चली जातीं। ''आश्चर्यजनक रूप से मैं उनके प्रति उनकी आध्यात्मिकता के कारण आकर्षित नहीं थी। यह ज्ञान मुझे बहुत बाद में हुआ। उस समय मेरे लिए यही बात मायने रखती थी कि उनकी उपस्थिति से मुझे शांति का अनुभव होता था।'' बेहद शांत और सहज रूप से माँ ने हेमा को आध्यात्मिकता के पथ पर चलना सिखा दिया था। ''वे मुझसे जीवन और कर्म के बारे में बातें किया करती थीं। वे मुझे मिथकीय पात्रों की साहसिक कहानियाँ—उनकी निष्ठा और त्याग की—सुनाती थीं। वे मीरा के प्रति कुछ ज्यादा ही लगाव रखती थीं। वे हमेशा कहती थीं कि तुम्हें किसी दिन अपनी फिल्म में मीरा का किरदार निभाना चाहिए।''

एक शाम जब हेमा आश्रम की यात्रा के बाद घर लौटीं तो फिल्मकार प्रेमजी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रेमजी कई सालों से हेमा को लेकर फिल्म बनाना चाह रहे थे, पर कुछ भी तय नहीं हो पा रहा था। उनके पास एक—दो स्क्रिप्ट तो थीं, पर हेमा को वे पसंद नहीं आ रही थीं। ''अगर आप मीरा के ऊपर फिल्म बनाने के इच्छुक हों तो मैं उसका हिस्सा बनना पसंद करूँगी।'' हेमा ने प्रेमजी से कहा।

अगले ही दिन प्रेमजी ने गुलजार को लेखक और निर्देशक के रूप में अनुबंधित कर लिया; पर मुहूर्तवाले दिन से ही 'मीरा' फिल्म को परेशानियों का सामना करना पड़ा। सर्वप्रथम लता मंगेशकर ने फिल्म में काम करने से मना कर दिया, क्योंकि उन्होंने हाल में ही मीरा के भजनोंवाला एक एलबम तैयार कराया था और अपने आप को दुहराना

नहीं चाहती थीं। उसके बाद संगीतकार लक्ष्मीकांत—प्यारेलाल भी पीछे हट गए, क्योंकि वे लता के बगैर काम करना नहीं चाहते थे। इन सबसे निराश हुए बिना गुलजार ने पं. रवि शंकर को संगीत रचना और वाणी जयराम को पार्श्व गायन के लिए साइन कर लिया। पर हेमा इससे सहमत नहीं थीं। 'सपनों का सौदागर' फिल्म से लेकर अब तक हेमा के सभी गानों में लताजी ने अपना स्वर दिया था और हेमा मानती थीं कि लताजी के अलौकिक पार्श्व गायन के बिना उनके प्रदर्शन में वह बात नहीं रहती। उन्होंने निजी तौर पर लताजी से फिल्म में गाने को कहा। पर वह स्वर—कोकिला अपनी बात पर डटी रहीं। ''मुझे यह स्वीकार करने में कोई भय नहीं कि मैं मनोवैज्ञानिक रूप से लताजी की आवाज पर निर्भर थी। यह सत्य है कि मेरे फिल्मकारों ने अलग—अलग फिल्मों में मेरे लिए विभिन्न पात्रों की रचना की; परंतु लताजी ने उन भूमिकाओं में अपनी आवाज के माध्यम से जान डाली थी। मैं उनके सुमधुर गानों के बिना अपने प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं कर सकती।'' हेमा कहती हैं, ''मीरा फिल्म के लिए परिधानों की डिजाइन का भार भानु अथैया पर था। हेमा कहती हैं कि उनकी अपने कार्य के प्रति समर्पण भावना को देखना एक अत्यंत सुखद अनुभव था। वे प्रत्येक परिधान के कपड़ों एवं सजावट का परीक्षण करने में घंटों समय लगाती थीं। किसी बाहरवाले के लिए इस फिल्म के परिधान एक राजकुमारी और एक संत के कपड़ों के बीच के स्पष्ट भेद तक ही सीमित हैं, परंतु भानु अथैया के साथ काम करते हुए उन पर काफी नजदीक से नजर रखनेवाली हेमा ही यह बता सकती हैं कि कैसे वे किसी पात्र की विविध मनोदशाओं और चरणों को उपयुक्त रंगों एवं कपड़ों से मेल कराने का खास हुनर रखती थीं। कई बार उन्हें फिल्म के निर्देशक के साथ गहरे पीले रंग की साड़ी के अलग प्रकार के 'शेड' के लिए घंटों बहस करते हुए देखा जा सकता था। ''उस समय हम सभी सोचते थे कि वे कुछ ज्यादा ही 'पक्की' हैं; पर आज मैं यह समझ सकती हूँ कि कैसे उन्होंने रंगों के इन्हीं थोड़े से भिन्न 'शेड' के माध्यम से पात्र की पूरी जीवन यात्रा का चित्रण किया था।'' हेमा याद करती हैं, ''उस फिल्म में मेरा चरित्र एक चटखदार रंगों से सजी शरमीली दुलहन के साथ शुरू होता है और धीरे—धीरे मैं सादगीवाले रंगों को पहनती हुई केसरिया वस्त्रों में राजमहल छोड़ देती हूँ। इस केसरिया साड़ी का रंग भी क्रमश: गहरे पीले, हलके पीले और जब मैं पूर्णत: भगवान् श्रीकृष्ण को समर्पित हो जाती हूँ तो मटमैले रंग में परिवर्तित हो जाता है। आजकल के सितारों की तरह हम अपने डिजाइनरों को वही परिधान चुनने को नहीं कह सकते थे, जो हम पर फबता है। 'मीरा' फिल्म में मेरे द्वारा पहनी गई तुलसी माला का आकार और लंबाई भी डिजाइनर द्वारा ही तय किए गए थे। तभी मैं कहती हूँ कि मेरे द्वारा निभाए गए पात्रों में मेरे निर्देशकों का उतना ही योगदान है, जितना कि मेरे ड्रेस डिजाइनरों का।''

फिल्म की शूटिंग तो जल्द ही आरंभ हो गई थी, परंतु प्रेमजी को अभी तक इसका नायक नहीं मिल पाया था। कोई भी बड़ा अभिनेता राणा साहेब की भूमिका नहीं करना चाहता था, क्योंकि साहित्य जगत् में उनका चित्रण एक कमजोर पुरुष के रूप में किया गया था। अंतत: विनोद खन्ना, जिन्हें गुलजार साहब ने अपनी फिल्म 'मेरे अपने' में पहला मौका दिया था, इस भूमिका को निभाने के लिए राजी हो गए। कठिनाइयाँ और भी थीं। इस फिल्म की विषय—वस्तु और कलाकारों की वजह से इस फिल्म में होनेवाला खर्च बहुत अधिक हो चला था और प्रेमजी को लगता था कि वे हेमा को मिलनेवाले भारी—भरकम मेहनताने का खर्च वहन नहीं कर पाएँगे। वे हेमा को अपना मेहनताना कम करने को भी नहीं कह सकते थे। अत: उन्होंने एक ऐसी युक्ति निकाली, जिसमें उन्होंने हेमा को दैनिक तौर पर भुगतान करने का निश्चय किया। प्रतिदिन शूटिंग खत्म होने के बाद वे हेमा को एक लिफाफा पकड़ा देते थे, जिसे हेमा बिना खोले अलमारी में रख देतीं। ''मैं उस फिल्म में काम करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति अपनी श्रद्धा और गुरु माँ के प्रति प्यार के कारण तैयार हुई थी। उस फिल्म से मुझे जो कुछ भी राशि मिली, उसे मैंने आशीर्वाद समझकर रख लिया और आज तक खर्च नहीं किया।'' हेमा एक रहस्य खोलते हुए कहती हैं।

हेमा आज भी मानती हैं कि मीरा का किरदार निभाने का यह अवसर उन्हें गुरु माँ के आशीर्वाद के परिणामस्वरूप ही मिला। ''यह काफी आश्चर्यजनक है कि कैसे कुछ लोग आपके जीवन पर इतना प्रभाव डालते हैं। गुरु माँ मुझे उस घने वृक्ष की याद दिलाती थीं, जिसकी छाया में पथिक गण विश्राम करते हैं। मुझे तो उनका चेहरा देखते और उनकी आवाज सुनते ही अपनी सारी चिंताएँ नष्ट होती प्रतीत होती थीं। शायद यही आरोग्य की शक्ति है।''

मीरा : वह भूमिका, जिसकी चाह हेमा को हमेशा थी और वे इस पर गर्व महसूस करती हैं।

'मीरा' फिल्म सन् 1979 में रिलीज हुई और व्यावसायिक दृष्टि से खास सफल नहीं रही। लेखक—निर्देशक गुलजार कहते हैं कि यह फिल्म 'संत मीरा' के बारे में नहीं, 'मीरा' के बारे में थी और दर्शक इस तथ्य को समझ नहीं सके। न तो फिल्म के निर्माता प्रेमजी और न ही हेमा को इस फिल्म के निराशाजनक प्रदर्शन पर कभी कोई अफसोस हुआ। हेमा गुलजार को यह कहते हुए याद करती हैं कि वे (हेमा) इस फिल्म को अपने बच्चों और पोते—पोतियों के साथ देखते हुए गर्व अनुभव करेंगी। 'मीरा' अब भी हेमा की सार्वकालिक पसंदीदा फिल्म है और उन्हें आज भी इस फिल्म को करने पर गर्व है। ''इस फिल्म के वे सभी क्षण/दृश्य मुझे खास तौर पर पसंद हैं, जिनमें मैं अपने गुरु के साथ बहस कर रही होती हूँ। यह वार्तालाप और संवादों के द्वारा दिया जानेवाला सामाजिक संदेश बहुत ही शक्तिशाली है। पर इस फिल्म का सबसे नाटकीय दृश्य इसके क्लाइमेक्स में आता है, जब जंजीरों से बँधी मीरा (जो यीशू मसीह की तरह लगती है) को राजदरबार में पेश किया जाता है। जब वह दरबार में आती है तो उसकी विशालकाय छाया गुरु के ऊपर पड़ती है और वे भयभीत हो उठते हैं। यह फिल्म के निर्देशक द्वारा फिल्माया गया अत्यंत ही उच्च कोटि का सिनेमेटिक शॉट था।'' वे जोर देकर कहती हैं। यह फिल्म विनोद खन्ना के साथ उनकी जोड़ी कीशुरुआतवाली फिल्म थी और इसी के साथ शम्मी कपूर, जिन्होंने रमेश सिप्पी की फिल्म 'अंदाज' में हेमा के नायक की भूमिका निभाई थी, के साथ उनकी जोड़ी का भी अंत हो गया। 'मीरा' में शम्मी कपूर ने हेमा के पिता (राणा राठौड़) की भूमिका निभाई।

राज कपूरजी ने एक बार कहा था कि अभिनेता फिल्मों को अपनी नियति प्रदान करते हैं और धीरे—धीरे फिल्म उनकी नियति का एक अंग बन जाती है। वास्तव में कोई—कोई भूमिका किसी सितारे को इसलिए मिलती है कि वह उसके भविष्य को परावर्तित करने वाली होती है।

कमाल अमरोही ने जब हेमा को रजिया सुलतान की भूमिका के लिए पसंद किया तो वे भलीभाँति जानते थे कि हेमा का उर्दू ज्ञान अत्यंत सीमित है और यह उस भूमिका के लिए एक आवश्यक शर्त—सी थी; पर इसके अलावा हेमा में इस भूमिका के अन्य सभी चारित्रिक गुण मौजूद थे। उनकी शाही परवरिश और सुपर स्टार का ओहदा इस नायिका—प्रधान फिल्म को सफल बनाने के लिए आवश्यक था। हेमा को साइन करने के पीछे एक और वजह थी। जब अमरोहीजी तुर्की पुरालेखों में इस फिल्म के बारे में अनुसंधान कर रहे थे तो उन्हें रजिया की एक तसवीर मिली, जिसमें उनका चेहरा हेमा के चेहरे से काफी हद तक मिलता—जुलता था। अमरोहीजी ने उसी समय हेमा को

इस तुर्क शहजादी की भूमिका में लेने का निर्णय कर लिया था।

एक यादगार परफॉर्मेंस : 'रजिया सुल्तान' के सेट पर निर्देशक कमाल अमरोही और धर्मेंद्र के साथ।

जब उन्होंने हेमा के सामने इस फिल्म का प्रस्ताव रखा तो उन्होंने उनसे कहा कि अगर वे उनपर पूरा विश्वास करेंगी तो वे उन्हें जीवन भर न भूल सकनेवाले प्रदर्शन का यकीन दिलाते हैं। हेमा उन पर पूरे दिल से विश्वास करती थीं और उन्होंने प्रोजेक्ट के लिए 'हाँ' कर दी। इस कठिन भूमिका को निभाने के लिए हेमा ने घोड़े और हाथियों की सवारी की, गरम बालू पर नंगे पाँव चलीं, तलवारबाजी के दृश्य किए और ऐसे कष्टमयी ताज व परिधान पहने, जो लंबे समय तक के लिए दाग छोड़ जाते थे। उर्दू के संवादों की अदायगी एक गंभीर समस्या थी और इसके लिए अमरोहीजी ने एक विशेष शिक्षक नियुक्त किया, जो उनके संवाद अदायगी के लहजे का लगातार निरीक्षण करते रहते थे। ''मैं जानती थी कि यह एक कठिन भूमिका है और मैं इसके लिए कड़ी मेहनत करने को तैयार थी। मैंने 'पाकीजा' फिल्म देखी थी और वह मुझे बहुत पसंद थी। फिल्म का हर फ्रेम एक पेंटिंग की तरह है। उसके सभी पात्र अत्यंत असाधारण हैं।'' हेमा अपनी स्वाभाविक स्पष्टवादिता के साथ कहती हैं।

तुर्की बादशाह अल्तमश, जिन्होंने अपनी पुत्री को अपने पुत्रों के ऊपर तरजीह देकर अपना वारिस और उत्तराधिकारी बनाया था, के बारे में बनी यह फिल्म अपने दौर की सबसे महँगी फिल्म थी। इस फिल्म की कहानी में मल्लिका के साथ उसके असीरियन गुलाम याकूत के प्रेम की दास्तान भी शामिल है। उस वक्त के पाँच प्रख्यात गीतकार—कैफी आजमी, कमाल अमरोही, जाँनिसार अख्तर, निदा फाजली और कैफ भोपाली पहली बार इस फिल्म के लिए अपनी सर्वोत्तम रचनाएँ प्रदान करने को साथ आए थे। लता मंगेशकर अपने बेहतरीन गानों में से एक 'ऐ दिले नादाँ' गाया, जिसे राजस्थान के गरम बालू पर चलती रजिया (हेमा) के ऊपर फिल्माया गया था।

महाकाली केव्स, अंधेरी में नए—नए बने कमालिस्तान स्टूडियो में इस फिल्म के लिए भव्य सेट लगाए गए थे और विदेशी तकनीकी विशेषज्ञों को भी बुलाया गया था। कहा जाता है कि मोतीमहल के सेट को तैयार करने के लिए कमाल अमरोही ने मोतियों के कई भरे हुए घड़े खरीदे थे। राजस्थान से ऊँट व घोड़े खरीदे गए थे और परिधानों की प्रामाणिकता के लिए तुर्की से दर्जी और कशीदाकार बुलाए गए थे। पर सबसे दिलचस्प कहानी तो हेमा के निजी जीवन में घट रही थी, जिसके बारे में उस समय कोई नहीं जानता था। 'रजिया सुल्तान' फिल्म की शूटिंग के अंतिम चरण तक हेमा की कोख में उनकी पहली पुत्री ईशा का अंकुर फूट चुका था।

सन् 1978—79 में एक छोटे से अंतराल के लिए हेमा 'मीरा' और 'रजिया सुल्तान' दोनों फिल्मों की शूटिंग एक साथ कर रही थीं। सुबह ही वे 'मीरा' के सेट पर जातीं, क्योंकि गुलजार काफी सुबह उठ जाते थे और शाम में 'रजिया' के सेट पर, क्योंकि इसमें काफी ज्यादा लाइटिंग होती थी। ''वे दोनों पात्र दो भिन्न युगों के थे, पर आश्चर्यजनक रूप से उनमें काफी समानता भी थी। अगर रजिया एक सम्राज्ञी (मलिका) थी तो मीरा एक रंक राजकुमारी। दोनों भूमिकाओं में सामंजस्य बैठाना बहुत कठिन भी नहीं था, क्योंकि दोनों ही निर्देशक पूरी तरह से तैयार थे और हर कदम पर मेरा दिशा—निर्देशन कर रहे थे। कभी—कभी मैं यह अनुभव करती हूँ कि अभिनेता किसी भूमिका के लिए तैयार करने का व्यर्थ ही शोर मचाते हैं। मैं समझ नहीं सकती कि कैसे कुछ अभिनेता एक ही पात्र को चार या पाँच सालों तक जी सकते हैं। मैं तो इसे अव्यावहारिक मानती हूँ। आखिरकार यह एक फिल्म ही तो है और जीवन तो सतत चलता ही रहता है। 'रजिया सुल्तान' एक काफी दिलचस्प फिल्म थी, पर इसके पूरे होने में सात साल लग गए और इसी कारण इसने अपने जादू का एक भाग खो दिया।'' हेमा व्यावहारिक विश्लेषण करते हुए कहती हैं।

इस बीच हेमा की कोख में पल रहा जीवन अंकुर बढ़ रहा था और सिर्फ धर्मेंद्र ही इस तहलका मचा सकनेवाले रहस्य के साक्षी थे। हेमा नहीं चाहती थीं कि कोई उनका यह राज जाने, अत: उन्होंने किसी को इस बारे में नहीं बताया था। ''मैं नहीं चाहती थी कि कोई भी (मेरे परिवारवाले भी) मुझसे इस बारे में कोई सवाल—जवाब करे या किसी तरह की कोई टीका—टिप्पणी करे। अत: जीवन में पहली बार मैंने अपनी माँ से भी कोई राज छुपाकर रखा था। मैंने अपनी मासियों, जो मेरे काफी नजदीक थीं, को भी इस डर से यह बात नहीं बताई कि वे कहीं अम्मा के सामने सच्चाई न उगल दें। मैं इस मामले में भाग्यशाली थी कि मेरा स्वास्थ्य काफी अच्छा था और मैं गर्भावस्था के आरंभिक चरण में सुबह के समय होनेवाली कमजोरी से ग्रस्त नहीं थी। हर रोज सुबह मैं अपने नियत समय पर शूटिंग के लिए निकल पड़ती थी और काफी समय तक किसी को थोड़ा सा भी शक नहीं हुआ कि कुछ भी गड़बड़ है।''

पर धीरे—धीरे पेट का उभार दिखने लगा था। इसके अलावा, हेमा सेट पर हमेशा भूखी—सी रहतीं और सारा दिन मिठाइयों की माँग करती रहतीं। ''मुझे विश्वास है कि सारी प्रोडक्शन यूनिट में उत्सुकता तो थी, पर किसी में भी मुझसे सीधे कुछ पूछने का साहस नहीं था और न ही मैंने इस बारे में कुछ कहना उचित समझा। परंतु जल्द ही

अम्मा को शक हो गया और उन्होंने मुझसे जवाब माँगा। मैं उनसे झूठ नहीं बोल सकी और सच स्वीकार कर लिया। वह चिंतित हो उठीं और मुझे सुझाव दिया कि निर्माताओं को इस बारे में बता देना चाहिए। पर मैं अब भी ऐसा करने को तैयार नहीं थी। मैंने इस खबर को लगभग छह महीने तक दबाए रखा और इसी कारण मुझे उस अवस्था में भी घुड़सवारी और नृत्य के कई कठिन दृश्य करने पड़े।'' वह कहती हैं।

इन सबके बावजूद फिल्मी दुनिया में अफवाहों का बाजार गरम था। उनके सहकर्मी सेट पर फुसफुसाते हुए चर्चा तो करते थे, पर किसी में भी सार्वजनिक तौर पर बयान देने का साहस नहीं था। उनके कैमरामैन को कुछ शक तो था, पर उसने कोई शिकायत नहीं की, क्योंकि हेमा के चेहरे पर एक अतिरिक्त आभा थी और वे कांतिमय लगती थीं। मीडिया में भी अटकलें तो लग रही थीं, पर किसी ने सीधे तौर पर कुछ पूछने की हिमाकत नहीं की। उनकी बढ़ती हुई गर्भावस्था को उन्हीं दिनों फिल्मांकित 'राजपूत' और 'सत्ते पे सत्ता' के लंबे दृश्यों में अनुभव किया जा सकता है। ''मेरे निर्देशक इस बात का खयाल करते थे कि मेरे सिर्फ क्लोज अप शॉट ही लिये जाएँ और सौभाग्य से मैं कोई खास मोटी नहीं हुई थी। जब राज सिप्पीजी ने मुझसे 'सत्ते पे सत्ता' के लिए संपर्क किया तो मुझे उन्हें सच्चाई बतानी पड़ी। उन्हें मेरे साथ काम करने में कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उनका मानना था कि मेरा अतिरिक्त वजन किरदार के काफी अनुकूल है। अमिताभ बच्चन सहित फिल्म के सातों नायक मेरा बहुत खयाल रखते थे।'' हेमा याद करती हैं।

इस भीड़भाड़वाली दिनचर्या के बीच भी धर्मेंद्र और हेमा ने लंदन के संक्षिप्त अवकाश पर जाने का समय निकाल लिया। ''उस यात्रा में मैं सिर्फ मदरकेयर में ही खरीदारी करने में लगी थी। मैं बच्चोंवाले सभी काउंटर पर रुक जाती थी और धर्मेंद्र को बेहद शर्म आती थी। वे हमेशा कोई बहाना बनाकर खिसक लेते थे; पर इसका मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ा। हमारी आरंभ में यह योजना थी कि मैं बच्चे को विदेश में ही जन्म दूँ; पर बाद में मैंने और धर्मेंद्र दोनों ने यह अनुभव किया कि परिवार के पूर्ण सहयोग के बिना यह व्यावहारिक नहीं होगा।'' हेमा कहती हैं।

हेमा की गर्भावस्था की कहानियाँ उनके विवाह और प्रेम की कहानियों जितनी ही नाटकीय हैं। यह कहा जाता है कि धर्मेंद्र ने जान—बूझकर हेमा को कई अस्पतालों में रजिस्टर करवाया, ताकि मीडिया को गुमराह किया जा सके। उन्होंने एक निजी नर्सिंग होम के सभी कक्ष आरक्षित कर लिये, क्योंकि वे परिसर में किसी बाहरी व्यक्ति की घुसपैठ नहीं चाहते थे।

हेमा की उस समय की यादें अत्यंत स्पष्ट—सी हैं। सालों तक दो और तीन पालियों में शूटिंग करने के बाद यह पहला अवसर था, जब हेमा घर पर आराम से छुट्टी मना रही थीं। आरंभ के कुछ सप्ताहों में उन्होंने इस शांति का भरपूर आनंद उठाया, परंतु बाद में यह आलसीपन उन्हें बेचैन करने लगा। वे अपने इस समय का रचनात्मक उपयोग करना चाहती थीं और उनकी माँ ने उनसे चित्रकला में हाथ आजमाने का सुझाव दिया। जयाजी ने अपनी कुछ सबसे अच्छी पेंटिंग्स गर्भावस्था में ही बनाई थीं और उनकी पुत्री उन्हीं के नक्शे—कदम पर चल रही थी। ''मैं आठवें महीने के अंत तक काम करती रही थी और सिर्फ नौवें महीने में ही घर में कैद हुई थी। इसी समय में मेरे श्वसुर ने मुझे भगवान् श्रीकृष्ण की एक खूबसूरत तसवीर भेंट की। मैं उसके दृश्य से इतनी अभिभूत हो उठी कि मैंने उसे कैनवास पर उतारने का निश्चय कर लिया।''

जैसे—जैसे प्रसव की नियत तारीख नजदीक आ रही थी, हेमा के चिकित्सकों की बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी, क्योंकि हेमा में प्रसव पीड़ा के कोई लक्षण ही नहीं दिख रहे थे। एक शाम धर्मेंद्र हेमा से मिलने आए हुए थे और वे अपनी फिल्म के पूर्वालोकन के लिए निकलने ही वाले थे कि हेमा को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई और उन्हें जल्दी से अस्पताल ले जाया गया। ''लोगों की नजर से बचने के लिए मुझे अपने भाई की कार में ले जाया गया। अगले कुछ

घंटे मेरे लिए दु:स्वप्न के समान थे; परंतु मैं धर्मेंद्र का हाथ पकड़े हुए सुरक्षित अनुभव कर रही थी और वे पूरे समय प्रसव कक्ष में ही मौजूद रहे। अंतत: सुबह की गोधूलि वेला में ईशा का जन्म हुआ। वह तारीख थी 2 नवंबर, 1981।'' मातृत्व के उन क्षणों की याद करते हुए हेमा की आँखों में चमक—सी आ जाती है। ''कुछ देर के लिए किसी ने मुझे नहीं बताया कि बेटी हुई है। सब सोचते थे कि मुझे निराशा होगी। पर जब मैंने अपनी छोटी सी गुड़िया को अपनी गोद में लिया, उसी पल मैं जान गई कि इस संसार के किसी भी पुत्र के बदले वह मुझे ज्यादा स्वीकार्य है।'' हेमा मुसकरा देती हैं। दंपती की पूर्व योजना के अनुसार धर्मेंद्र ने ईशा के जन्म को पाँच दिनों तक गुप्त रखा।

जब यह समाचार सार्वजनिक हुआ तो लोगों की टिप्पणियाँ और निष्कर्ष प्रत्याशित तरीके से ही हुए; पर ऐसी बात नहीं थी कि राहत के क्षण आए ही नहीं। अनगिनत ऐसे अवसर भी आए, जब हेमा का जीवन नव—मातृत्व के आनंद से जगमगा उठा। मीडिया की चुभती आँखों और कड़वी टीका—टिप्पणियों से दूर हेमा माँ की असल भूमिका का आनंद उठा रही थीं। उन्होंने जुहू विले पार्ले विकास योजनावाले बँगले में ही बने रहने का तय किया और धर्मेंद्र अपने घर पर रहते थे; पर दोनों बँगलों के बीच बस, एक गली की दूरी थी और धर्मेंद्र जितना संभव होता, अपने नए परिवार के साथ समय बिताते। हेमा इस बात में भगवान् का संदेश मानती हैं कि उन्होंने कभी बेटे को जन्म नहीं दिया। ''आखिरकार वह (भगवान्) भी मुझे हर चीज तो नहीं दे सकता। उसने मुझे वह पुरुष दिया, जिससे मैं प्यार करती थी और यह अपने आप में एक चमत्कार जैसा है। उससे और ज्यादा माँगना स्वार्थी बनने जैसा होगा। ईशा का चेहरा काफी कुछ भगवान् श्रीकृष्ण की उस तसवीर के जैसा है, जो मैंने पेंट की थी। वास्तव में, मैंने उसका नाम 'ईशा' रखा ही इसलिए कि इसका अर्थ 'दिव्य प्रेमी' होता है। यह मेरे गुरु द्वारा सुझाया गया संस्कृत शब्द है और हम सबके लिए बहुत पवित्र है।'' हेमा मुसकराते हुए कहती हैं।

फिल्मी दुनिया का यह चलन है कि शादी के बाद जोड़ियों के बीच की केमिस्ट्री बिगड़ जाती है। पूर्व काल में वैसी फिल्में, जिसमें यह जोड़ी अतिथि भूमिकाओं में होती थी—जैसे कि 'बारूद' और 'स्वामी'—वे भी हिट हो जाती थीं, परंतु अब बड़े बैनरों की फिल्में भी वह असर नहीं दिखा पा रही थीं। कई बड़े फिल्मकारों ने कोशिश तो की, पर बॉक्स ऑफिस ने सबको नकार दिया। शायद वह एक तरह से अच्छा ही था। इस नए रिश्ते ने धर्मेंद्र के 'नियमित' घर में काफी तनाव पैदा कर दिया था। रिश्तों के नए समीकरण अभी बन ही रहे थे और जब तक ऐसा नहीं हो जाता, यह एक तरह से अच्छा ही था कि यह जोड़ी कुछ समय के लिए एक साथ काम न करे। सन् 1983 में रिलीज होनेवाली 'रजिया सुल्तान' ही इस जोड़ी की अंतिम फिल्म बनकर रह गई।

इसी तरह पूरे चार साल बीत गए और घरों में पनपता तनाव भी काफी हद तक ठंडा पड़ गया। धर्मेंद्र अब भी एक सक्रिय नायक थे और उनके पुत्र सन्नी देओल भी एक सितारे के रूप में उभर चुके थे। हेमा दूसरी बार गर्भवती हुईं और इस बार वे पुत्र की कामना कर रही थीं, पर शायद सिर्फ इसी कारण कि इससे उनका परिवार पूर्ण हो जाता है; परंतु आज वे अपनी किसी भी बेटी के बिना अपने परिवार की कल्पना भी नहीं कर सकतीं। ''कोई भी अनुभव अपनी बेटियों को बढ़ते देखने से बड़ा नहीं हो सकता।...उनके सपनों में मैंने कहीं—न—कहीं अपने खोए हुए बचपन की तलाश की है।'' यह सब कहते हुए उनकी आँखें गीली हो उठती हैं।

वे कहती हैं कि एक पिता के रूप में धर्मेंद्र दृढ तो हैं, पर अत्यंत दयालु भी हैं। शुरुआती दिनों में वे उनके स्कूल रिपोर्ट कार्ड को लेकर काफी चिंतित रहते थे। ''मैं नहीं जानती कि वे खुद किस तरह के विद्यार्थी थे, पर वे हमेशा चाहते थे कि उनकी बेटियाँ पढ़ाई में अच्छा करें। वे मुझसे हमेशा पूछते थे—क्या वे अच्छे अंक पा रही हैं? आज भी वे उनकी भलाई को लेकर चिंतित रहते हैं और हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि वे सभ्य और अनुशासित बनें। ईशा और अहाना के साथ उनका रिश्ता काफी अच्छा है। जब तक वे कोई बड़ी शरारत न कर दें, दोनों उनसे डरती

नहीं हैं। दोनों यह जानती हैं कि वे उनसे कोई भी चीज माँग सकती हैं। जब वे उनका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहती हैं तो उसमें कोई कोर—कसर नहीं छोड़तीं और हर तरह के हथकंडे अपनाती हैं। वे उन्हें बिगाड़ देने की हद तक प्यार करते हैं। पर दोनों लड़कियाँ काफी जिम्मेदार हैं और कभी उनके साथ विश्वासघात नहीं कर सकतीं।'' वह मातृत्व के गर्व के साथ कहती हैं।

हेमा मानती हैं कि उनके जीवन में बहुत कुछ ऐसा है, जिसके लिए वे ईश्वर को धन्यवाद देना चाहती हैं। एक प्यार करनेवाला परिवार, अच्छी सेहत और फलती—फूलती कला के अलावा ऐसा कुछ भी नहीं है, जो माँगना चाहेंगी। संक्षेप में वे कहती हैं, ''दैनिक जीवन में तो हमेशा कुछ—न—कुछ कमियाँ आती ही रहती हैं, पर जीवन की प्राथमिकताएँ भी समय के साथ बदल जाती हैं।'' जब तक उनकी लड़कियाँ प्राथमिक कक्षाओं में थीं, वे स्वयं रोज उन्हें स्कूल छोड़ने जाती थीं। ''उनका समय सुबह के आठ बजे से था और जब तक वे स्कूल की बिल्डिंग के अंदर नहीं चली जाती थीं, मैं अपनी कार के पास खड़ी उन्हें देखती रहती थी। उसके बाद ही मैं घर आती, श्रृंगार करती और शूटिंग के लिए निकलती थी। मैंने अपने निर्माताओं से कह रखा था कि मैं अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के बाद ही काम पर आऊँगी। और सभी ने इसमें मेरा सहयोग किया। मैंने लड़कियों को स्कूल छोड़ना तभी बंद किया, जब वे सेकंडरी कक्षाओं में चली गईं और वह भी इस कारण कि वे शर्मिंदा महसूस करती थीं। वे नहीं चाहती थीं कि मैं उनकी चौकसी करूँ। उनके स्कूल के अंतिम साल तक भी मैं हमेशा (चाहे मैं कहीं भी शूटिंग क्यों न कर रही होऊँ) शिक्षक—अभिभावक भेंट अथवा वार्षिक समारोहों में उपस्थित रहा करती थी।

''ये क्षण मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते थे, क्योंकि वे दोनों हमेशा नृत्य से संबंधित गतिविधियों में भाग लेती थीं। एक माँ के रूप में अपरिचित वातावरण में उन्हें देखना मेरे लिए एक शिक्षाप्रद अनुभव होता था। अभिभावक अपने बच्चों को हलके में लेते हैं, पर वे हमेशा हमें आश्चर्यचकित कर देते हैं। जब अहाना छोटी थी और मेरे सेट पर मुझसे मिलने आती थी तो वह हमेशा यह जानने को उत्सुक रहती कि मेरे—इर्द—गिर्द इतनी भीड़ क्यों रहती है। एक दिन उसने मुझसे एकदम से सवाल कर दिया, 'क्या ये लोग इसलिए आपके पास आते हैं, क्योंकि आप महारानी हो?' मैं ठगी—सी रह गई। बच्चों के दिमाग में क्या चल रहा है, यह जानना हमेशा बहुत कठिन होता है। जब तक वे दोनों सुसभ्य व्यवहार करती हैं और अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से समझती हैं, मुझे ज्यादा चिंता करनेवाली माँ बनने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती। मुझे किसी से भी, किसी प्रकार की अव्यावहारिक अपेक्षाएँ नहीं रहती हैं और यही बात मेरे बच्चों पर भी लागू होती है। मैं यह जरूर चाहूँगी कि अपनी पसंद के कॅरियर के साथ वे कला के कुछ स्वरूपों को भी अपनाएँ। यह उन्हें और समृद्ध बनाएगा। मैं मानती हूँ कि कला सीखने में काफी मेहनत लगती है और यह उनके खाली समय को कम कर देगा; पर अंततः इस सारी मेहनत का उन्हें अच्छा फल मिलेगा। एक समय आएगा, जब उनका परिवार, मित्र और समय—सभी उनसे दूर हो जाएँगे और तब यह कला ही उनका साथ देगी। जब मुझे बचपन में नृत्य सीखने के लिए मजबूर किया गया तो मुझे चिढ़ होती थी; पर आज मैं अपनी माँ के प्रति शुक्रगुजार हूँ कि वे मेरी जिद के आगे नहीं झुकीं और अपने फैसले पर दृढ रहीं। नृत्य ने मुझे बहुत अधिक समृद्ध किया है। शास्त्रीय नृत्य में मेरे औपचारिक प्रशिक्षण के कारण ही मैं अपने फिल्मी कॅरियर में अपने लिए एक स्थान बना सकी।'' वे प्यारी सी उदारता के साथ स्वीकार करती हैं।

❑

6

मूड्स और मूमेंट्स

प्रशिक्षित शास्त्रीय नृत्यांगना होने के कारण डांस डायरेक्टर द्वारा बताए मामूली से डांस स्टेप्स करना हेमा को शर्मसार कर रहा था। फिल्म दो ठग दृश्य में हेमा।

हेमा अपनी नृत्य कला को अपने जीवन के तीन सर्वथा पृथक् चरणों में विभक्त करती हैं। पहला चरण था, जब वे एक छोटी सी लड़की के रूप में मंच पर नृत्य प्रस्तुति करती थीं। ''आरंभिक दौर में होनेवाली थोड़ी सी घबराहट के बाद जब मैं सभागार के अँधियारे के प्रति अभ्यस्त हो गई तो मैं बादलों के ऊपर चल रही परी के जैसा अनुभव करने लगी थी। ऐसा लगता था मानो दर्शकों का कोई अस्तित्व ही न हो। तीसरा चरण था, जब उन्होंने अपनी नृत्य नाटिका की शृंखला शुरू की। ''जब मैं अपने पूरे परिधान में मंच पर उतरती थी तो मैं अपने पात्र के साथ एकाकार हो जाती थी और नाटिका के खत्म होने के बाद भी लंबे समय तक वैसी ही बनी रहती थी।'' इन दोनों चरणों के बीच में एक लंबा दौर वह था, जिसमें हेमा ने अपनी फिल्मों में विभिन्न प्रकार के नृत्य प्रस्तुत किए। हेमा स्पष्ट करती हैं कि फिल्मों में नृत्य करने के दौरान समय के साथ कदमों की ताल मिलाना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, न कि भावनाओं या माधुर्य की अभिव्यक्ति। ''जब किसी अंतरे या मुखड़े का फिल्मांकन तीन या चार दिनों तक खिंचता हो तो उसमें भावनाओं का समावेश करना बहुत कठिन होता है। इस तरह की परिस्थितियों में अभिनेताओं को 'स्विच ऑन—स्विच ऑफ' करना सीखना पड़ता है।''

अपने तीन दशकों से भी लंबे फिल्मी जीवन में हेमा को हर प्रकार की मनोदशा और पलों को दरशानेवाले गीतों पर नृत्य करने का अवसर मिला। 'चरस' फिल्म में उन्होंने क्लियोपेट्रा डांस किया तो 'दस नंबरी' में एक बार बाला बनी थीं। 'जानेमन' में उन्होंने मुजरा किया और 'स्वामी' फिल्म में नौटंकी की प्रस्तुति की। 'मीरा' में वह तानपुरा लेकर मंदिर में झूमती नजर आईं तो 'अली बाबा और चालीस चोर' के लिए उन्होंने पहली बार अरेबियन बैले डांस भी किया। 'द बर्निंग ट्रेन' फिल्म में परवीन बॉबी के साथ पूर्वी और पश्चिमी नृत्य कलाओं के बीच प्रतिस्पर्धा भी की। 'ज्योति' फिल्म में उन्होंने एक बाल कलाकार के साथ डाँडिया रास किया। उन्हें आज भी याद है कि 'शरारा' फिल्म में राजकुमार के साथ वाल्त्ज—नृत्य में कदम—ताल का मेल रखना कितना आवश्यक था और कैसे 'नसीब' में एक लोक गायक के रूप में उनके नृत्य में बेलौस अंदाज की आवश्यकता थी।

हेमा अपने अभिनय और नृत्य के पलों को स्नेह से सँजोकर रखती हैं।

हेमा का मानना है कि अगर आपका शरीर शास्त्रीय नृत्य के लिए प्रशिक्षित हो तो साधारण नृत्य की प्रस्तुति काफी कठिन हो जाती है। ''नृत्य के इस सर्वथा पृथक् स्वरूप का सामना मैंने पहली बार तब किया, जब मुझे अपनी तमिल फिल्म 'इदु सत्यम' और तेलुगु फिल्म 'पांडव वनवास' के लिए आइटम नंबर करने थे। इन दोनों नृत्यों में मुझे समूह नर्तकों के साथ मंच के मध्य में रहना था। हिंदी फिल्मों में मेरा पहला नृत्य 'सपनों का सौदागर' के लिए था। इस फिल्म के नृत्यों के साथ मेरी सभी यादें शरीर में होनेवाली गहन पीड़ा से जुड़ी हैं।'' हेमा हिंदी फिल्मों के जाने—माने नृत्य निर्देशक हीरालाल मास्टर के द्वारा प्रदर्शित किए जानेवाली तेज—तर्रार भंगिमाओं के साथ सामंजस्य बिठा ही नहीं पा रही थीं। उनके जोशीले ठुमकों से हेमा को घृणा आती थी और उनके लाख चिल्लाने पर भी वह अपनी छाती को झटक नहीं पाती थीं और न ही उनकी खुले तौर पर इशारेबाजी वाली मौखिक भंगिमाओं, जैसे कि निचले होंठों का काटना, की नकल कर पा रही थीं। ''जब दृश्यों के फिल्मांकन का समय होता तो मैं नृत्य प्रस्तुति उसी अंदाज में करती थी, जैसा मुझे वास्तव में आता था और 'क्लोज—अप' दृश्यों में नृत्य निर्देशक की भंगिमाओं की नकल करने के बजाय मुसकराकर रह जाती।'' हेमा हँसते हुए कहती हैं।

बचपन में उनके नृत्य गुरु ने उन्हें सिखाया था कि अगर तुम कोई सुर न पकड़ पाओ या कदम गलत पड़ जाएँ तो तुम्हे सीधे खड़े होकर मुसकरा देना चाहिए और हेमा कैमरे के सामने भी इसी सीख का पालन कर रही थीं। उनके छायाकारों को तो कोई शिकायत नहीं होती, क्योंकि हेमा की मुसकान अति मनमोहक थी, उलटे वे तो खुश ही होते; पर नृत्य निर्देशकों को यह अच्छा नहीं लगता। हीरालाल मास्टर उनकी प्रतिभा की कद्र तो करते थे, पर वे इस बात को लेकर स्तंभित थे कि एक नवोदित कलाकार उनके निर्देशों की अवहेलना कर रहा है। यह सिलसिला 'नादान की दोस्ती जी का जलना', जाने ना बालम,...(सपनों का सौदागर) गीत के फिल्मांकन के दौरान अनवरत चलता रहा। अंत में, थक—हारकर हीरालाल मास्टर ने हेमा की झिझक के आगे आत्मसमर्पण कर दिया।

आनेवाले वर्षों में हीरालाल मास्टर और दूसरे नृत्य निर्देशकों ने हेमा को अपने घिसे—पिटे नृत्य संयोजनों को अपनाने के लिए मजबूर करने की बजाय ऐसे संयोजन अपनाने में ही भलाई समझी, जो हेमा के गरिमामय व्यक्तित्व के साथ मेल खाते थे। यह समाधान दोनों पक्षों के लिए हितकर था। हेमा इनमें ज्यादा सहज रहती थीं और दर्शक भी उन्हें परंपरागत नृत्यों में ही पसंद करते थे। ''अगर मैं शुरुआती दबावों के आगे घुटने टेक देती तो यह संभव नहीं हो पाता। हीरालालजी भी समझ गए थे कि मैं उनका अनादर नहीं कर रही थी। मुझे इस तरह के भड़काऊ नृत्य करने में वास्तव में कठिनाई हो रही थी। यह सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण था।'' हेमा कहती हैं।

हेमा की सुंदर मुसकान के साथ उनका रमणीय नृत्य स्क्रीन पर

उनके किरदार को जीवित कर देता था। फिल्म 'तेरे मेरे सपने' का एक दृश्य।

फिल्म 'वारिस' की शूटिंग के दौरान हेमा को फिल्म जगत् के दो सबसे बेहतरीन पुरुष नर्तकोंल्—जीतेंद्र और महमूद के साथ 'रॉक एंड रॉल' की धुन पर थिरकना था। यह एक मजाकिया गाना था, जिसमें नायक शर्ट—पैंट पहनकर मजे ले रहे थे और हेमा को पहनने के लिए एक डरावना सा स्कर्ट और ब्लाउज दिया गया था, जो मद्रास के ही किसी स्थानीय दर्जी ने सिला था। हेमा की याद में यह पहला सामूहिक नृत्य था और उन्हें दूसरे अभिनेताओं के साथ कदमों के सामंजस्य में काफी दिक्कत हो रही थी। ''महमूदजी और जीतेंद्रजी काफी अनुभवी अभिनेता थे और उन्हें इन अतार्किक परिस्थितियों से कोई समस्या नहीं थी; पर मैं अभी भी एक नवागंतुक ही थी और मुझे इस तरह की कलाबाजी पर गुस्सा आ रहा था। मैं सेट पर कुढ़ती रही और शिकायतें करती रही। फिर महमूदजी मुझे एक तरफ ले गए और समझाया कि सिनेमा की दुनिया में तार्किक बातों का कोई स्थान नहीं होता और एक पेशेवर के रूप में मुझे बिना सवाल किए एकदम से फालतू दृश्य करने के लिए भी तैयार होना पड़ेगा।''

इसी फिल्म में एक और नृत्य था, जिसमें हेमा के अंदर देवी माँ की आत्मा समाहित हो जाती है। हीरालाल मास्टर ने अब तक हेमा के साथ समझौता कर लिया था और पहले की गलतियों की क्षतिपूर्ति के लिए उन्होंने इस गाने में कुछ अर्ध—शास्त्रीय संयोजन भी शामिल कर लिये थे। ''उस गाने के फिल्मांकन के बारे में मुझे स्पष्ट तौर पर याद है कि मुखड़े के दौरान मुझे एक, दो, तीन, चार गिनना था और फिर जमीन पर गिरकर जल्दी से उठ जाना था। यह सब बहुत तेजी के साथ होना था और इसके लिए कठिन पूर्वाभ्यास की आवश्यकता थी। यह करते—करते मेरा यह हाल हो गया था कि मैं नींद में भी एक—दो—तीन—चार बड़बड़ाती रहती थी।'' यह सब याद करते हुए हेमा खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।

सन् 1969 में फिल्म 'जहाँ प्यार मिले' के गाने 'नस—नस में अगन टूटे है बदन' के रूप में हेमा ने अपना पहला काल्पनिक गानेवाला नृत्य किया। वह इस गाने के मुखर बोल और उसके साथ प्रदर्शित किए जानेवाले लटके—झटकों के कारण बहुत शर्मिंदा अनुभव कर रही थीं। हमेशा की तरह उन्होंने चुपचाप पूर्वाभ्यास तो कर लिया, पर गाने के फिल्मांकन के समय उन्होंने नृत्य मुद्राओं को अपनी तरह से ही प्रदर्शित किया। निर्देशक ने परिधान सज्जाकार से हेमा की मादकता को और उभारने के लिए उन्हें उजली साड़ी देने को कहा; पर हेमा ने यह सुनिश्चित किया कि इसके नीचे एक त्वचा के रंग वाला अस्तर भी लगाया जाए। बाद में उन्होंने अपने पूरे फिल्मी कॅरियर में ऐसा करना जारी रखा। ''वे चाहते थे कि मैं घुटनों तक ऊँची छोटी साड़ी पहनूँ; पर मुझे यह वाहियात लगा और मैंने बिना किसी से कुछ कहे साड़ी की लंबाई बढ़वा दी। मैं जानती थी कि इस गाने में कई तरह की हरकतें करनी होंगी और मैं सेट पर सबके सामने शर्मिंदा नहीं होना चाहती थी।'' यह वाकया बताता है कि कैसे हेमा बिना शोर मचाए कठिन नियमों को भी बदल सकती हैं।

1970 के दशक में यह एक आम प्रचलन था कि सभी बड़े सितारे समूह नर्तकों के साथ ही पूर्वाभ्यास करते थे।

इसी समूह में से कोई व्यक्ति अभिनेता—अभिनेत्री की जगह ले लेता है और कलाकार उनसे नृत्य की अदाएँ सीखते थे। ''मुझे यह सब एकदम नापसंद था। मुझे यह सोचकर भी घिन आती थी कि कोई बदबूदार सहायक मुझे पकड़कर खड़ा है। हालाँकि कभी किसी ने भी मर्यादा की सीमा का उल्लंघन नहीं किया; पर इस सारी प्रक्रिया में इतनी अंतरंगता थी कि मैं सहज नहीं हो पाती थी। सबसे खराब तो तब लगता था, जब कई दिनों तक कठिनतम नृत्य मुद्राओं का अभ्यास कराने के बाद नृत्य निर्देशक शूटिंग के दिन मुद्राओं में एकदम से बदलाव कर देते थे। लगभग सभी नृत्य निर्देशक प्राय: ऐसा करते ही थे और नई मुद्राओं/भंगिमाओं/अदाओं को नए सिरे से सीखना बहुत हताशाजनक होता था; पर कोई भी शिकायत नहीं कर पाता, क्योंकि उन दिनों नृत्य निर्देशक किसी महाराज से कम नहीं होते थे।''

हेमा ने प्रख्यात नृत्य निर्देशक पी.एल. राज (जिन्हें लोग सम्मान से 'राज मास्टर' कहते थे) के साथ पहली बार सन् 1970 में 'अभिनेत्री' फिल्म में काम किया। वे इस फिल्म में एक शास्त्रीय नर्तकी की भूमिका कर रही थीं, जिसका वैज्ञानिक पति यह चाहता था कि उसकी पत्नी नृत्य के प्रति अपने अनुराग को भुला दे। ''राज मास्टरजी ने मुझे अर्ध—शास्त्रीय नृत्य मुद्राएँ करने को कहा, जो कि पात्र के उपयुक्त था और मेरे व्यक्तित्व से भी मेल खाता था। मैंने इस भूमिका के लिए भरत—नाट्यम, कथक, मणिपुरी आदि नृत्य शैलियों के प्रामाणिक परिधान पहने थे।'' इस फिल्म के लिए परिधान सज्जा का भार भानु अथैयाजी पर था। हेमा कहती हैं कि भानु अथैया के कपड़ों की पसंद या रंग संयोजनों में कोई भी खोट नहीं निकाल सकता। ''वह परदे पर मेरे ग्लैमर को और निखारने के लिए उत्तरदायी होती थीं। महीन कशीदाकारी के किनारोंवाली सिफॉन साड़ी एवं बिना बाजूवाला ब्लाउज उन्हीं का योगदान है। साथ ही मेरे बालों में अकसर खोंसा जानेवाला बड़ा सा फूल और कमर में खोंसी गई साड़ी भी उन्हीं की कल्पना की देन है। आनेवाले वर्षों में हमने कई फिल्में एक साथ कीं और ये सभी सौंदर्यपरकता के मामले में मेरे लिए ज्ञान—प्राप्ति के अनुभव थे, क्योंकि भानुजी अपनी कला में सिद्धहस्त हैं।'' हेमा कृतज्ञता के साथ स्वीकार करती हैं।

इसी साल सुपर हिट फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' में हेमा के दो पसंदीदा नृत्य 'बाबुल प्यारे...' और 'चुप—चुप मीरा रोए', फिल्माए गए थे। रोचक बात यह है कि इन दोनों गानों की शूटिंग एक ही समय में हुई थी और हेमा कहती हैं कि इन नृत्यों में दरशाई गई कारुणिक मनोदशा उनकी उस समय की वास्तविक मानसिक परिस्थितियों को भी प्रतिबिंबित करती है। उनकी निजी जिंदगी धर्मेंद्र के प्रति उनके आकर्षण के कारण तनावों में उलझी हुई थी। वे पारिवारिक बंधनों को चुपचाप माननेवाली एक लड़की थीं और इन बंधनों से उनका दम घुटता जा रहा था, जिसकी किसी को कोई खबर नहीं थी। हेमा के पास तो इतना निजी समय भी नहीं था कि वे खुलकर रो सकें। वे घर पर कोई कोलाहल नहीं चाहती थीं और न ही वे फिल्मों के सेट पर ज्यादा नखरे दिखाना पसंद करती थीं। अत: जाने—अनजाने उन्होंने इन्हीं भावनात्मक दृश्यों के माध्यम से अपनी वेदना अभिव्यक्त की। ''कई बार ऐसे भी क्षण आए, जब ग्लिसरीन के साथ मिलकर असली आँसू भी बहे; पर सौभाग्यवश शायद कैमरे के अलावा और किसी को इसकी कोई खबर नहीं थी।'' हेमा एक और राज खोलती हैं।

छड़ी को संतुलित करना आसान नहीं था : राकेश रोशन के साथ 'पराया धन' *में।*

'शराफत' में हेमा ने एक वेश्या का किरदार निभाया था और इसके लिए उन्हें 'राजा जानी' जैसा भड़कीला नृत्य करना था। ''मैं उस नृत्य की शूटिंग के दौरान बहुत अधिक असहज हो रही थी और अपेक्षित लुभावनी भंगिमाओं को न कर पाने के कारण अपने निर्देशक के कोपभाजन का शिकार भी बनी; पर मेरी विमुखता का इस गाने की लोकप्रियता पर कोई भी नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। थिएटरों में इस गीत—नृत्य पर सिक्के बरस रहे थे, पर मैं इन सबसे कतई खुश नहीं थी। असल में तो मुझे इससे चिढ़ होती थी। परंतु इसी फिल्म में एक और उतना ही प्रसिद्ध गीत था 'शराफत छोड़ दी मैंने', जहाँ नर्तकी अपने सपनों से हारकर अपनी भावनाएँ नृत्य के माध्यम से व्यक्त करती है। इस नृत्य में कोमल अभिव्यक्तियों एवं शालीन मनोदशा की आवश्यकता थी और मैं इसके फिल्मांकन में ज्यादा सहज थी।''

संयोगवश, आनेवाले समय में इन दोनों गानों के नाम से फिल्में बनीं और हेमा ने उन दोनों में काम किया। 1970 के दशक में रिलीज होनेवाली ज्यादातर फिल्में मसालेदार मनोरंजनवाली थीं और उनमें कलाबाजियोंवाले नृत्य—गीतों की भरमार रहती थी। 'तुम हसीं मैं जवाँ' फिल्म में हेमा ने एक चमकीली पोशाक पहनी थी और एक नीली विग धारण की थी। ''इस फिल्म में धरमजी और मुझे एक पश्चिमी नृत्य करना था, जिसमें मुझे उनकी पीठ पर चढ़ना था। उन दिनों मैं कुछ ज्यादा ही भारी थी; पर अपने संकोची स्वभाव के कारण उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। पर अब मुझे यह सब सोचकर बुरा लगता है।'' हेमा कहती हैं कि हिंदी फिल्मों की सभी अभिनेत्रियों की तरह उन्हें भी बारिश में नृत्यवाले कई गाने करने ही पड़े।

सन् 1971 में रिलीज हुई 'नया जमाना' का गीत 'रामा रामा गजब हुइ गवा रे' इनमें से पहला था। इस गाने को एक अत्यंत गंभीर फिल्म में हलके—फुलके क्षण लाने के लिए डाला गया था। इस बार भी परिधान सज्जाकार को सफेद साड़ी पहनाने के लिए कहा गया, जिसे हेमा ने अस्तरवाली पीली साड़ी से बदल दिया। ''मेरे परिधान सज्जाकारों को अकसर मेरे निर्देशकों के क्रोध का सामना करना पड़ता था, क्योंकि मैं बहुत जिद्दी थी; पर किसी ने मुझसे कुछ नहीं कहा और मैं अपने मन का करती रही।'' वह एक विजयी मुसकान के साथ कहती हैं।

'पराया धन' में हेमा ने हिमाचल प्रदेश में रहनेवाली एक स्कूल गर्ल की भूमिका की थी। इस फिल्म में उन्हें खेतों में एक छड़ी लेकर नाचना पड़ता था। ''यह जितना आसान दिखता है, उतना है नहीं; क्योंकि छड़ी को इस तरह संतुलित करना पड़ता था कि वह नाचने में बाधक न बने। हम अकसर यह नहीं समझ पाते। एक्शन और नृत्य निर्देशन में एक तारतम्यता होती है। सभी कहते हैं कि मैं एक्शन वाले दृश्य अच्छा करती हूँ और इसका कारण यह है कि मैं एक प्रशिक्षित नर्तकी हूँ। इन दोनों में असीमित गरिमा और समय ज्ञान की आवश्यकता होती है। आज भी जब मैं इस गाने को देखती हूँ तो अपनी उन्मुक्तता के प्रति संतुष्टि अनुभव करती हूँ। यह अत्यंत ताजगी देनेवाला

अनुभव होता है।''

विजय आनंद ने हेमा को फिल्म 'तेरे मेरे सपने' में उनके बेहतरीन नर्तकी होने के कारण ही लिया था। इस फिल्म में उन्होंने सताई हुई अभिनेत्री की भूमिका की थी और विजय आनंद की ख्याति के अनुरूप ही उन्होंने हेमा को एक भव्य नृत्य 'ता थई तक थई' करने का अवसर दिया। वह एक अत्यंत ही खूबसूरती के साथ फिल्माया और नृत्य निर्देशित किया गया था। ''मुझे हाथ और पाँव की अत्यंत नाजुक मुद्राएँ करने को दी गईं। मैं तो कहूँगी कि 'गाइड' फिल्म के गाने 'पिया तोसे नैना लागे रे' के बाद यह गोल्डी साहब का सबसे बढ़िया शास्त्रीय नृत्य था और मैंने इसके फिल्मांकन का भरपूर आनंद उठाया।''

हेमा ने जल्द ही यह सीख लिया कि हिंदी फिल्मों में काम करने का अर्थ है नित नई चुनौतियों का सामना करना। 'बाबुल की गलियाँ' में हेमा को पहला 'स्नेक डांस' करने का अवसर मिला, जो हिंदी फिल्मों की सभी प्रमुख अभिनेत्रियों के लिए एक आवश्यक नृत्य है। सोहन लाल मास्टर (हीरालाल के भाई) द्वारा निर्देशित इस नृत्य में कई आक्रामक भंगिमाएँ शामिल थीं; पर हेमा धीरे—धीरे अपनी झिझक दूर करना सीख रही थीं।

हेमा फिल्म 'राजा जानी' के एक दृश्य में।

'राजा—जानी' का 'सन्नो नाम उसका' हेमा का पहला स्ट्रीट डांस था। यह नृत्य बंबई की सड़कों पर असली दर्शकों की उपस्थिति में फिल्माया गया था। हेमा कहती हैं कि इतने सारे लोगों के सामने नृत्य की प्रस्तुति आसान नहीं थी, खासकर तब, जब इस गाने में हेमा को कई सारी लुभावनी अभिव्यक्तियाँ करनी थीं। पर उन्होंने किसी तरह यह सब कर ही लिया। वह एक और राज खोलते हुए बताती हैं, '' 'राजा जानी' एक शास्त्रीय और फिल्मी नर्तक के बीच के विभेद को लेकर उनके मन में चल रहे संघर्ष को सुलझाने में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण फिल्म थी। इस फिल्म तक मेरे अंदर के शास्त्रीय नर्तक ने हमेशा फिल्मी नर्तक पर अधिकार जमाया था। इस फिल्म के दौरान मुझे भान हुआ कि मैं शास्त्रीय नृत्य के प्रशिक्षण का भार ढोते हुए अपने फिल्मी कॅरियर की यात्रा पूरी नहीं कर सकती। इसलिए पहली बार मैंने अपने अंदर की अभिनेत्री को शास्त्रीय नर्तकी के ऊपर हावी होने दिया। यह मेरे लिए एक नई शुरुआत थी।''

हेमा के फिल्मों में पहला नागिन डांस, फिल्म 'बाबुल की गलियाँ' से।

'राजा—जानी' में ही हेमा ने पहली बार एक और सक्षम और कुशल परिधान सज्जाकार लीना डारू के साथ काम किया। हेमा लीना की बहुमुखी प्रतिभा की बहुत प्रशंसा करती हैं। ''वह परिधानों के पैटर्न और कटिंग से इतनी अच्छी तरह परिचित थीं कि मैं पूरी तरह से उनकी परिधान संबंधी विशेषज्ञता पर निर्भर करती थी। वह एकदम अलग ही पीढ़ी थी। यद्यपि वे सभी हम कलाकारों के साथ हमेशा मित्रवत् व्यवहार करते थे, पर हम कभी भी उनके रचनात्मक निर्णयों को पलट नहीं सकते थे। उनकी स्वामीभक्ति पूरी तरह से निर्देशकों के प्रति थी। इस कारण यदि भूमिका की माँग यह होती कि हम गरीब दिखें—जैसे कि 'शोले' की ताँगेवाली, तो हमें मोटे कॉटन घाघरे से लपेट दिया जाता था। 'क्रांति' फिल्म में लीना ने मेरी पोशाक को तेल में डुबो दिया था, ताकि वो मटमैली दिखे।'' हेमा अपने सिर को हिलाते हुए कहती हैं।

‘जुगनू’ फिल्म में ‘मेरी पायलिया गीत तेरे गाए’ नृत्य में हेमा ने मंच पर किए जानेवाला आम नृत्य किया था, जिसमें उन्हें तीन पोशाकें—राजस्थानी, संथाली और मराठी पहननी थीं। ‘‘नौ गज की मारवाड़ी साड़ी इनमें बढ़िया थी। यह एक दु:ख की बात है कि मुझे पूरे फिल्मी कॅरियर में कभी भी संपूर्ण लावणी नृत्य करने का अवसर नहीं मिला।’’

जब राज खोसला की फिल्म ‘शरीफ बदमाश’ में हेमा को अपना पहला कैबरे डांस करना था तो निर्देशक का स्पष्ट निर्देश था कि हेमा को बदन दिखानेवाले कपड़े पहनने होंगे। परिधान सज्जाकार मणि रब्बादी ने पूरी तरह से इस आज्ञा का अनुपालन किया; परंतु हेमा ने पोशाकों के परीक्षण के दौरान हठपूर्वक पहलेवाली पोशाक की लंबाई और चौड़ाई बढ़वा दी। शूटिंग के दिन हेमा पूरी बाँहोंवाले गाउन में सेट पर आईं। खोसलाजी इस पात्र के सर्वथा विपरीत परिधान को देखकर बिफर उठे; परंतु शूटिंग में हो रही देरी के कारण उन्होंने ज्यादा शोर नहीं मचाया। यह एक ‘स्ट्रीपटीज’ गाना था, जिसमें हरेक मुखड़े के साथ एक कपड़ा उतारना था और हेमा ने पूरी सहजता के साथ यह किया भी; पर फिर भी, वे गाने के अंत में पूरी तरह ढँकी हुई थीं। ‘‘मैंने जो प्रदर्शित किया, वह निर्देशक की असली संकल्पना के आस—पास भी नहीं था। वह मुझसे इतने अधिक क्षुब्ध हुए कि उन्होंने मुझे कभी साइन नहीं किया।’’ हेमा हँसते हुए बताती हैं।

फिल्म ‘हाथ की सफाई’ में हेमा को नृत्य करना था, जिसमें वे क्लब डांसर बनी थीं। उन दिनों वह तीन शिफ्टों में काम कर रही थीं, अत: ‘तू क्या जाने बेवफा’ गाने को रात्रिवाली शिफ्ट में फिल्माया जाना था। हेमा उसकी शूटिंग के लिए निचले गलेवाले गाउन और ‘सीता और गीता’ की वेशभूषा जैसे कंधों तक कटे सीधेबालों में पहुँचीं। उस परिधान में एक क्लब डांसर जैसे अंग प्रदर्शन की कोई गुंजाइश नहीं थी। पर हेमा से यह अपेक्षित भी नहीं था। ‘‘यह आवश्यक नहीं है कि कामुकता को हमेशा अंग प्रदर्शन के साथ ही जोड़कर देखा जाए। मैंने एक हाल्टर ड्रेस पहनी थी और मेरे खयाल से यह एक खुली—खुली पोशाक के रूप में पर्याप्त थी। यह गीत मेरे लिए इसलिए भी यादगार है, क्योंकि इसमें मैंने पहली बार माइक पकड़े हुए नाचने का अनुभव प्राप्त किया।’’ इसी फिल्म में उन्होंने रणधीर कपूर के साथ का मजाकिया नृत्य किया था, जो शरत चंद्र के देवदास की खिल्ली उड़ाता था। हेमा ने चंद्रमुखी की भूमिका की और रणधीर देवदास बने। यह गीत—‘पीनेवालों को पीने का बहाना चाहिए’, किशोर कुमार ने गाया था और हेमा को कुछ पंक्तियाँ—‘देवदास मितवा गाओ, चंद्रमुखी के पास आओ’, अपनी आवाज में गानी पड़ीं।

‘कसौटी’ फिल्म के पार्टी सॉन्ग ‘ये तो टाइम—टाइम की बात है’ के साथ भी हेमा की कई प्रिय यादें जुड़ी हैं, क्योंकि यह गाना बहुत हँसोड़ किस्म का था। हेमा ने लाल पैंट और एक लंबा काला हैट पहना था और उन्हें एक छड़ी के साथ नाचना था। ‘‘इस गाने का नृत्य निर्देशन सलोनी नाम की एक बैले डांसर ने किया था, जिसने बाद में मेरी बेटियों को भी नृत्य सिखाया। फिल्मी दुनिया से बाहर के नृत्य निर्देशकों के साथ काम करना हमेशा दिलचस्प होता है। वे हमेशा ऐसी बारीकियाँ पेश करते हैं, जिनमें ताजगी का एहसास होता है। इस नृत्य के दौरान मैंने यह सीखा कि किसी सहायक वस्तु के साथ नृत्य करने में सबसे अहम यह होता है कि इन्हें जितना संभव हो, छिपा हुआ बना देना चाहिए।’’

‘पत्थर और पायल’ में हेमा डाकुओं द्वारा अपहृत कर ली जाती हैं और उन्हें उनके मनोरंजन के लिए बाध्य किया जाता है। यह कथानक इसके बाद कई फिल्मों में दोहराया गया।

‘‘धर्मात्मा के नृत्यों, जो कि अफगानिस्तान में शूट किए गए थे, की यादें भी मुझे अत्यंत प्रिय हैं। यह और भी अच्छा होता, अगर नृत्य निर्देशक पी.एल. राज ने अपने मसालावाले नृत्यों में कुछ स्थानीय मुद्राएँ भी शामिल की

होतीं; पर उनकी कमियों के बावजूद यह फिल्म बहुत बड़ी हिट थी और इसके गानों को बहुत प्रशंसा मिली थी।'' हेमा कुछ सोचते हुए कहती हैं।

हेमा सन् 1975 में प्रदर्शित 'मृगतृष्णा' फिल्म के शास्त्रीय नृत्य 'नवरूप से रचना रची जब नर की, सत्यं शिवं सुंदरम्...' को रुपहले परदे पर अपना सबसे अच्छा नृत्य प्रदर्शन मानती हैं। इस गाने के छायांकन के पीछे भी एक मजेदार कहानी है। इस फिल्म के निर्माता जगदीश नाहटा अपनी पूरी तरह से तैयार यूनिट के साथ हेमा का जोधपुर में इंतजार कर रहे थे और वह बँगलोर में रमेश सिप्पी की फिल्म 'शोले' की शूटिंग में फँसी हुई थीं।

सिप्पी हेमा को कुछ दिनों के लिए भी जाने देने में हिचकिचा रहे थे, क्योंकि उनकी फिल्म काफी विलंबित हो रही थी और उसका बजट भी बढ़ता ही जा रहा था। काफी मान—मनौवल के बाद सिप्पी इस शर्त पर राजी हुए कि हेमा तीसरे दिन बँगलोर वापस आ जाएँगी। हेमा को सहमत होना पड़ा।

'जब तक है जान...' : वह गाना जो ढेर सारी परिस्थितियों के लिए प्रेरणा बना। 'शोले' के एक दृश्य में हेमा।

हेमा शाम को जोधपुर पहुँचीं और अगली दो रातों (8 बजे से सुबह 6 बजे) की पालियों में जोधपुर राजमहल में शूटिंग हुई। तीसरे दिन पूरी तरह से संतुष्ट होने के बाद हेमा शूटिंग से सीधा हवाई अड्डे गईं और बँगलोर पहुँचीं। सिप्पी साहब से अपना वादा पूरा किया। 'मृगतृष्णा' का वह नृत्य गीत हेमा के लिए कभी न भूल सकनेवाला अनुभव है। ''इसके जिंदादिलीवाले संगीत को प्रख्यात कथक गुरु शंभू सेन द्वारा लयबद्ध किया गया था और नृत्य निर्देशन का भार सरोज खान पर था, जिन्होंने इसी फिल्म से अपना कॅरियर शुरू किया था। इसके संगीत संयोजन में जादुई अंदाज था, क्योंकि शंभू सेन खुद भी एक नर्तक थे और सुरों पर उनकी अच्छी पकड़ थी और इसी कारण उन्होंने अपने संयोजन में आंतरिक रूप से अल्प विराम प्रदान किए थे।'' हेमा इसे हिंदी सिनेमा के सबसे बेहतरीन नृत्यों में से एक मानती हैं और उनकी अनुशंसा है कि इसे शास्त्रीय नृत्य निर्देशन के अध्ययन हेतु अभिलेख के रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए। ''न केवल इस नृत्य की भंगिमाएँ असाधारण हैं, बल्कि इसके बोल भी समृद्ध अर्थवाले हैं और मन को राहत देते हैं। यह नृत्य 'नाट्यशास्त्र' के सभी नियमों का सांकेतिक प्रारूप है। भंगिमा, लय—ताल, अभिव्यक्ति और परिवेश—हर पहलू एकदम सटीक है।''

सन् 1975 में हेमा ने एक ऐसा नृत्य किया, जिसने आनेवाले दशकों में कई ऐसे ही नृत्य—गीतों के लिए प्रेरणा प्रदान की। 'शोले' फिल्म का यह गाना 'जब तक है जाँ, मैं नाचूँगी...' अपने समय का सबसे प्रसिद्ध गाना साबित हुआ। ''इस गाने में मुझे ऊबड़—खाबड़ जमीन पर नाचना था। मेरी एड़ियाँ कंकड़ों की वजह से छिल गई थीं और उन्हें ठीक होने में कई सप्ताह लग गए। हरेक 'टक' के बाद मैं दौड़कर अपनी मोजरी (पंजाबी जूती) पहन लेती और दूसरे दृश्य के ठीक एक मिनट पहले उसे उतारना पड़ता।'' यह बँगलोर की चिलचिलाती गरमी में फिल्माया गया था, क्योंकि निर्देशक रमेश सिप्पी को गरमीवाला माहौल चाहिए था। गाने के बीच में ही एक मुस्टंडा पत्थरों पर शीशे की बोतल तोड़ देता है। हालाँकि गाने के छायांकन में नकली काँच का प्रयोग किया गया था, पर क्लोज—अप दृश्यों में हेमा को उन काँच के टुकड़ों के एकदम नजदीक चलना पड़ता था। उनमें से कुछ बारीक टुकड़े हेमा

की एड़ी में भी घुस गए। पर हेमा ने बिना परेशान हुए गाने की शूटिंग पूरी की।

कुछ फिल्में इस कारण भी सफल हो जाती हैं, क्योंकि उनके गाने बहुत अधिक लोकप्रिय होते हैं। 'दस नंबरी' का गाना 'प्रेम का रोग बड़ा बुरा' इन्हीं में से एक था। इस नृत्य—गीत में हेमा एक बार डांसर बनी थीं। ''मैंने एक गाउन पोशाक पहनी थी और नृत्य निर्देशन भी गाने की माँग के एकदम अनुरूप ही था।'' वे खुश होकर कहती हैं।

'महबूबा' फिल्म के सभी नृत्यों को मैसूर पैलेस में फिल्माया गया था। हेमा इस फिल्म में अपनी पोशाक और गानों के दौरान शास्त्रीय नृत्य की मुद्राएँ करने का अवसर मिलने से बहुत संतुष्ट थीं। वे नृत्य गीत 'मैं मुजरा करूँगी' के दौरान अपने द्वारा प्रदर्शित जटिल अभिव्यक्तियों के लिए कथक गुरु गोपी कृष्ण को सारा श्रेय देती हैं। ''बिना निरंतर मार्गदर्शन के सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को दरशाना आसान नहीं होता। गोपीजी भंगिमाओं के प्रदर्शन के महारथी हैं; अपनी भृकुटि के एक लोच से ही कई तरह की भंगिमाएँ प्रदर्शित कर सकते थे। उन्हें नृत्य करते हुए देखना अत्यंत आनंददायक था। 'महबूबा' अपने असाधारण संगीत के कारण ही व्यावसायिक रूप से सफल हो पाई थी।'' हेमा पुरानी यादों को ताजा करके कहती हैं।

'ड्रीम गर्ल' डिज्नीलैंड में फिल्माई गई भारत की पहली फिल्म थी। वहाँ छायांकन की अनुमति प्राप्त करना लगभग असंभव था; पर फिल्म के निर्माताओं ने किसी तरह इसका प्रबंध कर ही लिया। 'बच्चो ये देखो डिज्नीलैंड है' गाना इस पार्क में नहीं फिल्माया जा सका और दुबारा अनुमति प्राप्त करना संभव नहीं था। निर्देशक ने हेमा की मौखिक अदायगी को डिज्नीलैंड के बैकग्राउंड में फिल्माया और फिर लंबे शॉट्स के साथ गाने की शूटिंग पूरी की।

हेमा जब भी यह अनुभव करतीं कि वह शिथिल होती जा रही हैं, उनके सामने एक नई चुनौती आ खड़ी होती है। सन् 1977 में गुलजार साहब ने उनके सामने 'किनारा' फिल्म का प्रस्ताव रखा। यह फिल्म एक नर्तकी के बारे में थी, जिसने दुर्घटना में अपनी आँखें खो दी थीं। यह फिल्म उस नर्तकी के अपने भय के साथ संघर्ष कर विजय पाने और शानदार वापसी की कहानी कहती है। फिल्म के अंतिम दृश्य के लिए निर्देशक एक तनाव भरा माहौल तैयार करना चाहते थे, जिसमें नर्तकी वापसी का प्रयास कर रही होती है और दर्शकों को उसकी अक्षमता के बारे में पता होता है। गुलजार के मन में यह तो साफ था कि वे इस नृत्य में एक सहायक वस्तु चाहते हैं, पर यह स्पष्ट नहीं था कि वह वस्तु क्या होगी! नृत्य निर्देशक के साथ उन्होंने कई विकल्पों पर विचार किया, पर कुछ भी तय नहीं हो पा रहा था। अंत में, हेमा ने ही तीखे किनारोंवाली स्टील की थाली का सुझाव दिया। यह कुचिपुड़ी नृत्य का एक अंग था और हेमा इससे अच्छी तरह परिचित भी थीं। गुलजार और नृत्य निर्देशक दोनों उनसे सहमत थे। हेमा के लिए एक नर्तकी के रूप में अपनी कलाओं के प्रदर्शन का यह बेहतरीन अवसर था; क्योंकि ऐसा कम ही होता है कि किसी फिल्म की परिस्थितियाँ शास्त्रीय नृत्य के इतने अनुकूल हों ''यह संभवत: पहला अवसर था, जब मुख्यधारा की हिंदी फिल्म में कुचिपुड़ी नृत्य का प्रयोग किया गया था और मैं इसके लिए गुलजार साहब की दूरदृष्टि की सराहना करती हूँ। गोपीजी के निर्देशन में काम करना तो मजेदार था ही। उनमें अत्यंत साधारण शब्दों के माध्यम से अत्यंत भंगिमाओं के प्रदर्शन का हुनर छिपा था। यह वी. शांताराम के सभी नृत्यों में स्पष्ट दिखता है, चाहे वह 'नवरंग' हो या 'सेहरा'। मेरे लिए उसके साथ (और बाद के वर्षों में उनके छोटे भाई माधवजी के साथ भी) नृत्य करना हमेशा एक चुनौतीपूर्ण अवसर होता था।''

हेमा कोरियोग्राफर गोपी कृष्णा के साथ। गोपीजी छोटे—से—छोटे भाव को भी आसानी से दरशा पाते थे।

हेमा द्वारा अब तक किए गए सभी बारिशवाले नृत्यों की तुलना में मनोज कुमार की फिल्म 'क्रांति' का गाना सबसे कठिन था। इस खतरनाक वर्षावाले गाने में उन्हें कठोर जमीन पर बँधे हुए हाथों के साथ घिसटना था। यह गाना 'जिंदगी की ना टूटे लड़ी' मीडिया के लिए एक विवादास्पद विषय बन गया था, क्योंकि पत्रकार पानी से बुरी तरह भीगी पोशाक पहने हेमा की तसवीरों को हजम नहीं कर पा रहे थे। हेमा ने इसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपनी पीठ को नुकसान पहुँचाए बिना गाने की शूटिंग खत्म करने के प्रति ज्यादा चिंतित थीं। ''काठ की सतह पर पलटने की प्रक्रिया बहुत अधिक पीड़ादायक थी और मुझे चोट लगने का भय भी लगता था। पर जब मैंने फिल्म देखी तो मैं अपनी गलतफहमियाँ भूल गई। सिनेमा जगत् में दलीय भावना का खासा महत्त्व है। जब कोई फिल्म अच्छी बनती है तो उसे बनाने में हुई सारी परेशानियाँ भुला दी जाती हैं।'' हेमा अपनी बात खत्म करते हुए कहती हैं।

फिल्म 'नसीब' के इस गाने की शूटिंग के लिए हेमा ने एक काले रंग का गाउन पहना,

जिसमें वे बेहद दिलकश लग रही थीं।

'नसीब' फिल्म के शीर्षक गीत 'मेरे नसीब में तू है कि नहीं' में हेमा ने एक बार फिर एक क्लब डांसर की भूमिका निभाई। वे इस गाने की शूटिंग के लिए पूरे बदनवाले एक काले गाउन में आई थीं, जो कि पात्र के कतई अनुरूप नहीं था। पर इस बार भी निर्देशक कोई शिकायत नहीं कर पाए, क्योंकि हेमा अपने कंधे में लिपटे फर के स्टोल और उससे मेल खाते लटोंवाले बालों के साथ अत्यंत खूबसूरत लग रही थीं।

'लेकिन' फिल्म में हेमा ने प्रख्यात नृत्य निर्देशक रोशन वाजिफदार द्वारा निर्देशित कत्थक नृत्य प्रदर्शित किया। उस नृत्य में काफी जटिल मुद्राएँ थीं और गुलजार यह देखकर आश्चर्यचकित थे कि कैसे हेमा अत्यंत कठिन भंगिमाओं को बड़ी आसानी से सीख लेती थीं। हेमा को इस फिल्म का आशा भोंसले और सत्यशील देशपांडे द्वारा

गाया मुजरा 'झूठे नैना' बहुत पसंद है। इसकी खास बात थी इसकी धुन रचना, जिसमें तबले की ताल भी शामिल थी। दूसरी फिल्मों के विपरीत, जिनमें आइटम सॉन्ग ठूँस दिए जाते हैं, इस फिल्म की कहानी में इस प्रकार के नृत्य की खास जगह थी। ''यह एक काफी गरिमामय नृत्य था और ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात थी कि यह कहानी में अच्छी तरह शामिल किया गया था। जब मैंने इस गाने की शूटिंग की तो मुझे लगता था कि मैं उसी युग का एक अंग हूँ।''

वे कहती हैं कि हालाँकि इसमें बहुत वक्त लगा, पर हाल के समय में हिंदी सिनेमा काफी विकसित हुआ है। विषय—वस्तु और तकनीक के क्षेत्र में नए निर्देशकों ने मनोरंजन जगत् में क्रांति—सी ला दी है। कहानीकार भी पात्रों और संबंधों को नई नजर से देखने लगे हैं। ''इस सबके श्रेय का एक बड़ा हिस्सा रवि चोपड़ा और उनकी फिल्म 'बागबान' को जाता है। उनमें एक अधेड़ दंपती के विषय में फिल्म बनाने और उसे उतनी ही खूबसूरती के साथ प्रस्तुत करने का साहस था। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि मैं और अमिताभ बच्चन इस उम्र में और कॅरियर के इस मोड़ पर इतने सारे नृत्य गीतों में काम करेंगे। इस फिल्म में 'होली खेले रघुवीरा अवध में', 'मेरी मखनी...मेरी सोनिए' और 'चली—चली...', जिसमें मैं थोड़ी ही देर के लिए हूँ, जैसे गाने थे। हमने एक दृश्य में वाल्ट्ज डांस भी किया और इसमें बड़ा मजा आया। हालाँकि मैं और अमितजी लगभग एक दशक के बाद साथ काम कर रहे थे, पर हमें किसी तरह की असुविधा का अनुभव नहीं हुआ।'' वे एक खूबसूरत मुसकान के साथ कहती हैं।

'बागबान' की सफलता ने यश चोपड़ा की इस जोड़ी को 'वीर—जारा' फिल्म में लेने को प्रेरित किया, जिसमें उन्होंने शाहरुख खान और प्रीति जिंटा के साथ एक पंजाबी लोहड़ी नृत्य किया। ''जब मैं पंजाब में फिल्म के सेट पर पहुँची और भाँगड़ा सीखने लगी तो मुझे सबकुछ जाना—पहचाना—सा लगा। ऐसा लगता था, मानो समय इतने सालों तक थम—सा गया था। कभी—कभी मुझे लगता है कि हम उम्र को कुछ ज्यादा ही महत्त्व देते हैं। प्रतिभा का बढ़ती उम्र से कोई लेना—देना नहीं होता। क्रिकेटर बड़े होकर बल्ला चलाना नहीं भूलते और न ही मुक्केबाज घूँसा मारना भूल जाते हैं। तो फिर हमें ऐसा क्यों लगता है कि अभिनेता सिर्फ अपनी बढ़ती हुई उम्र के कारण परदे पर आकर्षक नहीं दिखेंगे?''

'बाबुल' फिल्म में हेमा ने अमिताभ बच्चन और सलमान खान के साथ पाँव थिरकने पर मजबूर करनेवाला नृत्य किया है। यश राज की नई फिल्म में कत्थक जैसे नृत्य निर्देशनवाला एक मुजरा भी किया है। ''लेकिन फिल्म में किए गए 'झूठे नैना बोले' के बाद यह मेरा परदे पर पहला एकाकी नृत्य प्रदर्शन था। यह कुछ अजीब तो लगता है, पर सत्य है कि आज भी मैं जब परिधान पहनने के बाद संगीत के स्वरों को सुनती हूँ तो मुझे एक नए प्रकार के जोश का अनुभव होता है।'' हेमा कुछ सोचते हुए कहती हैं।

❑

7

प्रेम की शर्तें

फिल्म 'खुशबू' के एक दृश्य में हेमा।

मातृत्व किसी भी महिला के जीवन में एक आनंददायक अनुभव हो सकता है; परंतु फिल्मी दुनिया में यह एक अभिनेत्री के रुतबे पर एकदम विपरीत प्रभाव डालता है। हाल तक तो अगर कोई अभिनेत्री शादी के बाद भी सफल हो तो उसे भाग्यशाली माना जाता था, परंतु मातृत्व के बाद तो अपनी कद—काठी को पहले जैसा बनाए रखने में सक्षम अभिनेत्रियाँ भी दर्शकों के मानस—पटल से उतर जाती हैं। वही फिल्म निर्माता, जो पूर्व में 'मीरा' और 'रजिया सुल्तान' जैसी महत्त्वाकांक्षी फिल्मों के बारे में हेमा के बिना सोच भी नहीं सकते थे, उनकी पहली पुत्री के जन्म के बाद उनके साथ फिल्में करने को लेकर आशंकित थे।

कहते हैं कि मुसीबत कभी अकेली नहीं आती। एक तरफ हेमा को फिल्में नहीं मिल रही थीं और दूसरी तरफ आयकर विभाग ने उनपर 1 करोड़ रुपए के कर की चोरी का आरोप लगा दिया। उनके पिता गुजर चुके थे, बड़े भाई कन्नन कलकत्ता में कार्यरत थे और छोटे भाई जगन्नाथ अपने नए—नए फार्मास्यूटिकल के व्यापार को बढ़ाने में लगे थे। हेमा एकदम अकेली पड़ गई थीं। जगन ने हरसंभव उनकी सहायता का प्रयास किया, पर जटिलताएँ उनके ज्ञान या क्षमता की पहुँच से परे थीं। जैसे—जैसे समय बीतता गया, परेशानियाँ बढ़ती गईं। फिल्मी दुनिया में यह आम बात है कि सितारे अपनी आय के निवेश के बारे में अधिक जिज्ञासु नहीं होते। हेमा भी इसका अपवाद नहीं थीं। इसके समाधान के लिए उन्होंने पहला काम यह किया कि अपनी फाइलें मद्रास से बंबई मँगवा लीं। उनके नए चार्टर्ड एकाउंटेंट पी.एन. शाह और सुनील गुप्ता ने उन्हें यह सलाह दी कि वे किसी तरह कर की अदायगी कर दें और मामले को रफा—दफा करें। इतनी अधिक राशि के इंतजाम का एक ही रास्ता था कि हेमा नई फिल्में साइन करती रहें। बड़े निर्माताओं को उनमें खास रुचि नहीं रह गई थी। अत: हेमा ने उन्हीं छोटे बजटवाली फिल्मों को स्वीकार करना शुरू कर दिया, जो समय पर पूरी हों और पैसा भी जल्द मिल जाए।

श्याम रल्हान की 'रामकली' इनमें से पहली फिल्म थी। बॉक्स ऑफिस की भाषा के हिसाब से हेमा की यह पहली बी—ग्रेड फिल्म थी। पहली बार हेमा की किसी फिल्म के पोस्टर उपनगरों में स्थित छोटे सिनेमाघरों में

लगाए गए। इस फिल्म में हेमा एक देहाती लड़की और एक राइफलधारी डकैत की दोहरी भूमिका में थीं। शत्रुघ्न सिन्हा और सुरेश ओबराय उनके सहयोगी कलाकार थे। शत्रुघ्न ने हेमा के साथ पहले 'भाई हो तो ऐसा' में काम किया था, जिसमें वे खलनायक बने थे। 'रामकली' की सफलता के साथ ही हेमा की जिंदगी में मार—धाड़वाली फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया। हेमा हिंदी सिनेमा जगत् की एकमात्र अभिनेत्री थीं, जिन्होंने तलवारबाजी और राइफल चलाने के दृश्य पूरी गंभीरता के साथ किए। उन्होंने अमरीश पुरी की घुँघरुओं से पिटाई की, विजयेंद्र घाटगे के ऊपर चाबुक चलाए, रूपेश कुमार को टेनिस रैकेट से पीटा और एक अन्य खलनायक की टेबल लैंप से धुनाई की। फिल्म 'बागबान' में भी हेमा ने अपनी पोती को छेड़नेवाले गुंडों को अच्छा सबक सिखाया था।

दर्शकों को हेमा की बदले की कहानियोंवाली फिल्में देखने में मजा आ रहा था और वितरक भी शुरुआती फिल्मों को मिली सफलता के कारण ऐसे प्रोजेक्ट्स को प्रोत्साहन दे रहे थे। 'सीता और गीता', 'शोले' जैसी फिल्में करनेवाले बी. सुभाष ने उन्हें 'आँधी—तूफान' में 'निर्भय नाडिया' के रूप में प्रचारित किया। बाद में निर्माता एस.के. कपूर ने उन्हें लेकर 'दुर्गा' फिल्म बनाई और छोटे निर्माताओं द्वारा डकैती पर आधारित फिल्में बनाने का ट्रेंड शुरू किया। रोचक बात यह थी कि हेमा एकमात्र ऐसी अभिनेत्री थीं, जिनकी फिल्मों में जीतेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा और राजेश खन्ना जैसे कलाकार कमतर भूमिकाएँ करने को भी तैयार रहते थे। वे इन कलाकारों के सहयोग के लिए धन्यवाद तो देती हैं, परंतु इन फिल्मों की अभूतपूर्व सफलता से भी उन्हें कोई खुशी नहीं हो रही थी। एक जमाने की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री होने के कारण वे इस प्रकार की फिल्में करके शर्मिंदा अनुभव कर रही थीं। ''मैं जानती थी कि मैं अपने ही मापदंडों के साथ समझौता कर रही हूँ; पर उन दिनों की परिस्थितियों में यही मेरे लिए एकमात्र रास्ता था। मुझे पैसे की आवश्यकता थी और मैं धरमजी से सहायता माँगने में हिचकिचा रही थी। मेरा आत्म—गौरव मुझे इसकी अनुमति नहीं देता था। यह सही भी नहीं था। यह मेरी गलतियों का परिणाम था और मुझे खुद इसमें से निकलने का रास्ता प्राप्त करना था।''

यह दु:स्वप्न—सा दौर करीब दस सालों तक चला; पर कई सारी महत्त्वहीन फिल्में और देश—विदेश में होनेवाले नृत्य कार्यक्रमों के माध्यम से हेमा ने धीरे—धीरे सारा कर्ज चुका दिया। ''इससे मैंने अपने जीवन का सबसे बड़ा सबक सीखा। चाहे कोई कितना भी व्यस्त क्यों न हो, चाहे टैक्स संबंधी विवरण कितने भी बोरियत भरे क्यों न हों, हर पेशेवर व्यक्ति को अपने आय—व्यय निवेश का विवरण रखना चाहिए। पैसों के मामले में कभी किसी बाहर के व्यक्ति पर विश्वास न करें। चार्टर्ड एकाउंटेंट द्वारा दी जा रही जानकारी की हमें खुद भी जाँच—पड़ताल करनी चाहिए। यह सभी रचनात्मक लोगों, खासकर कलाकारों के सामने आनेवाली आम समस्या है। जब तक हम इस जंजाल को समझ पाते हैं, तब तक नुकसान इतना बढ़ जाता है कि इसकी पूर्ति असंभव हो जाती है।'' हेमा हम सबको एक सीख देती हैं।

हेमा को इस बात का अफसोस है कि उन्हें अपने निवेश के बारे में पूछताछ करने और अपनी आर्थिक स्थिति का जायजा लेने की सुध तब आई, जब बहुत देर हो चुकी थी। ''अगर पहले से कोई चेतावनी मिल जाती तो मैं स्थिति को इस कदर बिगड़ने से रोक सकती थी। तब शायद मैं संकट के आने पर इतना भयभीत नहीं होती। जीवन में हर चीज के लिए एक स्थान व समय होता है और हर किसी को प्रकृति की लय का सम्मान करना चाहिए। हेमा इस बात पर भी अफसोस प्रकट करती हैं कि वे अपने तीन दशकों के कॅरियर में काफी तेज गति से बढ़ती रहीं और इन सब में उनके पास इतना अवसर भी नहीं था कि वे रुककर उन असंख्य नए अवसरों की पहचान कर सकें, जो उनके सामने स्वयं ही उपस्थित हो रहे थे। ''बॉलीवुड के सबसे बड़े निर्माताओं की ओर से मुझे चुनिंदा भूमिकाएँ निभाने के प्रस्ताव आए; पर मेरे पास मेरा मार्गदर्शन करने के लिए या इन भूमिकाओं के लिए मुझे तैयार

करनेवाला कोई नहीं था। सिर्फ गुलजार साहब जैसे कुछ निर्देशकों ने इस दिशा में प्रयास किए और इसका परिणाम उनकी फिल्मों में मेरे प्रदर्शन के रूप में स्पष्ट दिखता है।'' हेमा दार्शनिक अंदाज में कहती हैं।

शायद एक बड़ा सितारा होने की यही त्रासदी है। ज्यादातर समय सितारे अपने लंबे कॅरियर में अपनी भूमिका निभाते चले जाते हैं और उनके पास रुककर यह देखने का समय भी नहीं होता कि इसका उनके निजी जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। सबसे यादगार प्रदर्शन भी उनके लिए एक और सेट पर एक और शूटिंग खत्म करने जैसा ही होता है। कभी—कभी कलाकार अपने पात्रों का एक हिस्सा अपने व्यक्तित्व में समा घर ले आते हैं; पर साल का अंत होते—होते सभी यादें धुँधली होकर कहीं दबा दी जाती हैं और सब उन्हें भूल जाते हैं। जो बात याद रहती है, वह बस, यही कि 'द शो मस्ट गो ऑन'।

पुनः वापसी : फिल्म 'रामकली' के एक दृश्य में।

आज जब हेमा अपनी पुरानी फिल्मों की भूमिकाएँ देखती हैं तो उन्हें लगता है कि इन्हें और अच्छी तरह निभाया जा सकता था। ''खास तौर पर 'सपनों का सौदागर' के बारे में लगता है कि वह कुछ ज्यादा ही नाटकीय था; पर मैं तो वही कर रही थी जैसे न्रिर्देशक (महेश कौल) मुझसे कहते थे। हो सकता है, उनको वही खास छवि चाहिए थी और इसके लिए उन्होंने मुझे चुना था। दरअसल 'सपनों का सौदागर' की खास बात यही थी कि एक युवा लड़की एक बड़े सितारे के साथ प्रेम करती थी। दर्शकों को यह संबंध ताजगी भरा लगता था। एक कलाकार के रूप में हमें वह सब स्वीकार करना पड़ता है, जो हमसे करने को कहा जाए।'' हेमा स्वीकृति की मुद्रा में कहती हैं।

हेमा द्वारा अभिनीत 100 से भी अधिक फिल्मों को उनकी पसंद के आधार पर दो भागों में बाँटा जा सकता है—व्यावसायिक और रचनात्मक। अपनी पीढ़ी की किसी भी अन्य अभिनेत्री की तुलना में हेमा ने अपने समय में सबसे अधिक सफल फिल्में कीं। 1970 के दशक की 'जॉनी मेरा नाम', 'अंदाज', 'सीता और गीता', 'जुगनू', 'हाथ की सफाई', 'प्रेम नगर', 'धर्मात्मा', 'शोले' एवं 'त्रिशूल' और 1980 के दशक की 'दो और दो पाँच', 'नसीब', 'सत्ते पे सत्ता', 'राजपूत', 'अंधा कानून' से लेकर वर्ष 2003 की 'बागबान' तक उनकी बॉक्स ऑफिस पर हिट फिल्मों की संख्या किसी के लिए भी ईर्ष्या का विषय हो सकती है।

''हमारी समस्या यह है कि हम अवसरों का मूल्य अपने अतीत के विश्लेषण के समय ही जान पाते हैं। जब मैं इन फिल्मों में काम कर रही थी, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं होता था कि ये फिल्म या भूमिकाएँ एक दिन मील का पत्थर साबित हों उस समय तो मैं अपने दैनिक जीवन की उलझनों में प्रतिदिन की शूटिंग, विग पहनना व उतारना और मेकअप, नृत्य की मुद्राएँ सीखने आदि में ही व्यस्त रहती थी। मुझे अब जाकर यह एहसास होता है कि मैं कितनी भाग्यशाली थी कि मुझे इतनी मजेदार भूमिकाएँ करने को मिलीं। आजकल की अभिनेत्रियाँ उतनी भाग्यशाली नहीं हैं। आज की फिल्मों में कहानी पर कोई ध्यान ही नहीं दिया जाता। वे मनमोहक स्थानों पर शूटिंग करती हैं,

खूबसूरत पोशाक पहनती हैं, सेक्सी गाने गाती हैं; पर उनकी भूमिकाएँ यादगार नहीं होतीं।'' हेमा एक गंभीर सोच के साथ विश्लेषण करते हुए कहती हैं।

हेमा के पास 'अभिनेत्री' फिल्म की कुछ बहुत अच्छी यादें हैं। वे कहती हैं कि हालाँकि नायक शशि कपूर और फिल्म के निर्देशक एस. मुखर्जी उनसे काफी वरिष्ठ थे, पर उन्होंने हमेशा हेमा से समानतावाला व्यवहार किया। ''मैंने यह फिल्म इस कारण स्वीकार की थी, क्योंकि मुझे नर्तकी की भूमिका पसंद थी और मुझे मालूम था कि एक नर्तकी होना मेरे लिए एक अभिनेत्री बनने में सहायक है। 'अभिनेत्री' में मेरी पहली परिपक्व भूमिका थी। एक युवा अभिनेत्री होने के कारण एक नई वधू की भूमिका में मुझे अपने नायक के साथ हनीमून के दृश्य करने में शर्म आ रही थी। सुबोधजी और शशि कपूरजी ने मेरी दुविधा को समझा और मेरी झिझक को दूर करने में मेरी सहायता की। यह एक अत्यंत जटिल किरदार था और फिल्म की कहानी में कई परतें थीं। इसका संगीत तो असाधारण था ही। यह दु:ख की बात है कि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। आनेवाले वर्षों में मुझे यह अच्छी तरह मालूम हो गया कि जिन फिल्मों को करने में मुझे आनंद आता है, जरूरी नहीं है कि वे व्यावसायिक रूप से सफल हों हालाँकि विवाह संबंधों की जटिलताओं को समझने के लिए मैं काफी छोटी थी, परंतु मैं नायिका (नर्तकी) के दर्द को समझ पा रही थी। मैं उसके पति के पात्र के साथ भी सहानुभूति रखती थी और निरूपा राय द्वारा निभाए गए सास के पात्र के साहस की भी प्रशंसक थी।''

हेमा भाग्यशाली थीं कि 'जॉनी मेरा नाम' (1970) से शुरू कर के 'अंदाज' (1971), 'सीता और गीता' (1972), 'जुगनू' (1973), 'हाथ की सफाई' और 'प्रेम नगर' (1974) 'धर्मात्मा' और 'शोले' (1975), 'महबूबा' (1976), 'आजाद' (1977) और 'त्रिशूल' (1978) उन्होंने लगातार हर वर्ष सुपर हिट फिल्में दीं। वे इस मामले में भी विशेष रूप से भाग्यशाली थीं कि उनके निर्देशकों ने विभिन्न विधाओं के साथ प्रयोग करते हुए उन्हें विविधतावाली भूमिकाएँ प्रदान कीं। 'जहाँ प्यार मिले' में वे दब्बू और शरमीली थीं, 'वारिस' में वे शैतानीवाली भूमिका में थीं, 'अभिनेत्री' में रूमानी भूमिका में थीं तो 'आँसू और मुसकान' में भय से सहमी हुई। 'तुम हसीं मैं जवाँ' में वे एक अल्हड़ लड़की बनी थीं। हर दशक में उन्हें ऐसे शानदार प्रोजेक्ट मिले, जिनके कारण वह स्टारडम की कई सीढ़ियाँ एक साथ चढ़कर नई ऊँचाई पर पहुँचती गईं।

रमेश सिप्पी की 'अंदाज' फिल्म ने भी अपने समय में काफी हलचल पैदा की थी, क्योंकि उन दिनों सबसे चहेते अभिनेता राजेश खन्ना पहली बार ड्रीम गर्ल हेमा मालिनी के साथ काम कर रहे थे। रमेश सिप्पी ने नायक के रूप में शम्मी कपूर को लिया था और नायिका के रूप में उन्हें एक ऐसी अभिनेत्री की तलाश थी, जिसकी अपनी कोई निश्चित छवि न हो। हेमा के अंदर इस तरह के खतरे उठाने का विशेष गुण था। ''रमेशजी हिंदी सिनेमा की मुख्यधारा के नियमों को बदलना चाहते थे और मैं उन्हें हर तरह से प्रोत्साहित करना चाहती थी। पर सच कहूँ तो मेरे लिए राजेश खन्ना के साथ फिल्माए गए फ्लैश बैक के दृश्य एक खास आकर्षण थे। वह सारा प्रकरण काफी ऊर्जा से भरा था और बेहतरीन ढंग से छायांकित किया गया था, खासकर वह दुर्घटनावाला दृश्य। राजेश खन्ना की सुपर स्टारवाली छवि ने इसमें सोने पर सुहागा जैसा असर डाला था।'' हेमा जोर देकर कहती हैं।

कहा जाता है कि जब फिल्मकार एफ.सी. मेहरा 'लाल पत्थर' फिल्म के लिए अभिनेताओं का चयन कर रहे थे, दूसरी औरत वाली भूमिका के लिए उनकी पहली पसंद वैजयंती माला थीं; परंतु फिल्म के नायक राजकुमार का आग्रह था कि हेमा को लिया जाना चाहिए। मेहरा साहब को पक्का विश्वास नहीं हो पा रहा था कि हेमा, जो अब भी एक नवागंतुक कलाकार ही थीं, इस तरह का जटिल किरदार निभा पाएँगी। पर राजकुमार अपनी बात पर अड़े रहे। अंत में मेहराजी ने हेमा से संपर्क किया तो उसके आस—पास के लोगों ने हेमा के कान भरना शुरू कर दिए।

उनका कहना था कि राखी, जो इस फिल्म के नायक की पत्नी की भूमिका में साइन की गई थीं, के विपरीत एक नकारात्मक भूमिका स्वीकार करना गलत होगा।

राजकुमार को पहले से आशंका थी कि हेमा को भ्रमित किया जा सकता है, अत: उन्होंने हेमा से निजी मुलाकात की और उन्हें यह भूमिका करने के लिए मनाया। ''वे उस समय के एक बड़े सितारे थे और मैं एक नई कलाकार थी; पर उन्होंने मेरे पास आकर मुझे इस भूमिका के महत्त्व को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने मुझे उत्तम कुमार—सुप्रिया देवी अभिनीत मूल बँगला फिल्म 'लाल पत्थर' को देखने और उसके बाद ही कोई निर्णय लेने की सलाह दी। मैंने ऐसा ही किया और फिर मुझे किसी तरह की सलाह की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। मैंने यह भूमिका स्वीकार करने का मन बना लिया था।'' हेमा याद करते हुए बताती हैं।

लाल पत्थर : एक पेचीदा रोल जिसे उन्होंने बड़ी सुंदरता और आसानी से निभाया।

जब फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो राजकुमार ने हर प्रकार से हेमा के मार्गदर्शन का जिम्मा ले लिया। ''वे हर वक्त मेरे काम को देखते रहते थे और मुझे बताते कि मैं कहाँ और क्या गलत कर रही हूँ। मैं उनके सुझावों के लिए उनका शुक्रिया अदा करती हूँ।'' हेमा कृतज्ञता के साथ कहती हैं। जैसे—जैसे शूटिंग आगे बढ़ी, फिल्म के निर्देशक सुशील मजूमदार भी इस बात को मान गए कि हेमा ही इस भूमिका के लिए सही पसंद थीं। वे चाहते थे कि यह पात्र कला के सभी नवरसों को अभिव्यक्त करे और हेमा का एक कुशल नर्तकी होना इसमें सहायक सिद्ध हो रहा था। ''इस फिल्म में मेरा सबसे प्रिय दृश्य वह है, जिसमें मैं रोष और ईर्ष्या से भरे बाघ के पीछे खड़ी हूँ। इस फिल्म के लिए ही मुझे अपने सहकर्मियों से सर्वाधिक प्रशंसा मिली। मेरे कई सह—अभिनेताओं ने तो मेरे प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए मेरे पास बधाई संदेश भी भेजे और मैं इसके कारण काफी अच्छा अनुभव कर रही थी। यह कितने आश्चर्य कि बात है कि इस फिल्म के बाद आई अनेक फिल्मों में मुझे कभी दुबारा इतनी जटिल और जोशीली भूमिका करने को नहीं मिली।'' हेमा विस्मय के साथ कहती हैं।

सन् 1971 में प्रदर्शित होनेवाली 'नया जमाना' एक बहुत प्रेरणास्पद फिल्म थी, जिसमें पहली बार तीन वरिष्ठ लेखक—प्रमोद चक्रवर्ती, सचिन भौमिक और गुलशन नंदा पहली बार कथानक लेखन के लिए एक साथ आए थे। इसकी कहानी एक युवक की एक आदर्शवादी दुनिया की कल्पना के बारे में है और इसमें आदर्शवाद के पतन की धारणा का भी जिक्र है। फिल्म के क्लाइमेक्स में खलनायक प्राण द्वारा धर्मेंद्र के उपन्यास को अपने नाम से छपवाना दिखाया गया है। यह कथानक गुरुदत्त की सन् 1950 की क्लासिक फिल्म 'प्यासा' से मिलता—जुलता है, जिसमें रहमान ने गुरुदत्त की कविता अपने नाम से प्रकाशित करवा ली थी।

फिल्म 'पराया धन' में हेमा ने एक दत्तक पुत्री की भूमिका की थी, 'तेरे—मेरे सपने' में एक सुपर स्टार बनीं और 'राजा जानी' में गली में नाचनेवाली। श्रीधर, जिन्होंने हिंदी फिल्मों में पदार्पण से पूर्व हेमा को अपनी तमिल

फिल्म से निकाल दिया था, ने हेमा को 'गहरी चाल' का प्रस्ताव दिया। चूँकि हेमा अब एक स्टार बन चुकी थीं तो श्रीधर को उनसे संपर्क करने में कोई आपत्ति नहीं थी और हेमा ने भी दरियादिली दिखाते हुए उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। हालाँकि यह फिल्म काफी पहले शुरू हो चुकी थी, पर इसका प्रदर्शन 'सीता और गीता' के बाद ही हो पाया।

इस फिल्म के बारे में एक कहानी प्रचलित है कि वितरकों ने इसे हेमा के एक्शनवाले दृश्य शामिल किए बिना प्रदर्शित करने से इनकार कर दिया था। फिल्म के निर्देशक के पास कोई विकल्प नहीं था और उन्होंने शूटिंग के मध्य में कथानक में परिवर्तन करते हुए फिल्म के क्लाइमेक्स में नायकों—जीतेंद्र और अमिताभ बच्चन के बजाय हेमा मालिनी से खलनायक को पिटवाया। हेमा गाँव की गोरी (पत्थर और पायल) के रूप में भी उतनी ही विश्वसनीय लगती थीं, जितनी कि एक शहरी पॉकेटमार (अमीर—गरीब) के रूप में।

'पलकों की छाँव में' के एक दृश्य में हेमा।

नागी रेड्डी की फिल्म 'प्रेम नगर' के बारे में हेमा बताती हैं, ''मैंने इस फिल्म में राजेश खन्ना के निजी सचिव की भूमिका की थी। मैं पात्र के साथ खुद को जोड़ पा रही थी, क्योंकि वह भी गर्वीली और संयत थी।'' हेमा बताती हैं कि वह मद्रास में होनवाली शूटिंग के लिए हमेशा लालायित रहती थीं, क्योंकि इसी बहाने उन्हें अपने नए बने बँगले में रहने का मौका मिल पाता था। ''अन्यथा मेरा कार्यक्रम इतना व्यस्त रहता था कि मैं अपने नए घर का आनंद उठाने का अवसर ही नहीं निकाल पाती थी। इसलिए जब भी मुझे कोई रोचक दक्षिण भारतीय प्रोजेक्ट मिलता, मैं उसे तुरंत स्वीकार कर लेती। मेरे परिवार के लोग भी मद्रास में मेरी शूटिंग की आस लगाए रहते थे, क्योंकि वहीं हमें एक साथ अच्छा समय बिताने को मिलता था।''

'दुलहन' एक आम पारिवारिक ड्रामे की तरह थी, जिसमें हेमा का चरित्र एक प्रफुल्लित वधू से अनिच्छुक विधवा के रूप में परावर्तित हो जाता है। इस फिल्म में हेमा के प्रदर्शन को एक संपूर्ण चक्र पूरा करना था। ''यह एक अच्छी कहानी थी और निर्देशक ने भी अपना काम पूरी दक्षता से किया था। मुझे खासतौर पर इस फिल्म के शीर्षक गीत 'मैं दुलहन तेरी, तू दूल्हा पिया' के छायांकन का तरीका अच्छा लगा और इसे अत्यधिक प्रशंसा भी मिली।''

गुलजार की फिल्म 'खुशबू' के बारे में हेमा का मानना है कि यह हर तरीके से एक परिपूर्ण फिल्म थी। इस फिल्म के पात्रों की रूपरेखा, फिल्म के प्रदर्शन का समय, कलाकारों का चयन और यहाँ तक कि परिधान सज्जा भी एकदम अनुकूल थी। यह पहली बार था कि किसी फिल्म में हेमा को सिलवटोंवाली सूती साड़ी, बेमेल ब्लाउज, साधारण सी चोटी में बँधे केश के साथ बिना मेकअप के प्रस्तुत किया गया था। शरतचंद्र की कहानी 'पंडित मोशाय' पर आधारित यह फिल्म हेमा के कॅरियर में एक मील का पत्थर साबित हुई। वे कहती हैं, ''सिर्फ गुलजार साहब इतनी सादगी में भी इतने प्रभावशाली हो सकते हैं। सभी पात्रों का रेखांकन कितनी खूबसूरती के साथ किया गया था। मैं अपने द्वारा निभाए गए पात्र 'कुसुम' के साथ आसानी से समझ सकती थी। आत्म—त्याग की कीमत पर आत्म—सम्मान पाने का उसका संघर्ष अत्यंत त्रासद था। जब भी मैं यह फिल्म देखती हूँ तो उदास—सी हो जाती हूँ।'' हेमा एक आह के साथ याद करते हुए कहती हैं।

फिरोज खान तो अपनी फिल्म 'धर्मात्मा' की विषय—वस्तु के प्रति एकदम जुनूनी ही हो रहे थे। उनकी प्रबलता का असर पूरे सेट पर संक्रामक रूप से फैल रहा था। ''अफगानिस्तान में शूटिंग करते समय तो उन पर जैसे कोई भूत सवार हो गया था और इसका असर इस फिल्म के भव्य चित्र—पटल के रूप में दिखता है। 'धर्मात्मा' एक अत्यंत ही आकर्षक फिल्म थी और मुझे अत्यंत मनोहर रूप से प्रस्तुत किया गया था। निश्चित रूप से यह मेरे कॅरियर का सबसे तेज—तर्रार किरदार था। उसमें एक अजब—सी उछाल थी; एक ऐसी अपक्व ऊर्जा, जिसकी कमी हमें मध्यांतर के बाद उसकी मौत पर महसूस होती है। फिरोज खान तो इस पात्र से इस हद तक प्यार करते थे कि वे मुझे पूरी शूटिंग के दौरान 'रेशमा' कहकर ही बुलाते थे। इसका मुझ पर इतना असर पड़ा कि मैं भी मानने लगी थी, जैसे मैं उन्हीं पहाड़ों में रहनेवाली एक अफगान लड़की हूँ। इस फिल्म के लिए पोशाकों का डिजाइन परमेश्वर गोदरेज ने किया था। मेरे हिसाब से यह एकमात्र फिल्म थी, जिसमें उन्होंने यह कार्य किया था और वह भी सिर्फ इसलिए कि फिल्म के निर्देशक उनके निजी मित्र थे।''

जब रमेश सिप्पी ने 'शोले' की बसंती वाली भूमिका के बारे में हेमा को बताया तो वे इससे कतई भी प्रभावित नहीं हुईं। वे समझ ही नहीं पा रही थीं कि आखिर निर्देशक उन्हें एक ताँगेवाली की भूमिका में क्यों लेना चाह रहे हैं। पर लगातार दो सफल फिल्मों ('अंदाज' तथा 'सीता और गीता') के बाद उनके लिए सिप्पी साहब को मना करना कठिन था। ''मैं आधे—अधूरे मन से तैयार हो गई और अगर मैंने कहीं यह भूमिका करने से मना कर दिया होता तो फिर कभी अपने आप को माफ नहीं कर पाती। 'शोले' के प्रदर्शित होने के बाद मैं जहाँ कहीं भी जाती, लोग मुझे 'बसंती' के नाम से ही पहचानते। लोग यह जानना चाहते थे कि मैं कैसे उन संवादों को फर्राटे के साथ बोल पाई? सच में, उन लंबे संवादों को याद करना और एक 'टेक' में उनकी प्रस्तुति मेरे लिए एक दु:स्वप्न ही थी; पर रमेशजी की मदद और अपनी अच्छी स्मरण—शक्ति की सहायता से मैं यह कर पाई थी।'' वह एक लंबी सी मुसकान के साथ कहती हैं।

'संन्यासी' को हेमा की परदे पर सर्वाधिक सौंदर्यीकरणवाली फिल्म माना जाता है। इसमें हेमा एक मोहिनी स्त्री की भूमिका में थीं, जिन्हें एक संन्यासी को लुभाना था। इसी कारण परिधान सज्जाकार भानु अथैया को उनकी वेशभूषा पर खुलकर खर्च करने का निर्देश दिया गया था। हेमा कहती हैं कि उन्हें उन पोशाक व आभूषणों को पहनने में अत्यंत आनंद आया और हमेशा की तरह छायाकार राधू करमाकर ने उनकी खूबसूरती के साथ पूरा न्याय किया। ''किसी भी अभिनेता के लिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि उसका अपने कैमरामैन से अच्छा संपर्क हो—और यह प्रयास दोनों तरफ से होना चाहिए। हालाँकि कलाकार आमतौर पर तकनीकी कर्मियों के साथ उतना संवाद नहीं करते, जितना कि अपने निर्देशक के साथ; पर उनके योगदान को कम करके नहीं आँका जा सकता।''

यह हेमा के कैरियर का एक रोचक दौर था। अगर वह एक तरफ दक्षिण भारतीय फिल्म के रीमेक 'सुनहरा संसार' में एक महत्त्वकांक्षी पेशेवर महिला की भूमिका निभा रही थीं तो दूसरी तरफ 'महबूबा' में एक शहजादी बनी थीं। 'आप बीती' में वे एक विमान परिचारिका थीं तो 'किनारा' में एक नर्तकी के तौर पर उनकी सफलता का औसत पिछले कुछ सालों में कम हो रहा था। 'दो ठग', 'धूप—छाँव', 'पलकों की छाँव में', 'दिल्लगी' आदि को सिर्फ औसत सफलता ही मिल पाई थी।

यश चोपड़ा की फिल्म 'त्रिशूल' में हेमा एक उद्योगकर्मी बनी हैं। इस फिल्म में नायक शशि कपूर, जो एक युवा उद्योगपति बने हैं, को एक आधिकारिक मुलाकात के लिए जाना था तो उन्हें यह जानकर सुखद आश्चर्य होता है कि उनकी सहकर्मी एक महिला है। इस फिल्म के लिए परिधान सज्जाकार भानु अथैया ने हेमा को छोटे—छोटे बालों के साथ सिफॉन की साड़ी और बिना बाँहोंवाले ब्लाउज में तैयार किया था। यह एक छोटी, पर मजेदार

भूमिका थी। यह पात्र उत्कृष्ट रूप से पसंद करने लायक था। हेमा कहती हैं, ''अपने पहनने के ढंग और व्यवहार की दृष्टि से यह पात्र मेरे द्वारा अभिनीत परंपरागत नायिकाओं के चरित्र से अत्यंत भिन्न था।''

कई वर्षों पहले बी.आर. फिल्म्स ने हेमा को ऐतिहासिक फिल्म 'चाणक्य चंद्रगुप्त' के लिए साइन किया था, जो कभी बन ही नहीं पाई। हेमा को हमेशा दिलीप कुमार के साथ काम करने का अवसर चूक जाने का मलाल रहता था। इसी कारण जब मनोज कुमार ने उनसे 'क्रांति' फिल्म के लिए संपर्क किया तो उन्होंने तुरंत 'हाँ' कर दी। ''दिलीप साहब और मैंने कई महत्त्वपूर्ण दृश्य एक साथ किए। उन जैसे महान् कलाकार को काम करते देखना अपने आप में एक सम्मोहक अनुभव था। मैं इस फिल्म में अपने पात्र 'राजकुमारी मीनाक्षी' के प्रति भी बहुत सम्मान अनुभव करती थी। अपने सिंहासन को त्यागकर अपने ही दुश्मन को दिल देना एक परम साहस का कार्य है। उसके इसी कार्य से यह पात्र अत्यंत विशेष हो जाता है।''

हेमा कहती हैं कि मनोज कुमार की कैमरों की जगह तय करने की शैली बहुत ही असाधारण थी। ''एक निर्देशक के रूप में उनके पास लंबे—लंबे दृश्य और गाने एक ही शॉट में फिल्माने की योग्यता थी। यह कलाकारों के लिए शूटिंग करते वक्त बहुत कष्टकारक था; पर इसका लाभ यह होता था कि शॉट एक ही टेक में खत्म हो जाता और सेट पर काफी समय बचता था।''

कई सालों तक हेमा सभी बड़े फिल्म निर्माताओं की पहली पसंद बनी रहीं। बी. आर. चोपड़ा की 'द बर्निंग ट्रेन', एफ.सी. मेहरा की 'अली बाबा और चालीस चोर', मनमोहन देसाई की 'नसीब', रामानंद सागर की 'बगावत' और रमेश सिप्पी की 'सत्ते पर सत्ता' इसके उदाहरण हैं। वे स्वतंत्र रूप से काम करनेवाले निर्देशकों की भी पहली पसंद थीं। राकेश कुमार की 'दो और दो पाँच', सुभाष घई की 'क्रोधी', चेतन आनंद की 'कुदरत' ऐसी ही कुछ फिल्मों के नाम हैं। हेमा को भी इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होंने 'रत्नदीप', 'ज्योति' एवं 'दर्द' जैसी कलात्मक फिल्मों और 'बंदिश', 'आस—पास' तथा 'सम्राट' जैसी व्यावसायिक फिल्मों में संतुलन बनाए रखा और दोनों को एक जैसी सहजता व उत्साह से पूरा किया।

सन् 1977 में जया चक्रवर्ती ने बासु चटर्जी द्वारा निर्देशित फिल्म 'स्वामी' का निर्माण किया। इस फिल्म में शुरू में हेमा और मनोज कुमार को काम करना था; पर चूँकि हेमा के पास कोई खाली तारीख नहीं थी, अत: जयाजी ने कम लागतवाले कलाकारों के साथ छोटे बजटवाली फिल्म बनाना ही उचित समझा। इसके लिए उन्होंने शबाना आजमी और गिरीश कर्नाड को साइन किया। हेमा और धर्मेंद्र ने इस फिल्म में अतिथि कलाकार के रूप में आइटम सॉन्ग किया। हेमा को इस फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति बहुत अच्छी लगी और उन्होंने बासु चटर्जी से वादा किया कि जब कभी उनके पास खाली तारीखें होंगी, वे एक साथ ऐसे ही किसी छोटे प्रोजेक्ट में काम करना चाहेंगी।

'दर्द' फिल्म अशोक कुमार—सुचित्रा सेन अभिनीत फिल्म 'ममता' से अभिप्रेरित थी। प्रेम और त्याग की इस अनुपम गाथा में हेमा ने अशोक कुमारवाली भूमिका की और राजेश खन्ना ने सुचित्रा सेन की दोहरी भूमिकावाला पात्र निभाया। हेमा के पास इस फिल्म से जुड़ी कोई विशिष्ट यादें तो नहीं हैं, पर उन्हें वह दृश्य याद है, जिसमें नायक उन्हें यह सुझाव देता है कि वह जान—बूझकर केस हार जाएँ, ताकि उनका बेटा, एक उभरता हुआ वकील, जीत सके। ''यह एक बहुत अच्छी तरह लिखा गया और भावनात्मक दृश्य था।''

अपने अतीत का विश्लेषण करते हुए हेमा कहती हैं कि कुछ फिल्में कहानी सुनते समय प्रभावित नहीं करतीं, पर जब वे बनकर तैयार होती थीं तो उन्हें आश्चर्यचकित कर देती थीं। 'ज्योति' गुरु दत्त और माला सिन्हा द्वारा अभिनीत 'बहूरानी' की रीमेक थी। ''पहली बार मैं एक गुस्सेवाली गृहिणी की भूमिका कर रही थी और मुझे

खलनायक को चाबुक से पीटने में बहुत मजा आया। दर्शकों ने भी इसका खूब लुत्फ उठाया। आखिरकार सिर्फ मर्दों को ही क्यों परदे पर सारी मार—धाड़ करने का मौका मिले?'' वह खूबसूरती के साथ कहती हैं। प्रसिद्ध बँगला उपन्यास 'स्वयं सिद्ध' से प्रेरित यह विषय निर्देशक प्रमोद चक्रवर्ती के दिल के अत्यंत निकट था। ''वे काफी लंबे अरसे से यह फिल्म बनाना चाहते थे और जब भी इसके बारे में बात करते तो बहुत भावुक हो उठते। यह मेरा अपना अवलोकन है कि जब भी निर्देशक विषय के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े रहते हैं तो फिल्म में खास जादू भर जाता है। मेरे किरदार गौरी का विवाह एक ऐसे पुरुष से होता है, जो विक्षिप्त है और जिसे वह अपनी सेवा से धीरे—धीरे ठीक कर देती है। इस फिल्म का शक्तिशाली संदेश यह था कि यदि आप हिम्मत करें तो आप कुछ भी कर सकते हैं। गौरी ने हिम्मत दिखाई और अपनी नियति को बदल डाला।'' वे ठाट से कहती हैं।

'दर्द' : प्यार और बलिदान की एक अनोखी कहानी। (हेमा और राजेश खन्ना)

हेमा कहती हैं कि एक खास उम्र के बाद अभिनेताओं को फिल्में स्वीकारने में सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि हिंदी सिनेमा में अभिनेताओं को खास दायरे में बाँध देने की प्रवृत्ति होती है। 'मेरी आवाज सुनो' और 'एक नया इतिहास' दोनों के विषय अत्यंत रोचक थे और दोनों फिल्में लगभग एक साथ ही प्रदर्शित हुईं, पर दर्शकों पर कोई खास प्रभाव डालने में असफल रहीं। वे मानती हैं कि 'जस्टिस चौधरी' उनके लिए एक सीखनेवाला अनुभव था। इस फिल्म के नायक जीतेंद्र दोहरी भूमिका में पहले हेमा के पति बने और उसके बाद उनके बेटे। हेमा को इस फिल्म में वृद्ध होते दिखाया गया। ''मुझे सफेद विग पहनने और चेहरे की झुर्रियोंवाले मेकअप से कोई खुशी नहीं हुई। उसके बाद मैंने इस तरह की भूमिकाएँ दुबारा स्वीकार न करने का निश्चय किया।''

ए. पूर्णचंद्र राव द्वारा निर्मित और टी. रामा राव द्वारा निर्देशित 'अंधा कानून' पूरे भारत में जबरदस्त हिट साबित हुई। इस फिल्म में हेमा पहली बार एक पुलिस इंस्पेक्टर बनीं और दक्षिण भारत के सुपर स्टार रजनीकांत, जो एक अपराधी की भूमिका में थे, की बहन की भूमिका निभाई। इससे पहली उन्होंने 'गहरी चाल' में अमिताभ बच्चन की बहन की भी भूमिका की थी। हिंदी फिल्मों में आम तौर पर यह माना जाता है कि अगर किसी प्रमुख जोड़ी को भाई—बहन के रूप में लिया जाता है तो फिर उन्हें रोमानी जोड़े के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। हेमा कहती हैं, ''मैंने और अमिताभ ने पहले भाई—बहन की जोड़ी के रूप में काम किया और इसके बाद हमने अपने कॅरियर में कई सारी रोमांटिक फिल्में भी कीं।''

❑

8

कार्यक्षेत्र का विस्तार

रचनात्मकता की ओर अपने रुझान के कारण हेमा हमेशा नए सुझावों और चुनौतियों के लिए तैयार रहती थीं। टेलीविजन धारावाहिक 'कामिनी-दामिनी' के एक दृश्य में हेमा।

हेमा को फिल्म निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण का विचार तब आया, जब वे इरविंग वलास की 'द सेकंड लेडी' पढ़ रही थीं। ''इस पुस्तक के दृश्य मेरी आँखों के सामने तैर रहे थे और मैं इसे छोड़ नहीं पा रही थी। मैंने उसी समय धरमजी से कह दिया कि मैं बहुत जल्द अपना बैनर शुरू करूँगी।'' वह उद्घाटित करती हैं। हेमा के भाई जगन्नाथ द्वारा निर्मित और एंजेल फिल्म्स के बैनर तले सन् 1984 में प्रदर्शित 'शरारा' फिल्म में हेमा के साथ राजकुमार, शत्रुघ्न सिन्हा और मिथुन चक्रवर्ती जैसे कलाकारों ने काम किया। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर तो उतनी सफल नहीं हुई, परंतु इसे अपने निर्माण की गुणवत्ता और कथानक के लिए खूब सराहना मिली।

इसी प्रशंसा से प्रोत्साहित होकर हेमा ने सन् 1990 में एच.एम. वीडियो क्रिएशंस द्वारा निर्मित अपना पहला टेलिसीरियल 'नूपुर' शुरू किया। यह एक नर्तकी की कहानी थी, जिसे उसके ट्रैवेल एजेंट ने धोखा दे दिया था और इसके बाद एक अपरिचित व्यक्ति (कबीर बेदी) की सहायता से उसने सभी संकटों का सामना करते हुए अपना पहला नृत्य कार्यक्रम किया। परंतु उसके प्रदर्शन को आलोचकों की प्रशंसा नहीं मिल सकी। अपनी कला को बेहतर बनाने के लिए वह नर्तकी एक गुरु की तलाश में नृत्य नगरी तंजोर पहुँचती है। महीनों के कठिन प्रशिक्षण के बाद वह वापस लौटती है और पुन: अपने खोए हुए गौरव एवं प्रशंसकों के प्रेम को प्राप्त करती है।

हेमा द्वारा परिकल्पित इस कहानी का पटकथा लेखन गुलजार ने किया था। चूँकि गुलजार पहली बार किसी नर्तकी के जीवन के बारे में लिख रहे थे, अत: वे सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि सभी उद्धरण सही—सही लिये जाएँ। उन्होंने हेमा को इस कथा स्वरूप से संबंधित पुस्तकें भेजने को कहा। हेमा की पारिवारिक पृष्ठभूमि और जीवन—शैली से परिचित होने के कारण वे एक संवेदनशील पटकथा तैयार कर पाए और इसने हेमा के पात्र के साथ सहज होने के कार्य को आसान बनाया।

टेलीविजन की लत : दूरदर्शन के धारावाहिक 'नुपुर' का एक दृश्य। एक नर्तकी के जीवन पर आधारित यह धारावाहिक दर्शकों के बीच अत्यंत प्रचलित हुआ।

इस प्रोजेक्ट के लिए निर्देशक के तौर पर विकास देसाई हेमा की पहली पसंद थे। उन्होंने उनके साथ 'तेरह पन्ने' में काम किया था, पर किसी कारण से बात बन नहीं पाई। उसके बाद उन्होंने कई निर्देशकों से संपर्क किया, पर किसी का भी चयन नहीं हो पाया। हेमा कहती हैं, ''मेरे मन में स्पष्ट था कि निर्देशक को शास्त्रीय नृत्य की अच्छी समझ होनी चाहिए; क्योंकि हमने हर एपिसोड में शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न विधाओं का परिचय देने का सोच रखा था। हमने कई लोगों से बात की और सही व्यक्ति के लिए महीनों इंतजार किया। अंत में, गुलजार साहब ने सुझाव दिया कि मुझे खुद ही इस धारावाहिक का निर्देशन करना चाहिए। यह उन्हीं का विचार था कि हमें 22 मिनट के एपिसोड में से 6 मिनट नृत्य के लिए आरक्षित रखना चाहिए। मुझे यकीन नहीं था कि दर्शक इसे स्वीकार करेंगे या नहीं; पर गुलजार साहब ने जोर देकर कहा कि अगर यह धारावाहिक नृत्य के बारे में है तो हमें संकोची होने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम उन्हीं की अभिशंसा के आधार पर आगे बढ़े और वे सही साबित हुए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम सही रास्ते पर हैं या नहीं, हमने जान—बूझकर एक एपिसोड में नृत्य का कोई दृश्य नहीं लिया और हमने पाया कि दर्शक इससे बहुत निराश हुए थे। रोचक बात तो यह है कि आज इतने वर्षों बाद भी मैं जहाँ भी जाती हूँ, लोग 'नूपुर' के लिए मेरी प्रशंसा करते हैं। वैसे लोग भी, जिनका नृत्य के साथ कोई सीधा संपर्क नहीं है, जैसे कि विदेश में मिलनेवाले एक सरदारजी, मुझसे अकसर पूछते हैं कि मैं 'नूपुर' का सीक्वेल क्यों नहीं बना पाई।

''इस धारावाहिक की शूटिंग मेरे लिए आसान नहीं थी। यह पहला अवसर था, जब मैं अभिनय, नृत्य, निर्देशन और निर्माण सबकुछ एक साथ कर रही थी। इतने सारे विभागों को सँभालना मुझे ऊपर तक निचोड़ देता था। जैसे ही यह धारावाहिक खत्म हुआ, मैं एक लंबी छुट्टी पर लंदन चली गई। मैंने सोच लिया था कि मैं अब कभी दुबारा कोई धारावाहिक नहीं बनाऊँगी; पर टेलीविजन एक नशीला माध्यम है। एक बार आप इसमें काम कर लेते हैं तो आपका मन बार—बार वही करना चाहता है।'' हेमा हँसते हुए कहती हैं।

छोटे परदे पर अपने इन प्रयोगों के साथ ही हेमा ने बड़े परदे के साथ भी अपना संपर्क कायम रखा था; हालाँकि उनकी हाल में प्रदर्शित फिल्मों में पहलेवाली बात नहीं रह गई थी। वे भाग्यशाली थीं कि उनकी हालिया फिल्में उनके समर्पित प्रशंसकों के दिमाग में उनकी छवि धूमिल नहीं कर पाई थीं। ''घने बादलों में भी कहीं कोई सुनहरी चमक छिपी होती है।'' हेमा दार्शनिक अंदाज में कहती हैं। ''मेरे बुरे दौर के बाद अच्छी बात यह थी कि मैं अचानक समांतर सिनेमा के फिल्मकारों की पहुँच में आ गई थी। अब मेरे पास नए निर्देशकों, जैसे कि सुखवंत ढड्डा (एक चादर मैली सी) और अरुणा राजे (रिहाई) के साथ काम करने का अवसर था। ये फिल्में एक महिला और एक अभिनेत्री दोनों ही रूपों में मेरे लिए मुक्तिप्रद अनुभव थे।'' हेमा बताती हैं। आरंभ में धर्मेंद्र नहीं चाहते थे कि हेमा 'एक चादर मैली सी' स्वीकार करें, क्योंकि इस विषय के साथ उनकी कुछ दु:खद यादें जुड़ी हुई थीं। कई सालों पहले इसी शीर्षकवाली फिल्म करते समय वरिष्ठ अभिनेत्री गीता बाली की छोटी चेचक से मृत्यु हो गई थी

और उनके देवर की भूमिका कर रहे धर्मेंद्र इस त्रासदी के साक्षी थे। उनके मन में हेमा के इसी शीर्षकवाली फिल्म में काम करने को लेकर अंधविश्वास पनप रहा था। इसी कारण से किसी निर्माता ने फिर कभी इस विषय पर फिल्म बनाने का प्रयास नहीं किया था। सुखवंत ढड्डा ने यह साहस दिखाया और इस फिल्म की नायिका के रूप में हेमा ने इस मनहूस अवधारणा को तोड़ने में उनकी सहायता की।

अरुणा राजे की 'रिहाई' की कहानी सुनते समय ही हेमा ने तय कर लिया था कि वह यह फिल्म करने जा रही हैं। ''पूरी दुनिया में महिलाएँ ही हर तरह के सामाजिक व पारिवारिक संकटों का सामना करती हैं और फिर भी उन्हें कमजोर लिंग कहा जाता है। इस फिल्म में मैंने एक पर—पुरुषगामिनी स्त्री की भूमिका की है, जो अपने प्रेमी के बच्चे का गर्भपात करवाने के लिए अपने पति द्वारा डाले जा रहे दबाव का विरोध करती है। यह मेरे द्वारा अब तक की गई परंपरागत छविवाली भूमिकाओं से काफी हटकर थी।'' हेमा समझाते हुए कहती हैं। 'रिहाई' फिल्म की यूनिट के पास सुनाने को कई सारी लघुकथाएँ थीं। ट्रकों में भरकर गाँववाले हेमा मालिनी जैसी सौंदर्यशालिनी स्त्री की एक झलक पाने को शूटिंग पर आते थे। वे इस यूनिट की एकमात्र स्टार थीं और बाकी के सभी कलाकार टी.वी. व थिएटर जगत् से संबंध रखते थे।

आलोचकों ने भी एक अभिनेत्री के रूप में हेमा की पसंद को स्वीकृति दी। इसी समय हेमा ने कुछ बड़े निर्माताओं के शिविर में भी अपनी वापसी की। हेमा ने यश चोपड़ा की 'विजय' और रामोजी राव की 'जमाई राजा' जैसी फिल्में साइन कीं। ''मैंने सास की भूमिका इसलिए स्वीकार की, क्योंकि यह मुझे मजेदार लगी। मेरा सोच था कि इस तरह की अत्यंत उजड्ड महिला की भूमिका करना कुछ अलग अनुभव होगा; पर फिल्म उद्योग के लोगों ने अपने आप से यह आशय निकाल लिया कि मैं माँ की भूमिकाओं में ही आनेवाली हूँ और उन्होंने स्वत: ही मुझे वरिष्ठ कलाकारों के समूह में शामिल कर लिया। यह मेरे लिए अत्यंत कष्टकर था। हम ऐसा क्यों मान लेते हैं कि एक अभिनेत्री, जो अब अपनी सबसे अच्छी अवस्था के परे जा चुकी है, अब सिर्फ माँ वाले पात्रों में ही नजर आएगी? क्या वरिष्ठ महिलाओं की अपनी कोई जिंदगी और कहानी नहीं होती? यह वाकई एक दु:खद बात है कि हमारी दृष्टि इतनी संकुचित है।'' हेमा आह भरते हुए कहती हैं।

फिल्म 'एक चादर मैली सी' में एक बेहद संजीदा और सार्थक भूमिका निभाती हेमा।

समांतर फिल्मों में अपने अनुभव के उपरांत हेमा अब मुख्य धारा की फिल्मों में कमतर भूमिकाएँ स्वीकार करने को कतई इच्छुक नहीं थीं। ''मैं छोटी पर सार्थक भूमिकाओं, जो चुनौतीपूर्ण हों, में काम करना ज्यादा पसंद करती थी। मुझे 'लेकिन' में अपनी भूमिका बहुत पसंद है, जिसमें मैं अपनी छोटी बहन की आत्मा का इंतजार करते हुए वृद्ध हो जाती हूँ। यह एक बार—बार याद आनेवाली भूमिका थी और फ्लैश फारवर्ड में ही चलती रहती थी। इस फिल्म के लिए हृदयनाथ मंगेशकर का दिया संगीत अत्यंत सम्मोहक था।'' हेमा कहती हैं।

काफी सोच—विचार के बाद ही हेमा ने फीचर फिल्मों के निर्देशन के क्षेत्र में उतरने का फैसला किया। उनके चचेरे भाई मोहन ने इससे पहले ही शूटिंग के पहले होनेवाली प्री—प्रोडक्शन की कार्यवाही पूरी कर ली थी। फिल्म

की शूटिंग शुरू करने का समय आ चुका था; पर हेमा अब तक अपने फिल्म के नायक की तलाश नहीं कर पाई थी। उन दिनों वह अपने नृत्य कार्यक्रम के लिए हैदराबाद की यात्रा पर थीं और हमेशा की तरह उन्होंने अपने प्रदर्शन से पहले माँ इंदिराजी से आशीर्वाद प्राप्त करने का समय माँगा। माँ ने हाल—चाल पूछते समय हेमा से उनकी फिल्म की प्रगति के बारे में भी पूछा और हेमा ने भरे दिल से उनसे कहा कि उन्हें अब भी नायक की तलाश है। माँ ने अपने स्वाभाविक उल्लसित अंदाज में कहा, ''चिंता मत करो, वह तुम्हें जल्द ही मिल जाएगा; और वह एक बहुत बड़ा स्टार बनेगा।''

हेमा इस आश्वासन से पूरी तरह आश्वस्त तो नहीं हुईं, पर नियति के विधान के तहत मुंबई पहुँचते ही उन्होंने टी.वी. देखते समय 'फौजी' धारावाहिक में काम कर रहे शाहरुख खान को देखा। उसके चेहरे पर ताजगी थी और एक अच्छा फिल्मी अभिनेता बनने की उसमें ढेर सारी संभावनाएँ थीं। हेमा ने अपने कार्यालय के लोगों से उसके बारे में पूछताछ करने को कहा और यह पाया कि वह दिल्ली में रहता है। हेमा की चचेरी बहन प्रभा दिल्ली में ही रहती थीं और हेमा के कहने पर उन्होंने शाहरुख से संपर्क किया। पर शाहरुख खान मान ही नहीं रहे थे कि हेमा मालिनी जैसी शख्सियत उन्हें फोन करेंगी। वे समझ रहे थे कि कोई उनके साथ मजाक कर रहा है। उनके इस व्यवहार से तंग आकर प्रभा ने उन्हें हेमा का नंबर दिया और फोन करने को कहा। शाहरुख ने ऐसा ही किया और उनकी बात सीधे हेमा से ही हुई।

दो दिन बाद ही शाहरुख ऑडिशन देने हेमा के घर मुंबई पहुँच गए। हेमा उनसे परिचित तो थीं ही, इस मुलाकात के बाद उन्हें शाहरुख का रंग—रूप भी ठीक ही लगा। सिर्फ एक छोटी सी समस्या यह थी कि उनके बालों का झुंड उनके पूरे चेहरे को ढँक देता था। हेमा ने उनसे पूछा कि क्या वे अपने बालों के बारे में कुछ कर सकते हैं? शाहरुख ने तुरंत अपनी उँगलियाँ बालों पर फेर दीं। वे पहले से अच्छे तो दिख रहे थे, पर हेमा अब भी संतुष्ट नहीं थीं। उन्होंने अपने मेकअप मैन को बुलाया और शाहरुख के बालों में जेल लगाकर उन्हें पीछे करने को कहा। शाहरुख का वह बदला हुआ स्वरूप अत्यंत सुंदर था। जब यह सब हो रहा था, तभी धर्मेंद्र भी वहाँ आ गए। हेमा ने उन्हें अपनी 'खोज' से मिलवाया और बताया कि वे उन्हें नायक के रूप में लेना चाहती हैं। धरमजी ने भी हेमा की पसंद का अनुमोदन किया और शाहरुख को वह भूमिका मिल ही गई।

''उस समय कोई नहीं जानता था कि शाहरुख इतने बड़े फिल्मी सितारे बन जाएँगे; पर माँ ने पहले ही यह सब जान लिया था।'' हेमा एक बड़ी सी मुसकान के साथ कहती हैं। ''यही महान् लोगों की शक्ति होती है। वे सभी चीजों को एक बड़े दृष्टिकोण के साथ देखते हैं, हमें घटनाओं के बारे में सावधान करते हैं और फिर अपने आप को एकदम विलग कर लेते हैं।''

एक अच्छे से उपनगरीय होटल में हुए भव्य मुहूर्त समारोह के दौरान हेमा ने इस फिल्म की घोषणा की। इसका शीर्षक 'दिल आशना है' माँ इंदिराजी द्वारा सुझाया गया था, जो खुद उर्दू एवं अंग्रेजी की अच्छी लेखिका हैं और कई पुस्तकें भी लिख चुकी हैं। इस कवयित्री ने अपनी इच्छा से ही संत बनना स्वीकार किया था। शिर्ले कॉनरान के लोकप्रिय उपन्यास 'लेस' पर आधारित यह फिल्म महिलाओं के आपसी रिश्तों पर रोशनी डालती है। चार—चार अभिनेत्रियों—डिंपल कपाडिया, अमृता सिंह, सोनू वालिया और दिव्या भारती के साथ समय व्यतीत करना हेमा के लिए एक अत्यंत आनंदमय अनुभव था। ''जब अभिनेता गण सेट पर आते तो माहौल एकदम से बदल जाता; पर मैं यह भी कहना चाहूँगी कि मुझे उन सभी का अच्छा सहयोग मिला। एक अभिनेत्री के रूप में मेरे लिए भावनाओं को कैमरे के आगे से देखने के बजाय कैमरे के पीछे से देखना बहुत दिलचस्प था।'' हेमा विस्तार से बताती हैं।

'दिल आशना है' के निर्माण के दौरान ही हेमा ने जाना कि निर्देशन कितना कठिन कार्य है। ''मैं अपने कलाकारों के भीतर से अच्छा प्रदर्शन निकलवा पाने की अपनी योग्यता के प्रति आश्वस्त थी और हमेशा सेट पर अच्छी तरह से तैयारी करके ही जाती। जब भी मैं अकेले में बैठकर अगले शॉट के बारे में सोच—विचार कर रही होती थी तो अकसर मेरा स्पॉट ब्वॉय मुझे वैन में बैठकर आराम करने को कह देता। हालाँकि मैंने एक अभिनेता से एक निर्देशक के रूप में खुद को ढाल लिया था, पर अब भी वे मुझसे एक अभिनेता जैसा व्यवहार करते थे। आखिरकार जब मेरे दिमाग में इतने सारे नए विचार घूम रहे हों तो मैं एकांत में कैसे रह सकती थी? मुझे लगता है, एक अभिनेता और एक निर्देशक के बीच यही अंतर होता है। एक अभिनेता का शॉट के साथ जुड़ाव दृश्य खत्म होने तक ही रहता है। दूसरी तरफ, एक फिल्मकार के लिए हर एक शॉट उसकी अपनी जिंदगी, अपने चित्र पटल की तरह होता है।'' हेमा व्याख्या करते हुए कहती हैं।

''यही वह पहला अवसर था, जब मैंने संयम की महत्ता को पहचाना। अभी तक मैंने अपने सभी निर्देशकों को हलके में लिया था, पर 'दिल आशना है' के बाद मैं उन्हें एक नए सम्मान के साथ देखने लगी थी।'' हेमा अपने कथन में एक और वाक्य जोड़ते हुए कहती हैं।

यह फिल्म सन् 1991 में प्रदर्शित हुई और अगर शहर में सांप्रदायिक दंगे न भड़क उठते तो बॉक्स ऑफिस पर भी अच्छा प्रदर्शन करती। हेमा को याद है कि वह रंग शारदा थिएटर में अपनी नई नृत्य नाटिका 'दुर्गा' पर कार्यक्रम कर रही थीं, जिसके मुख्य अतिथि बाल ठाकरे थे। कार्यक्रम के बाद ठाकरे ने हेमा से तुरंत घर लौटने को कहा और उन्हें सकुशल घर छोड़ने के लिए सुरक्षा गार्ड भी दिए। अगले ही दिन पूरे शहर में आग लग चुकी थी। वितरकों ने हेमा को सलाह दी कि वे प्रदर्शकों के पास से रीलें वापस मँगवा लें और फिल्म के प्रदर्शन को दंगों की आँच कम होने तक स्थगित कर दें; पर तब तक पीछे हटने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। अगले ही सप्ताह 'दिल आशना है' प्रदर्शित हो गई और सभी थिएटरों में इसकी शुरुआत कमजोर ही रही। हेमा ने एक फिल्मकार के रूप में अपनी पहली बड़ी सीख पा ली थी। ''एक अच्छी फिल्म बना लेना ही अपने आप में पर्याप्त नहीं होता। इसके प्रदर्शन का उचित समय तय करना भी उतना ही आवश्यक होता है।'' हेमा गंभीरता के साथ कहती हैं।

एक निर्देशक के रूप में हेमा का पदार्पण उनके करियर में एक नया मोड़ लेकर आया। अब निर्माता गण उनके पास निर्देशन का प्रस्ताव लेकर आने लगे, पर हेमा किसी प्रकार का कोई वादा करने की जल्दबाजी में नहीं थीं। उन्होंने अपना अगला कदम उठाने का इंतजार करना अच्छा समझा। कुछ दूर से ही वह अपनी 'खोजों' शाहरुख खान और दिव्या भारती को सफलता की नई ऊँचाइयाँ छूती देखती रहीं। उन्होंने अपने आप को मिलनेवाली प्रशंसा का भी आनंद उठाया। इसी तरह एक साल बीत गया और हेमा ने भी अपना मन बना लिया था।

यह वर्ष 1994 था, जब हेमा ने जी टी.वी. पर अपनी पहली टेलीफिल्म 'मोहिनी' की घोषणा की। मलयातूर रामकृष्णन के मलयालम उपन्यास 'यक्ष' से अभिप्रेरित यह फिल्म एक प्रोफेसर के इर्द—गिर्द घूमती थी, जिसे शक था कि उसकी पत्नी एक डायन है। ''यह एक शादीशुदा दंपती की अतिप्रचंड प्रेम कहानी है।'' हेमा याद करते हुए बताती हैं। इसी समय के आस—पास निर्देशक कवल शर्मा ने हेमा को रानी लक्ष्मीबाई पर आधारित एक बड़े टेलीविजन कार्यक्रम 'झाँसी की रानी' के लिए साइन कर लिया। यह बड़े ही धूम—धड़ाके के साथ लॉन्च किया गया; पर बाद में यह प्रोजेक्ट रद्द कर दिया गया।

उसी साल उन्होंने आजादी के संघर्ष से जुड़ी गाथा 'युग', जिसका निर्देशन सुनील अग्निहोत्री करने वाले थे, साइन की। शुरुआती अनुबंध तो 113 एपिसोड का था, पर हेमा शीघ्र ही बेचैन हो गईं और उन्होंने इसे छोड़ दिया। ''यह वह दौर था, जब टेलीविजन बहुत महत्त्वपूर्ण होता जा रहा था; पर एक निर्माता के रूप में मैं इस माध्यम के

प्रति असहज थी।'' हेमा ने अपने खाली समय का उपयोग एक और धारावाहिक 'वूमेन ऑफ इंडिया' शुरू करने के लिए किया। इसमें ऐतिहासिक और समकालीन दोनों तरह की स्त्रियों की गाथाएँ शामिल की गई थीं। हरेक पात्र के लिए आठ एपिसोड की सीमा निर्धारित की गई थी और हेमा ने 'आम्रपाली' एपिसोड में काम किया, क्योंकि वे मगध की उस राजनर्तकी के चरित्र के बारे में हमेशा से सोचती रही थीं। ''मैंने 1960 के दशक में वैजयंती माला को लेकर इस विषय पर बनी फिल्म देखी थी और यह मुझे तुरंत ही भा गई थी। इस किरदार को निभाना मेरा स्वप्न था और चूँकि मैं बड़े परदे पर ऐसा न कर सकी, इसलिए मैंने धारावाहिक में ही इसे निभाना स्वीकार किया।''

'वूमेन ऑफ इंडिया' का निर्माण और निर्देशन दोनों ही कार्य हेमा के थे। इसी धारावाहिक में 'उर्वशी' के ऊपर भी एक एपिसोड था, जिसमें हेमा की चचेरी बहन प्रभा ने मुख्य भूमिका की। चैनल की तरफ से और एपिसोड बनाने की माँग थी, पर हेमा कभी न खत्म होनेवाली शूटिंग और चौबीस घंटे चलनेवाले संपादन कार्यक्रम से तंग आ चुकी थीं। उनकी बेटियाँ भी बड़ी हो रही थीं ओर हेमा को उनके साथ व्यतीत करने के लिए समय चाहिए था। अपनी जिंदगी को व्यवस्थित करने के लिए हेमा ने एक पूर्णकालिक निर्देशक बहाल करने का निर्णय लिया। रवि चोपड़ा ने 'झाँसी की रानी' वाले एपिसोड के निर्देशन की कमान सँभाल ली और धारावाहिक के 56 एपिसोड खत्म होने तक बने रहे। हेमा ने निर्माण का भार सँभाले रखा था। हेमा के चचेरे भाई मोहन राघवन ने निर्माण से जुड़ी जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले ली थीं और इस तरह हेमा रचनात्मक कार्यों से अल्पविराम का आनंद उठा रही थीं।

अब तक हेमा छोटे परदे की बड़ी हस्ती बन चुकी थीं और इसी की बदौलत उन्होंने दूरदर्शन पर 'आप की सहेली' के नाम से एक हेल्पलाइन वाला कार्यक्रम शुरू किया। हालाँकि कार्यक्रम की विषय—वस्तु एकदम हटकर थी, पर कहीं—न—कहीं यह पायनियर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित सफल पत्रिका 'मेरी सहेली' (अंग्रेजी में 'न्यू वूमेन'), जिसका संपादन हेमा करती थीं, से प्रेरित था। हेमा प्रिंट मीडिया के साथ अपने अनुभव का सम्मान भी करती हैं। वे कहती हैं कि संपादकीय दल के साथ होनेवाली लगातार मुलाकातों के कारण ही वे ग्रामीण और शहरी इलाके की महिलाओं के मुद्दों से पूर्ण रूप से परिचित हो पाई थीं। वह पत्रिका के मालिकों—राजीव और पिंकी पाहवा के साथ अपने संबंध को विशेष आदर की दृष्टि से देखती हैं। ''मुझमें उनके विश्वास के कारण ही मैं इस जिम्मेदारी को सफलता के साथ निभा पाई।'' 'आप की सहेली' एक दैनिक कार्यक्रम के रूप में 150 एपिसोड तक चला। हेमा को चैनलों की यही बात लुभाती थी कि उनकी सिर्फ उपस्थिति ही धारावाहिक के लिए ऊँची टी.आर.पी. की गारंटी होती थी। दूरदर्शन के सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम 'रंगोली' को भी सबसे अधिक टी.आर.पी. रेटिंग उन्हीं 162 सप्ताहों के दौरान मिली, जब हेमा इसकी प्रस्तोता थीं।

फिल्म निर्माता रामानंद सागर, जो अपने अति लोकप्रिय धारावाहिक 'रामायण' के लिए प्रख्यात रहे, ने हेमा को अपने अगले मिथकीय धारावाहिक 'जय दुर्गा' के लिए साइन किया; क्योंकि वे सोचते थे कि उनका व्यक्तित्व शक्तिशाली देवी माँ की प्रस्तुति के लिए अत्यंत उपयुक्त था। हेमा ने यह भूमिका स्वीकार कर ली, क्योंकि वे मातृ—शक्ति की भूमिका को लेकर काफी मुग्ध थीं। पर जब उन्होंने पाया कि निर्माता ने अनुबंधों में बहुत सारी पूर्व शर्तें डाल रखी हैं तो वे पीछे हट गईं। हेमा को इतने सारे बंधनोंवाले अनुबंध पर हस्ताक्षर करना असहज लगा। पर उनके भाग्य में देवी माँ की भूमिका करना लिखा हुआ था और शायद इसी कारण पुनीत इस्सर, जो अपने निर्देशन की शुरुआत ही कर रहे थे, ने उन्हें सिनेविस्टा के धारावाहिक 'जय माता की' का प्रस्ताव दिया। इस भूमिका के अनुसार उन्हें देवी अंबा के विभिन्न स्वरूपों का वेश धारण करना था। ''मुझे माँ लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती जैसे पात्र करने का विचार काफी पसंद आया; क्योंकि मैं जानती थी कि हर कोई इन चरित्रों के साथ परिचित था। मेरे लिए एक और फायदे की बात थी कि निर्देशक ने मुझे पूरी स्वतंत्रता दी थी। मैं दबाव के तहत काम नहीं कर सकती। जब भी मैं

पूरी तरह से सहज रहती हूँ, तभी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाती हूँ।'' हेमा साफगोई के साथ कहती हैं।

हेमा को इस बात का भी श्रेय जाता है कि उनके इन अनगिनत अभिनयवाले कार्यों के भार के बाद भी उनके अपने बैनर के तहत उनके चचेरे भाई मोहन की देख—रेख में धारावाहिकों का निर्माण लगातार हो रहा था। वे हिंदी सिनेमा की संभवत: एकमात्र अभिनेत्री हैं, जिन्होंने दो मराठी धारावाहिकों का भी निर्माण किया। 'सोंगती' तीन मित्रों—एक पुलिस अधिकारी, एक राजनेता और एक पत्रकार के बारे में थी; और 'उमबर्थ' एक विधवा की समाज में अपना स्थान पाने के संघर्ष की दास्तान थी।

हेमा जब टेलीविजन की दुनिया में अच्छी तरह से व्यवस्थित हो चुकी थीं, तभी दक्षिण भारत के सुपर स्टार कमल हासन ने उन्हें अपने स्वयं के निर्माणवाली हिंदी फिल्म 'हे राम!' का प्रस्ताव दिया। शुरू में कमल हेमा और ईशा को माँ—बेटी की भूमिका में लेना चाहते थे, परंतु हेमा को ईशा को अभी लॉन्च करने के प्रति इच्छुक न देख उन्होंने सिर्फ हेमा को ही वसुंधरा दास की माँ की भूमिका में ले लिया। 'एक नई पहेली' (1984) में एक प्रेमी जोड़े की भूमिका निभाने के बाद कमल—हेमा एक दशक से भी ज्यादा समय के बाद साथ आ रहे थे। इस बार वे सास और दामाद की भूमिका में थे। ''मुझे अपनी उम्र को लेकर कोई गलत धारणा नहीं है। मैं असल जिंदगी में एक माँ हूँ और अगर मुझे पूरी वास्तविकता के साथ पेश किया जाए तो परदे पर भी माँ की भूमिका करने में मुझे कोई विशेष आपत्ति नहीं है।'' उसी साल उनके पुराने सह—कलाकार विनोद खन्ना ने अपने पुत्र अक्षय खन्ना की पहली फिल्म 'हिमालयपुत्र' में काम करने का आमंत्रण दिया। एक तरह से इन दोनों फिल्मों से ही बड़े परदे पर हेमा की दूसरी पारी आरंभ हुई।

''यह वह समय था, जब मेरे पास माँ की भूमिकाओंवाली फिल्मों के प्रस्तावों की बाढ़—सी लग गई थी; पर मैंने उन सभी को दृढतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। मेरे अपने निर्णय पर अडिग रहने और हर तरह के दबावों का प्रतिरोध कर सकने की क्षमता के कारण ही मुझे 'बागबान' की भूमिका के योग्य माना गया।'' हेमा विजयी भाव से कहती हैं। जब रवि चोपड़ा इस फिल्म की कहानी सुनाने के लिए हेमा के बँगले पर पहुँचे तो जयाजी, जो काफी अस्वस्थ थीं, पूरे समय बैठकर उसे सुनती रहीं। जब रवि चोपड़ा वापस चले गए तो उन्होंने हेमा से पूछा कि क्या वे वास्तव में यह फिल्म करेंगी? अपनी माँ के दिमाग में चल रहे विचारों से अनभिज्ञ हेमा ने कहा कि वह घर पर बिताए जा रहे समय से खुश हैं और यह फिल्म करने की उनकी कोई खास इच्छा नहीं है। ''मैंने ऐसा इसलिए कहा था, क्योंकि मुझे लगा कि अम्मा मेरे उनकी नजरों से दूर चले जाने की आशंका से असुरक्षित अनुभव कर रही थीं। उन्होंने एक लंबा विराम लिया और फिर कहा कि इस प्रस्ताव के लिए मना करना एक भारी भूल होगी। तुम इस तरह की भूमिका ऐसे ही जाने नहीं दे सकतीं। अमिताभ बच्चन के साथ इस तरह की भूमिका करने का अवसर खोना नहीं चाहिए।''

हेमा के मन में तो बी.आर. फिल्म्स के साथ लंबे अरसे से अपने जुड़ाव और रवि चोपड़ा के निर्देशन के प्रति विश्वास के कारण यह फिल्म न करने का कोई कारण ही नहीं था। इस रोल के लिए उनकी माँ की स्वीकृति ने उनका उत्साह दोगुना कर दिया। इस फिल्म से जुड़ा एक अतिरिक्त लाभ यह भी था कि इसमें उनके पुराने नायक अमिताभ बच्चन भी थे। परंतु इन सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि इस तरह की भूमिकाएँ जीवन में एक बार ही मिलती हैं। यह एक आदर्श दंपती के बारे में एक आदर्श भूमिका थी। ''फिल्म सिटी में होनेवाली शूटिंग के पहले दिन मैं थोड़ा घबराई हुई थी; पर जब शूटिंग शुरू हुई तो ऐसा लगने लगा कि मैंने और अमितजी ने साथ काम करना कभी छोड़ा ही नहीं था। हालाँकि हमने आखिरी बार सन् 1981 में 'सत्ते पे सत्ता' में काम किया था। 'बागबान' की तरह की भूमिकाएँ हर रोज नहीं मिलतीं। यह फिल्म एक वृद्ध होते दंपती के जीवन के खूबसूरत

पलों का संग्रह है।''

'बागबान' की सफलता का लाभ उठाते हुए इस जोड़ी ने यश चोपड़ा की 'वीर—जारा' में भी छोटी सी भूमिका की। ''यह एक छोटी सी भूमिका थी, पर फिल्म के अन्य सितारों की वजह से इसमें बहुत आनंद आया। अमितजी और मैं एक पंजाबी दंपती की भूमिका में थे। यश चोपड़ा मेरे पास 'एक चादर मैली सी' की डी.वी.डी. का सेट लेकर आए और मुझसे कहा कि वे फिल्म में इसी प्रकार की देहाती वेशभूषा में चाहते हैं।'' वीर—जारा की शूटिंग चंडीगढ़ में हुई थी और शूटिंग के बीच में ही यशजी को लगा कि दृश्यों में पंजाबी संवाद डाल देने से उनमें अतिरिक्त जान आ जाएगी और इसी कारण उन्होंने हेमा के पात्र को एक पंजाबी पुरुष से विवाहित दक्षिण भारतीय महिला के रूप में बदल दिया।

अभिनय हमेशा हेमा की चाहत बना रहेगा; पर इसके साथ—साथ हेमा अभिनय से जुड़े अन्य माध्यमों के प्रति भी आकर्षण अनुभव करती हैं। वह टेलीविजन के साथ प्रयोग करनेवाली पहली बड़ी फिल्मी हस्ती थीं। सन् 1982 में 'तेरह पन्ने', जिसमें उन्होंने इतिहास के प्रमुख पात्रों की भूमिका की थी, से लेकर 2002 में आई 'कामिनी दामिनी' तक उनका टी.वी. से दो दशकों तक जुड़ाव रहा है। निर्माण, निर्देशन और नृत्य के अलाव हेमा रेखांकन एवं लेखन के प्रति भी आकर्षित हैं। ''मेरे दिमाग में हमेशा कई तरह की कहानियाँ उमड़ती रहती हैं। काश, मेरे पास इतना अनुशासन होता कि मैं इन विचारों को एक पटकथा के रूप में लिख सकूँ या मेरे पास ऐसा कोई होता, जो मेरे लिए इन कहानियों को लिख सकता। मेरा यह सपना है कि मैं ईशा के साथ एक यादगार भूमिका करूँ और अगर कोई निर्देशक हमें साथ नहीं ले पाया तो हो सकता है, मैं किसी दिन स्वयं उसका निर्देशन कर सकूँ।'' हेमा सोचते हुए कहती हैं।

हेमा अब अपनी जिंदगी में एक पूरा चक्र व्यतीत कर चुकी हैं। अपने मायके में, जहाँ हाल तक तीन पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं, हेमा एक संतुलनकारी कारक थीं। अपने बच्चों को आश्वासन प्रदान करनेवाली हेमा अपनी माँ से भी यही चाहती हैं। पूरी तरह से बिस्तर पकड़ने के ठीक पहले तक जया चक्रवर्ती हमेशा हेमा के प्रदर्शनों को देखने के लिए सभागारों में उपस्थित रहती थीं। अपने कमजोर स्वास्थ्य और सहायता की आवश्यकता के बाद भी जयाजी को अपनी पुत्री की उपलब्धियों की प्रतीक्षा रहती थी और वे इसके प्रति उत्साहित भी रहती थीं। हेमा कहती हैं, ''मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अपनी बेटियों के लिए भी ऐसा ही करूँगी। नृत्य पर मेरे बल देने के पीछे एक कारण यह है कि फिल्मों में आपको कभी वह संतुष्टि नहीं मिल पाती, जो मंच पर प्रदर्शन से मिलती है। फिल्मों में आप टुकड़ों में काम करते हैं, पर मंच पर आप अपने चरित्र को विकसित करते हैं। इसी कारण मेरे पिता हमेशा चाहते थे कि मैं साहसी महिलाओं की भूमिका करूँ। इसी कारण 'नाट्यशास्त्र' में नर्तकों को शाकाहार का अनुशासन अपनाने को कहा गया है। अगर आप ध्यान से देखें तो पाएँगे कि अधिकांश नर्तक अति धार्मिक होते हैं। 'दुर्गा' के रूप में प्रदर्शन शुरू करने के साथ ही मैंने शुक्रवार को उपवास करना शुरू कर दिया था। उपवास का परित्याग से कोई संबंध नहीं है। यह तो इच्छा—शक्ति की बात है। इसी तरह नृत्य का भी भक्ति और आध्यात्मिकता से उतना ही संबंध है, जितना कला और गरिमा से।

❑

9

नृत्य : ईश्वर का प्रतिरूप

हेमा के लिए नृत्य केवल एक खुद को जाहिर करने का रचनात्मक माध्यम ही नहीं बल्कि भक्ति है। अपने नृत्यनाटक 'राधा-कृष्ण' में हेमा।

किसी भी मंच पर हेमा का प्रदर्शन हमेशा मंत्र—मुग्ध कर देनेवाला होता है, क्योंकि वे अत्यंत छोटी उम्र से ही शो—बिजनेस के प्रति अभ्यस्त रही हैं। छह साल की उम्र से मंच पर प्रदर्शन आरंभ कर देनेवाली हेमा इन अनगिनत वर्षों में कई विभिन्न शहरों के दर्शकों एवं सभागारों से परिचित हो चुकी हैं। हेमा को जहाँ तक याद है, वे हमेशा माइक्रोफोन और स्पॉटलाइट से परिचित रही हैं। वे तालियों की गड़गड़ाहट, स्पॉटलाइट और अपनी पायलों की खनक, ताजा फूलों की महक एवं अपने लुभावने परिधानों के बीच ही पली—बढ़ी हैं। वे अपने गहनों की जगमगाहट, अपने सजावटी सामान की भव्यता और अपने लाल रंग में रँगे हाथों व पाँवों की कांति से भी पूर्ण रूप से परिचित रही हैं। उन्हें आज एक छोटी बच्ची के रूप में परदा उठने से पहले होनेवाली घबराहट याद है, जब उनके पिता अपनी गूँजती हुई आवाज से उसके नाम और नृत्य कार्यक्रम की उद्घोषणा करते और सारा सभागार उनकी बुलंद आवाज से भर उठता। हरेक कार्यक्रम के बाद अप्पा के प्रस्तुति के अंदाज को भी उतनी ही सराहना मिलती थी, जितनी कि हेमा की प्रतिभा को। ''अप्पा के पास वाक्पटुता का उपहार था। शब्दों के साथ खेलने की उनकी कला का काफी साल उन्हीं के अपने पुत्र के अलावा आज तक कोई मुकाबला नहीं कर पाया।'' हेमा एक गर्वित पुत्री के एहसास के साथ कहती हैं।

अल्पावस्था में भी हेमा के अंदर उनके नृत्य के सच्चे प्रशंसक और एक नकली फैन के बीच विभेद कर पाने की स्वत: स्फूर्त योग्यता थी। जैसे—जैसे वे बड़ी होती गईं और बड़े—बड़े कार्यक्रमों में प्रदर्शन करने लगीं, वैसे—वैसे वे अपने दर्शकों की सही परख करने में और दक्ष होती गईं। हेमा और उनके अभिभावक जान—बूझकर दक्षिण भारतीय संस्थाओं द्वारा प्रायोजित छोटे, परंतु ज्यादा जागरूकतावाले कार्यक्रमों को अज्ञात लोगों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों के ऊपर तरजीह देते। चक्रवर्ती द्वय को सितारों की चमक से प्रभावित प्रशंसकों से भरे शानदार हॉल की

तुलना में मध्यम आकार के सभागार अधिक पसंद थे। इतनी सावधानी बरतने के बावजूद कभी—कभी निर्णय लेने में गलती हो ही जाती थी, खासकर 1970 के दशक में, जब हेमा अपने कॅरियर के चरम शिखर पर थीं। कई ऐसे अवसर आए, जब कार्यक्रम के आयोजकों ने हेमा के सुपर स्टार वाली छवि का गलत फायदा उठाना चाहा।

उन्हीं में से एक खास प्रकरण, जो बाद में दु:खद यादों का स्रोत बन गया, वह था, जब आयोजकों ने हेमा के भरतनाट्यम के कार्यक्रम को 'हेमा मालिनी नाइट' के रूप में प्रचारित कर दिया। इस प्रचार के कारण दर्शकों तक गलत संकेत पहुँचा, जो हेमा से इस कार्यक्रम में फिल्मी नृत्यों की अपेक्षा करने लगे थे। जब उन्होंने अपना शास्त्रीय नृत्य जारी रखा तो उनमें से कुछ बदमाशी करने लगे और फिल्मी गानों की माँग करते हुए ऊँची आवाज में विरोध करने लगे। हालाँकि हेमा इस सबसे काफी नाराज हुईं, पर उन्होंने गरिमा न छोड़ते हुए मंच पर आकर इस गलतफहमी के बारे में स्पष्टीकरण देने की सद्‌भावना दिखाई। उसके बाद वह कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न हो गया। ''यह वाकया मेरे लिए एक बड़ी सीख थी। मैं अपने भावी सभी कार्यक्रमों में इस बात को लेकर सचेत रहती थी कि उन्हें कैसे प्रचारित किया जा रहा है। इसमें थोड़ा समय तो लगा, पर धीरे—धीरे मैं पूरी तरह से दर्शकों का एक वर्ग तैयार कर पाई।'' हेमा दृढता के साथ कहती हैं।

हेमा एकमात्र अभिनेत्री हैं, जिन्होंने अपने फिल्मी कॅरियर के साथ—साथ अपने नृत्य कार्यक्रमों को भी जारी रखा। यह और भी दिलचस्प बात है कि उनकी शादी के बाद के समय, गर्भावस्था के दौरान या बच्चों के जन्म के बाद भी उनके नृत्य कार्यक्रमों की श्रृंखला में कोई विराम नहीं आया। ''इन वर्षों के दौरान मेरे परिधान जीवन के दौर के अनुसार बड़े से बदलकर मध्यम होते रहे। नया डिजाइन भी परंपरागत से लेकर हाई फैशन तक बदलता रहा; पर नृत्य के प्रति मेरी चाहत में कभी कोई कमी नहीं आई। मैंने गर्भावस्था के दौरान भी कभी नृत्य करना बंद नहीं किया। वास्तव में, जब ईशा गर्भ में थी तो मेरे चालाकी के साथ छिपाए हुए परिधान के कारण किसी को कुछ पता ही नहीं चला। स्वाभाविक रूप से मैं इस बात को लेकर सावधान थी कि मैं ज्यादा गतिमान मुद्राएँ न शामिल करूँ।'' अहाना के समय भी यही परंपरा चालू रही। ''जब वे थोड़ी बड़ी हो गईं तो मैंने अपना भार कुछ कम किया और पुराने कार्यक्रमों पर लौट आई। मैंने भरतनाट्यम का एकल प्रदर्शन जारी रखा; पर मेरे भीतर छिपा कलाकार व्याकुल हो रहा था और कुछ अतिरिक्त करने की माँग कर रहा था।'' हेमा विस्तार से कहती हैं।

यह वर्ष 1987 की बात है। हेमा अपनी गुरु माँ का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सदा की तरह उनके पास मिलने गई थीं। माँ ने हेमा को सलाह दी कि अब उन्हें अपनी नृत्य विधाओं को और विकसित करना चाहिए। ''क्या तुमने नृत्य नाटिका के प्रदर्शन के बारे में सोचा है?'' माँ ने हेमा से पूछा। ''तुम्हें यह करना चाहिए। यही उपयुक्त समय है।'' हालाँकि हेमा को यह संदेश एक दिवास्वप्न लग रहा था, पर माँ के शब्द हेमा के साथ लगातार बने हुए थे। ऐसे ही रविवार की सुबह हेमा उस समय का एकमात्र चैनल दूरदर्शन देख रही थीं। तभी दिल्ली के भारतीय कला केंद्र द्वारा प्रदर्शित नाट्य नाटिका ने हेमा का ध्यान अपनी ओर खींचा। इस नाटिका में राम की भूमिका निभा रहा बीस वर्षीय एक नर्तक का प्रदर्शन विशेष तौर पर प्रभावित करनेवाला था। हेमा ने सोचा, इस प्रतिभाशाली युवक से मिलना ही चाहिए। उन्होंने अपने चार्टर्ड एकाउंटेंट गुप्ताजी से उसके बारे में चर्चा की।

सौभाग्यवश, कुछ ही दिनों बाद गुप्ताजी अपने एक अन्य ग्राहक रामानंद सागर के सेट पर उनके लोकप्रिय धारावाहिक 'रामायण' की शूटिंग देखने गए। सागर ने उनकी मुलाकात एक युवा नर्तक भूषण लखंदरी से करवाई, जो विष्णु की भूमिका निभा रहे थे। उससे बात करते समय गुप्ताजी को पता चला कि वे वही 'राम' हैं, जिन्हें हेमा ने दूरदर्शन पर देखा था और खूब प्रशंसा की थी; और फिर गुप्ताजी ने हेमा से भूषण की मुलाकात उनके जुहूवाले बँगले पर करवाई। यह वह भेंट थी, जिसने दो लोगों की नियति को हमेशा के लिए बदल डाला।

भूषण कहते हैं कि वे इस भेंट को कभी नहीं भूल पाएँगे। ''मैं थोड़ा घबराया हुआ था, क्योंकि मैं पहली बार किसी फिल्मी हस्ती से उसके घर पर मिल रहा था। तभी हेमाजी टहलते हुए वहाँ आईं। उन्होंने हरी साड़ी पहन रखी थी और बहुत सुंदर लग रही थीं। उनका मेरे लिए पहला वाक्य था, 'आज हमारे घर बहुत बड़े कलाकार आए हैं।' उन्होंने यह इतनी तत्परता के साथ कहा था कि मैं तुरंत ही सहज हो गया। कुछ देर बाद ईशा भी कमरे में आईं और कहा, 'हमारे घर तो राम आए हैं।' मैं अत्यंत चकित था। वह मेरे जीवन का एक खास दिन था।'' लखंदरी मुसकराते हुए कहते हैं।

हेमा ने लखंदरी को बताया कि वे मंच पर नृत्य नाटिका की प्रस्तुति के लिए इच्छुक हैं और क्या वे उनके लिए कोई परिकल्पना तैयार कर पाएँगे? भूषण ने तीन दिनों का समय माँगा। चौथे दिन वे 'नृत्य मल्लिका' की पटकथा तैयार कर चुके थे, जिसमें कई कलाकारों के साथ चुनिंदा नृत्य कार्यक्रम शामिल किए गए थे। हेमा ने इस विचार को तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी। उन दोनों ने दिल्ली में संगीत निर्देशक शैली दत्ता से संपर्क किया और शीघ्र ही संगीत की रिकॉर्डिंग का काम शुरू हो गया।

नाटिका के लिए पूर्वाभ्यास शुरू हो जाने के बाद ही हेमा को यह एहसास हुआ कि उन्हें पहली बार मंच पर दूसरे कलाकारों के साथ प्रदर्शन करना होगा। यह सोच कर ही वे भयभीत हो उठीं। छह साल की उम्र से ही हेमा मंच पर एकल प्रदर्शन की आदी हो चुकी थीं। फिल्मों में उन्होंने समूह नर्तकों के साथ नृत्य किया था; पर यह एक अलग माध्यम था। ''मंच का अधिक अंतरंग क्षेत्र होता है और मैं अपने निजी दायरे के अतिक्रमण के प्रति अभ्यस्त नहीं थी। नृत्य नाटिका के लिए नए तरह के सामंजस्य की आवश्यकता थी। यह बहुत कठिन था, पर भूषण जैसे विशेषज्ञ के नृत्य निर्देशन ने यह सुनिश्चित किया कि हमारी भंगिमाएँ बेढंगी न दिखें।...

''दूसरी बड़ी झिझक पहले से रिकॉर्ड किए गए संगीत के साथ प्रदर्शन करने के विचार को लेकर थी। अभी तक मैं त्वरित संगीत—मेरे गुरु के नट्टुवंगम के साथ नृत्य करने की अभ्यस्त थी। सालों तक मैं मंच के दाईं तरफ से प्रवेश करती; अपने गुरु, जो बाईं तरफ बैठे होते, के पाँव स्पर्श करती और फिर मंच के केंद्र में आ जाती। पूरे प्रदर्शन के दौरान एक सीधा

मीरा : 'मीरा मेरी गुरु माँ के लिए मेरे प्रेम की पेशकश है।'

संपर्क मेरे गुरु के साथ नेत्र संपर्क होता था, जो मुझमें विश्वास भरता रहता था। अपने इतने वर्षों के बाद पहली बार वे रिकॉर्डिंग संगीत के साथ प्रदर्शन करना बिल्कुल फिल्मों की तरह सीख रही थीं। यह एक बड़ी चुनौती थी। भूषण का अनूठा नृत्य निर्देशन एकमात्र प्रेरणा—स्रोत था। मेरे साथ उनका पहला नृत्य था अद्र्धनारीश्वर। हमारा संयोजन बहुत अच्छी तरह काम कर रहा था। भूषण मणिपुरी, कत्थक एवं ओडिसी में महारत रखते थे और मैं भरतनाट्यम, मोहिनी अट्टम और कुचिपुड़ी से पूरी तरह परिचित थी। नृत्य मल्लिका का एक भाग था 'त्रिवेणी',

जिसमें हम भारत की तीन प्रसिद्ध नदियों—गंगा, जमुना और सरस्वती को दरशाने के लिए तीन विभिन्न नृत्य कलाओं (भरत नाट्यम, ओडिसी और कत्थक) का संयोजन प्रस्तुत करते थे। जब भी हम इसे प्रदर्शित करते तो हमें बहुत अच्छा रेस्पोंस मिलता और 'एक बार फिर' की आवाजें हर ओर से आने लगतीं।

माँ इंदिराजी के गुरु श्री दिलीप कुमार रॉय ने अपनी पहली नृत्य नाटिका 'बेगर प्रिंसेस' का लेखन किया था और यह पूरे भारतवर्ष में अपनी तरह का पहला प्रयोग था। ''शास्त्रीय नृत्य दर्शकों के संपूर्ण समूह को आकर्षित नहीं कर पाता, पर नृत्य नाटिकाएँ इसमें सफल रहती हैं, खासकर ग्रामीण दर्शकों में इसका खास आकर्षण रहता है। इसका कारण यह है कि नृत्य नाटिका कला की तीन विधाओं—नृत्य, नाटक और संगीत का समन्वय होती है। जब इन तीन विधाओं का समन्वय होती है। अच्छी तरह होता है तो प्रदर्शन सफल रहता है। जब संयोजन में साम्य का अभाव होता है तो दर्शक व्याकुल हो उठते हैं। प्रदर्शन करनेवाले कलाकारों को यह समझने की आवश्यकता है। तभी हम नृत्य नाटिकाओं को मनोरंजन की दुनिया में न्यायोचित स्थान दिलवाने की अपनी लड़ाई जीत सकते हैं।'' हेमा विश्लेषण करते हुए कहती हैं।

हेमा ने 'मीरा' का चयन इस कारण से किया, क्योंकि उन्हें प्रतिकूलताओं के सम्मुख ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण की कहानी अच्छी लगती थी। ''लोकग्रंथों में उन परिस्थितियों का वर्णन है, जिन्होंने राणा (मीरा के पति) को मीरा को विष का प्याला पीने को मजबूर करने को उकसाया था और कैसे मीरा ने इस अन्याय का सामना किया। मीरा के प्रति मेरा प्रेम मेरे गुरु के प्रति मेरे प्रेम का ही विस्तार है। वह हमेशा समर्पण के गुणों पर बल दिया करती हैं। मीरा सोलहवीं सदी की महिला थीं, पर उन्होंने अपना जीवन अपनी शर्तों पर ही जिया। अपने 'ईश' के प्रति उनका प्रेम निस्स्वार्थ और निर्विकार था। जब मैं इस नृत्य नाटिका का प्रदर्शन करती हूँ तो पूरी तरह से मीरा के प्रति समर्पित हो जाती हूँ। मेरा पूर्ण विश्वास है कि जब मैं मंच पर होती हूँ तो उनके ही अधिकार में रहती हूँ और इसके बाद मेरी व्यथा ईश्वर के प्रति मेरी चाहत मेरी अपनी भावनाएँ न होकर मीरा की होती हैं।''

जब इस नृत्य नाटिका के संगीत की रिकॉर्डिंग जुहू के सन्नी साउंड स्टूडियो में हो रही थी, उस वक्त का अत्यंत प्रगाढ़ अनुभव हेमा को अब भी याद है। ''हम सभी संगीत के सुरों में पूरी तरह से खोए हुए थे और तभी अचानक मैं चंदन की खुशबू से सराबोर हो उठी। यह सुगंध रहस्यमय थी, क्योंकि रिकॉर्डिंग रूम में किसी भी आगंतुक के आने की मनाही थी। मेरी माँ और संगीत निर्देशक ने भी मेरे संदेह की पुष्टि की। हमने इसका तर्कसंगत हल यह निकाला कि हो सकता है, किसी ने बगलवाले कक्ष में अगरबत्तियाँ जलाई हों; पर ऐसा कुछ भी नहीं था। इस पूरे प्रकरण का एक गहरा अर्थ है। यह अति यथार्थवादी तो लगता है, पर मैं पूरी तरह से मानती हूँ कि उस दिन उस कक्ष में कोई दिव्य आत्मा भी हमारे साथ उपस्थित थी।''

पूर्णता के प्रति हेमा की ललक जारी थी। रोचक बात यह है कि 'मीरा' नाट्य विहार कला केंद्र की एकमात्र नृत्य नाटिका है, जिसका नृत्य निर्देशन कत्थक की शैली में हुआ है। हेमा का इस बारे में यह मत है कि चूँकि मीरा उत्तर भारतीय राजकुमारी थीं, अत: दक्षिण भारतीय शैलीवाला भरतनाट्यम उनके प्रतिनिधित्व के लिए अनुपयुक्त था। इसी तरह जब उन्होंने 'रामायण' का मंचन करने के बारे में सोचा तो उन्होंने संगीत निर्देशक रवींद्र जैन से संपर्क किया। हेमा का मानना था कि मिथकीय पुराणों के अपने ज्ञान और हृदयस्पर्शी संगीत के कारण रवींद्र ही इस कार्य के लिए उपयुक्त थे और उनकी उपस्थिति नृत्य नाटिका को और अच्छा बना देगी। उसी समय से रवींद्र जैन नाट्य विहार कला केंद्र के एक अभिन्न अंग बन गए थे। हेमा बताती हैं कि 'रामायण' बहुत विस्तृत है और इसके कई संस्करण हैं। ''हमारी नृत्य नाटिका 'रामचरितमानस' से प्रेरित है। राम—सीता के संबंध में राम के विश्वासघात और सीता की अग्निपरीक्षा के इतर भी बहुत कुछ है। हमारी नृत्य नाटिका राम के बालपन से शुरू होती है, फिर पुष्पवाटिका में

उनके प्रेम का वर्णन है, उसके बाद सीता स्वयंवर की गाथा; और यह उनके वनवास तक जारी रहती है। हम इसमें प्रहसन के बदले उनके प्रेम पर ध्यान केंद्रित करते हैं। राम और सीता एक आदर्श दंपती हैं। उनका संबंध संपूर्ण प्रेम और सुसंगति पर आधारित है।'' हेमा स्पष्ट करती हैं।

रामायण : 'हम राम और सीता के प्यार को महत्त्व देते हैं... (a) 'प्रतिम स्नेह और अनुकूलता का संबंध।'

यह महाकाव्य भारतीय विरासत का एक अभिन्न अंग है। तुलसीदास द्वारा लिखित 'रामचरितमानस' एक ऐसे पुरुष की गाथा है, जो अपनी सच्चरित्रता के कारण भगवान् की तरह सम्मान पाते हैं। ''यह महाकाव्य संपूर्ण मानवता को नैतिकता के सिद्धांतों और सामाजिक व्यवहार की सीख देता है। मैं निजी तौर पर यह मानती हूँ कि मेरी नृत्य नाटिका में भाग ले रहे सारे कलाकार इस महाकाव्य की मूल भावना से पूरी तरह परिचित हों मैं यह सुनिश्चित करती हूँ कि पूर्वाभ्यास शुरू होने से पहले वे सभी विषय और अपनी भूमिकाओं के महत्त्व को समझें अकसर हम विभिन्न धर्मों के ऐसे युवा कलाकारों के साथ काम करते हैं, जिन्हें अपनी बातों के संबंध में पर्याप्त ज्ञान और समझ नहीं होती है। एक बार हमने एक युवा कलाकार एंथनी को उसके शारीरिक डील—डौल के कारण हनुमान की भूमिका में लिया था। वह एक अत्यंत व्याकुल युवक था और पूरे समय एक कोने से दूसरे कोने में घूमता रहता था। अत: मैंने उसे अपने पास बिठाया और भगवान् हनुमान की शक्तियों के बारे में बतलाया। कार्यक्रम के पहले दिन मैंने स्वयं उसकी वेशभूषा का निरीक्षण किया और उसके पाँव में घुँघरू बाँधे। यह सब करना बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अभिनेताओं का नृत्य नाटिकाओं के दर्शन के साथ जुड़ाव बहुत आवश्यक होता है।''

बाद में हेमा ने आश्चर्यजनक रूप से यह पाया कि अभिनेता भी नृत्य नाटिका के साथ भावात्मक रूप से जुड़ जाते हैं और अपनी भूमिकाओं को लेकर अत्यंत अधिकारसम्मत हो जाते हैं। ''हमारे पास कई ऐसे कलाकार हैं, जो काफी कम उम्र में हमसे जुड़े, फिर उनकी मँगनी—शादी हुई, बच्चे भी हुए; पर अब भी वे हमारे कार्यक्रमों से जुड़े हैं। उनका इस तरह का जुड़ाव बहुत मर्मस्पर्शी है। सीता विदाई का दृश्य तो रहस्यमय रूप से आँसुओं की वर्षावाला दृश्य बना हुआ है। चाहे जो भी कलाकार सीता के पिता जनक की भूमिका करता है, वह इस दृश्य में हमेशा फूट—फूटकर रोता है। जब यह पहली बार हुआ तो मुझे लगा कि वह अभिनेता किसी निजी समस्या के दौर से गुजर रहा है; पर तब से यह दृश्य इतनी बार हो चुका है कि हम सभी इस दृश्य के दौरान भावनात्मक बहाव के प्रति अभ्यस्त हो चुके हैं।''

दुर्गा : 'जब मैं काली का तांडव करती हूँ, मैं खुद अपनी ऊर्जा से चकित रह जाती हूँ।'

'रामायण' वह पहली नृत्य नाटिका थी, जिसके मंचन के लिए नाट्य विहार कला केंद्र को पूरे अमेरिका के विभिन्न शहरों से आमंत्रण प्राप्त हुए थे। हेमा को इस नृत्य नाटिका और अपनी गुरु माँ से संबंधित एक रोचक किस्सा याद है। अमेरिका की लंबी यात्रा पर जाने से पहले हेमा ने अपनी गुरु माँ का आशीर्वाद लेने के आशय से उनसे बात की। माँ ने इस बात पर जोर दिया कि वे अपनी नृत्य नाटिका में देवी अष्टभुजा को भी शामिल करें। हेमा ने उन्हें समझाया कि निर्माण के इस चरण में अब किसी भी तरह के बड़े बदलाव की गुंजाइश नहीं; पर माँ अडिग रहीं और उन्होंने दैवी अवतरण के लिए उपयुक्त स्थान का भी सुझाव दिया। ''रावण द्वारा सीता के हरण के पश्चात् विरह वेदना से त्रस्त राम लंका पर आक्रमण से पहले देवी की प्रार्थना करते थे। यही वह स्थान है, जब तुम देवी दुर्गा को नृत्य नाटिका में ला सकती हो और ध्यान रहे कि दुर्गा की भूमिका सिर्फ तुम्हें ही करनी है।'' माँ ने सुझाया था।

हेमा बड़ी दुविधा में थीं। वे माँ के आग्रह को ठुकरा नहीं सकती थीं, अत: उन्होंने भूषण लखंदरी से इसकी संभावनाओं पर चर्चा की। साथ मिलकर उन दोनों ने एक परिस्थिति बनाई, जिसके तहत हेमा सीता के परिधानों को बदलकर दुर्गा के रूप में राम के सम्मुख प्रकट होती हैं। ''इसका अर्थ परिधानों और नृत्य निर्देशन में बदलाव और अन्य कलाकारों के साथ नई मुद्राओं का समन्वय। माँ इंदिराजी के संदेश की व्यापकता का सही अर्थ मुझे बहुत बाद में समझ में आया। किसी कारण से माँ चाहती थीं कि देवी दुर्गा मेरी रक्षा करें; और ऐसा सुनिश्चित करने का यही एक तरीका उनके पास था।''

उनका दल प्रत्येक सप्ताह अपने कार्यक्रम करता था और इस तरह के लगभग दस कार्यक्रम करते हुए उन्होंने अमेरिका में बहुत सारा समय एक साथ गुजारा। लगभग दो महीनों के इस अनवरत साथ के कारण हर कोई एक—दूसरे के साथ जुड़ाव अनुभव कर रहा था और अलग होने की कल्पना ही उन्हें व्याकुल कर रही थी। ''लॉस एंजेल्स के श्राइन ऑडिटोरियम में होनेवाले अंतिम कार्यक्रम के पहले जब मैं शृंगार कक्ष में तैयार हो रही थी तो मुझे दिल डूबने जैसा अनुभव हुआ। मैंने इसकी चर्चा भूषण से की। उन्होंने भी कहा कि वे कुछ कमजोरी अनुभव कर रहे हैं। इस व्याकुलता के पीछे एक कारण था। एक हिंदू के रूप में मैं इस विश्वास के साथ पली—बढ़ी हूँ कि भगवान् उन भक्तों के पास आते हैं, जिनमें सच्ची श्रद्धा हो। ऐसा लगता था कि इतने दिनों तक देवी—देवता हमारे नृत्य नाटिका दल के साथ भ्रमण कर रहे थे और अब, जब हमारे कार्यक्रम का दौर समाप्ति पर था तो इन दिव्यात्माओं का भी हमसे अलग होने का समय आ चुका था।''

इतने वर्षों के बाद भी हेमा के पास अपने विभिन्न नृत्य कार्यक्रमों की यादें हैं। वे याद करती हैं कि शुरू—शुरू में उन्हें दूर—दराज के प्रदेशों की मध्यम श्रेणी की संस्थाओं से ही आमंत्रण मिलता था, जिन्हें इस बात का भी यकीन नहीं होता था कि हेमा जैसी फिल्म स्टार ने उनके निमंत्रण को स्वीकार कर लिया है; पर हेमा ने कभी अपने स्टारडम को अपनी प्रतिबद्धता की राह में आने नहीं दिया। एक बार जब वे मंच पर आ जातीं तो इन कार्यक्रमों को भी उसी गरिमा और लगन के साथ करती थीं जैसा वे अपनी फिल्मों या दुनिया में कहीं भी होनेवाले एकल भरतनाट्यम प्रदर्शनों के मामले में करती थीं। कभी—कभी उन्हें कड़कड़ाती सर्दी में और कभी चिलचिलाती गरमी में अपना प्रदर्शन करना होता था। पर ये कठिनाइयाँ लोगों से मिलनेवाले प्रेम और प्रशंसा के कारण सहने योग्य थीं। इसके दर्शकों में थोड़े से अभिभूत, पर कला की गंभीर परख रखनेवाले होते हैं। हेमा कहती हैं कि वे अनुभव काफी सुखद थे। ''जब भी मैं इन गाँवों से लौटती तो मुझे अपने दर्शकों से जीवन और मानवता के संदर्भ में कई नई चीजें सीखने को मिलतीं। मैंने सभी अनुभवों का आनंद उठाया है। उन लोगों के साथ वार्त्तालाप के कारण ही हमारे कार्यक्रमों का विकास और वृद्धि हो पाई।''

दुर्गा : 'यह नृत्य नाटिका कभी भी दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट बटोरने में असफल नहीं होती।'

धीरे—धीरे उनकी नृत्य नाटिकाओं को पहचान मिलने लगी और आगे चलकर वे लोकप्रिय भी हो गईं। नाट्य विहार कला केंद्र अब बड़ा हो रहा था और उसका विकास भी हो रहा था। उसका निर्माण कार्य बृहत्तर होता जा रहा था और साथ ही जिम्मेदारियाँ भी बढ़ रही थीं। जया चक्रवर्ती, जो अभी तक हेमा के साथ लगभग सभी कार्यक्रमों में जाया करती थीं, अब वृद्ध हो चली थीं और अब उनके लिए हेमा के अति व्यस्त कार्यक्रम से तालमेल बनाए रखना कठिन होता जा रहा था। बड़ी शांति के साथ वह नेपथ्य में आ गईं और उनके पुत्र कन्नन ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया।

सावित्री : 'हेमा इस नृत्य नाटिका को अपना सर्वश्रेष्ठ नृत्य बताती हैं,

क्योंकि यह भगवान् यम को एक अनोखे अंदाज में दरशाता है।

अब कन्नन ही हेमा के साथ देश—विदेश में होनेवाले कार्यक्रमों में जाने लगे। हेमा के पिता को अपने सहकर्मियों के मध्य 'वी.एस.आर. चक्रवर्ती' के नाम से जाना जाता था। ठीक उसी तरह कन्नन भी अपने व्यावसायिक क्षेत्र में 'आर.के. चक्रवर्ती' के रूप में पहचाने जाने लगे। अपने पिता की ही तरह कन्नन ने हेमा के एकल प्रदर्शनों और नृत्य नाटिकाओं की प्रस्तुति का दायित्व उठा लिया था। एक एकल प्रस्तुतीकरण के लिए विषय का गहन अध्ययन और शोध आवश्यक है। अत: कन्नन ने भी अपने अप्पा की तरह संदर्भित साहित्य पढ़ना शुरू कर दिया और वे कहानी का परिचय देते समय अत्यंत अमूल्य और सूक्ष्म विवरण प्रदान करते, जिनसे ये कार्यक्रम और भी यादगार हो जाते। हेमा ने हमेशा अपनी प्रगति में अपने परिवार की भागीदारी की कद्र की थी और उसी पर निर्भर भी करती थीं। जब भी वह किसी नई नृत्य नाटिका या एकल प्रदर्शन की योजना तैयार करतीं तो वे अपने भाइयों से इसकी चर्चा जरूर करतीं और जब उनका संगीत और नृत्य निर्देशन तैयार हो जाता तो वे उन्हें अपनी भाभियों सहित पूर्वाभ्यास में भाग लेने और सुझाव देने को कहतीं। जब भी हेमा किसी नए कार्यक्रम की प्रस्तुति करतीं तो हमेशा उनका सारा परिवार अपना समर्थन प्रदान करने के लिए सभागार में उपस्थित रहता था।

हेमा के द्वारा अपनी अगली नृत्य नाटिका की योजना तय करने के पीछे भी एक कहानी है। 'रामायण' में देवी अष्टभुजा की भूमिका करने के बाद हेमा माँ दुर्गा की अनन्य भक्त हो चली थीं और उनकी भक्ति इस हद तक थी कि अमेरिका के दौरे से लौटने के बाद उन्होंने शुक्रवार को व्रत रखना शुरू कर दिया था। ''जब माँ ने यह पाया कि मैं किस प्रकार माँ दुर्गा से गंभीर रूप से प्रभावित हूँ तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैं मंच पर देवी दुर्गा पर आधारित संपूर्ण नृत्य नाटिका के लिए तैयार हो चुकी थी।''

हिंदू धर्मग्रंथों—वेद और पुराण में देवी माँ की पूजा सनातन धर्म के अभिन्न अंग के रूप में वर्णित है। माँ की असीम कृपा और अपनी संतानों के प्रति उनकी करुणा ने कई महान् कहानियों को प्रेरित किया है। सामाजिक रूप से दुर्गा (महामाया या सप्तशती) के रूप में पूजी जानेवाली माँ दुर्गा पर आधारित यह नृत्य नाटिका देवी महामाया की गाथाएँ सुनाती है और माँ के विभिन्न स्वरूपों (सती, पार्वती, दुर्गा और काली) को प्रतिबिंबित करती है। इन सब में माँ दुर्गा हिंदू देव गणों में सबसे शक्तिशाली देवी हैं और हेमा तो लंबे समय से उनकी शक्तियों से प्रभावित रही हैं।

ग्रंथों में यह वर्णित है कि भैंसे के स्वरूपवाले दैत्य महिषासुर ने देवताओं पर विजय प्राप्त कर स्वर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया था। पराजित देवताओं ने ब्रह्माजी के नेतृत्व में शिव और विष्णु से सलाह माँगने के लिए संपर्क किया। उनकी इस दुर्दशा को देखकर क्रोधित शिव और विष्णु के नेत्रों से अग्नि स्फुरित हुई, जिसने एक स्त्री के अंगों का आकार ग्रहण किया। धीरे—धीरे वह अनेक देवताओं के स्वरूपोंवाली स्त्री में परावर्तित हो गया। उसका मुख शिव की तरह था, सिर यम की तरह, कमर इंद्र की तरह और कंधे विष्णु की तरह थे। उन देवी ने पुन: विशाल रूप धारण किया और शक्तिशाली बनकर अपने आपको नौ भागों में विभक्त कर महिषासुर की संपूर्ण सेना का विनाश कर दिया। ''मैंने बड़े होने के दौरान अनगिनत बार अपनी माँ से सुना था और मुझे इसका हरेक विवरण स्पष्ट रूप से याद था। दैत्य का बारी—बारी से अपने आप सिंह और हाथी के रूप में परिवर्तित करना...उसका सबसे भयानक आक्रमण उसके असली महिष रूप में होता था...देवी माँ का दिव्य मधुपान करके हवा में उछलना...उनका महिषासुर के कंठ पर चढ़ना और उनका विजय के उन्माद में अनियंत्रित होते भाले से उसकी छाती को भेदना...मुझे हमेशा मंच पर उनके क्रोधावेशवाले उस स्वरूप के प्रदर्शन की तीव्र इच्छा रहती थी, जिसमें भगवान् शिव को उनका क्रोधोन्माद रोकने के लिए एक शव के समान उनके सामने लेटना पड़ा था। शिव के शरीर पर पैर पड़ने के बाद ही उन्हें अपनी भूल का अनुभव होता है। जीभ बाहर लटकनेवाला उनका चित्र उनके द्वारा पश्चात्ताप की स्वीकृति दरशाता है।'' हेमा वर्णन करते हुए कहती हैं।

हेमा कहती हैं कि देवी माँ का जोशीला स्वरूप उन्हें मंच पर अपनी सारी झिझक उतार फेंकने में सहायता करता है। ''जब मैं काली के क्रोध भरे कोलाहल का प्रदर्शन करती हूँ तो स्वयं अपनी ऊर्जा से चकित रह जाती हूँ और यह दर्शकों के लिए भी भयभीत करनेवाला होता है। वास्तव में, निर्माण दल इस नृत्य नाटिका में मेरे परिधान और गहनों को लेकर बहुत अंधविश्वासी है। उनका मानना है कि इनसे इतना तेज कंपन होता है कि इन्हें एक अलग बक्से में बाकी के सामान से दूर रखना चाहिए।''

महालक्ष्मी : 'हेमा को देवी का चित्र उनकी माँ की याद दिलाती हैं। जया ने देवी का चित्र तब बनाया था, जब हेमा उनके गर्भ में थी।'

भूषण लखंदरी नृत्य नाटिका के दौरान हेमा के भिक्षुणी से देवी के रूप में परावर्तन को अति यथार्थवादी वर्णित करते हैं। ''हालाँकि मैंने ही उस दृश्य का नृत्य निर्देशन किया है, जिसमें वह दो कपड़ों के बीच में रखी जाती हैं और एक अवतार के रूप में प्रकट होती हैं; फिर भी, जब यह वास्तव में घटित होता है तो मैं स्तब्ध रह जाता हूँ। जब भी वह मंच पर इस मुद्रा का प्रदर्शन करती हैं तो मैं सोच में पड़ जाता हूँ कि यह वाकई में हेमा हैं अथवा साक्षात् देवी माँ। यह मंच पर उनकी शक्ति के बारे में बताता है। जब भी हमने यह प्रस्तुति की है, हम दर्शकों की प्रशंसा प्राप्त करने में कभी भी असफल नहीं हुए।'' 'दुर्गा' नाट्य विहार कला केंद्र का सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम है

और इसके प्रदर्शन के दौरान सभागार हमेशा भरे रहते हैं। इस कार्यक्रम की प्रकाश व्यवस्था का दायित्व शुरू में तो तापस सेन के पास था, जो अपनी मृत्यु के समय तक नाट्य विहार कला केंद्र के अभिन्न अंग थे।

एक और महागाथा के अनुसार अश्वपति, मद्र देश के दयालु राजा, अपनी तपस्या के बल पर महान् सिद्धि प्राप्त योगी थे। उन्होंने देवी गायत्री से यह वरदान प्राप्त किया था कि वे मानवता की समस्याओं का अंत करने के लिए सावित्री के रूप में अवतार लेंगी। त्रिलोकाचारी नारद मुनि अपनी छठी इंद्रिय से संकेत पा गायत्री के जन्म को लेकर सतर्क हो उठे और उन्होंने यम को चेतावनी दी कि आनेवाले समय में सावित्री अत्यंत शक्तिशाली होकर मृत्यु के देवता के रूप में उनकी भूमिका को चुनौती देंगी; पर यम ने नारद की बात अनसुनी कर दी।

इस पात्र की अति साधारण इच्छा—शक्ति और दृढ संकल्प ने हेमा को इस नृत्य नाटिका के प्रदर्शन के प्रति आकर्षित किया। श्री अरविंद की पुस्तक से प्रेरित सावित्री की गाथा न केवल एक असाधारण पत्नी के बारे में है, जो अपने पति को मृत्यु के मुख से लौटा लाई थी, बल्कि यह एक असाधारण स्त्री के बारे में भी है, जिसमें यम को भी भ्रमित करने की योग्यता थी। अब उसकी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा आनेवाली कई पीढ़ियों तक स्त्रियों को प्रेरणा देती रहेगी। हेमा यह भी बताती हैं कि 'सावित्री' उनके लोकप्रिय नृत्य नाटिकाओं में इसलिए शामिल नहीं हो पाई, क्योंकि इसका प्रसंग 'मृत्यु' पर आधारित है। फिर भी, वह इसे अपने बेहतरीन नृत्यों में शामिल करती हैं; क्योंकि इसमें यम की अत्यंत विशिष्ट विवेचना प्रस्तुत की जाती है। ''हम में से अधिकांश उन्हें एक दुष्ट अवतार मानते हैं; पर हमारी नृत्य नाटिका में उनका प्रस्तुतीकरण एक अत्यंत बलशाली और शांत देवता के रूप में किया गया है। वास्तव में, इस चरित्र को निभानेवाले अभिनेता को स्पष्ट निर्देश दिया जाता है कि वे उन्हें 'दुष्ट' के रूप में प्रदर्शित न करें। मेरे लिए इसके भव्य सेट पर प्रदर्शन करना एक अतिरिक्त चुनौती थी। शो बिजनेस की दुनिया में मंच—सज्जा से लेकर प्रकाश व्यवस्था, परिधान से लेकर श्रृंगार तक—हरेक छोटी चीज महत्त्वपूर्ण होती है। अगर आप एक भी विभाग में असफलत होते हैं तो प्रभाव पहले जैसा नहीं हो पाता।'' हेमा विस्तृत टिप्पणी करते हुए कहती हैं।

हेमा के लिए यह ज्ञान—प्राप्ति का दौर था और उनकी जानकारी के बगैर उनकी चेतना के अंदर कोई गहरा और शक्तिशाली तथ्य घूम—चल रहा था। कुछ समय के लिए यह दूरस्थ चित्रों और प्रतिध्वनियों के जैसा लगता था, जिसे वे परिभाषित नहीं कर पा रही थीं। वे सोचती थीं कि कहीं यह एक नर्तक के रूप का परिणाम तो नहीं है, पर जल्द ही उन्हें एक अपूर्ण दृष्टि की छाया का भान हुआ। झलकियाँ आ और जा रही थीं...वह भगवान् शिव की सुदृढ और शक्तिशाली छवि के रूप में लगती, पर हेमा निश्चय नहीं कर पा रही थीं और उन्होंने इस विचार को यूँ ही जाने दिया। फिर एक दिन जब वे शिमला में शूटिंग के दौरान अपने केश सज्जाकार से बातें कर रही थीं तो उन्होंने एक बार फिर वही छवि देखी। यह एक अभिभूत करनेवाली छवि थी और अब कोई संशय नहीं था कि भगवान् शिव स्वयं प्रकट हुए थे। वे ठीक वैसे ही लग रहे थे जैसा गुरु माँ ने उन्हें वर्णित किया था—नीला शरीर, चमकते नेत्र, मालाओं में लपेटे हुए ताँबे की तरह के जटाजूट और त्रिशूल। वह दैवी रूप से आकर्षक और अत्यंत भयंकर भी लग रहे थे। कुछ समय के लिए हेमा को लगा कि उन्हें विभ्रम हो रहा है। क्या यह उनकी गुरु माँ के साथ उनके वार्तालाप का परिणाम हो सकता है? हेमा व्यग्र हो उठीं। उन्होंने पीछे मुड़कर एक बार फिर उस छवि को देखना चाहा; पर तब तक वह लुप्त हो चुकी थी। इस दिव्य दृष्टि से हेमा भयभीत हो उठीं और उन्होंने इस चमत्कार की चर्चा अपनी गुरु माँ से की। माँ आश्चर्यचकित नहीं थीं। ''इसे ऐसा ही चलने दो। हमारे लिए हरेक चीज का विश्लेषण करना आवश्यक नहीं है।''

राधा कृष्ण : 'काव्य सौंदर्य से परिपूर्ण नृत्यनाट्य।'

देवी श्री अथवा महालक्ष्मी (जिस नाम से वह लोकप्रिय हैं) नारी शक्ति का अवतार हैं और वह संपन्नता का भी प्रतीक मानी जाती हैं। वह भगवान् विष्णु की गौरवशालिनी पत्नी हैं और उन सब सद्गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनका हर स्त्री अनुकरण करना चाहती है। उनका सिंहासन—कमल—शुद्ध जीवन का प्रतीक है। समुद्रराज उन्हें पाकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और उन्हें अपने अंक में भर लेते हैं। ''सागर मंथन, जिसके अंत में लक्ष्मी प्रकट होती हैं और देवों एवं दानवों दोनों को मोहित कर लेती हैं, मेरी सबसे पसंदीदा कहानी है। मैं इन देवी को अपनी माँ के साथ भी जोड़कर देखती हूँ। जब मैं गर्भ में थी तो उन्होंने उनका चित्र बनाया था। मेरा नाम 'हेमा' लक्ष्मीजी द्वारा धारण की जानेवाली माला के नाम पर रखा गया है। मैं बचपन से ही उस पेंटिंग को देखकर बड़ी हुई हूँ, जिसमें वे कमल पर खड़ी हैं। मैंने बचपन में समूह नर्तकों के साथ लक्ष्मी के रूप का प्रदर्शन किया था। यह नृत्य नाटिका मेरी इस बचपन की याद को एक श्रद्धांजलि है।'' हेमा स्वप्निल अंदाज में बोलती हैं।

हेमा ने 'राधाकृष्ण' की नृत्य नाटिका की रचना इस कारण से की, क्योंकि वे भगवान् श्रीकृष्ण की भक्त की भूमिका निभाने भर से संतुष्ट नहीं थीं। अब वे उनकी प्रेमिका की भूमिका के लिए लालायित थीं। इस नृत्य नाटिका के पटकथा लेखन के दौरान मैंने वृंदावन की कई बार यात्रा की। ''मैं गलियों में भटकी, बागों में घूमी, गायों को चरते हुए देखा और अपने जीवनकाल में चरवाहे बने श्रीकृष्ण की कल्पना की। मैं इस्कॉन के कई भक्तों से मिली, उनकी रोमांचक कहानियाँ सुनीं और स्वयं भी एक चमत्कार अनुभव किया। मंदिर के जिस विश्राम गृह में मैं ठहरी हुई थी, वहाँ गीजर जैसे विलासिता के साधन उपलब्ध नहीं थे। वृंदावन में जाड़ों के महीनों में ठिठुरानेवाली सर्दी होती है और ठंडे पानी से नहाना असंभव लगता है। मैं मंगला आरती में भाग लेने के लिए सूर्योदय के समय उठ तो गई, पर ठंडे पानी से स्नान करने का साहस नहीं कर पा रही थी; पर जब मैंने नल खोला तो आश्चर्यजनक रूप से गरम पानी निकलते पाया।'' वे चमकते नेत्रों के साथ यह रहस्य बताती हैं।

यह नृत्य नाटिका भगवान् श्रीकृष्ण के इस धरा पर वास के दौरान हुई प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालती है, खासकर उनकी युवावस्था की लीलाओं के लिए, जिसके कारण वे पूजे जाते हैं। मंच—प्रस्तुति वृंदावन की गोपियों के साथ श्रीकृष्ण की शरारतों, राधा व कृष्ण के बीच के विशेष बंधन और श्रीकृष्ण द्वारा अपनी असाधारण शक्तियों के प्रयोग कर अरिष्टासुर के विनाश को दरशाती है। ''राधा और कृष्ण शाश्वत प्रेमी हैं। मैं बालपन से ही श्रीकृष्ण के विभिन्न अवतारों का प्रदर्शन करती रही हूँ। कृष्ण इस कारण से मनोहर हैं, क्योंकि वे सबसे महान् पराक्रमी हैं। इस्कॉन द्वारा जन्माष्टमी पर सत्कार्यों के लिए राशि जमा करने के हेतु किए जानेवाले कार्यक्रम में प्रदर्शन करना मेरे लिए एक—दो दशकों पुरानी परंपरा बन चुका है। उस दिन नृत्य करना मेरे लिए एक आध्यात्मिक अनुभव होता है।

''जब इस नृत्य नाटिका के अंत में हम महारास का प्रदर्शन करते हैं तो हम सब को कुछ हो जाता है। ऐसा लगता है

कि हम सबके अंदर एक वैद्युतीय ऊर्जा समाहित हो जाती है। यह अतिशयोक्ति लग सकती है, पर मुझे सच में यह तो अनुभव होता है कि भगवान् हमारे बीच आ गए हैं। मुझे ऐसा लगता है कि वे हमारे साथ नृत्य करने के लिए नीचे उतर आए हैं और इस बारे में मेरा अपना दार्शनिक विचार भी है। कल्पना करें, सोलह हजार गोपियाँ उनका ध्यान खींचने को लालायित हैं, पर सिर्फ मुझे उनके साहचर्य का विशेषाधिकार होता है। देखनेवाले दर्शकों के लिए यह सिर्फ एक नृत्य नाटिका हो सकती है, पर मेरे लिए भूमिका को निभाना राधा के रूप में अवतार ग्रहण कर भगवान् को अपने साथ अनुभव करने जैसा होता है। यही कारण है कि जब भी महारास के प्रदर्शन का समय आता है तो चाहे मैं कितनी भी थकी—हारी क्यों न होऊँ, मेरे अंदर एक असीम ऊर्जा का संचार हो उठता है। रवींद्र जैन का शांतिदायक संगीत इसमें और चमक डाल देता है और जब राधा एवं दूसरी गोपियाँ मंच पर आती हैं तो ऐसा लगता है कि मैं वृंदावन में चाँदनी रात और गुनगुनाते भ्रमरों के मध्य सम्मोहित—सी आ गई हूँ।

''इसके पीछे कोई दैवी शक्ति तो अवश्य है; क्योंकि शिव, विष्णु और कृष्ण की भूमिका करनेवाले साधारण कलाकार भी मंच पर देव समान लगने लगते हैं। हालाँकि भगवान् का वेश धारण करनेवाले कलाकार समय—समय पर बदल जाते हैं, फिर भी अनेक बार इस तरह का अनुभव देखने को मिला है।''

गीत गोविंद : एक अग्रणी नृत्य नाटिका, जो राधा और कृष्ण के बीच की कामुकता और

प्रेमकाव्य की तल्लीनता से पड़ताल करता है।

'गीत गोविंद' महाकवि जयदेव द्वारा बारहवीं सदी में रचित एक काव्यात्मक सौंदर्यवाली कविता है। यह राधा और कृष्ण के बीच के असाधारण संबंधों की कई सतहों का वर्णन करता है। उनके शारीरिक आकर्षण और आध्यात्मिक जुड़ाव से लेकर यह एक पूरा चक्र घूमते हुए वहाँ खत्म होता है, जहाँ भगवान् राधा को अपने साथ एक भक्त के रूप में अपना लेते हैं, न कि एक सहचरी के रूप में। इसकी और व्याख्या करते हुए हेमा कहती हैं, ''यह अत्यंत कौतूहल का विषय है कि सिर्फ राधा को ही कृष्ण का स्नेह प्राप्त होता है, जबकि सभी गोपियाँ उन्हें एक सा प्रेम करती थीं। मैं इस नृत्य नाटिका को दो प्रेमियों के बीच की विषयासक्ति और कामुकता के कारण पसंद करती हूँ। राधा कृष्ण से नाराज हैं और रूठी हुई हैं। उन्हें शांत करने के लिए हर वह कार्य करते हैं वे, जो वह कहती हैं। वे राधा के वक्षों पर चंदन का लेप लगाते हैं और उनके शरीर पर अत्यंत कठिन चित्र भी बना देते हैं; पर राधा उनके विश्वासघात को क्षमा करने के लिए तैयार नहीं होतीं और मुक्त कंठ से अन्य गोपियों के प्रति अपनी ईर्ष्या की भी अभिव्यक्ति करते हुए उन्हें डाँटती हैं, चिढ़ाती हैं और उन्हें इस तरह तंग करती हैं कि वे राधा के पैरों पर गिर जाते हैं। मेरे मित्र, जो इस्कॉन के भक्त हैं, भगवान् कृष्ण के राधा के पैरों पर गिरने से इतना क्षुब्ध हो जाते हैं कि वे शर्मिंदा हो अपनी आँखों को ढँक लेते हैं, क्योंकि वे अपने भगवान् को इस प्रकार नहीं देख सकते। पर राधा इतनी जिद्दी और माँग करनेवाली हो जाती हैं कि कृष्ण उन्हें उनके केशों में तेल लगाकर, उनकी चोटियों को गूँथकर, उनके नेत्रों में काजल लगाकर और उन्हें आभूषण पहनाकर खुश करने की कोशिश करते हैं।''

द्रौपदी : साजिशों, रहस्यों, दाँव—पेंचों, झगड़ों और बलिदानों की आकर्षक गाथा।

यह नृत्य नाटिका कहानी को द्रौपदी के दृष्टिकोण से बताता है।

हेमा 'गीत गोविंद' को अपनी तरह एक अलग नृत्य नाटिका के रूप में वर्णित करती हैं, जो कृष्ण के अनन्य भक्तों के लिए स्वीकार्य नहीं है। इस नाटिका के लोकप्रिय न होने का एक कारण हेमा के अनुसार यह भी है कि इसके गीत संस्कृत में हैं। ''यह वाकई एक दु:खद बात है कि हमारे देश की सबसे पुरानी भाषा को यहाँ के अधिकांश लोग समझ नहीं पाते; पर इससे हमारी टीम को कोई निराशा नहीं होती। हमने इतने सारे प्रदर्शन किए हैं कि किसी कार्यक्रम की लोकप्रियता से उसकी उत्कृष्टता को जोड़कर देखने की गलती नहीं कर सकते।'' हेमा जोर देकर कहती हैं। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए 'गीत गोविंद' के नृत्य निर्देशक दीपक मजूमदार कहते हैं कि ब्रह्मा द्वारा रचित चार वेदों में भरत मुनि ने एक पाँचवाँ वेद भी जोड़ दिया और वह है 'नाट्यशास्त्र', क्योंकि इसमें ज्ञान, शिल्प, कला, विद्या, योग और कर्म सभी शामिल हैं। अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि नृत्य गुरुओं ने कला के इस स्वरूप को देवताओं की भाषा से जोड़ रखा है। वास्तव में, मजूमदार का यह मानना है कि कलाकार उस 'सर्वशक्तिमान' के देवदूत होते हैं, जिन्हें वह वृहद् उद्देश्य से धरती पर भेजता है और यही कारण है कि वे आयु की ढलान से अछूते रहते हैं और उनका करिश्मा कभी कम नहीं होता। नाट्य विहार कला केंद्र से दो दशकों से भी अधिक समय से जुड़े मजूमदार नृत्य के प्रति हेमा की चाहत को एक आध्यात्मिक यात्रा बताते हैं और उनकी विभिन्न नृत्य नाटिकाएँ दर्शकों के उत्थान और उनके प्राचीन अभिलेखों के साथ पुन: परिचय के प्रयास हैं। अपनी तरफ से हेमा इस सफलता का श्रेय अपनी पूरी टीम को देती हैं। ''मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे पास ऐसी शानदार टीम है, जो इतने सालों से एक नृत्य नाटिका से दूसरी तक लगातार मेरे साथ बनी हुई है।'' हेमा अपनी संपूर्ण उदारता से स्वीकार करती हैं।

महाभारत के समृद्ध चित्र—पटल के कारण इसकी अनेक प्रकार से व्याख्याएँ की गई हैं। हेमा हमेशा से द्रौपदी के ऊपर एक नृत्य नाटिका करना चाहती थीं; पर वे कभी भी उनके चरित्र की व्याख्या करनेवाली पटकथाओं से पूर्णत: संतुष्ट नहीं हो पाती थीं। तभी एक दिन एक पुस्तक की दुकान में प्रसिद्ध ओड़िया लेखिका प्रतिभा रे के उपन्यास 'याज्ञसेनी' पर उनकी नजर पड़ी। ''मैंने उसी रात्रि वह पूरा उपन्यास पढ़ डाला, लेखिका के साथ बात की और मुलाकात तय कर समय ले लिया। मेरे द्वारा नृत्य नाटिकाओं में प्रदर्शित सभी स्त्रियों में से मैं द्रौपदी के प्रति सबसे अधिक करुणा अनुभव करती हूँ। किसी अन्य को उतनी पीड़ा और अपमान नहीं सहना पड़ा, जितना द्रौपदी को। कल्पना करें, एक स्त्री को, जो पाँच पतियों में बँटी होती है, जिसका सार्वजनिक रूप से चीर—हरण किया जाता है और जो अंत में कैलास पर्वत पर त्याग दी जाती है। पाँच पतियों के होने के बावजूद उसके संकट की घड़ी में उसके संरक्षक और सखा कृष्ण ही उसके बचाव के लिए आए।'' हेमा सोचते हुए कहती हैं।

कुचक्रों, षड्यंत्रों, संघर्षों और त्याग की रोमांचक कहानियों के चित्र—पटलवाली यह नृत्य नाटिका इस कहानी को द्रौपदी के दृष्टिकोण से सुनाती है। यह नाट्य विहार कला केंद्र की सबसे खर्चीली नाटिका है और यह दृश्य—श्रव्य एवं मंच प्रदर्शन के दो भिन्न माध्यमों का संयोजन है। इस नृत्य नाटिका में नृत्य की तुलना में नाटक अधिक

है, इसलिए पहली बार टेलीविजन के कलाकारों को पांडवों और कौरवों की भूमिका में लिया गया। भूषण लखंदरी उनके प्रदर्शन और नृत्य नाटिका के लिए उत्तरदायी थे। ''हमने इस विषय पर एक साल से अधिक समय तक शोध किया और तब हम मंच पर गए। यह किसी भी नृत्य नाटिका के निर्माण में लगाया गया सबसे लंबा समय है। हमारे अन्य सभी निर्माणों में संकल्पना से लेकर नृत्य निर्देशन तक समयावधि एक साल से अधिक नहीं रही थी।'' हेमा हमें सूचित करते हुए कहती हैं।

परंपरा : एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान देने की परंपरा। हेमा अपनी बेटियों ईशा और अहाना के साथ।

परंपरा का अर्थ होता है—एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान के अंतरण की प्रथा। इसी नाम की नृत्य नाटिका भरतनाट्यम और ओडिसी नृत्य कलाओं के मूल संयोजन पर आधारित एक नृत्य निर्देशन है, जिसमें हेमा भरतनाट्यम वाला भाग करती हैं और ईशा व अहाना ओडिसी वाला। यह प्रस्तुति संयोजनवाले नृत्य स्वरूप की व्यावहारिक स्वीकृति है और उपयुक्त रूप से इसे दो अलग पीढ़ियों के नर्तकों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। ''मेरी माँ ने मुझे कला का यह उपहार दिया था और मैंने यह धरोहर अगली पीढ़ी तक पहुँचा दी।'' हेमा मुसकराती हैं। ''मेरी बेटियों के साथ मंच पर कार्यक्रम करने के अनुभव का वर्णन करना शब्दों में संभव नहीं है। हमने पूरी दुनिया में कार्यक्रम किए हैं। हाल ही में हमने तिरुपति मंदिर में भी कार्यक्रम किया है; और एक दैवी स्थल पर प्रदर्शन करने का अनुभव अपने आप में अत्यंत विस्मयकारी होता है।''

हेमा से अकसर पूछा जाता है कि वे अपनी नृत्य नाटिकाओं में सिर्फ मिथकीय चरित्रों को ही क्यों चुनती हैं? इस संबंध में उनका स्पष्टीकरण यह है कि जब पूरा 'नाट्यशास्त्र' ही मिथकीय कथाओं से ओत—प्रोत है तो भला शास्त्रीय नृत्य देवताओं और मंदिरों से दूर कैसे जा सकता है? हेमा का परंपरागत व्यवहार और आध्यात्मिकता के प्रति उनका प्राकृतिक झुकाव मंच पर उनकी शाही उपस्थिति में अतिरिक्त जादू भर देता है। जिन लोगों ने मंच पर हेमा का सजीव प्रदर्शन देखा है, वे कहते हैं कि हेमा का प्रदर्शन इस कदर सम्मोहक होता है कि वे दर्शकों को किसी और दुनिया में ले जाती हैं।
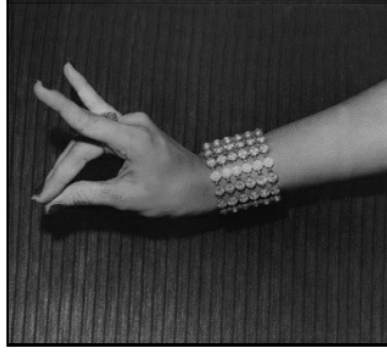
विभिन्न मुद्राओं का प्रदर्शन करती हेमा।

नृत्य नाटिकाओं की श्रृंखला में उनकी नवीनतम प्रस्तुति 'यशोदा—कृष्ण' वैश्विक मातृत्व को एक श्रद्धांजलि है। यशोदा कृष्ण की सगी माँ नहीं थीं, पर उनका कृष्ण के प्रति प्रेम दीवानगी की हद तक था। कृष्ण वृंदावन के प्राण और उसकी सभी गोपियों के लिए परमानंद के समान थे। वे उन्हें सताते, उनके कपड़े चुरा लेते और जब वे यशोदा से उनकी शिकायत करतीं तो अपने आप को निर्दोष बताते। यह नृत्य नाटिका कृष्ण कीलीलाओं, उनकी शरारतों और चमत्कारों का वर्णन करती है। ''कृष्ण मेरी सभी नृत्य नाटिकाओं में हैं, क्योंकि वे सभी भूमिकाओं—पुत्र, सखा और मित्र के रूप में प्रभाव उत्पन्न करते हैं। 'यशोदा—कृष्ण' मेरी दूसरी नृत्य नाटिकाओं से इस अर्थ में थोड़ा भिन्न है कि यह लोककथाओं पर आधारित है और एक बड़े दर्शक वर्ग को लक्षित करती है।'' वह समझाती हैं। हेमा कहती हैं कि यह मंच पर एक बच्चे के साथ काम करने का पहला अनुभव है। ''बाल कलाकारों के साथ काम करने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। मंच पर यह और भी कठिन हो जाता है, क्योंकि पता नहीं वह बच्चा किस कोने से मंच पर प्रविष्ट होगा।'' यह नृत्य नाटिका कृष्ण के बचपन की विभिन्न अवस्थाओं को दरशाती है और अहाना बारह वर्षीय कृष्ण की भूमिका करती है। ''उसके प्रदर्शनों में से मुझे 'कालिया—मर्दन' और 'गोवर्धन' सर्वाधिक प्रिय हैं। इन दोनों ही में अहाना इतना इच्छा करती है कि हर कोई हमेशा उसके लुभावने गुणों की चर्चा करता है।'' वह एक गर्वित माँ के रूप में कहती हैं।

हेमा बताती हैं कि कविता कृष्णमूर्ति ने उनकी नृत्य नाटिकाओं के सभी गानों को अपना स्वर प्रदान किया है। ''कविता मेरी माँ की खोज हैं और मुझे उनकी आवाज में अत्यधिक विश्वास है। फिल्मों में जैसे लता दी मेरी आवाज हैं, मंच पर ऐसे ही कुछ कविता के साथ है।''

भूषण लखंदरी, जो हेमा के साथ एक दशक से भी अधिक समय से जुड़े हैं, ने 'नृत्य मल्लिका' एवं 'मीरा' से लेकर 'यशोदा—कृष्ण' एवं 'द्रौपदी' तक उनकी सभी नृत्य नाटिकाओं का नृत्य निर्देशन किया है। सिर्फ 'गीत गोविंद' और 'परंपरा', जो विशुद्ध रूप से शास्त्रीय नृत्य पर आधारित है, का नृत्य निर्देशन दीपक मजूमदार ने किया है। लखंदरी कहते हैं कि हेमा के साथ काम करना एक अत्यंत समृद्ध अनुभव है। वे कहते हैं कि किसी भी रचनात्मक संबंध को लंबे समय तक बिना संघर्ष के कायम रखना आसान नहीं होता। ''हम ऐसा करने में इसलिए सफल हो पाए, क्योंकि एक निर्माता के रूप में हेमा अपनी इच्छा हम पर नहीं थोपतीं। वे तीन दशकों से भी अधिक समय से नृत्य कर रही हैं, पर अभी भी उनका उत्साह एक नवागंतुक कलाकार से कम नहीं होता। जब भी सुबह सात बजे मेरे घर के टेलीफोन की घंटी बजती है तो सब जान जाते हैं कि ये सिर्फ हेमाजी हो सकती हैं। उन्हें सुबह उठना प्रिय है और सुबह—सवेरे में आनेवाला यह फोन मस्तिष्क में उठनेवाले किसी ताजा विचार को साझा करने के लिए ही होता है। अंतिम बार हाल ही में जब उन्होंने मुझे फोन कर जगाया तो वह मुझसे 'द्रौपदी' वाली नृत्य नाटिका में एक विशुद्ध कत्थक पर आधारित नृत्य शामिल करने के बारे में ही कहना चाह रही थीं। ज्यादा मजेदार बात यह थी कि उन्होंने वह स्थान भी तय कर लिया था, जहाँ यह नृत्य शामिल किया जाना था। कला के प्रति हेमा का उत्साह और ऊर्जा चकित कर देनेवाले हैं। उनकी अवस्था और ओहदे के कारण वे आसानी से शिथिल हो सकती थीं, पर वे हमेशा गतिशील रहना चाहती हैं।

इतने वर्षों के बाद भी भूषण को उनका मंच पर पहली बार एक साथ किया गया प्रदर्शन याद है। परदे के उठने के कुछ ही मिनट पहले वे उनकी तरफ मुड़ीं और पूछा कि क्या उनकी मुद्राएँ सही हैं? ''मैं इस पर विश्वास कर ही नहीं पाया। इतनी सारी सफलता के बाद भी उनमें अभी भी बाल—सुलभ गुण मौजूद हैं। इतने वर्षों के बाद भी हर कार्यक्रम के पहले वह अपनी भंगिमाओं का पुनराभ्यास करती रहती हैं और इसी तरह उन्होंने अपनी पुत्रियों को भी प्रशिक्षित किया है।''

❑

10

रूट्स और सैड्स

'मेरी माँ ने मुझे कला का उपहार दिया और मैंने यह सौगात अपनी बेटियों को दी।' ईशा और अहाना के साथ हेमा।

ईशा और अहाना देओल अपने आस—पास संगीत के माहौल में ही बड़ी हुई थीं। छोटी बच्चियों के रूप में उनकी यादें एक अत्यंत अभिप्रेरित माँ की हैं, जो गीतों के प्रस्तुतीकरण के साथ अपनी भंगिमाओं का तालमेल बिठा रही होती हैं। उनका घर हर वक्त संगीतकारों और नर्तकों से भरा होता था। सुबह—सुबह शुरू होनेवाला पूर्वाभ्यास देर शाम तक चलता रहता था। उन दिनों ईशा की हरसंभव कोशिश होती थी कि वे स्कूल न जाएँ और कभी—कभी हेमा मान भी जाती थीं। ईशा को हमेशा उन अवसरों की प्रतीक्षा रहती थी, जब वे एक कोने में हाथ में नोटबुक लेकर बैठी होतीं और जब भी कोई नर्तक अपनी मुद्रा गलत करता, झट से कॉपी में नोट कर लेतीं।

''मैं उन सभी मुद्राओं और गीतों को अपने दिल से जानती थी और नर्तकों की जानकारी के बगैर उनके साथ सम्मिलित हो जाती।'' ईशा याद करते हुए बताती हैं, ''मैं अकसर नर्तकों का ध्यान भंग कर देती थी; पर चाहे मैं जितना भी हंगामा क्यों न मचाऊँ, मुझे कभी भी पूर्वाभ्यासों में शामिल होने से रोका नहीं जाता था।'' ईशा मानती हैं कि इससे उनमें काफी विश्वास पैदा हुआ। ''जब मैं नन्ही सी थी तो हर बार माँ के शहर के बाहर जाते ही बीमार हो जाती थी; पर बाद में जब मैं उनके साथ शूटिंग पर जाने लगी तो मेरी चिंताएँ काफी कम हो गईं।'' वे वर्णन करती हैं। अपनी छुट्टियों के दौरान ईशा अपनी माँ की शूटिंग का एक स्थायी भाग बन जाती थीं। हेमा का मेकअप करनेवाले बंगाली दादा ईशा को व्यस्त रखने के लिए ईशा के चेहरे पर रंग लगा देते थे और हेमा के दुपट्टे को उसके सुंदर मुखड़े के ऊपर डाल देते थे। इन सबके बीच धर्मेंद्र की कड़कती आवाज 'तुम्हें फिल्मों में काम नहीं करना है, ईशा।' उनके दिमाग में गूँजती रहती थी।

ईशा अकसर स्कूल से अनुपस्थित रहा करती थीं और इसी कारण हेमा ने उनका होम वर्क करवाने के लिए एक घरेलू शिक्षक की व्यवस्था की। वह शिक्षक उन्हें इतिहास के अलावा बाकी सारे विषय पढ़ाता था, क्योंकि हेमा को इतिहास पढ़ाने में आनंद आता था और ईशा ने इस विषय में हमेशा अच्छे अंक पाए। ''मम्मा मेरा इतिहास का होम

वर्क करवाने के लिए एक फुट्टे (लंबाई नापनेवाला रूलर) के साथ बैठती थीं। उस वक्त यह मुझे बहुत नापसंद था; पर आज मैं उनके प्रयासों की याद कर अभिभूत हो जाती हूँ। वह बड़ी आसानी से मुझे शिक्षक के भरोसे छोड़ सकती थीं, पर उन्होंने खुद ही मुझे पढ़ाना पसंद किया।'' ईशा अपना बचपन याद करते हुए कहती हैं।

छोटी बेटी अहाना को आज भी वह बगीचा याद है, जिसमें वह खेलती थीं और साथ—साथ उनकी माँ का नृत्य दल भी वहाँ पूर्वाभ्यास करता था। हेमा की चचेरी बहन प्रभा अहाना को व्यस्त रखने के लिए उन्हें घिसने हेतु छोटी—छोटी कागज की पर्चियाँ देती थीं। जब अहाना घिसने से तंग आ जातीं तो वह किसी भी नर्तक, जो उसकी ओर अपना ध्यान बाँटने को फ्री हो, के साथ खेलने लगती थीं।

अपने बच्चों को बड़ा होते देखने से ज्यादा आनंददायी और परिपूर्ण कुछ नहीं है :

हेमा की दो अनमोल बेटियाँ ईशा और अहाना।

दोनों बहनों को हेमा के मंच के नेपथ्य में बने सज्जा गृह की स्पष्ट यादें हैं। कार्यक्रमों की पूर्व संध्या पर वे विशालकाय दर्पण के सामने तैयार हो रहीं अपनी माँ को चकित नेत्रों से घूरती रहती थीं। ईशा मेकअप के गुलाबी और नीले रंगों को छूती रहती थीं और यह सोचकर चकित होती रहती थीं कि कैसे ये रंग मनुष्य के चेहरे को बदल देते हैं। त्योहारों के शुभ अवसर पर हेमा अपनी बेटियों के चेहरे पर रंग लगाती थीं और उन्हें भव्य पोशाकें, जिनमें हेमा की आलमारी से लिये गए आभूषण भी होते थे, पहनाती थीं। जन्माष्टमी के दिन ईशा मोरपंखों की सजावट के साथ कृष्ण का वेश धारण करती थीं और अहाना धोती पहनकर बलराम बनती थीं। अपनी माँ की तरह ही ईशा ने भी छह वर्ष की उम्र में मंच पर अपना पहला कदम रखा। हेमा उस समय अपनी नई नृत्य नाटिका 'मीरा' का मंचन कर रही थीं। एक संवाद, मीरा जब छह साल की थीं, ने ईशा की मंच पर उपस्थिति का आधार तैयार किया। ईशा को चमकदार घाघरा—चोली पहनना और अपना अतिरिक्त खयाल रखा जाना बहुत पसंद आया। उन्हें खास तौर पर कार्यक्रम का वह हिस्सा पसंद था। जब मंच पर आने के लिए उनका नाम पुकारा गया और उन्हें आगे आकर झुककर प्रणाम करना पड़ा। कार्यक्रम के अंत में वह भी अन्य कलाकारों के साथ कतार में खड़ी हुईं और अपना 200 रुपए का मेहनताना प्राप्त किया। ''मुझे कभी भी वे रुपए खर्च करने की अनुमति नहीं मिली। न ही मम्मा ने उन्हें कभी छुआ। मुझे पूरा विश्वास है कि वे ताजे कड़े नोट आज भी माँ की अनगिनत साड़ियों में से एक की तह में सावधानी के साथ लिपटे रखे होंगे।'' ईशा मुसकराते हुए कहती हैं।

ईशा और अहाना कहती हैं कि मंच पर प्रदर्शन करना कितना बड़ा कार्य है, यह उन्हें काफी समय तक समझ में नहीं आया। ऐसा शायद इस कारण था, क्योंकि हेमा इसे अत्यंत ही स्वाभाविक ढंग से करती थीं। जब हेमा 'रामायण' का मंचन करतीं तो वह ईशा और अहाना को राम की वानर सेना में छोटे वानरों की भूमिका देती थीं, जो राम को सागर अंतरण में सहायता करते हैं और बाद में वे रावण के दरबार में छोटे दानवों के रूप में नजर आतीं।

हेमा के घर पर काम करनेवाले एक नौकर ने ईशा को कार्टव्हील्स (हाथों के सहारे की जानेवाली कलाबाजी) सिखा दी थी और उसने हेमा को इसे नृत्य निर्देशन में शामिल करने के लिए तंग करना शुरू कर दिया। ये वे क्षण थे, जब दोनों बच्चियाँ पूरा आनंद उठाती थीं। अगली नृत्य नाटिका 'दुर्गा' में उन्होंने नव दुर्गा के अवतारों के रूप में धीर—गंभीर उपस्थितियाँ दर्ज कराईं।

वे एक कर्मशील माँ के रूप में हेमा की पहचान की अभ्यस्त हो चुकी थीं, पर वे यह कतई नहीं जानती थीं कि वे कितने सारे भिन्न कार्यों में एक साथ संतुलन बनाकर अपना दायित्व निभा रही थीं। उनके लिए तो बस, यही बात मायने रखती थी कि उनकी आवश्यकता के समय माँ उपस्थित रहें। उनके लिए सबसे अच्छे पारिवारिक क्षण टी.वी. देखते हुए रात के खाने के साथ आते थे। हेमा उन्हें अपने बचपन की कहानियाँ सुनातीं, उन्हें बतातीं कि कैसे वे एक छोटी बच्ची के रूप में नृत्य सीखने को नापसंद करती थीं और कैसे उनकी नानी (जिन्हें दोनों लड़कियाँ 'अंबा' कहकर बुलाती थीं) ने कभी भी उनका ध्यान भटकने नहीं दिया। अपनी माँ से सटकर बैठी हुई ईशा और अहाना उन्हें और कहानियाँ सुनाने के लिए कहतीं। पर हेमा ने कभी एक परंपरागत माँ की तरह परियों की कहानियाँ नहीं सुनाईं। इसकी बजाय वे उन्हें मिथकीय कथाएँ सुनाना पसंद करती थीं। इसी कारण यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि ईशा और अहाना बिना कोई स्पष्टीकरण माँगे उनकी नृत्य नाटिकाओं—रामायण, मीरा और दुर्गा को समझ पाती थीं।

जब ईशा ने किशोरावस्था में प्रवेश किया तो उसके जीवन में नई—नई अभिरुचियों का भी प्रवेश हुआ और इनमें सबसे खास थी फुटबॉल। वह और उसकी क्लास की दूसरी लड़कियाँ अपने अभिभावकों की व्यग्रता की परवाह किए बिना आठ—आठ घंटों तक खेल के मैदान में फुटबॉल का अभ्यास करती रहती थीं। फिर भी, दूसरी सारी ध्यान भटकानेवाली चीजों के बाद भी ईशा और अहाना के लिए नृत्यों के पूर्वाभ्यास से बचना/भागना कठिन था। हेमा के घरेलू क्रियाकलापों के मध्य भी संगीत की सुर लहरी उनके पूरे घर में गूँजती रहती थी और जाने—अनजाने ईशा व अहाना भी अपना होम वर्क गानों को गुनगुनाते हुए ही करती थीं। एक बार गरमी की छुट्टियों में ईशा और उसके स्कूल के मित्रों ने ब्रेबॉर्न स्टेडियम में होनेवाली नृत्य प्रतियोगिता में भी भाग लिय; पर उनका उद्‌देश्य 'कोली' साड़ी पहनने और बालों में फूल लगाकर जूड़े बाँधने का आनंद उठाना ही था। जैसे—जैसे ईशा बड़ी हुई, हेमा ने उस पर नृत्य सीखने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया और ईशा ने इसका विरोध करना चाहा। जब भी वे कहीं बाहर जातीं और जिस किसी से भी मिलतीं तो उनका वार्त्तालाप घूम—फिरकर उसी महत्त्वपूर्ण सवाल पर आ टिकता था। वैसे अपरिचित, जिनसे ईशा कभी नहीं मिली होतीं, भी अचानक पूछ लेते, ''क्या तुम भी नृत्य सीख रही हो?'' इसके उत्तर में एक अटपटा सा सन्नाटा छा जाता। हेमा कुछ—न—कुछ बहाना बना देतीं और ईशा अपनी आँखों को गोल—गोल घुमाकर दूर देखने लगतीं। यह सिलसिला थोड़े समय तक चला। अहाना याद करती हैं कि जब वे छह साल की थीं, तभी से उन्होंने नृत्य का औपचारिक प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। ''ईशा और मैं सप्ताह में दो बार खार स्थित एक नृत्य विद्यालय में जाते थे। हमारे पहले गुरुजी दीपक मजूमदार एक कुशल शिक्षक थे, पर हम जैसे लापरवाह शिष्यों को सँभालना उनके वश का नहीं था। हमें नृत्य में रुचि तो थी, पर हम में ध्यान एकीकृत कर नृत्य को गंभीरता के साथ सीखने का धैर्य ही नहीं था।'' अहाना सच स्वीकार करती हैं।

एक पूर्णतावादी नर्तक और गुरु होने के कारण मजूमदार दोनों लड़कियों से तब तक ही 'अदावुस' का अभ्यास कराते, जब तक उनके पैरों की ताल सध नहीं जाती; पर इस सारे अभ्यास की एकरसता के कारण लड़कियों को हताशा अनुभव होती और अभ्यासों के प्रति उनकी रुचि क्रमश: घटती जा रही थी। हेमा इस समस्या से अवगत थीं और अपनी पुत्रियों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होंने अपने प्रयास जारी रखे।

मजूमदारजी के साथ प्रशिक्षण शुरू होने के एक साल के अंदर ही हेमा ने माटुंगा के प्रसिद्ध नृत्य विद्यालय कला सदन के एक शिक्षक के हेमा के घर पर आकर ईशा और अहाना को नृत्य सिखाने की व्यवस्था की। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनका ध्यान भंग न हो, हेमा ने उनकी एक मित्र फजा को भी प्रशिक्षण में शामिल कर लिया। जब कभी भी गुरुजी अस्वस्थ हो जाते या उन्हें कहीं बाहर जाना पड़ता तो हेमा यह सुनिश्चित करतीं कि कोई स्थानापन्न शिक्षक उनकी जगह प्रशिक्षण प्रदान करे। इसके अलावा, हेमा ने कई कार्यशालाओं, जिन्हें वह स्तरीय मानती थीं, में भी ईशा और अहाना को शामिल करवाया।

इसी अवधि के दौरान हेमा अपनी नृत्य नाटिका में एक विशेष नृत्य शामिल करने के लिए गुरु रवींद्र अतिबुद्धि से ओडिसी नृत्य सीख रही थीं। उन दिनों विद्यालय में ग्रीष्म अवकाश था, अतः हेमा ने अपनी पुत्रियों को भी अभ्यास में शामिल करना श्रेयस्कर समझा। इस बार उन्होंने गुरु से विशेष रूप से आग्रह किया कि वे एक ही पाठ को बार—बार दोहराने से यथासंभव बचने की कोशिश करें। अतिबुद्धि में अपनी शिष्याओं के मिजाज के साथ सामंजस्य करने की नायाब कला थी। उन्होंने भाँप लिया कि उनमें धैर्य का अभाव है और वे उनके साथ बड़ी नम्रता से पेश आते थे। उन्हें किसी एक मुद्रा में पूर्णता प्राप्त करने के लिए बाध्य करने की जगह उन्होंने अपने अभ्यासों को मनोरंजन का रूप दे दिया। वे उन्हें नई मुद्राएँ सिखाते और अपने आप से और अन्वेषण करने के लिए छोड़ देते। हेमा अतिबुद्धिजी की सिद्धहस्तता और कठिनाइयों पर विजय की क्षमता को अपनी बेटियों की प्रगति के रूप में साकार होते देख चकित थीं। उनकी योजना कमाल कर रही थी। यह पहली बार था, जब ईशा और अहाना अपने नृत्य प्रशिक्षणों की प्रतीक्षा में आतुर दिख रही थीं।

ईशा की फुटबॉल के प्रति दीवानगी पहले की ही तरह बरकरार थी और अवसर पाते ही वह मैदान में खेलने के लिए भाग जाती थीं। हेमा को खेल—कूद कुछ खास पसंद नहीं थे और वह इन्हें नृत्य कला पर अतिक्रमण मानती थीं, पर वह अपनी बेटी के साथ किसी तरह के मन—मुटाव से भी बचना चाहती थीं। ईशा कहती हैं कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन उन्हें फुटबॉल या फिर कुछ और के बीच चयन करना पड़ेगा; पर उन्हें करना पड़ा। अपनी नौवीं कक्षा के अंतिम सत्र में थी, तभी उन्हें अंतर्विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने चंडीगढ़ जाने के लिए चुना गया; पर उनके पिता ने साफ मना कर दिया। धर्मेंद्र को कतई पसंद नहीं था कि उनकी बेटी हाफ पैंट पहनकर मैदान में गेंद के साथ खेलती नजर आएँ। अगर गुरिंदर चड्ढा की 'बेंड इट लाइक बेकहम' कुछ साल पहले प्रदर्शित होती तो हो सकता है, यह ईशा की नियति में कोई बदलाव ला पाती। पर उस समय तो उस परिवार में फुटबॉल खेलना निषिद्ध ही था। ईशा कहती हैं कि उन्होंने नृत्य को एक बदले के रूप में अपनाया। ''फुटबॉल ने मेरे जीवन में दर्द भरा सूनापन पैदा कर दिया था और मैं उसी की क्षतिपूर्ति का प्रयास कर रही थी।'' ईशा बताती हैं।

ओशो आश्रम में ईशा—अपनी प्रथम एकल परफॉर्मेंस देती हुई।

एक भरी दुपहरी ईशा अपने घर पर बैठी अपनी नानी के साथ टेलीविजन पर ओडिसी नृत्य का प्रदर्शन देख रही थीं और तभी उनके दिमाग में एक विचार आया। उन्होंने उसी क्षण यह तय कर लिया कि वह भरतनाट्यम की जगह ओडिसी नृत्य सीखेंगी। उन्होंने सर्वप्रथम अपनी नानी को यह बात बताई और फिर माँ को भी कहा। हेमा थोड़ी निराश तो हुईं, पर ईशा ने उन्हें समझाया कि वह नृत्य की वह विधा नहीं करना चाहती, जिसकी भंगिमाओं के साथ वह असहज हैं। ''भरतनाट्यम से मेरी एड़ियों में दर्द होने लगता था। इसकी तुलना में ओडिसी की मुद्राएँ कहीं अधिक लचीली हैं और इसकी भंगिमाएँ भी अधिक कठिन नहीं हैं।'' वह अपनी पसंद के लिए तर्क देते हुए कहती हैं। हेमा थोड़ी हिचकिचाहट के बाद अंत में मान गईं। जया चक्रवर्तीजी ने ही हेमा को समझाया कि बड़ी बात यह है कि ईशा शास्त्रीय नृत्य अपनाना चाह रही है। यह बात मायने नहीं रखती कि वह भरतनाट्यम करे या ओडिसी।

ईशा की पहली नृत्य प्रस्तुति मुंबई के इस्कॉन ऑडिटोरियम में गुरु रवींद्र अतिबुद्धि के वार्षिक उत्सव में थी। नृत्य संस्थान के आठ विभिन्न सत्रों से आठ विद्यार्थी 'दशावतार' का प्रदर्शन करने के लिए चुने गए थे। ईशा ने विष्णु की मुख्य भूमिका की थी। अगले ही दिन एक सांध्य समाचार—पत्र ने नृत्य करते हुए ईशा की तसवीर प्रकाशित की। इसी से प्रेरित हो नेहरू सेंटर की अध्यापक मंडली ने अपने वार्षिक रिमझिम कार्यक्रम के लिए ईशा के एकल प्रदर्शन के लिए हेमा से संपर्क किया। हेमा इस प्रस्ताव से बहुत खुश हुईं; पर वे यह भी जानती थीं कि ईशा अभी पूरी तरह से तैयार नहीं थी। पर अध्यापक मंडली अपनी बात पर कायम रही। हेमा भी यह अवसर खोना नहीं चाहती थीं। उन्होंने ईशा को गुरु अतिबुद्धि से इसकी संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने हेमा की जरूरत को भाँप लिया और ईशा को इस प्रस्तुति के लिए तैयार करने को एक चुनौती के रूप में लिया। दोनों गुरु—शिष्या ने इस तरह कठिन मेहनत की जैसे उनपर कोई उन्माद छा गया हो।

दो महीनों के भीतर ही वे कार्यक्रम के लिए पूरी तरह तैयार हो चुके थे। यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी। ईशा कार्यक्रम के दिन सुबह उठते समय होनेवाली या अपने पेट में उड़ रही तितलियों (जब वे वर्ली, मुंबई के नेहरू स्टेडियम जा रही थीं) को कभी नहीं भूल पाएँगी। ''मैं मम्मा का वह चेहरा कभी नहीं भूल सकती। घबराहट के मारे उनका बुरा हाल हुआ जा रहा था, पर वे किसी पर जाहिर करना नहीं चाहती थीं। वे मंच के किनारे खड़ी, परदे को कसकर पकड़े मेरी हर एक कदम—ताल पर नजर रखे हुए थीं।'' ईशा याद करती हैं।

इसके पीछे एक बड़ा कारण भी था। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर हेमा ने ईशा के अंतिम पूर्वाभ्यास (परिधानों सहित) के लिए निरीक्षण के लिए इस्कॉन ऑडिटोरियम आरक्षित किया था। वह यह सुनिश्चित करना चाहती थीं

कि ईशा मंच के केंद्र भाग की महत्ता को समझें। उसकी अवस्थिति को अच्छी तरह रेखांकित करने के लिए हेमा ने अंदरूनी और बाहरी भाग में वृत्ताकार घेरे भी बनवाए थे। ईशा उन सभी निर्देशों को ध्यानपूर्वक सीख और समझ रही थी; पर जब पूर्वाभ्यास का समय आया तो वह जड़वत् खड़ी रह गईं। अपनी माँ को बड़े से सभागार की पहली पंक्ति में बैठा देखकर ईशा उनकी निगाहों का सामना नहीं कर पा रही थीं। ''उसने कहा कि अगर मैं सभागार में उपस्थित रहूँगी तो वह प्रदर्शन नहीं कर पाएगी। यह एक बहुत अटपटी परिस्थिति थी; पर मैं उसके साथ बहस करके उसका तनाव और नहीं बढ़ाना चाहती थी। अत: मैं नेपथ्य में चली गई और हम उसकी नृत्य प्रस्तुति शुरू कर सके।''

उस दिन ईशा ने एक त्रुटिहीन प्रदर्शन किया। हेमा न सिर्फ ईशा की परिधि से बाहर रहीं, बल्कि मंच के पीछे भी वह इस प्रकार से खड़ी हुईं कि वह उनके साथ नेत्र संपर्क से दूर रहें। तब से लेकर आज तक इन माँ—पुत्री ने लंबा सफर तय कर लिया है।

तीन वर्षों बाद अहाना ने भी ठीक उसी स्थान और उसी अवसर से अपनी पहली एकल नृत्य प्रस्तुति की। हेमा इसे एक परंपरा के निर्वाह की तरह देखती हैं। अहाना बताती हैं कि वह नृत्य सीखना सिर्फ इसी कारण से चाहती थीं, क्योंकि वह अपनी माँ को देखना पसंद करती हैं। ''वह कितना गौरवमयी है। आप जब भी उन्हें देखें—चलते, खड़े होते या बैठते—आप तुरंत जान जाएँगे कि वे एक नर्तकी हैं। उनके कंधे हमेशा खड़े होते हैं, पेट अंदर धँसा हुआ और पैर सिमटे रहते हैं। मंच पर तो वह किसी हंस की तरह उड़ान भरती नजर आती हैं। ईशा और मैं उन्हें मुद्रा करते देखती हैं और उसकी नकल करना चाहती हैं; पर जाने क्यों, उसका वह प्रभाव नहीं पड़ता। आप उन्हें कोई भी भंगिमा करने को दो और वह उसे अच्छी तरह कर देंगी।''

जब दोनों बहनें हेमा के साथ अपना पहला कार्यक्रम करने की तैयारी कर रही थीं तो उनकी माँ ने उन्हें चेताया कि उनकी तुलना अपनी माँ से की जाएगी; पर इससे तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। अहाना कहती हैं, ''ईशा और मेरी तुलना माँ के साथ करना उचित नहीं है। हम उनके जैसी नहीं हो सकतीं। मैं उस तरह से प्रदर्शन नहीं कर सकती जैसा वे करती हैं। मुझे अपनी खुद की शैली विकसित करनी होगी; पर यह वह अभिशाप है, जो एक बड़ी हस्ती के बच्चों को सहन करना ही पड़ता है। हालाँकि हमारे साथ हमेशा मित्रों का एक समूह होता है, जो हर हाल में हमारे साथ बना रहता है; पर साथ ही एक और समूह होता है, जिनका हमारे साथ जुड़ने में सीधा स्वार्थ होता है। उनके इरादों को भाँपना हमेशा आसान नहीं होता। यह प्रक्रिया अकसर काफी लंबी और पेचीदा होती है; पर हमें चांस तो लेना ही पड़ता है।''

जब वे छोटी थीं तो हेमा के द्वारा मंच पर होनेवाले आध्यात्मिक अनुभव के वर्णनों को ठीक से समझ नहीं पाती थीं; पर आज वे ऐसा कर पाती हैं। ''जब भी मैं मंच पर प्रदर्शन के लिए प्रविष्ट होती हूँ तो मेरे अंदर कुछ मंथन—सा होता है।'' ईशा कहती हैं, ''जब मैं कार्यक्रम के आरंभ में भगवान् जगन्नाथ की प्रशंसा में मंगलाचरण प्रस्तुत करती हूँ और आरंभिक संगीत सुनती हूँ तो काफी भावुक हो जाती हूँ। कभी—कभी तो यह भावना इतनी बढ़ जाती है कि मैं रो पड़ती हूँ। अपने आप को सँभालने के लिए मुझे अत्यधिक प्रयास करने पड़ते हैं। मैंने मम्मा के साथ भी इस बारे में चर्चा की है और उनका कहना है कि समय के साथ मेरी ये चिंताएँ कम हो जाएँगी।'' ईशा कुछ सोचते हुए कहती हैं।

ईशा को अकसर इस बात का आश्चर्य होता है कि कैसे उनकी माँ ने अपनी भावनाओं के आगे हार माने बिना जीवन के इन अनगिनत चरणों को पार किया है। ''उनके पास न हमारी तरह आजादी थी और न ही इतने इष्ट मित्र। परिवार के अलावा शायद ही उनका कोई अन्य सामाजिक संपर्क था। मैं नहीं जानती, उन्होंने कैसे अपने आप को इतना सीमित रखा। बच्चों के रूप में हमने हमेशा उनकी रचनात्मकता का अतिक्रमण किया। मैंने उनके मंच पर प्रवेश करने के कुछ ही मिनटों पहले तक तुच्छ सी बातों, जैसे कि कंपास बॉक्स की माँग के लिए फोन करके परेशान किया है। अब मैं इन सबके लिए बहुत लज्जित अनुभव करती हूँ। आखिर हम इतने क्रूर कैसे हो सकते थे? यह अत्यंत आश्चर्य की बात है कि कैसे सिर्फ उनकी उपस्थिति ही हममें इतना विश्वास भर देती है। आज मैं जानती हूँ कि मम्मा हमें किसी भी समस्या से निकाल सकती हैं, बशर्ते हमने उनका विश्वास न तोड़ा हो। उन्हें सिर्फ मेरी आवाज सुनने की जरूरत होती है और वे जान जाती हैं कि मैं कैसा महसूस कर रही हूँ। नृत्य सीखने के और मंच पर खुद उपस्थित होने के बाद मैं उनकी और अधिक प्रशंसा करने लगी हूँ। वे मेरे लिए अत्यंत विशिष्ट हैं, न सिर्फ इस कारण कि वे मेरी माँ हैं बल्कि इसलिए कि वे मेरी गुरु भी हैं।'' वे जोर देकर कहती हैं।

ईशा अपने पिता के साथ अपने संबंधों को अधिक औपचारिक बताती हैं और साथ में यह भी कहती हैं कि वे

अपने पिता से हमेशा से डरती आई हैं। ''इतने वर्षों के बाद आज भी उनसे फोन पर बात करते समय मैं सावधान की मुद्रा में खड़ी रहती हूँ; पर इतने भय के बाद भी मैं कभी अपने पिता के प्यार से वंचित नहीं रही। जब भी हमें उनकी जरूरत होती, पापा हमेशा हमारे पास ही होते हैं। हो सकता है कि हम उन्हें बहुत कम देख पाते हों, पर वे हमेशा मौजूद रहते थे, चाहे वह मेरा या अहाना का जन्मदिन हो या हमें गरमी की छुट्टियों में शहर/देश से बाहर घूमने जाना हो।'' यह सब याद करते हुए पुरानी यादों का एक झोंका उनपर छा—सा जाता है। ईशा और अहाना के पास बचपन में पेरिस घूमने से संबंधित कुछ बड़ी मजेदार यादें हैं। एक बार जेनेवा एयरपोर्ट पर धर्मेंद्र, जिन्हें अकेले यात्रा करने की आदत नहीं है, एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक भागते फिर रहे थे, पर फिर भी निकास द्वार नहीं खोज पा रहे थे। ''एक तरफ पापा घबराए जा रहे थे और दूसरी तरफ हमारा हँसते—हँसते बुरा हाल था, क्योंकि हमने कभी किसी बड़े आदमी को इस तरह राह भूलते नहीं देखा था।'' ईशा चहकते हुए कहती हैं। उसी यात्रा का एक और मजेदार प्रकरण तब हुआ, जब उन्हें सुबह—सवेरे की एक ट्रेन से जेनेवा से ओस्लो जाना था। ''पापा ट्रेन छूट जाने के डर से इतना घबराए हुए थे कि इसी चिंता में उन्होंने हमें पहलेवाली ट्रेन में बिठा दिया। इसका पता हमें तब चला, जब हम नियत समय से काफी पहले अपने गंतव्य पर पहुँच गए। इसे याद करके हमें सालों बाद अब भी हँसी आती है।''

अहाना बताती हैं कि उनके पिता के साथ सबसे हास्यास्पद वाकया तब का है, जब वे लंदन के हैरोड्स में खरीदारी करते समय अपने परिवार से बिछड़ गई थीं। पता नहीं कैसे, हम मम्मा से अलग हो गए और पापा उन्हें खोज नहीं पाए। मुझे पता नहीं कि कैसे हम उस मॉल के 'लॉस्ट एंड फाउंड सेंटर' पर पहुँचे और उन्होंने लाउडस्पीकर पर मेरे नाम की घोषणा की। मम्मा मुझे खोजते हुए आईं, पर उन्होंने कभी अपने सपनों में भी नहीं सोचा होगा कि उन्हें वहाँ मेरे हाथ पकड़े और मेरी ही तरह भयभीत पापा भी खड़े मिलेंगे।''

धर्मेंद्र की तेज आवाज ईशा के कानों में गूँजती है, 'फिल्में तुम्हारे लिए नहीं है ईशा।'

दोनों यह मानती हैं कि वे कभी अपने पापा की शूटिंग के सेट पर उनके साथ नहीं गईं और मम्मा के साथ जाना ज्यादा रोमांचक होता था। हालाँकि मम्मा सेट पर बहुत अनुशासित होती थीं, फिर भी वे किसी—न—किसी तरह उनसे अपनी बात मनवा ही लेती थीं। यह बताते हुए दोनों की आँखों में शरारत उभर आती है।

ईशा कहती हैं कि उनका प्राकृतिक आत्मविश्वास उनके स्कूल जमनाबाई नारसी की देन है। वह कहती हैं कि उनके निर्माण के वर्षों में उनके ऊपर पड़नेवाला शक्तिशाली प्रभाव उनके स्कूल का था। ''यह स्कूल आपको जीवन में काफी आगे जाने के लिए तैयार करता है। आप भीड़ में से भी जमनाबाई के छात्र को पहचान सकते हैं। मेरी जानकारी में यह एकमात्र संस्थान है, जो अपने छात्रों के बीच भेदभाव नहीं करता।'' दुर्भाग्यवश, जब उसने

विले पार्ले के मीठीबाई कॉलेज में दाखिला लिया तो वहाँ यह माहौल नहीं था। ''उन्होंने मुझे कभी भूलने ही नहीं दिया कि मैं धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की बेटी हूँ। कॉलेज के प्रवेश द्वार से अंदर होते ही मुझे अपने हर तरफ 'ईशा देओल' की फुसफुसाहट ही सुनाई देती थी। यह अत्यंत कष्टकर था। मैं कॉलेज जाने से घृणा करती थी और किसी तरह एक बुरा दु:ख भरा साल बिताने के बाद मैंने कॉलेज से नाम कटवाकर एक स्वतंत्र छात्रा के रूप में परीक्षा देना ही उचित समझा। इससे मुझे यह अनुभव हुआ कि जब तक आप अपने किए से खुश न हो, आप संपन्न नहीं हो सकते।''

उन्होंने दूसरे साल में कॉलेज छोड़ा था और तभी से फिल्म निर्माता फिल्मों के प्रस्तावों के साथ उन्हें लुभाने की कोशिश में लग गए। काफी लंबे समय तक हेमा ने उन्हें इन प्रस्तावों के बारे में कुछ नहीं बताया। फिर एक दिन, थोड़े से शरमीले अंदाज में, उन्होंने ईशा से पूछा कि क्या वह फिल्मों में काम करने को इच्छुक है? बिना एक पल की हिचकिचाहट के ईशा ने तेजी से सहमति से सिर हिलाया। वह हमेशा एक अभिनेत्री बनना चाहती थीं, पर अपने पापा के डर से अपनी इच्छा व्यक्त नहीं कर पा रही थीं। धर्मेंद्र को समझाना आसान नहीं था, पर अहाना और हेमा के सम्मिलित प्रयासों के बाद धर्मेंद्र ने ढेर सारी पूर्व शर्तों के साथ ईशा को फिल्मों में काम करने की अनुमति दे ही दी। वह उसके अति आधुनिक भूमिकाओं में काम करने और असुरक्षित स्थानों पर शूटिंग करने को लेकर खास तौर पर चिंतित थे। उन्होंने ईशा को नकारात्मक प्रचार से दूर रहने की चेतावनी दी और अपने आपको अपनी माँ की तरह ही गरिमा के साथ पेश करने की सलाह दी।

ईशा ने अठारह वर्ष की उम्र में बोनी कपूर द्वारा निर्मित और विनय शुक्ला द्वारा निर्देशित फिल्म 'कोई मेरे दिल से पूछे' और इसके बाद 'न तुम जानो न हम' के साथ अपना फिल्मी कॅरियर शुरू किया। आनेवाले वर्षों में उन्होंने 'क्या दिल ने कहा', 'चुरा लिया है तुमने', 'एल.ओ.सी. कारगिल', 'युवा', 'धूम', 'काल' और बहुत सारी अन्य फिल्मों में भी काम किया। ईशा अपने फिल्मी कॅरियर में कितनी भी व्यस्त क्यों न रहें, अपनी माँ की तरह वे भी नृत्य के प्रति समर्पित रहती हैं। ''मम्मा मेरी प्रेरणा थीं और मैं अपने कॅरियर को उन्हीं के अनुरूप ढालना चाहती हूँ।'' ईशा बताती हैं कि जब वे छोटी थीं तो मम्मा की हलकी—फुलकी फिल्में जैसे कि 'सीता और गीता' ही देखा करती थीं। पर एक अभिनेत्री बनने के बाद मैंने उनकी और फिल्मों, जैसे कि 'खुशबू' भी देखी और एक अभिनेत्री के तौर पर उनके बड़े दायरे को देखकर चकित रह गई। वह एक राजकुमारी की भूमिका में भी उतनी ही विश्वसनीय लगती थीं, जितनी कि एक भिक्षुणी के। वह मोटरसाइकिल भी चलाती थीं और दुखियारी महिला की भूमिका भी अच्छी तरह कर लेती थीं। उनमें अपने सभी कलाकारों—चाहे वे देव आनंद हों, राजेश खन्ना या फिर अमिताभ बच्चन—के साथ सुसंगत दिखने का दुर्लभ गुण मौजूद था। हालाँकि उनके सर्वश्रेष्ठ साथी कलाकार तो हमेशा से पापा (धर्मेंद्र) ही थे। इन दोनों की जोड़ी एकदम जादुई दिखती है।'' ईशा कहती हैं।

परंपरा : एक पीढ़ी से दूसरी को ज्ञान का तोहफा।

ईशा मानती हैं कि उनकी माँ ही उनका आदर्श हैं। एक तरफ ईशा मुख्य धारा की फिल्मों में 'ग्लैमर गर्ल' की भूमिकाएँ करती हैं, वहीं दूसरी तरफ शास्त्रीय नृत्य के प्रति उनका समर्पण भी अहम है। वास्तव में हेमा, ईशा और अहाना की तिकड़ी ने देश—विदेश में परंपरागत नृत्य नाटिका के अनगिनत कार्यक्रम किए हैं। उन्होंने बैंकॉक, दुबई, हांगकांग और अमेरिका में भी कार्यक्रम किए हैं। फिर भी, नाट्य विहार कला केंद्र के कैलेंडर में कुछ विशेष दिन उनके खास कार्यक्रमों के लिए सुरक्षित रहते हैं, जैसे कि जन्माष्टमी वाला दिन इस्कॉन के लिए। इस कार्यक्रम में अपनी बेटियों के साथ काम करने का सपना भी हेमा ने पूरा कर लिया, जब 'यशोदा—कृष्ण' की एक प्रस्तुति में ईशा कृष्ण बनीं, अहाना बलराम की भूमिका में थीं और हेमा उन दोनों की माँ (यशोदा) बनी थीं। एक और तारीख 25 जून, 'जया स्मृति'—जया चक्रवर्तीजी को उनकी पुण्यतिथि पर दी जानेवाली श्रद्धांजलि—के लिए आरक्षित है। यह एक विशिष्ट कार्यक्रम है युवा प्रतिभाओं में शास्त्रीय नृत्य को प्रचारित करने के लिए।

बाहर के प्रायोजकों के साथ कोई भी समारोह तय करने से पहले हेमा यह जरूर तय कर लेती हैं कि उनकी दी गई तारीखें ईशा और अहाना के कार्यक्रम के अनुकूल हों उसके बाद वे पूर्वाभ्यासों की कठोर समयतालिका नियत करती हैं। शुरू—शुरू में वे सप्ताह में तीन बार अभ्यास करना शुरू करती हैं। बाद में जब अंतिम तारीख निकट आने लगती है तो हेमा बेहतर प्राप्त करने के लिए अभ्यासों की अवधि बढ़ा देती हैं। जब कार्यक्रम में सिर्फ एक सप्ताह शेष रह जाता है तो गुरुजी प्रतिदिन दो बार घर आने लगते हैं। सुबह का अभ्यास अकसर सूर्योदय के साथ ही शुरू होता है और इतनी सुबह उठना दोनों लड़कियों के लिए कठिन होता है। पर हेमा उन्हें उठा ही देती हैं। शाम के समय हेमा पुराने नृत्यों की रिकॉर्डिंग देखने पर जोर देती हैं, ताकि पुरानी गलतियों से बचा जा सके। ''यह थोड़ा असहज तो होता है, पर हमें उनकी आज्ञा का पालन करना ही पड़ता है।'' ईशा मुसकराते हुए कहती हैं।

कार्यक्रमवाले दिन वे हमेशा घर पर ही मेकअप करना पसंद करती हैं। उन तीनों को तैयार होने में लगभग ढाई घंटे लग जाते हैं। वे एक ही कार में गप्प करती हैं और संगीत सुनते हुए यात्रा करती हैं। हेमा अपनी बेटियों से यह पूछना कभी नहीं भूलतीं कि क्या उन्हें अपनी मुद्राएँ याद हैं? कभी—कभी वे उन्हें समझाने के लिए त्वरित गति से हस्त मुद्राओं की पुन: प्रस्तुति भी कर देती हैं। वे हमेशा कार में सुनने के लिए नृत्य प्रस्तुतियों की ऑडियो सी.डी. भी ले जाती हैं; पर अगर बेटियों का मन नहीं होता तो वे अपनी आज्ञा उनपर थोपती नहीं हैं। सभागार में भी वे एक ही कमरे में साथ रहती हैं। बगल का एक कमरा सामान और वस्त्र बदलने के लिए आरक्षित रहता है। ग्लूकोज के पैकेटों से भरा हुआ बर्फ का एक डिब्बा इस कमरे के लिए आवश्यक सामग्री होता है। वे सुनिश्चित करती हैं कि वे सभी खूब सारा इलेक्ट्रॉल पिएँ। हेमा नृत्य से पहले भारी खाना पसंद नहीं करतीं और यही उन्होंने अपनी बेटियों

को भी सिखाया है; पर अगर उन्हें कोई हलकी चीज, जैसे कि पिज्जा, खानी हो तो वे मान जाती हैं।
''एक बार जब हम मंच पर आ जाती हैं तो वे हमसे एक पेशेवर की तरह व्यवहार करती हैं।'' अहाना कहती हैं, ''वह हमारे बीच के स्थान का अतिक्रमण नहीं करतीं। अगर मैं अपने पैर अलग तरीके से रख रही होती हूँ या कोई सुर भूल जाती हूँ या फिर कोई और गलती होती है, तब भी वे अपने चेहरे पर इसका भाव प्रकट नहीं होने देतीं। वे मध्यांतर के दौरान भी इस बारे में कोई चर्चा नहीं करती हैं। जब हम कार से घर वापस लौट रहे होते हैं, तब वे जरूर हमारी जम के खिंचाई करती हैं। बहुत कम ही मैं उन्हें कोई कदम गलत रखते पकड़ पाती हूँ; पर मैं उनकी तरह उदार नहीं हो पाती हूँ। मैं वहीं मंच पर यह जाहिर कर देती हूँ कि मैंने उनकी गलती पकड़ ली है। उन्होंने मुझे सिखाया है कि जब भी मुझे घबराहट हो तो मुझे भगवान् का ध्यान करना चाहिए और वह अवश्य हमें शक्ति प्रदान करेंगे। वे कहती हैं कि यह आवश्यक नहीं कि दर्शकों के साथ नेत्र संपर्क हमेशा बना रहे। अगर मैं अपने हाथों को देखते हुए भी अपने पाँव सही तरह से संचालित करूँ तो यह बहुत गरिमामय लगता है। उनका सुनहरा सिद्धांत यह कहता है कि अगर मैं नृत्य का आनंद ले पा रही हूँ तो मुझे नृत्य अवश्य करना चाहिए। मैं बस, इसी सलाह का पालन करती हूँ।'' अहाना स्वीकार करती हैं।

जब कार्यक्रम खत्म होता है तो लड़कियाँ घर वापस जाने के लिए बेकरार रहती हैं। वे सज्जा गृह जाने के दौरान ही अपने गहने उतारने लगती हैं और अपनी पोशाकों को रूम में फेंक झट से कार में बैठ जाती हैं। हेमा को मंच पर थोड़ा अधिक समय लगता है, क्योंकि उन्हें धन्यवाद ज्ञापन जैसी औपचारिकताएँ करनी होती हैं। अत: वे दूसरी कार में उनके पीछे घर आती हैं। ''जब तक वे घर वापस आती हैं, काफी देर हो चुकी होती है। पर वे हमारे कमरों में आना नहीं भूलतीं और हमेशा यह ध्यान रखती हैं कि हमने सोने से पहले अपनी विटामिन की गोलियाँ ली या नहीं।'' अहाना बताती हैं।

हाल ही में इन तीनों ने एक साथ दुबई में एक कार्यक्रम किया था। एक दिन अवकाश के समय वे तीनों खरीदारी करने के लिए गईं और अलग—अलग डिपार्टमेंटल स्टोर में घूमते रहे। यह पुराने दिनों से एकदम अलग था, जब हेमा, अहाना और ईशा एक साथ एक ही मॉल में जाती थीं और हेमा उन सबके लिए खरीदारी करती थीं। ''उन दिनों मैं और अहाना हमेशा माँ की बगल में बैठने के लिए लड़ती रहती थीं और इसका हल यही होता कि वे बीच में बैठतीं और हम दोनों उनकी अगल—बगल। उन दिनों हम अपनी उड़ानों में भी इसी तरह बैठकर यात्रा करती थीं।'' ईशा मुसकराते हुए कहती हैं। ''पर आज जब हम एक साथ यात्रा करती हैं तो मम्मा एक कोने में सोती रहती हैं, जबकि मैं और ईशा आपस में ढेर सारी बातें करती रहती हैं।'' इस बार अहाना एक प्यारी सी हँसी के साथ कहती हैं।

❑

11

कमिंग फुल सर्किल

'मेरे अनुभव ने मुझे एक कलाकार और अच्छे व्यक्ति के रूप में विकसित करने में मदद की है।' 'बागबान' के एक दृश्य में हेमा और अमिताभ बच्चन।

फेम एडलैब्स थिएटर, मुंबई का बाहरी गलियारा भीड़ से खचाखच भरा हुआ है। 'मैं ऐसा ही हूँ' फिल्म के प्रथम प्रदर्शन (प्रीमियर) में सितारों का मेला लगा हुआ है। उत्साहित भीड़ अपने—अपने चहेते सितारों के आगमन की प्रतीक्षा कर रही है। जैसे ही दिलकश लग रहीं हेमा मालिनी और ईशा देओल को लेकर एक नीली मर्सिडीज कार दाखिल होती है और दोनों माँ—बेटी कार से उतरती हैं, चारों तरफ भगदड़—सी मच जाती है। अंगरक्षक दोनों सम्मोहक महिलाओं की तरफ दौड़ पड़ते हैं और दोनों तरफ से उनकी रक्षा करते हुए सुरक्षित क्षेत्र में ले जाते हैं। पर लोगों का पागलपन कम नहीं होता है। कैमरों की लाइट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया उनके पीछे लगा ही रहता है।

इस सारे कोलाहल से दूर सभागार के भीतर हेमा इतने सालों के दौरान अपनी फिल्मों के पहले प्रदर्शन को याद करती हैं। वे तो अपने लंबे फिल्मी कॅरियर के दौरान होनेवाले सिल्वर और गोल्डन जुबली समारोहों की संख्या भी भूल चुकी हैं। ऐसे अवसरों पर उनकी माँ हमेशा हेमा के साथ होती थीं। वर्षों तक इतने बड़े अवसरों पर हेमा द्वारा पहनी जानेवाली साड़ी भी उनकी माँ ही तय करती थीं। ''उन दिनों सितारे उत्सवों और पार्टियों में अपने निजी कपड़े ही पहनकर जाते थे। आज के समय में यह चलन बदल गया है और लोगों के मन—मिजाज भी। मेरे समय में तो बिना किसी को साथ लिये बाहर जाने का सोच भी नहीं सकते थे। आज ईशा हर जगह अपने मित्रों के साथ ही जाती है। अगर मैं उसके साथ जाती भी हूँ तो वह भी इसलिए कि मैं उसके करियर के खास पलों का हिस्सा बनना चाहती हूँ।'' हेमा समझाती हैं।

वे कहती हैं कि जहाँ आधुनिक तकनीक ने सभी माध्यमों में नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, वहीं उन्होंने जीवन के सादगी भरे आनंद के पल भी छीन लिये हैं। ''मेरे बचपन के दिनों में तो मेरे फिल्म जगत् में आने से पहले ए.सी. या फ्रिज से मेरा कोई साबका भी नहीं पड़ा था। उन दिनों हमारे पूरे परिवार के लिए विलासिता का एकमात्र साधन एक बड़ा सा रेडियो था, जो हमारे पूरे परिवार के ध्यान का केंद्रबिंदु था। फिर भी, हमारे जीवन में

कोई अभाव नहीं था।'' वे सोचते हुए कहती हैं।

हेमा का यह भी मानना है कि उनकी पीढ़ी के पास एक अतिरिक्त लाभ था, जो आज की पीढ़ी को प्राप्य नहीं है। उदाहरणवश, वे अपनी सफलता का बड़ा श्रेय अपने परिवार द्वारा प्रदान की गई सहायता प्रणाली को देती हैं। ''मैं अपने पंख फैला सकी और अपने आप को संपूर्ण रूप से अपने कॅरियर के प्रति समर्पित कर सकी, क्योंकि मुझे स्टारडम के साथ पैदा होनेवाले दैनिक तनावों को नहीं झेलना पड़ा। मेरा अपने निर्माताओं के साथ तारीखों से लेकर कोई झगड़ा नहीं हुआ और न ही भुगतान राशि को लेकर कोई झंझट पैदा हुआ; क्योंकि मेरी सफलता के अनुपात में ही मेरी फीस स्वत: बढ़ती गई। इसी तरह मुझे अपने स्टाफ के साथ भी किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि अगर उन्हें कुछ भी चाहिए होता था तो वे सीधे अम्मा या आंटी को कह सकते थे। मेरे परिवार ने वह सबकुछ किया, जो मेरी शूटिंग और नृत्य प्रस्तुतियों के दौरान मेरी सहजता को बढ़ाने के लिए वे कर सकते थे।'' वे इसे आज खुले दिल से स्वीकार करती हैं।

कैमरे की तेज रोशनी और मंच पर बिताए गए अपने लंबे व संतोषप्रद वर्षों के कारण ही हेमा आज नृत्य कार्यक्रमों के माध्यम से अपने रचनात्मक कॅरियर को परिभाषित करने में सफल हो पाई हैं। ''मुझे इस सारी प्रक्रिया में बहुत आनंद आता है—पूर्वाभ्यास, परिधानों का परीक्षण, कार्यक्रम के शुरू होने से पहले आशंका के कारण होनेवाला बेचैनी जैसा एहसास, प्रशंसा प्राप्त करने पर मिलनेवाला उल्लास, हर बार नए दर्शकों के सामने प्रदर्शन करने की चिंता, अपनी बेटियों के साथ मंच साझा करने का आनंद, उनकी सराहना पर होनेवाला गर्व और उनकी गलतियों पर उभरनेवाला आक्रोश।

''वर्षों पहले जब मैं एक व्यस्त स्टार थी और मेरे पास नृत्य के अभ्यास के लिए बहुत कम समय होता था तो मेरी माँ जहाँ भी मैं शूटिंग करती थी, चाहे वह मद्रास हो या मनाली, मेरे नृत्य शिक्षक को मेरे साथ भेज देती थीं। वे यह सुनिश्चित करते थे कि शूटिंग खत्म होने के बाद मैं अपने अभ्यासों को पूरा करूँ। मैं ईशा के साथ यह नहीं कर सकती और वह इसे पसंद भी नहीं करेगी। यही हमारी पीढ़ियों के बीच का अंतर है। हमें समर्पण करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है और उन्हें मोल—तोल करने के लिए पाला—पोसा गया है। अभिभावक के रूप में हम एक सीमा के बाद हस्तक्षेप नहीं कर सकते। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मेरी दोनों बेटियों की नृत्य में रुचि है। कार्यक्रम के दिन ईशा चाहे जहाँ भी हो, उसे यह पता होता है कि समय पर उसे वापस घर पहुँच जाना है। अहाना के साथ कोई कार्यक्रम तय करना आसान है, क्योंकि वह एक ही जगह पर स्थिर है और इसी कारण वह नृत्य के लिए अधिक समय और एकाग्रता प्रदान करने में सक्षम है।''

हेमा कहती हैं कि उनकी बेटियाँ 'रामायण' में छोटे राक्षसों के अपने प्रदर्शन से लेकर अब तक एक काफी लंबा सफर तय कर चुकी हैं। ''वे आत्मविश्वास और आत्म—संतुलन के मामले में काफी प्रगति कर चुकी हैं। अहाना वर्तमान में नाट्यविहार कला केंद्र की नई नृत्य नाटिका 'यशोदा—कृष्ण' में कृष्ण की भूमिका कर रही है और उसके अंदर होनेवाले प्रत्यावर्तन आश्चर्यजनक हैं। मुझे उसे पूर्वाभ्यास और परिधान परीक्षण के बारे में याद दिलाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। वह अत्यंत ध्यान—केंद्रित है। ईशा के साथ भी यही बात है, चाहे वह 'धूम' में भड़कदार गाने कर रही हो या मंच पर मंगलाचरण नृत्य कर रही हो। हाल ही में हमने तिरुपति मंदिर में उगाडी (तेलुगु नववर्ष) समारोह में प्रदर्शन किया था। यह हमारा किसी पूजास्थल पर प्रदर्शन करने का पहला अनुभव था और इसका वर्णन शब्दों से परे है। मैं इस अनुभव से इस कदर अभिभूत हूँ कि मैं भगवान् बालाजी की प्रभुता के ऊपर एक नृत्य नाटिका तैयार करने की सोच रही हूँ। एक माँ के रूप में मेरे लिए अपनी बेटियों को फलते—फूलते और जिम्मेदार बनते देखना बहुत ही आनंद की बात है। यह अत्यंत रोचक है कि कैसे जीवन ने एक चक्र

पूरा कर दिया है। जब मैं छोटी थी तो मेरी माँ मेरी देखभाल करती थीं। बाद में हमारे रिश्ते में हमारी भूमिकाएँ उलटी हो गईं। अब मेरी माँ को मेरे द्वारा देखभाल की आवश्यकता थी, ठीक वैसे ही जैसा अपनी बेटियों के साथ रहने पर मैं चाहती हूँ।'' वे सोचकर टिप्पणी करती हैं।

अपने इतिहास में झाँकते हुए हेमा अपनी माँ की अपने परिवार को मिट्टी से जोड़े रखने की योग्यता की सराहना करती हैं, अन्यथा जितनी कम उम्र में उन्हें एक बड़ी हस्तीवाला स्थान मिल गया था, लोगों की चापलूसी उनके सिर चढ़ सकती थी। हेमा स्वयं एक माँ होने के अनुभव की भी कद्र करती हैं। ''अम्मा ने बिना मेरे आत्मविश्वास को हानि पहुँचाए प्रशंसा और आलोचना के बीच संतुलन स्थापित कर लिया था। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि मैं अपने बच्चों के पालन—पोषण में उनकी बराबरी कर पाई हूँ। हालाँकि मैंने पूरे दिल से यह प्रयास किया है, पर पुरानी पीढ़ी के पास एक अलग ही जादू था। उन्हें शिक्षा के पर्याप्त अवसर नहीं मिले थे, पर फिर भी उन्होंने हमसे कहीं बढ़कर उपलब्धियाँ हासिल कीं।

''यह अत्यंत दु:खद है कि मेरी माँ के जैसी गतिमान महिला को मीडिया बार—बार 'हेमा मालिनी की माँ' कहकर संबोधित करता था। यह एक व्यक्ति के लिए बहुत शर्मनाक और ओछेपन की बात थी। हमें किसी का परिचय देने के लिए रिश्तों को बीच में घसीटने की क्या जरूरत है? यह सिर्फ भारत में ही होता है, वह भी खासकर फिल्मी दुनिया के लोगों के साथ या फिर यह भी हो सकता है कि यह एक स्वाभाविक सिलसिला हो और मुझे इसे बिना शिकवा—शिकायत के स्वीकार करना सीखना चाहिए। जब मैं छोटी बच्ची थी तो मुझे 'जया चक्रवर्ती की बेटी' कहा जाता था और हो सकता है कि एक समय ऐसा आए, जब लोग मुझे 'ईशा/अहाना देओल की माँ' कहकर बुलाएँ। मुझे लगता है, यह तथाकथित मिडिल जेनरेशन सिंड्रोम है।

''यह सुनने में अविश्वसनीय लगता है, पर मैं तेरह वर्ष की उम्र तक अपनी माँ के ही कमरे में सोती थी। पर जब मेरी बेटियाँ अस्पताल से घर आईं तो उनके लिए विशेष कमरे बनवाए गए। स्कूल में मैं परिवार के बाहर के किसी व्यक्ति से बात नहीं करती थी, पर ईशा और अहाना को किसी का डर नहीं है। जब मैंने फिल्मों में काम करना शुरू किया तो यह झिझक मेरी राह में बाधा बन गई। मैं किसी अज्ञात व्यक्ति के सामने बैठकर कहानी सुनने में अटपटा अनुभव करती थी। लेखक मुझसे भागीदारी की आशा करते थे; पर मैं उन्हें कोई भी प्रतिक्रिया देने को तैयार नहीं थी। सेट पर भी जब निर्देशक मुझे कोई दृश्य समझाते तो मैं माँग करती कि मेरी माँ मेरे साथ बैठें। फिल्मी पत्रिकाएँ मुझे कभी अकेला न छोड़ने के लिए मेरे परिवार का मजाक उड़ाती थीं; पर सच्चाई यह थी कि मैं अपने पैरों पर खड़ी होने से डरती थी, गलतियाँ करने से डरती थी। बहुत बाद में मैंने जाना कि गलतियाँ सभी से होती हैं।'' वह स्पष्टता से स्वीकार करती हैं।

आज एक सांसद के रूप में हेमा अकसर राजधानी दिल्ली की यात्रा करती हैं और अपने आप को उस छोटी बच्ची के रूप में खोजती हैं, जिसे वह अपने पुराने निवास—स्थान की परिचित—सी गलियों में छोड़ आई थीं। अब पाँच दशक से अधिक का समय हो चुका है, पर हेमा आज भी उस छोटी बच्ची के रूप में होनेवाले विस्मय और अकेलेपन को याद कर सकती हैं। ''मैं कितनी संकुचित—सी थी—हमेशा एक बच्चे की कल्पना की दुनिया में रहनेवाली। हमारे घर में अम्मा द्वारा बनाई गई एक खूबसूरत पेंटिंग थी। उसमें भगवान् श्रीकृष्ण एक बालक के रूप में वृंदावन में खेल रहे थे। वह तसवीर अभी भी हमारे चेन्नई स्थित आवास में है। किन्हीं आश्चर्यजनक कारणों से जब भी मैं यह पेंटिंग देखती हूँ, मुझे बहुत सांत्वना मिलती है। जब मैं सशंकित या भयभीत होती हूँ तो मैं अपने आप की वृंदावन में कृष्ण की सखा के रूप में कल्पना करती हूँ। यह एक बहुत व्याकुलता का दौर था। इसका कोई कारण नहीं था, पर मैं चिंतित अनुभव करती थी। समय के साथ वे सारे भय समाप्त हो चुके हैं। अब मैं कहीं

अधिक आश्वस्त हूँ तो उस छोटी बच्ची का हाथ पकड़ना चाहती हूँ और उसकी रक्षा करना चाहती हूँ। मैं उससे कहना चाहती हूँ, ''डरो मत, तुम्हें यह सब इसलिए सहना पड़ा, क्योंकि तुम्हारे भीतर से मुझे उभरना था।''

''परदे पर निभाए गए अपने विभिन्न चरित्रों के माध्यम से मैंने बहुत सारी जिंदगियाँ जी हैं। मैंने एक राजकुमारी का राजमुकुट धारण किया है तो एक पॉकेटमार के बेलौस अंदाज को भी जाना है। मैं दूर—दराज के गाँव में बनी कच्ची मिट्टी की झोंपड़ी में भी रही हूँ और मैंने अपने लहराते घाघरों के साथ शहजादी के राजमहलों की भी सैर की है। सिर्फ एक कलाकार के पास ही इतने विविध प्रकार के अनुभवों का विशेषाधिकार होता है। इसके अतिरिक्त, मैंने अपनी नृत्य नाटिकाओं के द्वारा कई अन्य उत्कृष्ट चरित्रों को भी जिया है। मैंने राणा के महलों में कैद और कृष्ण की लालसा में तड़पती मीरा के एकाकीपन को भी अनुभव किया है। मैंने अग्नि—परीक्षा से गुजरती सीता के त्याग का अनुभव किया है। 'रामायण' के अनगिनत कार्यक्रम करने के बाद ऐसा लगता है कि मैं राम और सीता के बीच के प्रेम की साक्षी हूँ। यह सुनने में बेतुका लग सकता है। जब मैं मंच पर सीता की भूमिका निभा रही होती हूँ, मैं राम द्वारा अपनी प्रिया से कहे जा सकनेवाले शब्दों की प्रतिध्वनि सुन सकती हूँ।

''हाल ही में जब मैं यू.एस.ए. के एक महीने के दौरे से 'द्रौपदी' नृत्य नाटिका के कई कार्यक्रम करके लौटी तो रहस्यमय ढंग से बीमार हो गई। चिकित्सक भी मेरे रोग का निदान नहीं कर पाए; पर मुझे अपने पेट में हर समय एक खालीपन अनुभव होता था। काफी बाद में मैं यह जान पाई कि मेरी अस्वस्थता द्रौपदी की व्यथा की खुमारी का परिणाम थी। दस विभिन्न शहरों में दस कार्यक्रमों के दौरान प्रदर्शन करना उसकी पीड़ा और विश्वासघात को फिर से जीने जैसा था। मंच पर चीर—हरण किए जाने के नाटकीय प्रदर्शन से गुजरना ही एक व्याकुलता भरा अनुभव था। मैं नहीं जान सकती कि द्रौपदी ने अपने वास्तविक जीवन में क्या कुछ सहा होगा।''

हेमा का मानना है कि एक कलाकार के जीवन में उत्प्रेरण की कोई कमी नहीं होती; पर इससे होनेवाले उल्लास के साथ एक प्रकार का दंड भी जुड़ा होता है। यह उत्तेजना अपने साथ अनगिनत और अनदेखे तनाव लेकर आती है और कोई भी इस बवंडर से निकलने में आपकी सहायता नहीं कर सकता। फिर भी, यह मोह वहन करने लायक होता है। अवसर आपके द्वार पर एक ही बार दस्तक देता है और आपका सौभाग्य उस अवसर को पहचानने में है।

हमें एक ही जीवन मिला है और पूरे करने को कितने सपने हैं। आज हेमा मालिनी इस बात से खुश हैं कि उन्होंने अपने सामने आई हर चुनौती का सामना किया—चाहे वह महिला पत्रिकाओं 'न्यू वुमैन', 'मेरी सहेली' का संपादन हो या एन.एफ.डी.सी. की अध्यक्षता। कहा जाता है कि परंपरागत और गैर—परंपरागत दोनों तरह के बाजारों में भारतीय सिनेमा के निर्यात की पहल उन्हीं की अध्यक्षता के दौरान हुई थी। ''जब भी मैं विभिन्न अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में भाग लेकर लौटती थी तो मेरे पास विश्व सिनेमा जगत् में भारत की दृश्यता को बेहतर बनाने के लिए ढेरों आकर्षक सुझाव होते थे।'' एन.एफ.डी.सी. के स्रोत उन्हें संस्थान की पटकथा लेखन कमेटी में महत्त्वपूर्ण सुधार और निर्माणों के बजट में वृद्धि का श्रेय देते हैं।

हेमा ने वर्ष 1999 के आम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार और अपने साथी कलाकार विनोद खन्ना के लिए पहली बार चुनाव प्रचार का कार्य किया। यह उनकी लंबी राजनीतिक यात्रा की शुरुआत थी और अपने प्रिय सितारे को देखने के लिए हर जगह भारी भीड़ उमड़ पड़ती थी। उस समय तक हेमा के मन में राजनीति में भाग लेने की कोई गंभीर महत्त्वाकांक्षा नहीं पनपी थी, पर विनोद खन्ना के प्रचार में मिली अपार सफलता के बाद भाजपा ने उन्हें अन्य राज्यों में भी चुनाव प्रचार करने के लिए संपर्क किया। हेमा ने दूर—दराज के गाँवों तक प्रचार कार्य किया और हर जगह उल्लासपूर्ण प्रतिक्रिया मिली। अपने को मिल रहे अपार समर्थन से हेमा खुद भी चकित थीं। ''एक कलाकार के जीवन में ऐसा भी एक दौर आता है, जब वह स्वयं अपनी लोकप्रियता को लेकर विश्वस्त नहीं होता; पर दर्शकगण उसमें विश्वास की पुनर्स्थापना करते हैं और उस सितारे को अपने करिश्मे से पुन: परिचित कराते हैं। मेरी फिल्मों को थिएटरों में प्रदर्शित हुए एक अरसा बीत गया था। मैं स्वयं भी एक तरह के शांत अस्तित्व के प्रति अभ्यस्त हो गई थी; पर इस वातावरण में मैंने अपने लिए नई आवाज और नया मंच पाया। जब जनता मेरे लिए शोर मचाती थी तो मैं स्वयं को अति उत्साहित अनुभव करती थी।'' वे कहती हैं।

हेमा कहती हैं कि उन्होंने भाजपा को अपना समर्थन इसलिए दिया, क्योंकि वह इसकी विचारधारा में विश्वास करती हैं। पार्टी को उनसे काफी आशाएँ थीं और यह उनका हर संभव सम्मान भी करती है। उन्हें राज्यसभा का सदस्य बनाए जाने की सूचना तब मिली, जब वे 'राधा—कृष्ण' नृत्य नाटिका के मंचन के लिए अमेरिका जा रही थीं। ''मेरे नाम पर विचार किए जाने की सुगबुगाहट तो काफी पहले से थी, पर इसकी पुष्टि तब हुई, जब मैं उड़ान भरने ही वाली थी। जब मैं रास्ते में पड़नेवाले पेरिस पहुँची तो मेरे सेलफोन पर बधाई संदेशों की बाढ़—सी आ गई।''

राजनीति अपने आप में एक अलग दुनिया है। हेमा वर्ष 2000 में भापजा से जुड़ीं।

यहाँ भाजपा की प्रसिद्‌ध नेता सुषमा स्वराज के साथ देखी जा सकती हैं।

हेमा को वर्ष 2003 के शीत सत्र के दौरान राज्यसभा की सदस्यता हेतु शपथ दिलाई गई। उनहें शपथ समारोह के लिए दो दिन आरक्षित करने को कहा गया था। इनमें से एक तिथि 16 अक्तूबर थी। जब हेमा ने अपने कार्यक्रम के बारे में अपनी माँ से चर्चा की तो उन्होंने झट से कहा कि यह तिथि 16 अक्तूबर ही होनी चाहिए। इस तिथि को हर वर्ष हेमा के जन्म—दिवस के शुभ अवसर पर दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके घर में एक पूजा रखी जाती है। इस परंपरा को न टूटने देने के लिए जयाजी ने काफी सुबह—सुबह पूजा करवाई, जिससे हेमा को दिल्ली जाने के लिए फ्लाइट पकड़ने का समय मिल गया। दुर्भाग्यवश, उनका विमान विलंबित हो गया और जब तक वह संसद् भवन पहुँचीं, शपथ समारोह शुरू हो चुका था। हेमा देर से आने के कारण शर्मिंदा तो थीं, परंतु उन्होंने तेजी के साथ कागज लेकर पढ़ना शुरू कर दिया और अपनी घबराहट छुपा ली।

संसद् में अपने पहले भाषण में उन्होंने कहा, ''मैं फिल्मी दुनिया से संबंध रखती हूँ, एक ऐसी दुनिया, जो स्वप्न के समान है और मैं देखना चाहूँगी कि एक दिन ये सपने यथार्थ में बदलें।'' उन्होंने हॉलीवुड के यूनिवर्सल स्टूडियोज की तर्ज पर मुंबई में भी एक फिल्म संग्रहालय बनाने पर बल दिया। उन्होंने सरकार से वित्तीय अनुदान और भूमि प्रदान करके इस कार्य में सहायता करने का आग्रह किया। एक अभिनेत्री के रूप में वह इस पद के लिए एक अनपेक्षित उम्मीदवार थीं, पर समय—समय पर होनेवाली गफलतों के बावजूद उन्होंने काफी शीघ्रता से सीखने का प्रयास किया।

एक सफाई अभियान में अँधेरी, मुंबई के स्कूली बच्चों के साथ जुटी हेमा।

एक मनोनीत राज्यसभा सदस्य होने के बाद भी उनके द्‌वारा भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने को लेकर विवाद खड़ा हो गया। किसी मनोनीत सदस्य का किसी राजनीतिक दल में जाना नियमों के विरुद्‌ध माना जाता है; पर चूँकि यह उनके राज्य सभा में मनोनयन के छह महीने के बाद हुआ था, अत: राज्यसभा के दलगत नियमों के अनुसार यह वैधानिक माना गया। इन कारणों से यह विवाद जल्द ही ठंडा पड़ गया। वर्ष 2004 में लोकसभा

चुनाव में उन्होंने घनघोर प्रचार अभियान किया। ''हम देश के काफी सारे ऐसे अंदरूनी इलाकों में गए, जिनके बारे में मैंने देखा तो क्या, सुना भी नहीं था। पर जहाँ भी मैं गई, अपार भीड़ हमारी प्रतीक्षा करते मिली। उन्होंने मुझ पर प्रेम की वर्षा—सी कर दी। मैं उनके स्नेह के इस प्रदर्शन से अंदरूनी तौर पर प्रभावित हुई थी। मैं इस बात को लेकर कृतज्ञ थी कि एक फिल्मी सितारे के रूप में इतने वर्षों तक मुझे चाहने के बाद ये लोग एक राजनेता के रूप में भी मुझ पर उसी तरह का विश्वास करने को तैयार हैं। मैं अपने आप को उनके प्रति उत्तरदायी मानती थी और उन्हें नीचा नहीं दिखाना चाहती थी। प्रचार अभियान की यात्राएँ बहुत कठिन और थका देनेवाली थीं। कई दिन तो ऐसे होते थे, जो बहुत गरम व उमस भरे थे और जब मैं थोड़ा भी आराम करने के लिए तरस जाती थी। मैं अंधाधुंध प्रचार अभियान के प्रति समर्पित थी और लगातार हेलिकॉप्टर में चढ़—उतर रही थी। यह मेरा अपने प्रशंसकों के साथ पहला नजदीकी संपर्क था और यह अनुभव रोमांचक एवं भयावह दोनों था; पर धीरे—धीरे मैंने उसका सामना करना सीख लिया। मैंने पाया कि राजनीति एक अलग ही दुनिया है और यहाँ कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। हम अपना दिन सुबह के नौ बजे शुरू करते थे और मध्य रात्रि के बाद ही घर लौटते थे। यह सिलसिला प्रचार अभियान के अंतिम दिन तक चला।'' वे कहती हैं।

हर बार हेमा ने किसी नई चीज के लिए 'हाँ' कहा, कोई ऐसी चीज, जिसके बारे में वे शुरुआत में निश्चित न हों —वह उनके लिए एक समृद्ध अनुभव साबित हुआ। चाहे वह प्रख्यात वक्ताओं के साथ सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए मंच साझा करने का निर्णय हो या शाकाहार जैसे हलके मुद्दे पर अपना मत प्रकट करने की बात हो, हेमा ने यह सुनिश्चित किया कि वे अपनी तरफ आनेवाले हर अवसर का लाभ उठाएँ। उन्होंने सभी दृश्य माध्यमों—मंच, सिनेमा, टेलीविजन और विज्ञापन में भी हाथ अजमाया है। उन्होंने चाय, धुलाई के पाउडर, वाटर प्यूरिफायर, मच्छर भगाने की टिकिया से लेकर एक सहकारी बैंक का प्रचार किया है। अपने लंबे कॅरियर के दौरान उन्हें विभिन्न मंचों पर पद्मश्री सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित किया गया है। ''कई बार हम अनुभवों को थामना नहीं चाहते, क्योंकि हम गलतियों से डरते हैं; पर जब हम चुनौतियों का सामना करते हैं, तभी हमारा विकास और वृद्धि हो पाती है। हर बार सफल होना आवश्यक नहीं है। मुझे लगता है कि जो आपकी नियति में है, उसे कोई छीन नहीं सकता।'' हेमा कहती हैं।

एक सांसद के रूप में उनका पहला बड़ा कार्य मुंबई के जुहू बीच का स्वच्छता और सौंदर्यीकरण अभियान शुरू करना था। पूर्व सांसद शबाना आजमी द्वारा शुरू किए गए इए कार्य के तहत हेमा ने खोमचेवालों को बालू से हटाकर फुटपाथ पर जगह देने का प्रयास किया। शबाना पहले से ही यह कार्य बांद्रा इलाके में कर रही थीं। इस स्थान को सुंदर बनाने और बच्चों तथा वरिष्ठ नागरिकों के लिए पार्क के निर्माण का विचार हेमा का अपना था। हेमा का सपना है कि साथवाले पार्क को स्थानीय कलाकारों के लिए विकसित किया जाए, जहाँ वे खुले में अभ्यास कर सकें। वे वहाँ समारोहों के आयोजन के लिए एक नाट्यशाला भी बनाना चाहती थीं। हेमा के द्वारा शुरू किया गया एक और प्रोजेक्ट था बीच पर आनेवालों के लिए सशुल्क वाहन पार्किंग का निर्माण। वे नेशनल पार्क के लिए भी कुछ करना चाहती थीं, खासकर बोरीवली के निवासियों पर होनेवाले तेंदुओं के आक्रमण के संबंध में एक पशु—प्रेमी (हेमा के घर में छह कुत्ते हैं) होने के नाते, हेमा इस विषय के बारे में काफी गंभीर हैं। ''मानव ही सर्वप्रथम प्राणियों के निवास—स्थान का अतिक्रमण करता है और फिर अपनी जिंदगी के खतरे के संदर्भ में शिकायत करता है। यह अत्यंत अनुचित और असंवेदनशील है। मुंबई एकमात्र बड़ा शहर है, जिसके पास इतना विशाल वन क्षेत्र है और हमें अपने पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रयास अवश्य करना चाहिए।'' वे स्पष्टता के साथ कहती हैं।

विचारात्मक तौर पर वे मानती हैं कि राजनीति एक ऐसा जंगल है, जहाँ प्रतिदिन नियतियाँ बदलती रहती हैं। ''जब मैं कुछ साल पहले भाजपा में शामिल हुई थी तो यह एक उभरती हुई पार्टी थी। कुछ ही महीनों के बाद इसे चुनावों में पराजय का सामना करना पड़ा। कुछ लोगों ने मुझे सलाह दी कि मैं भाजपा छोड़ विरोधी खेमे में शामिल हो जाऊँ। इस मामले में मेरे पास बहुत सी अवांछित सलाहें आईं। मैंने सबको सुना, पर किसी पर भरोसा नहीं किया। मैं इस क्षेत्र की वरिष्ठ सदस्य नहीं थी, पर मैंने अपनी अंत:प्रेरणा पर भरोसा किया।'' हेमा कहती हैं कि वे भविष्य के बारे में तो नहीं जानतीं, पर इस वक्त वे अपनी सांसद की भूमिका का आनंद उठा रही हैं। जब भी वह दिल्ली में होती हैं तो उनके भाई जगन्नाथ उनके साथ होते हैं, क्योंकि हेमा को अकेले रहना पसंद नहीं; हालाँकि वे एक ऐसे अपार्टमेंट में रहती हैं, जहाँ का हर निवासी एक सांसद है। हेमा कहती हैं कि उन्हें हमेशा संसद् सत्र में भाग लेने की प्रतीक्षा रहती है।

हेमा की माँ की मौजूदगी उनकी हर परफॉर्मेंस में उन्हें आत्मविश्वास की अनुभूति कराती रही है।

''हालाँकि संसद् सदस्य कभी—कभी एक—दूसरे के प्रति अभद्र हो जाते हैं। फिर भी यहाँ की चर्चाओं को बैठकर सुनने से ही बहुत कुछ सीखने को मिलता है। संसद् की चारदीवारी के बीच वे भले ही दलों के सदस्य होते हैं, पर इसके बाहर वे निजी तौर पर व्यवहार करते हैं, चुटकुले सुनाते हैं, हँसते हैं और पार्टी करते हैं। यह एक बिल्कुल ही अलग दुनिया है। दिल्ली का जीवन मुंबई की फिल्मी बिरादरी से एकदम अलग है, जहाँ हर कोई आत्म—केंद्रित होता है। जब आपका बाहर की बड़ी दुनिया से साक्षात्कार होता है, तभी आपको एहसास होता है कि 'शो बिजनेस' वास्तव में कितना संकुचित होता है। अभिनेता गण एक जैसे खेमों में घूमते रहते हैं और अपने सहकर्मियों से बार—बार मिलते रहते हैं। एक—दूसरे के समृद्धीकरण में उनके पास देने को बहुत कम होता है। दूसरी तरफ, मेरे वर्तमान वातावरण में नित नई चुनौतियाँ होती हैं। एक सांसद के रूप में मेरा यह उत्तरदायित्व है कि मैं फिल्मी बिरादरी से जुड़े मुद्दों को उठाऊँ। मैंने रचनात्मक पेशों से जुड़े लोगों के लिए बजट के एक भाग के आवंटन के बारे में सरकार से माँग की है। इन पैसों से योग्य पेशेवरों के लिए एक सेवानिवृत्ति लाभ योजना शुरू की जा सकती है। संगीत और दूसरे अन्य क्षेत्रों के कई प्रतिभाशाली कलाकार घोर दरिद्रता में जीते हैं। एक राष्ट्र के रूप में हम 'पद्मश्री' और 'पद्म विभूषण' जैसे अलंकरणों से उनका सम्मान करते हैं; पर उनके जीवन—यापन के बारे में हमारे पास क्या योजना है? उनमें से कुछ इतने वृद्ध हैं कि अपनी देखभाल खुद नहीं कर सकते और कुछ इस तरह के कला स्वरूपों से संबंध रखते हैं, जो अब विलुप्तप्राय होता जा रहा है। सरकार को राष्ट्र की इन धरोहरों की संरक्षा के लिए अपने उत्तरदायित्व का वहन करना चाहिए। आत्मविकास का उचित संसर्ग से सीधा संबंध होता है। मैं अनुभव कर सकती हूँ कि मैं बदल रही हूँ, अधिक जागरूक हो रही हूँ। पढ़नेवाली पुस्तकों के मामले में मेरी पसंद बदल गई है और ऐसा ही कुछ उन लोगों के बारे में भी लागू होता है, जिनसे मैं मिलती हूँ। मैं अब भी अपरिचित लोगों से मित्रता के प्रति सशंकित रहती हूँ; पर पहले की तुलना में कहीं अधिक सुलभ हूँ। काफी हद तक यह शहर का प्रभाव है। दिल्ली एक मजेदार स्थान है, क्योंकि यहाँ हर समय कुछ—न—कुछ रोमांचित घटता रहता है।''

हेमा के निजी जीवन में सदा के लिए साथ छोड़ चुके लोगों के लिए पश्चात्ताप और लालसा की भावना है। वे सभी महिलाएँ, जिन्होंने युवावस्था में उनके रहस्यों की रक्षा की और संरक्षण प्रदान किया था, अब हेमा के साथ नहीं रहीं। वर्षों तक एक साये के तरह उनके साथ रहनेवाली शांता आंटी, माँ इंदिराजी (जिन्होंने हेमा के दुनिया को देखने के नजरिए को बदल डाला था) भी 31 दिसंबर, 1997 को इस दुनिया से चली गईं; सरोजा आंटी दशकों तक जयाजी की विश्वस्त साथिन और अंतत: हेमा की माँ, उनके जीवन का केंद्रीय व्यक्तित्व—ये सभी एक—एक कर उनका साथ छोड़कर जा चुकी हैं।

जयाजी जब तक जीवित रहीं, बैठक में रखे सोफे की कोनेवाली सीट उनका विशेषाधिकार क्षेत्र हुआ करती थी। यही वह जगह थी, जहाँ वे आरंभिक दिनों में हेमा के निर्माताओं से मिला करती थीं। जब उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा था और फिल्म जगत् के लोगों के साथ उनका मिलना—जुलना भी कभी—कभार ही हो पाता था, तब भी उन्होंने ऊपरी मंजिल से नीचे उतरकर आने का अपना दैनिक कार्यक्रम जारी रखा। अब वह छोटे—छोटे कामों, जैसे कि दैनिक गृह कार्यों का निरीक्षण और हेमा के कार्यालय के कर्मियों की देखरेख आदि में ही अपना मन लगाती थीं। धीरे—धीरे उन्होंने हर तरह के उत्तरदायित्व का परित्याग कर दिया। एक पूर्णकालिक परिचारिका की देखरेख में वे अपना सारा समय अपने दो कुत्तों के साथ टी.वी. देखने या सोने में व्यतीत करती थीं। काफी दिनों तक नाजुक स्वास्थ्यवाली हालत में रहने के बाद उन्हें उनके अंतिम दिनों में एक नर्सिंग होम में दाखिल करवाया गया, जहाँ मधुमेह और हृदयाघात के कारण उनकी मृत्यु हो गई। 24 जनवरी, 2004 को 74 वर्ष की उम्र में

जयाजी की इहलीला समाप्त हो गई। उनके अंतिम समय में उनके छह नाती—नातिनों समेत सारा परिवार उपस्थित था।

'मेरी माँ मेरी मित्र, दार्शनिक, आलोचक और मेरे जीवन के एक लक्ष्य जैसी थीं।'

हेमा अपनी माँ के साथ अपने कुछ खास पल बाँटती।

वह घर, जो कभी बड़ी संख्या में उपस्थित सगे—संबंधियों से गुंजायमान रहता था, आज सूना—सा लगता है। हेमा जिस घर में एक छोटी बच्ची हुआ करती थीं, उसी घर में आज नए परिवार की मातृप्रधान मानी जाती हैं। वे खुश हैं कि धर्मेंद्र ने राजनीति में अपना एक स्थान प्राप्त कर लिया है। ईशा का कॅरियर भी आगे बढ़ रहा है और अहाना ने फिल्म निर्माता बनने का निर्णय किया है। ''कितना अच्छा होता, अगर अम्मा यह सारा कुछ देखने को जीवित रहतीं; पर मुझे उनकी अनुपस्थिति में जीना सीखना ही होगा। उनकी मृत्यु के कुछ ही दिनों पहले मुझे 'वीर—जारा' की शूटिंग के लिए जाना था और इसे रद्द करना कठिन था। वे नहीं चाहती थीं कि मैं उनका साथ छोड़कर जाऊँ; पर मुझे जाना ही पड़ा और इसके कारण मुझे आज तक ग्लानि अनुभव होती है।

''हमें उन्हें नर्सिंग होम ले जाना पड़ा, क्योंकि उन्हें वेंटिलेटर लगाए जाने की आवश्यकता थी। उनका पाँव गैंगरीन के कारण गंभीर रूप से संक्रमित हो गया था और हम संक्रमण और ज्यादा फैलने से रोकना चाहते थे। वे कोमा में चली गई थीं और यह सारे परिवार के लिए बहुत कठिन समय था। उन दिनों मैं 'कामिनी—दामिनी' की शूटिंग कर रही थी और स्टूडियो जाने व आने के क्रम में उनके पास रुकती थी। वह धीरे—धीरे मौत की तरफ बढ़ रही थीं, पर किसी अज्ञात चीज ने उन्हें रोक रखा था। यही वह समय था, जब मेरे रेकी से संबंध रखनेवाले मित्र ने मुझसे बात की। उन्होंने कहा कि जब तक मैं संपूर्ण हृदय से उन्हें मुक्त न कर दूँ, अम्मा शांति के साथ मृत्यु को प्राप्त नहीं कर पाएँगी। यह मेरे लिए अत्यंत कष्टप्रद निर्णय था। जितना संभव हो सका, मैंने इसे रोके रखा। फिर उनकी मृत्यु के पूर्व की रात्रि को मैं काफी देर से नर्सिंग होम पहुँची। डॉक्टर उस समय आगंतुकों को आई.सी.यू. में जाने की अनुमति नहीं देते, पर मैंने विशेष अनुमति का आग्रह किया। जब मैं उनके रूम में पहुँची तो अर्धरात्रि बीत गई थी। उनकी परिचारिका उनके साथ बैठी थी। मैंने उससे कुछ देर के लिए बाहर प्रतीक्षा करने को कहा। अम्मा की साँसें चल रही थीं। वे अर्ध—मूर्च्छा की अवस्था में थीं। मैं जानती थी कि वे मुझे सुन नहीं सकतीं; पर मुझे यह भी विश्वास था कि उन्हें मेरी उपस्थिति का भान था। मैंने लंबे समय तक उन्हें गले लगाए रखा और उनके कान में कृतज्ञता के शब्द कहे; उन्होंने मुझे जो कुछ भी दिया या सिखवाया, उसके लिए धन्यवाद दिया; उनके आशीर्वचन की प्रार्थना की, उनके पाँव स्पर्श किए और अंतिम बार विदा कहा। मैंने उनसे कहा, ''हमें अलग होना ही पड़ेगा।'' उनकी वेदना की समाप्ति का यही एक मार्ग है। कुछ ही घंटों बाद जब मैं वापस घर पहुँची ही थी, हमें

जल्दी से अस्पताल आने को कहा गया। उन्होंने अपनी अंतिम विदाई ले ली थी...आज मेरे पास सिर्फ यही सांत्वना बची है कि कम—से—कम उनकी मर्मांतक पीड़ा का तो अंत हो गया।

पारिवारिक परंपरा : परफॉर्मेंस से पहले हेमा की हथेली और पाँव पर आलता लगाना जया का नियम था।

यहाँ जया अपनी छोटी सी नातिन ईशा की हथेली में आलता लगा रही हैं।

अपनी माँ की अनुपस्थिति में ही हेमा को पहली बार मित्रता के महत्त्व पर विचार करने का अवसर मिला। कई वर्षों से उन्होंने अपनी भाभियों को ही अपनी सहेलियाँ माना था। ''जैसे—जैसे समय बीतता गया, हम और नजदीक आते गए; या फिर ऐसे भी कह सकती हूँ कि चूँकि हमारे जीवन का यह दौर कम भाग—दौड़वाला है, अत: हमें एक—दूसरे के लिए ज्यादा समय मिल पाता है। जब भी मैं मुंबई में होती हूँ तो अपना समय अपने भतीजों व भतीजियों में बिताती हूँ। जब दिल्ली में रहना होता है तो सारा खाली समय भाई और भाभी के साथ बीतता है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि वही रिश्ते, जिनके साथ कोई मजबूरियाँ जुड़ी हों, चिरस्थायी होते हैं। मेरी अम्मा का निधन एक तरह से हमारे परिवार की अग्नि—परीक्षा थी। उनकी अनुपस्थिति में भी हम भाई—बहनों का साथ बना रहना हमारे सदाबहार बंधन का प्रमाण है।''

हेमा थोड़ी निराशा के साथ स्वीकार करती हैं कि उन्होंने कभी परिवार के बाहर किसी मित्र की तलाश नहीं की। ''जब मेरी उम्र की लड़कियाँ स्कूल और कॉलेजों में दोस्त बना रही थीं तो मैं अपने नृत्य और फिल्मों में व्यस्त थी। फिर भी, उन दिनों मैं जिन लोगों के संपर्क में आई, वे मेरे विश्वस्त साथी बने। मेरे आंतरिक सज्जाकार नीतू कोहली का परिचय मनोज कुमारजी की पत्नी शशि ने 'क्रांति' के निर्माण के दौरान करवाया था। नीतू उस समय मनोज कुमारजी के घर का डिजाइन कर रही थी और शशि ने सुझाव दिया कि मैं अपने घर के डिजाइन के लिए भी उन्हें अवसर दूँ। मेरे पिताजी ने उन्हें मेरे शयन कक्ष के डिजाइन का कार्यभार दिया और यह मेरे जुहूवाले मकान का सबसे अच्छा कमरा है। यह एक बड़ा और हवादार कमरा है, जिसके साथ एक बैठक संलग्न है। इसके ठीक सामने एक बड़ा सा टैरेस है, जहाँ मैंने अपनी जिंदगी के सबसे खूबसूरत पल बिताए हैं। इसकी डिजाइनिंग में कई महीने लगे और इस दौरान हम अच्छे मित्र बन गए। नीतू के प्रति मेरे आकर्षण का एक कारण यह भी था कि मेरे अप्पा, जो कभी—कभी ही अपरिचितों से सहज होते हैं, को वे बहुत प्रिय लगती थीं। जब मैं गर्भ से थी तो वही एक परिवार के बाहर की व्यक्ति थी, जिसके साथ मैंने और धर्मेंद्रजी ने यह राज साझा किया था। आनेवाले कई सालों में मैंने और नीतू ने अनेक शांत शामों की मुलाकातों में अनेक राज साझा किए हैं।''

''जीवन की सुंदरता कभी भी मुझे आश्चर्यचकितकरना बंद नहीं करती। मैं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से नए मित्र

पाती जा रही हूँ और पिछले कई वर्षों में मैंने एक अच्छा—खासा समर्थन समूह तैयार क र लिया है। मेरी दोनों भाभियाँ—प्रभा और स्मिता पहले मेरी मित्र हैं और फिर संबंधी। प्रभा हम सब में सबसे बड़ी हैं और वे सबसे अधिक खुराफाती भी हैं। उनका लिखने के प्रति गहरा झुकाव है और वे seetaandgeeta.com के नाम से एक वेबसाइट भी चलाती हैं, जो संकट में फँसी महिलाओं को दिशा—निर्देशन प्रदान करती है। उन्होंने स्वयं—सहायता श्रृंखला की कई पुस्तकें भी लिखी हैं। स्मिता गंभीर, आज्ञाकारी और हमेशा सहायता करनेवाली महिला हैं। वे घरेलू गतिविधियों में पूर्ण रूप से दक्ष हैं और संकट की घड़ी में उनपर पूरा भरोसा किया जा सकता है। उनके पास एक उपचारात्मक गुण है। वे स्वभावगत रूप से भिन्न हैं और मैं दोनों के साथ अपने संबंधों से बहुत प्रेम करती हूँ।

हेमा अपने दो चचेरे भाई—बहन—प्रभा और मोहन (शांता आंटी के बच्चे), जो अपने प्रारंभिक वर्षों से ही परिवार का एक अंग रहे हैं, के प्रयासों और समर्थन की भी बहुत सराहना करती हैं। ये दोनों ही हेमा की आँखों के सामने बड़े हुए हैं और उन्हें ये अपने सहोदरों के समान ही प्रिय हैं। हालाँकि मोहन ने विवाह के बाद अपना अलग घर बसा लिया है, पर उन्होंने हेमा के निर्माण कार्यों (फिल्म और टेलीविजन) की देखरेख का कार्य जारी रखा है। वे उनके कार्यालय के दैनिक कार्यों का निरीक्षण तो करते ही हैं, हेमा के साथ उनके चुनावी अभियान में भी जाते हैं। उनकी बड़ी बहन प्रभा घर और बाहर दोनों जगह हेमा के प्रति समर्पित सहचरी हैं। वह हेमा के नाट्य विहार कला केंद्र के नृत्य दल का एक अंग हैं और उसके नृत्य पूर्वाभ्यासों के क्रियापालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। एक नर्तकी के रूप में प्रभा हमेशा नकारात्मक चरित्रों को निभाने के लिए आगे आती रही हैं और वह उन्हें पूरी दृढता के साथ निभाती भी हैं। वे 'रामायण' में कैकेयी और शूर्पणखा बनी हैं, 'मीरा' में उदा (मीरा की भाभी), 'दुर्गा' में वह रति के चरित्र में होती हैं, 'यशोदा—कृष्ण' में पूतना बनती हैं और 'महालक्ष्मी' में महाकाली।

'द्रौपदी' में प्रभा माया का पात्र निभाती हैं, जिन्हें कृष्ण द्रौपदी के पास उनके अशांत समय में ढाढ़स बढ़ाने के लिए भेजते हैं। वास्तविक जीवन में भी प्रभा का चरित्र माया की भूमिका का विस्तार है और जब भी उनकी बहन को जरूरत होती है, हमेशा उसके पास ही होती है। जब हेमा ने अपने धारावाहिक 'नूपुर' और बाद में अपनी फिल्म 'दिल आशना है' को निर्देशक के रूप में लॉन्च किया तो प्रभा ने उनके प्रथम सहायक के रूप में उनकी मदद की है। अपनी दोनों चचेरी बहनों के साथ हेमा के रिश्ते ने कई दौरों का सामना किया है और हर बार और मजबूती से उभरते हुए चार दशकों से भी अधिक समय तक बना रहा है।

हेमा अपने मैनेजर मेहता सांब का भी विशेष उल्लेख करती हैं, जो उनके साथ पिछले कई दशकों से हैं। हेमा उनके संपर्क में सन् 1971 में 'भाई हो तो ऐसा' की शूटिंग के दौरान आईं, जहाँ के वे प्रोडक्शन इंचार्ज थे। चक्रवर्ती दंपती ने हमेशा उनसे संपर्क बनाए रखा और हेमा के कॅरियर के बारे में उनसे सलाह लेते रहे। 1980 के दशक के आरंभ में हेमा सुपर स्टारडम प्राप्त कर चुकी थीं और उनकी माँ को उनके लिए पूर्णकालिक मैनेजर की आवश्यकता महसूस हुई। चूँकि मेहताजी के साथ उनका एक विश्वास का रिश्ता बना हुआ था, अत: वही उनकी स्वाभाविक पसंद बन गए। तब से वे हेमा के ही साथ हैं और नाट्य विहार कला केंद्र की सभी गतिविधियों का समन्वय करते हैं। ''इतने वर्षों में हमारे बीच अनेक रचनात्मक बहसें हुई हैं; पर जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो मैं उनके अनवरत समर्थन के बगैर अपनी यात्रा की कल्पना भी नहीं कर सकती।'' हेमा कहती हैं।

अपने परिवार और नीतू कोहली के अलावा हेमा के मित्रों की सूची में शामिल हैं—मौरीन, जिन्होंने उनका परिचय आर्ट ऑफ लिविंग से करवाया; निशा, जो उनके कपड़ों के एक अनुभाग का डिजाइन करती हैं; अनुपम, जिन्होंने विमानन और कई ऐसे संबंधित अनुभव से हेमा का परिचय कराया, जिन्हें वे अपने जीवन के उचित समय पर नहीं कर सकीं और सूरदासजी, जिन्होंने आध्यात्मिकता के पथ पर उनका मार्ग—निर्देशन किया। ''विभिन्न

मित्रों के साथ मेरे समीकरण भी सर्वथा भिन्न हैं। इनमें से कुछ के साथ गंभीर संवाद होता है और दूसरों के साथ जिंदगी के आनंददायक पलों—डिनर के लिए बाहर जाना, एक—दूसरे के घर जाकर मिलना आदि का आनंद मिलता है। ये सभी छोटी—छोटी पर मूल्यवान् ख़ुशियाँ हैं।'' हेमा के कई राजनीतिक मित्र भी हैं, जिनके साथ वह विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार साझा करती हैं।

जिंदगी के इस चौराहे पर खड़ी हेमा जब पीछे मुड़कर अपने पदार्पणवाले प्रदर्शन को याद करती हैं, जब उनकी माँ ने उनकी हथेलियों व पैरों में आलता लगाया था, तो पुरानी यादों के झोंके से अभिभूत हो जाती हैं। आनेवाले सालों में चाहे जहाँ भी हेमा अपना नृत्य प्रदर्शन करती थीं, यह उनकी अम्मा का ही विशेषाधिकार बना रहा। ''जिस दिन मैं पहली बार केलूचरण महापात्रा के साथ प्रदर्शन करने वाली थी, मैंने खास आग्रह किया कि शुभ शगुन के तौर पर वे ही मेरे पैरों में आलता लगाएँ। अस्वस्थता के कारण उनके हाथ काँप रहे थे; पर किसी तरह उन्होंने मेरे पाँव पर आड़ा—तिरछा वृत्त बना ही दिया। वह मेरे लिए अत्यंत कीमती पल था। यह कार्यक्रम मेरे लिए इसलिए भी यादगार है कि अम्मा और गुरुजी दोनों आज हमारे बीच नहीं हैं। इसी प्रदर्शन के दौरान मैंने सत्तर वर्षीय एक वृद्ध कलाकार को सत्रह वर्षीय कृष्ण के रूप में परिवर्तित होते देखा। यह एक विशुद्ध चमत्कार था और यह सोचना कि कोई दूसरा केलूचरण महापात्रा कभी पैदा नहीं होगा, मुझे दु:खी कर देता है। मुझे यह भी दु:ख है कि मैं उन्हें फिर कभी नृत्य करता नहीं देख पाऊँगी। हालाँकि वे मेरे नृत्य गुरु नहीं थे, फिर भी मैं एक कलाकार के रूप में उस महान् रंगकर्मी की कमी हमेशा अनुभव करूँगी और मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी जिंदगी में कोई उनका स्थान नहीं ले पाएगा। यह सोचकर मेरा दिल टूटता है कि अम्मा कभी मेरी हथेलियों और पाँवों पर आलता नहीं लगा पाएँगी। उनकी मृत्यु को कई साल हो गए, पर मुझे गाहे—बगाहे उनकी याद आती रहती है। उनकी यादों को भुला पाना बहुत कठिन होगा। किसी के साथ गहरा लगाव भी एक पीड़ादायक भावना होती है।''

कभी—कभी हेमा सोचती हैं कि अगर उन्होंने अपने पिता की इच्छानुसार किसी आई.ए.एस. या इंजीनियर से शादी कर ली होती तो क्या उनका जीवन एकदम अलग होता? तब हो सकता था कि वे चेन्नई या अमेरिका में अपना घर बसा चुकी होतीं और किसी अत्याधुनिक अपार्टमेंट में बरतन धोते हुए (या फिर एक नृत्य प्रशिक्षक के रूप में) जीवन बिता रही होतीं। ''मुझे नहीं लगता कि मुझे उस तरह का जीवन पसंद होता। मुझे यकीन नहीं है कि मैं शो बिजनेस की दुनिया से दूर जाकर खुश रह पाती। सिनेमा और मुंबई शहर मेरे उत्थान का एक अंग रहे हैं और उनसे दूर रहना मेरे अंदर खालीपन छोड़ देता।''

काफी वर्षों पहले वहीदा रहमान ने कहा था कि एक फिल्म अभिनेत्री के जीवन में विवाह एक जटिल अध्याय होता है। एक अभिनेता को तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, पर अगर एक अभिनेत्री घर बसाने में अधिक देर कर देती है तो उसके लिए अच्छा जीवन साथी मिलना काफी कठिन हो जाता है। हेमा इसकी पुष्टि करती हैं और कहती हैं कि अगर कोई अभिनेत्री घर बसाने को लेकर गंभीर है तो उसे तीस वर्ष का होने तक यह काम कर लेना चाहिए। इसके बाद एक परिवार को शुरू करना कठिन होता जाता है। ''कॅरियर महत्त्वपूर्ण तो है, पर आप विवाह और बच्चों के बाद भी इसे जारी रख सकते हैं, बशर्ते आपका साथी और आपकी परिस्थितियाँ अनुकूल हों; पर कॅरियर के लिए व्यक्ति के निजी जीवन का बलिदान उचित नहीं है। हर दिन के अंत में आपको आपकी जिंदगी और विचारों को साझा करनेवाला कोई चाहिए।'' वे जोर देकर कहती हैं।

हेमा थोड़ी हिचकिचाहट के साथ स्वीकार करती हैं कि उन्हें कई ऐसे पलों से दूर रहना पड़ा। ''अच्छे—से—अच्छा जीवन साथी भी समय के साथ चाहत में आई कमी के कारण आपसे दूर चला जाता है और मेरे मामले में तो जब हम एक साथ आए तो वे पहले से ही किसी और के प्रति वचनबद्ध हो चुके थे। निश्चित रूप से इसके कारण हमारे दांपत्य जीवन में अभाव है। कई बार ऐसे अवसर आते हैं, जब आप चाहते हैं कि कोई आपके विशेष पलों में भागीदार बनने के लिए आपके साथ रहे; पर वे वहाँ नहीं होते। आपके बच्चों के जीवन में भी विशेष पल आते हैं और एक बार फिर उनकी प्रतिबद्धताएँ कहीं और होती हैं। आपके या आपके पति के जीवन में कोई बड़ी उपलब्धि होती है और आप साथ नहीं होते, क्योंकि एक साथ उपस्थित होने से ही बखेड़ा खड़ा हो सकता है।

इसके कारण दूसरे प्रिय व्यक्ति असहज हो जाते हैं। अत: आपको समझना होता है, दिल पर पत्थर रखना होता है, पीछे हटना पड़ता है और एक—दूसरे को जाने देना पड़ता है और आप ऐसा ही करते हैं। जब मैं छोटी थी तो इससे बहुत अधिक आहत होती थी। मुझे लगता था कि क्या यह वही साथ है, जिसके लिए मैंने इतना कुछ सहा, इतनी प्रतीक्षा की?''

बीतते वर्षों के साथ यह पीड़ा धीरे—धीरे कम हो गई या संभवत: हेमा ज्यादा परिपक्व हो गई हैं और उन्होंने अपनी परिस्थितियों को गौरवपूर्ण ढंग से स्वीकार कर लिया है। ''गलतफहमियाँ तो हमेशा बनी रहेंगी, जैसाकि मेरे पिता ने सही—सही अनुमानित किया था; पर इस पीड़ादायक हानि के स्थान पर अब नई पहचान और एक नई निर्भीकता उभर आई है। आज मैं अपने स्थान और अपने आत्म—गौरव को महत्त्व देती हूँ और कोई इसे नष्ट नहीं कर सकता।''

आध्यात्मिकता एक मानसिक अवस्था होती है और हेमा को अभी भी एक छोटी बच्ची के रूप में आस—पड़ोस में होनेवाले सत्संगों में भाग लेना याद है। बाद में जब वे और उनके भाई थोड़े बड़े हुए तो उनके अभिभावक अकसर तिरुपति मंदिर जाने लगे, जहाँ वे अभिषेकों में भाग लेते थे। ध्यान और योगाभ्यास हेमा को स्वाभाविक तौर पर आता है और इसी कारण वे श्री श्री रविशंकर की प्रशंसा करती हैं। ''इतने सारे लोगों का उनके पास जमा होने का कारण यह है कि वे दु:खमय लोगों को राहत प्रदान करते हैं।'' हेमा स्वीकार करती हैं कि हालाँकि माँ उनके जीवन में सर्वव्यापी हैं, फिर भी वे श्री श्री रविशंकर का सम्मान करती हैं। उनके मन में बाबा रामदेव की साधना के लिए भी उच्च श्रद्धा है और वे मानती हैं कि मोरारी बापू और सत्य साईं बाबा जैसे धार्मिक गुरुओं के दर्शन में कोई तो ऐसी बात होगी कि इतने सारे लोग उनके प्रति आकर्षित होते हैं। ''यह सिर्फ करिश्मा या वक्तृत्व कला नहीं हो सकती। उनकी उपस्थिति का कोई तो बृहत्तर अर्थ होगा; क्योंकि वे हमारे लिए ऐसे समाधान प्रस्तुत करते हैं, जो सामान्य लोग नहीं कर सकते।''

हेमा का मानना है कि केवल एक पूर्णत: संतुष्ट और विश्वस्त शिष्य को ही दूसरे गुरुओं से संपर्क करने में कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि ऐसा करना उसकी गुरु माँ के साथ उसके जुड़ाव के बीच कतई नहीं आता। वे कहती हैं कि यद्यपि माँ अब हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी वे उनकी उपस्थिति हर समय अनुभव कर सकती हैं और उनकी सर्व—कल्याण की भावना का प्रादुर्भाव उन्हीं से होता है। ''कहा जाता है कि आपको तभी कोई गुरु मिलता है, जब आप उसके लिए तैयार होते हैं। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे गुरु माँ तब मिलीं, जब मुझे उनकी सर्वाधिक आवश्यकता थी। अकसर आप तब तक नहीं चेतते, जब तक कोई प्रकरण आपके जीवन को पूरी तरह बदल न दे। जब आप विपदाओं का सामना करते हैं, तभी आपको धैर्य की प्राप्ति होती है। कई बार जब आप आघातों को सह नहीं सकते, तब अपना साहस खो देते हैं। ऐसे ही पलों में एक गुरु का होना सहायक सिद्ध होता है। अगर वह एक सच्चा गुरु है तो वह आपदाओं से बचकर निकलने में आपकी सहायता अवश्य करता है।

''एक आध्यात्मिक गुरु किसी भी व्यक्ति के जीवन की धारा को बदल सकता है। हम सभी को किसी की आवश्यकता होती है, जो हमारे लिए चीजों को सही दृष्टिकोण से रख सके, और केवल गुरु ही ऐसा कर सकते हैं। गुरु माँ जैसी ज्ञानी महिला को एक गुरु की आवश्यकता पड़ी। सौभाग्य से उन्हें श्रीअरविंद के शिष्य दिलीप कुमार राय जैसा गुरु मिला। मैं जहाँ भी जाती हूँ, अपनी धार्मिक पुस्तकें और देवी—देवताओं को साथ ले जाती हूँ; और चाहे कितना भी लंबा समय क्यों न लगे, मैं बिना सुबह की पूजा करे शूटिंग या मीटिंग के लिए घर से नहीं निकलती।

''आप जब एक बार वास्तविकता को स्वीकार कर लेते हैं तो चीजें कभी भी उतनी पीड़ादायक नहीं रहतीं। मैं

अपनी नियति को स्वीकार करती हूँ।...मुझे सब कुछ तो नहीं मिल सकता। जिस वक्त मैंने और धरमजी ने एक साथ होना स्वीकार किया, विवाह ही हमारी समस्या का एकमात्र समाधान था। हमने कुछ वर्ष बहुत अच्छी तरह एक साथ गुजारे और हमारी दो खूबसूरत बेटियाँ इसी का परिणाम हैं। आज मैं अकेली नहीं हूँ। मुझे उनका पूरा समर्थन है। इसके अतिरिक्त, मैं एक व्यक्ति के रूप में विकसित हो चुकी हूँ और मैंने जीवन की घटनाओं को अधिक आध्यात्मिकता की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया है। मैं अपने आपको यह सांत्वना देती हूँ कि अगर मैं एक नियमित विवाह के बंधनों में बँधकर एक सामान्य पत्नी की तरह नियमित जिम्मेदारियाँ निभा रही होती तो क्या मैं उस तरह विकसित हो पाती, बढ़ पाती, जैसी मैं आज हूँ? क्या मैं अपनी नृत्य कला और दूसरी कलात्मक यात्राओं का संवर्द्धन उसी तरह कर पाती, जैसा मैंने अभी तक किया है? क्या मैं अनगिनत अवसरों का लाभ उठा पाती और अपने आप की संवृद्धि कर पाती? क्या मैं अपनी बीमार माँ और आंटियों की सेवा कर पाती? क्या मैं अपने भाई—बहनों के साथ निर्बाध संपर्क रख पाती, उनकी सहायता कर पाती? क्या मैं इतने लंबे मार्ग की यात्रा कर पाती और उतने माध्यमों में हाथ आजमा पाती, जितना मैं कर पाई हूँ? मैं मानती हूँ कि मैं इतना कुछ इसलिए कर पाई, क्योंकि मेरे पास खुद का एक मुकाम था। धरमजी ने हमेशा मुझपर भरोसा किया और मेरे उद्यमों को प्रोत्साहित किया। वे हमेशा मेरे बारे में चिंतित रहते थे और निजी स्थानों पर यह चिंता दरशाते भी थे; परंतु उनके आश्वासन ने मुझमें हमेशा नया आत्मविश्वास भरा। समय के साथ वे भी विकसित हो रहे हैं। इन दिनों वे नियमित योगाभ्यास करते हैं और कविता लिखने के प्रति भी उनका आकर्षण बढ़ा है। हम एक साथ बिताए गए समय का आनंद उठाते हैं और अपने नए प्रोजेक्ट तथा बच्चों के बारे में बातें करते हैं। वह मुझे अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाते हैं और मैं उन्हें अपनी नई नृत्य नाटिका के बारे में बताती हूँ; और हाँ, हमारी बातों में हमेशा मेरी बगिया में खिल रहे नए फूलों की चर्चा भी शामिल रहती है।''

हेमा कहती हैं कि नृत्य एक व्यायाम के रूप में भी उनकी सहायता करता है। ''मैं अपने स्वभाव से ही बहुत बेचैन रही हूँ और थोड़ी सी भी अव्यवस्था मुझे क्षुब्ध कर देती है। पहले जब मैं नाराज होती थी तो सीधे कार में बैठकर दूर चली जाती थी; पर इन दिनों मैंने रेकी के साथ अपना और दूसरों का उपचार करने की कला अपना ली है और इसने मेरे जीवन को बदलकर रख दिया है। प्रतिदिन मेरे लिए एक नया अनुभव है और जब आप अपने आप से विमुक्त होते हैं, तभी अपने अंदरूनी कोलाहल को कुछ दूरी से देख पाते हैं। आर्ट ऑफ लिविंग ध्यान करने पर जोर देता है और अगर आप इसे गंभीरता से करते हैं तो यह आपको राहत प्रदान करता है। माँ इंदिराजी तो नहीं रहीं, पर मैं उनके द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयास कर रही हूँ। मेरा प्रयास जीवन को बिना आकांक्षाओं और पछतावों के जीना है। यह आसान नहीं है; पर आत्मा के शुद्धीकरण का यही एकमात्र मार्ग है।'' वे वर्णन करती हैं।

संभवत: जया चक्रवर्ती ने उनका नाम 'हेमा मालिनी' रखा तो वह भविष्य को देख पा रही थीं। संभवत: यह पूर्व निश्चित था कि वह कोई उपनाम धारण नहीं करेंगी (शादी से पहले 'चक्रवर्ती' या उसके बाद 'देओल'। संभवत: हेमा मालिनी की नियति में ही अकेले चलना लिखा था।

❑

12

एक माँ की डायरी से

'एक माँ का अपने बच्चे के साथ बहुत ही प्यारा रिश्ता होता है।' उनके नृत्य नाटक 'यशोदा कृष्ण' का एक दृश्य।

जया चक्रवर्ती प्रमुख तमिल पत्रिकाओं में नियमित रूप से अपनी रचनाओं के साथ योगदान किया करती थीं और तुलसीदास—कृत 'रामचरित्रमानस' के तमिल अनुवाद सहित कई पुस्तकों के लेखन का श्रेय भी उन्हें जाता है। कहा जाता है कि वे सूर्योदय के काफी पहले उठ जाती थीं और अपनी नियमित क्रियाओं के कारण ध्यान भंग हो जाने की आशंका से दिन शुरू होने तक तेजी के साथ लेखन कार्य करती रहती थीं। वह एक लेखक, गायक, चित्रकार आदि के रूप में विभिन्न अभिरुचियोंवाली महिला थीं; परंतु उनकी सबसे प्राथमिक जिम्मेदारी एक गर्वित पत्नी और माँ के रूप में थी। फिल्मी बिरादरी उन्हें एक अत्यंत प्रबल शक्ति के रूप में देखती थी।

जब भी उनके जुहूवाले बँगले की काठ की पॉलिशवाली सीढ़ियों पर जयाजी के ऊँची एड़ीवाले सैंडल की आवाज खड़कती थी तो उनके बैठकवाले कमरे में इंतजार कर रहे फिल्म निर्माता गण सावधानी की मुद्रा में खड़े हो जाते थे। उनके व्यक्तित्व में भी कुछ ऐसा था, जो उन्हें छवि प्रदान करता था। हेमा के नायक और उनकी फिल्मों के निर्देशक उन्हें एक ताकतवर महिला के रूप में जानते हैं, जो हमेशा अंत में अपनी बात मनवा ही लेती थीं। पर अपने परिवार की नजरों में वे एक सहृदय मातृ—प्रधान थीं, जो हमेशा प्रतिभाशाली और सुपात्र लोगों की सहायता हेतु अपनी हद से भी आगे बढ़कर प्रयास करती थीं। उनके अनुसार, उन्होंने सख्ती का मुखौटा केवल अपनी पुत्री एवं अपने आप को फिल्मी दुनिया के जंगली वातावरण से बचाने के लिए धारण कर रखा था। उनके दामाद धर्मेंद्र का मानना है कि हेमा और उनकी बेटियाँ आज जिस मुकाम पर खड़ी हैं, उसका पूरा श्रेय जयाजी को जाता है।

मैं यहाँ जयाजी की डायरी के कुछ अंश प्रस्तुत कर रही हूँ, जो उन्होंने अपने चिरप्रयाण के कुछ ही महीनों पहले मुझे दिखाई थी। इसमें हमें हेमा की पाँच दशकों से भी लंबी जीवन—यात्रा के कुछ प्रमुख प्रसंग देखने को मिलते हैं।

...जब आप गर्भ से होती हैं तो अपने आप को ईश्वर के निकट पाती हैं। मुझे एक अंत:प्रेरणा होती है कि मुझे एक पुत्री ही प्राप्त होगी। जब मैंने पहली बार उस नन्ही सी बच्ची को गोद में लिया तो आंतरिक रूप से अनुभव

किया कि यह बड़ी होकर एक कलाकार बनेगी।

...हेमा अब पाँच साल की है और मैंने एक नृत्य पाठशाला में उसका नामांकन करा दिया है। वह अपने वर्ग में सबसे छोटी है। उसके अंग बड़े ही नाजुक हैं और वह बड़ी मुश्किल से मुद्राएँ सीख पा रही है। पर कोई बात नहीं, वह धीरे—धीरे सीख जाएगी।

...उसने कुछ मुद्राएँ सीख तो ली हैं, पर उसकी नृत्य में कोई खास रुचि नहीं दिखती। मुझे प्रतिदिन उसे अभिप्रेरित रखने के लिए प्रयास करना पड़ता है। वह खुलकर विरोध तो नहीं करती, पर मैं उसके प्रतिरोध को अनुभव कर पा रही हूँ। चूँकि वह एक आज्ञाकारी बच्ची है, अत: वह अपने बड़ों के निर्देशों का पालन करती है। वह जानती है, हर रोज—स्कूल के बाद—उसे एक या दो घंटे नृत्य के लिए देने ही होंगे।

...यह सत्य नहीं है कि मेरे पति चक्रवर्ती बाबू हेमा के नृत्य सीखने के विरुद्ध हैं। वास्तव में वे पूरे दिल से उसका प्रोत्साहन करते हैं। राजधानी में रहनेवाले एक सरकारी अधिकारी होने के कारण उनकी अच्छी जान—पहचान है। हेमा के कार्यक्रमों के लिए बहुत सारे निमंत्रण उनके मित्रों के समूह में से आते हैं।

...हेमा नौ साल की हो चुकी है और राजधानी के गिने—चुने बाल नर्तकों में से एक मानी जाती है। उसे मंच प्रदर्शनों के लिए अकसर निमंत्रण मिलते रहते हैं। वह कार्यक्रम के पहले थोड़ा घबरा तो जाती है, पर कभी इसे प्रकट नहीं करती। यह उसकी आदत बन चुकी है। घबरा तो मैं भी जाती हूँ, पर कभी इसे दिखाती नहीं। वह समझती है कि मैं उसे अच्छा करते देखना चाहती हूँ और वह ऐसा ही करती है।

...यह हम सबके लिए एक बड़ा दिन है। यह हेमा का दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में पहला कार्यक्रम है और वह काफी अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

...किसी भी कला स्वरूप का अनुसरण करना बहुत खर्चीला होता है; पर मैं किसी तरह प्रबंध कर ही लेती हूँ। कुछ पैसा तो मेरे पति के पास से आ जाता है और कुछ मैं घरेलू खर्चों से बचाकर रखती हूँ और कुछ पैसा मेरे गहनों के बेचने से भी मिल जाता है। मेरे पास मेरे पिता द्वारा विवाह के अवसर पर दी गई सोने की एक कमरधनी है। यह मेरा स्त्री धन है। जब भी मुझे पैसों की ज्यादा आवश्यकता होती है तो मैं इसे गिरवी रख देती हूँ और जब पैसे आ जाते है तो वापस छुड़ा लेती हूँ।

वी.एस.आर. चक्रवर्ती और जया चक्रवर्ती के साथ हेमा : उनके माता—पिता ने स्वयं को और अपनी जीवन को अपनी बेटी के सपने को साकार करने में लगा दिया था।

...हेमा की सुंदरता और उसके व्यवहार को सँवारने व निखारने में मुझे बहुत समय लगता है; पर यह मेरे दूसरे बच्चों के समय की कीमत पर नहीं होता। मैं हेमा को लेकर ज्यादा सतर्क रहती हूँ, क्योंकि वह बहुत छोटी है और उसे किसी के साथ की आवश्यकता है।

...हेमा को एक प्रसिद्ध नर्तकी बनाना मेरा स्वप्न है और वह इसमें सफल होगी, क्योंकि उसके पास ईश्वरीय देन है। उस पर एक नजर डालते ही पता चल जाता है कि वह एक कलाकार है।

...हेमा के पास फिल्मों के प्रस्ताव आ रहे हैं और हम उनमें से कुछ पर विचार कर रहे हैं। कुछ लोग हमें

चेतावनी दे रहे हैं कि फिल्म उद्योग हमारे जैसे सभ्य परिवार के लिए सुरक्षित स्थान नहीं है; पर ऐसा कुछ है, जो मुझसे कहता है कि यही उचित निर्णय है। मुझे नहीं पता कि भाग्य के पिटारे में हेमा के लिए क्या छुपा रखा है। मैं नहीं कह सकती कि वह नए वातावरण में ढल पाएगी या नहीं। हम एक अलग पृष्ठभूमि से आते हैं, पर निर्माता अनंत स्वामी ने हमें वचन दिया है कि वे हमारे गाइड बनेंगे। उन्होंने हर समय हमारे हर तरफ रहने का वचन दिया है।

...हेमा की कुछ फिल्में प्रदर्शित हो चुकी हैं और उसका कॅरियर उठान पर है। उसे परदे पर हर प्रकार के नृत्य करने पड़ते हैं; पर उसके पास अत्यंत अजीबो—गरीब मुद्राओं की भी अत्यंत शालीनता के साथ करने की निराली योग्यता है, साथ ही ऐसा भी नहीं है कि उसके फिल्मी परदे पर सारे नृत्य साधारण ही होते हैं। समय—समय पर उसे उत्कृष्ट गाने मिलते रहते हैं और उनमें से कुछ तो शुद्ध शास्त्रीय स्वरूप पर आधारित होते हैं।

...बड़े परदे की यह माँग है कि हेमा ढेर सारा मेकअप करे। यह उसकी त्वचा को तेज रोशनी और कैमरे से सुरक्षित रखने के लिए होता है, पर इसके कारण परदे पर उसकी त्वचा गुलाबी—सी दिखने लगती है। मुझे उसका ज्यादा मेकअप से लदा चेहरा पसंद नहीं है। फिल्मों में आने से पहले मैं निजी तौर पर उसके कार्यक्रम के लिए मेकअप और परिधानों का निरीक्षण करती थी। अब उसके पास एक निजी फेस सज्जाकार, मेकअप मैन और परिधान सज्जाकार है। वह नृत्यों में भी यही सारा सामान प्रयोग करती है, पर उसकी हथेलियों और पाँवों में आलता लगाने का विशेषाधिकार मेरा है। यह परंपरा सालों से हमारे बीच चली आ रही है।

...हेमा लंबे समय तक शूटिंग के लिए शहर से बाहर गई है और मैंने गुरुजी को उसके साथ पूर्वाभ्यास करवाने के लिए भेजा है। कभी—कभी तो ऐसा भी होता है कि मैं स्वयं उसके साथ शूटिंग की जगह पर चली जाती हूँ। नर्तकों को अपनी कला के अभ्यास से दूर रहने का खतरा नहीं उठाना चाहिए। पूर्वाभ्यास के बिना कुछ ही दिनों में उसका शरीर कड़ा हो जाएगा।

...मेरे बेटे अपनी—अपनी नौकरियों में अच्छा काम कर रहे हैं और हेमा का कॅरियर भी उफान पर है। नृत्य उसके फिल्मी कॅरियर का अतिक्रमण नहीं कर रहा है। उसके निर्देशकों को इससे कोई शिकायत नहीं है। वह अपने कार्यक्रम के लिए कभी अपनी शूटिंग रद्द नहीं करती और अगर गुरुजी शूटिंग के स्थान पर होते हैं तो हेमा काम खत्म होने के बाद भी पूर्वाभ्यास करती है। वह अकसर थकी होती है और आराम करना चाहती है; पर मेरा कहना है कि आधा—एक घंटा अभ्यास कर लेने से कोई खास फर्क नहीं पड़ता। पूर्वाभ्यास के बाद वह भोजन करती है और सीधा सोने चली जाती है।

...उसकी डायरी की तारीखें अत्यधिक फिल्मों और कार्यक्रमों से भरी पड़ी हैं। मुझे कभी—कभी भय लगता है कि एक समय ऐसा आएगा, जब वह इन दोनों को एक साथ नहीं कर पाएगी; पर उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा है और वह इन दोनों के प्रबंधन के प्रति पूरी तरह सजग है। वह जानती है कि मैं बड़ी जिद्दी हूँ और आसानी से हार नहीं मानूँगी। आखिर मेरे पति को भी मेरे सामने झुकना ही पड़ा था।

...हेमा के आलोचक कहते हैं कि उसे इतने सारे फिल्मी निमंत्रण इसलिए मिलते हैं, क्योंकि वह एक सिने तारिका है। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मैं मानती हूँ कि वह काफी प्रतिभाशाली और अत्यधिक भाग्यवान् है। अपनी किशोरावस्था में ही उसे पं. नेहरू और डॉ. राधाकृष्णन जैसी विभूतियों के सामने प्रदर्शन का मौका मिला था। वास्तव में वह एक मात्र नर्तकी है, जिसे देश के हर राष्ट्रपति के सामने नृत्य करने का अवसर मिला है।

...हेमा एक बहुत अच्छी नृत्यांगना है और इसका श्रेय उसी को जाता है। वह अत्यंत कृषकाय है और काफी गरिमा के साथ चलती है। उसका चेहरा भी अभिव्यक्तियों से हमेशा मेल खाता है। वह मंच और परदे, दोनों जगह

प्रतिदिन और बेहतर होती जा रही है। यह सत्य है कि बहुत सारे लोग उसका कार्यक्रम देखने इस कारण से आते हैं, क्योंकि वह एक प्रसिद्ध स्टार है; पर यह उसके स्टारडम का वह मूल्य है, जो उसे चुकाना ही पड़ेगा।

...हर कोई यह कहता है कि हेमा बहुत सुंदर है; पर उनमें से अधिकांश यह नहीं जानते कि उसकी आंतरिक सुंदरता उसकी बाह्य सुंदरता से कई गुना अधिक है। वह काफी आध्यात्मिक है और उसकी शांति उसके चेहरे पर झलकती है। वह नितांत गैर—भौतिकवादी है। मैं यह जानती हूँ, क्योंकि मैंने अपने स्वस्थ रहने पर उसका हिसाब—किताब देखा है। अब वह यह काम स्वयं करती है।

ईशा और अहाना : वे बेटियाँ, जो सुख और खुशियाँ लेकर आई।

...विवाह और मातृत्व हेमा को बहुत भा रहा है। मैंने उसे कभी इतना संतुष्ट नहीं देखा, जितना वह अपने दोनों बच्चों के साथ दिखती है। धर्मेंद्र एक बड़े अच्छे जामाता हैं, मेरा सम्मान करते हैं और परिवार के सभी सदस्यों का पूरा ध्यान रखते हैं। जब भी मुझे लगता है कि लड़कियाँ हद से आगे जा रही हैं या हेमा उन्हें अत्यधिक लाड़—दुलार में बिगाड़ रही है तो मैं उन्हें हस्तक्षेप करने को कहती हूँ। उन्हें मेरे ज्ञान पर बहुत भरोसा है, मेरी सराहना भी करते हैं। और मेरी बेटी और नातिनों पर सबसे अच्छा प्रभाव उन्हीं का पड़ा है।

...पिछले कई सालों में नृत्य काफी विकसित हुआ है और हेमा भी। आरंभिक दिनों में वह भरतनाट्यम की एकल नृत्य प्रस्तुति किया करती थी। बाद में उसने नृत्य नाटिका का समावेश किया, क्योंकि वह दर्शकों को संकुचित रखना नहीं चाहती थी। यह एक अच्छा निर्णय था, क्योंकि आज उसमें उतनी शक्ति नहीं है जितनी बीस वर्ष पहले थी। उसे अपने प्रदर्शनों के मध्य थोड़ा अंतराल चाहिए होता है और दूसरे नर्तकों की मंच पर उपस्थिति से यह अंतराल भर जाता है।

पारिवारिक फोटो : अपने माता-पिता और भाइयों के साथ उनके बड़े भाई कन्नन और प्रभा की शादी में हेमा।

...हेमा की बड़ी इच्छा है कि ईशा और अहाना भी नृत्य सीखें; पर मुझे लगता है कि उनका इसके प्रति झुकाव नहीं है। हेमा इससे बड़ी निराश है। उनकी रुचि जगाने का हरसंभव प्रयास करती है। जब मैं उससे उन्हें अकेला छोड़ देने को कहती हूँ तो वह मुझ पर क्षुब्ध हो जाती है। ''जब मेरा झुकाव नहीं था तो क्या आपने हार मान ली

थी?'' वह पूछती है। मैंने ऐसा नहीं किया था, पर वह जमाना भी तो एकदम अलग था।

...हेमा का एक और प्रदर्शन देखने के लिए सभागार में हूँ। जैसे ही परदा उठता है, मुझे राष्ट्रपति भवन में नृत्य करती वह छोटी सी बच्ची याद आती है। तब से लेकर अब तक हेमा ने एक लंबा सफर तय कर लिया है। पुराने दिनों में मेरे पति मंच पर उसके नृत्य कार्यक्रमों की घोषणा करते थे। आज मेरा बड़ा पुत्र उसके कार्यक्रमों की प्रस्तुति करता है। मुझे गर्व है कि तमाम अवरोधों के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी। मुझे हमेशा से उसके सफल होने की आशा थी; पर सच कहूँ तो मुझे नहीं लगता था कि उसका जादू इतने वर्षों तक बरकरार रहेगा।

...मैं ईशा और अहाना के पदार्पणवाले कार्यक्रमों में भी दर्शकों के बीच थी और आज वे अपनी माँ के साथ प्रदर्शन कर रही हैं। मुझे आशा है कि हेमा ने उन्हें उपयुक्त ढंग से सँवारा होगा। मैं अपनी नातिनों के प्रदर्शन के बारे में कोई टिप्पणी नहीं कर सकती; क्योंकि मुझे ओडिसी की उतनी समझ नहीं है, जितनी भरतनाट्यम की।

...समाचार—पत्रों में मेरी नातिनों की हेमा के साथ तुलना करते हुए कुछ खबरें छपी हैं। यह उचित नहीं है। वे अभी भी काफी छोटी हैं और उन्हें काफी आगे जाना है। हेमा पिछले तीस सालों से नृत्य कर रही है। आज का समय भी बहुत अलग है। पुराने दिनों में ध्यान भटकानेवाली उतनी चीजें नहीं थीं, जितनी कि आज उपस्थित हैं। जब हेमा छोटी थी तो उसे स्कूल और नृत्य के बीच ही समय बाँटना पड़ता था। जब वह बड़ी हो गई तो नृत्य और फिल्मों के बीच समय बँटता था। ईशा और अहाना के पास नृत्य, कॅरियर की महत्त्वाकांक्षाएँ और काफी सारी दूसरी अभिरुचियाँ भी हैं। यह पीढ़ी हर समय अपने दोस्तों के साथ ही व्यस्त रहती है। हेमा की तो कोई मित्र नहीं थी।

...ईशा चौबीस घंटे शूटिंग कर रही है और खाली दिनों में भी कभी—कभार ही घर में दिखती है। आजकल अहाना भी व्यस्त रहती है। उसने फिल्म निर्देशन के कोर्स के लिए न्यूयॉर्क में दाखिला कराया है और हेमा ने भी अनुमति दे दी है। मैं इस निर्णय से सहमत नहीं हूँ। मैं मानती हूँ कि वह विदेश में रहने के लिए अभी बहुत छोटी है; पर मेरी सुनता कौन है? मैंने अपना डर अपने दामाद धर्मेंद्र को बताया है। उन्होंने अहाना की सुरक्षा की जिम्मेदारी ली है। मैं आश्वस्त हूँ। जब वह कोई भी वचन देते हैं तो हमेशा उसे निभाते हैं।

...हेमा मुझे कहती है कि कभी—कभी उसे लगता है कि वह अपने बेटियों की उतनी अच्छी माँ नहीं बन सकी, जितनी मैं उसके समय में थी। यह सही नहीं है। उनके बीच एक अलग रिश्ता है।

...उसने उन्हें काफी अधिक स्वतंत्रता दी है, जो मैं नहीं कर सकी। मैं और मेरे पति बहुत सख्त थे। हमारे बच्चे हमसे डरते थे। उसके बच्चे उससे बहुत प्यार करते हैं; पर मैं नहीं सोचती कि वे उससे थोड़ा भी डरते हैं। मैंने हेमा का कॅरियर बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की थी। वह अपना और अपनी बेटियों का भविष्य सँवारने के लिए मुझसे दोगुनी कड़ी मेहनत कर रही है।

❑

उपसंहार

रात हो चुकी है और हेमा मालिनी अपने बेडरूम में हैं। अमेरिका से लौटने के बाद जेट लैग की थकान है। नीचे उनके दफ्तर में चहल—पहल है। कुछ देर बाद हेमा लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे उतरती हैं। नौकरानी ने हरी पत्तियों में लिपटे चमेली के फूलों का पैकेट उन्हें थमाया। उन्होंने उसे खोला और उसकी खुशबू को सूँघने के बाद खोलकर अपने बालों में सजा लिया। ''अम्मा को फूल पसंद थे और वह हर दिन उन्हें लगाती थी। उनकी मौत के बाद मैंने इस परंपरा को जारी रखा है, चाहे मैं शहर में रहूँ या नहीं, हर शाम ताजा फूल घर पर आते हैं।'' बीते दिनों को याद करते हुए वे बोलीं।

दरवाजे की तरफ मुँह कर बैठक में वह अपनी पसंदीदा जगह पर बैठ गईं। टेबल पर उनकी माँ की तसवीर सबका ध्यान आकर्षित करती है। अपने पीछे खाली सीट की तरफ इशारा करते हुए हेमा कहती हैं, ''वह अम्मा की सीट थी और वहाँ कोई नहीं बैठता। हम हर शाम अम्मा की तसवीर के आगे दीप जलाते हैं। इससे हमें लगता है कि वे अब भी हमारे साथ हैं। यह बड़ा विचित्र है, लेकिन उनके जाने के कई दिनों बाद तक मैं उनके साथ एक पल के लिए भी फिर से जुड़ने के लिए तरसती रहती थी, चाहे उनकी एक झलक ही मिल जाए। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। अकसर जब मैं अकेली होती हूँ, तब उनसे खामोशी में ही बातें करती हूँ, लेकिन उन्हें मन में फिर कभी रोककर रख नहीं सकी। फिर एक दिन, जब उनकी पहली बरसी थी, तब मैं अमेरिका में अकेली थी और अचानक वे मेरे सपने में आईं। सुंदर सी गुलाबी साड़ी में वे जवान दिख रही थीं और बरामदे से मुसकराती हुई गुजरीं। स्नान के बाद उनके लंबे चमकदार बाल गीले और खुले हुए थे, जैसा बीते समय में हुआ करते थे। वे शांत दिख रही थीं। मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन उनके जाने के बाद भी उनकी खुशबू रह गई...मैं चौंककर नींद से जाग उठी। मैंने तुरंत अपने भाइयों को बुलाया और उन्हें अपने सपने के बारे में बताया। साफ तौर पर उनका दिखना उनके बच्चों के लिए एक संदेश था। यह अम्मा का हमें यह बताने का तरीका था कि वे एकदम ठीक हैं और हमें अपने जीवन को आगे बढ़ाते रहना चाहिए।''

उन्होंने कहा, ''घर में जो सबसे बड़ा होता है, वही पूरे परिवार को एक रखता है। मेरे भाई और मैं अम्मा के अंतिम दिनों में साथ आ गए। मेरी भाभियाँ हमेशा मेरी चिंता किया करती थीं, लेकिन माँ के जाने के बाद उनकी चिंता और बढ़ गई। न जाने कैसे, पर अब यह एक परंपरा बन गई है कि जब भी परिवार में कोई परेशान होता है, तो हम अम्मा की तसवीर के पास बैठते हैं और तब अच्छा महसूस होता है। चाहे हम इसे मानें या न मानें, लेकिन

कोई बाहरी शक्ति हमें दिशा दिखा रही है। आप इन बातों पर यकीन नहीं करना चाहते, लेकिन एक सकारात्मक ऊर्जा है, जिसका स्पर्श स्वस्थ कर देता है। यह हमारे ऊपर है कि हम इन संकेतों को मानें या न मानें।''

लंबे समय से हेमा अपने नए बँगले में शिफ्ट करने के बारे में सोच रही थीं, जिसे एक दशक पहले उनके पति ने उनके लिए बनवाया था। धर्मेंद्र फिल्म सिटी में शूटिंग के लिए जा रहे थे, जब उन्होंने हरे—भरे सुंदर पेड़ों से घिरे इस प्लॉट को देखा था। अगले ही दिन उन्होंने बिल्डर से बात की और डील पक्की कर ली। धीरे—धीरे उन्होंने बँगले का निर्माण शुरू कराया और बाद में गार्डन तैयार कराया। उनकी दोस्त नीतू कोहली ने घर को डिजाइन किया था। काफी समय पहले ही घर बनकर तैयार हो गया था, लेकिन अपने पुराने घर में बसी हेमा और उनकी दोनों बेटियों ने इस नए पते पर शिफ्ट करने में लंबे समय तक सोच—विचार किया। आखिरकार, हेमा ने तय कर लिया और उनकी बेटियों को भी हामी भरनी पड़ी। उन्हें यहाँ आए कुछ महीने ही हुए हैं, लेकिन उन्हें इस माहौल में खूब मजा आ रहा है।

अपने जुहू के घर में हेमा शायद ही कभी गार्डन में समय बिताया करती थीं। अपने गोरेगाँव के इस 39 यशोधाम एन्क्लेव के नए घर में, गार्डन से लगते बैठक के कमरे के बाहर आँगन उनकी सबसे पसंदीदा जगह है। पिछले घर में बैठक के एक कोने में जया चक्रवर्ती की तसवीर थी। अपने मौजूदा घर में हेमा ने अपनी माँ और गुरु माँ की तसवीरों को अपनी पसंदीदा देवियों लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के साथ मंदिर में रखा है।

चार मंजिला बँगले के सामने लंबा—चौड़ा गार्डन है। झुकती डालियों पर रंग—बिरंगे फूल खिले हैं। धरमजी इस बात को लेकर अड़े हुए थे कि निर्माण के दौरान एक भी पेड़ काटा नहीं जाना चाहिए और यही इस जगह की खूबसूरती है। सुबह में सोकर उठना और चारों ओर की हरियाली से खुद को घिरा हुआ पाना ही सबसे बड़ी सौगात है। सारे कमरों से खूबसूरत नजारा दिखता है...कुदरत से कई तरह के सबक सीखे जा सकते हैं। हमें संबंधों की देखभाल करनी चाहिए। बच्चों को बढ़ते पेड़—पौधों की तरह पालना—पोसना चाहिए। खाद या पानी में थोड़ी सी भी लापरवाही हुई नहीं कि गलतियाँ आपको घूरकर देखती हैं। मैं बच्चों से हमेशा प्यार करती थी और इस कारण शादी करना चाहती थी, क्योंकि मुझे अपने बच्चे चाहिए थे। मेरे जीवन में कई उतार—चढ़ाव आए, लेकिन सबकुछ सह लिया, क्योंकि मेरे पास मेरी दोनों बेटियाँ हैं।

''माँ और बेटी का रिश्ता सबसे अनोखा होता है। यह मेल—जोल, देखभाल की छोटी—छोटी बातें, उनके बड़े होने के दौरान की प्रगाढ़ता और संबंध खास होता है। मेरी माँ से मेरा संबंध घनिष्ठ था, लेकिन बराबरी का नहीं था। अम्मा का मेरे जीवन पर पूर्ण नियंत्रण था। वह मुझे अपनी नजरों के सामने रखती थीं, और तब तक मेरी देखभाल की जब तक कि मैं खुद ऐसा नहीं करने लगी। हालाँकि आज के बच्चों को उनका स्पेस चाहिए और यह अच्छा भी है, क्योंकि उन्हें परिपक्व होना है और घर की कुछ बातों का सच खुद से जानना है। मैंने अपनी बेटियों को उनकी आजादी उनके हर कदम पर निगरानी न रखकर दी है, लेकिन उसके साथ ही मैं हर वक्त उनके लिए मौजूद रहती हूँ, हेमा ने एक दार्शनिक के अंदाज में कहा। वह संबंधों की तुलना हाथ में मौजूद रेत की तरह करती हैं। रेत ढेर में खड़ा होता है, लेकिन जब आप इसे अपनी मुट्ठी में कैद करना चाहते हैं तो उँगलियों के बीच से फिसल जाता है। सारे स्वस्थ संबंधों में आजादी जरूरी है और घनिष्ठता को खोए बिना ही उसे हासिल करने में कुशलता होती है। और धरमजी में यह विलक्षण क्षमता है।

''एक माँ को अपने बच्चों को बढ़ते देख खुशी होती है और उन्हें तरक्की करते देखना संतुष्टि देता है। वही मेरी दुनिया हैं और वे इसे जानती हैं, मुझे अपनी जिंदगी से कोई शिकायत नहीं, क्योंकि मेरे सारे सपने पूरे हो चुके हैं।''

हाल ही में एक रात हेमा यह सोचते हुए रात भर सो नहीं पाईं कि कैसे कृष्ण हमें जीवन का मार्ग दिखाते

हैं...''हमारी पौराणिक कथाओं में उनके बचपन, उनकी किशोरावस्था और बाद के बुढ़ापे की चर्चा है। वह संपूर्ण देवता हैं, यशोदा के सबसे अच्छे बच्चे हैं, राधा के सबसे अच्छे प्रेमी, द्रौपदी के सबसे अच्छे सखा, और आखिर में समर्पित मीरा के लिए सबसे अच्छे आराध्य।'' इसी विचार के आधार पर हेमा ने 'कृष्ण रास' की परिकल्पना की, जो दो दिनों का अनोखा नृत्य उत्सव था, उस मनमोहन मुरली वाले की अद्‌भुत लीला और गतिशीलता के प्रति समर्पित था।

जीवन को लेकर हेमा का जोश और रोमांच तथा उसके प्रति आकर्षण प्रशंसा के योग्य है। 50 की उम्र के बाद वे आज भी उत्पादों के विज्ञापन के लिए तत्पर रहती हैं, आज भी अभिनय के लिए बड़े—बड़े बैनर उनके पीछे भागते हैं। हेमा स्वीकार करती हैं कि उन्हें ग्रीस पेंट की महक अच्छी लगती है और आर्क लाइट के बीच मौजूद रहने में मजा आता है, लेकिन उन्हें दूर—दराज के इलाकों में राजनीतिक प्रचार अभियान तथा दिल्ली में जीवंत संसद् सत्र भी उतना ही आकर्षित करते हैं। ''दिल्ली के गोल मार्केट में जिस पुराने घर में मेरा बचपन बीता, वहाँ से मेरा मौजूदा सांसद आवास महज कुछ ही मील दूर है, लेकिन वहाँ तक पहुँचने में मुझे बरसों लग गए।'' आज उनके जीवन का एक औसत दिन अनगिनत व्यस्त कार्यक्रमों से भरा रहता है, जिनमें डांस रिहर्सल से लेकर सामाजिक मुद्दों पर प्रतिबद्धता शामिल है। वे फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल सोसाइटी की ओर से चलाए जा रहे 'एकल विद्या' तथा दृष्टिहीनों के लिए कार्य करनेवाले संगठन 'विजन 20/20' की ब्रांड एंबेसडर हैं। साफ है कि उनके पास साँस लेने की भी फुरसत नहीं, लेकिन चुनौतियों का हर वक्त पीछा करने का हेमा का जोश एक तरह से मन मोह लेनेवाला है। गंभीर संकट के बीच भी वे बच्चों के समान ही छोटी—छोटी खुशियाँ ढूँढ़ लेती हैं। राजनीति, फिल्म और डांस के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें व्यस्त रखती है। वे स्वयं इसे महसूस करती हैं, ''यह मेरे जीवन का सबसे व्यस्त दौर है, लेकिन मैं इसके हर पल का आनंद उठा रही हूँ।''

सैंतीस वर्ष पहले जब हेमा के गुरु पिता अनंता स्वामी बादामी आँखों वाली एक अल्हड़ किशोरी को चेन्नई से मुंबई लेकर आए थे, तब किसी ने सोचा नहीं था कि एक दिन वह जनता के सपनों पर राज करेगी। इसके बावजूद उनके गुरु पिता इस देसी सुंदरी को सुपरस्टार बनाने का संकल्प ले चुके थे। हेमा की पहली फिल्म की रिलीज से कई हफ्ते पहले ही उन्होंने एक जबरदस्त प्रचार अभियान छेड़ दिया, जिसमें शहर की दीवारों को हेमा मालिनी की फिल्म 'सपनों का सौदागर' के पोस्टरों से पाट दिया गया, जिसके नीचे लिखा था, शहर में आई ड्रीम गर्ल।

1969 में एक स्टार के रूप में उनका जन्म हुआ और साढ़े तीन दशक बाद भी, वह अपने लाखों चाहनेवालों के दिलों पर राज करती हैं।

सत्तावन साल की उम्र में हेमा एकमात्र ऐसी स्टार हैं, जिन्हें लोग आज भी 'ड्रीम गर्ल' कहते हैं।

❑

फैक्ट फाइल

1. फिल्म

क्र. : 1

फिल्म का नाम : सपनों का सौदागर

निर्माता : स्क्रीन जेम्स

निर्देशक : महेश कॉल

सह—कलाकार : राज कपूर

सन् : 1968

क्र. : 2

फिल्म का नाम : जहाँ प्यार मिले

निर्माता : एल.आर. फिल्म्स

निर्देशक : लेख टंडन

सह—कलाकार : शशि कपूर

सन् : 1969

क्र. : 3

फिल्म का नाम : वारिस

निर्माता : वासु फिल्म्स

निर्देशक : रमन्ना

सह—कलाकार : जितेंद्र, महमूद

सन् : 1969

क्र. : 4

फिल्म का नाम : अभिनेत्री

निर्माता : सुबोध मुखर्जी प्रोडक्शन्स

निर्देशक : सुबोध मुखर्जी

सह—कलाकार : शशि कपूर

सन् : 1970

क्र. : 5

फिल्म का नाम : आँसू और मुस्कान

निर्माता : बी. अनंत स्वामी

निर्देशक : पी. माधवन

सह—कलाकार : अजय साहनी

सन् : 1970

क्र. : 6

फिल्म का नाम : जॉनी मेरा नाम

निर्माता : गुलशन राय

निर्देशक : विजय आनंद

सह—कलाकार : देव आनंद

सन् : 1970

क्र. : 7

फिल्म का नाम : शराफत

निर्माता : मदन मोहला

निर्देशक : असित सेन

सह—कलाकार : धर्मेंद

सन् : 1970

क्र. : 8

फिल्म का नाम : तुम हसीं मैं जवाँ

निर्माता : बप्पी सोनी

निर्देशक : बप्पी सोनी

सह—कलाकार : धर्मेंद

सन् : 1970

क्र. : 9

फिल्म का नाम : अंदाज

निर्माता : जी.पी. सिप्पी

निर्देशक : रमेश सिप्पी

सह—कलाकार : शम्मी कपूर, सिमी ग्रेवाल, राजेश खन्ना

सन् : 1971

क्र. : 10

फिल्म का नाम : लाल पत्थर

निर्माता : एफ.सी. मेहरा

निर्देशक : सुशील मजूमदार

सह—कलाकार : विनोद मेहरा, राखी, राज कुमार

सन् : 1971

क्र. : 11

फिल्म का नाम : नया जमाना

निर्माता : प्रमोद चक्रवर्ती

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, अरुणा ईरानी

सन् : 1971

क्र. : 12

फिल्म का नाम : पराया धन

निर्माता : राजेंद्र भाटिया

निर्देशक : राजेंद्र भाटिया

सह—कलाकार : राकेश रोशन, बलराज साहनी

सन् : 1971

क्र. : 13

फिल्म का नाम : तेरे मेरे सपने

निर्माता : विजय आनंद

निर्देशक : विजय आनंद

सह—कलाकार : देव आनंद, मुमताज

सन् : 1971

क्र. : 14

फिल्म का नाम : बाबुल की गलियाँ

निर्माता : एस.डी. नारंग

निर्देशक : एस.डी. नारंग

सह—कलाकार : संजय खान, शत्रुघ्न सिन्हा

सन् : 1972

क्र. : 15

फिल्म का नाम : भाई हो तो ऐसा

निर्माता : ए.के. नाडियाडवाला

निर्देशक : मनमोहन देसाई

सह—कलाकार : जितेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा

सन् : 1972

क्र. : 16

फिल्म का नाम : गोरा और काला

निर्माता : राज कुमार कोहली

निर्देशक : नरेश कुमार

सह—कलाकार : राजेंद्र कुमार, रेखा

सन् : 1972

क्र. : 17

फिल्म का नाम : राजा जानी

निर्माता : मदन मोहला

निर्देशक : मोहन सहगल

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1972

क्र. : 18

फिल्म का नाम : सीता और गीता

निर्माता : जी.पी. सिप्पी

निर्देशक : रमेश सिप्पी

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, संजीव कुमार

सन् : 1972

क्र. : 19

फिल्म का नाम : छुपा रुस्तम

निर्माता : विजय आनंद

निर्देशक : विजय आनंद

सह—कलाकार : देव आनंद, विजय आनंद

सन् : 1973

क्र. : 20

फिल्म का नाम : गहरी चाल

निर्माता : चित्रालय

निर्देशक : श्रीधर

सह—कलाकार : जितेंद्र, अमिताभ बच्चन

सन् : 1973

क्र. : 21

फिल्म का नाम : जोशीला

निर्माता : गुलशन राय

निर्देशक : यश चोपड़ा

सह—कलाकार : देव आनंद, राखी

सन् : 1973

क्र. : 22

फिल्म का नाम : जुगनू

निर्माता : प्रमोद चक्रवर्ती

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1973

क्र. : 23

फिल्म का नाम : शरीफ बदमाश

निर्माता : देव आनंद

निर्देशक : राज खोसला

सह—कलाकार : देव आनंद

सन् : 1973

क्र. : 24

फिल्म का नाम : अमीर गरीब

निर्माता : मोहन कुमार

निर्देशक : मोहन कुमार

सह—कलाकार : देव आनंद

सन् : 1973

क्र. : 25

फिल्म का नाम : दोस्त

निर्माता : प्रेमजी

निर्देशक : दुलाल गुहा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र शत्रुघ्न सिन्हा

सन् : 1974

क्र. : 26

फिल्म का नाम : दुल्हन

निर्माता : बी. आनंदवाली

निर्देशक : सी.वी. राजेंद्रन

सह—कलाकार : जितेंद्र

सन् : 1974

क्र. : 27

फिल्म का नाम : हाथ की सफाई

निर्माता : आई.ए. नाडियाडवाला

निर्देशक : प्रकाश मेहरा

सह—कलाकार : सिमी ग्रेवाल, विनोद खन्ना, रनधीर कपूर

सन् : 1974

क्र. : 28

फिल्म का नाम : कसौटी

निर्माता : अरबिंद सेन

निर्देशक : अरबिंद सेन

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन

सन् : 1974

क्र. : 29

फिल्म का नाम : पत्थर और पायल

निर्माता : एन.पी.सिंह

निर्देशक : हर्मेश मल्होत्रा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, विनोद खन्ना

सन् : 1974

क्र. : 30

फिल्म का नाम : प्रेम नगर

निर्माता : डी. रामा नायडू

निर्देशक : के.एस. प्रकाश राव

सह—कलाकार : राजेश खन्ना

सन् : 1974

क्र. : 31

फिल्म का नाम : धर्मात्मा

निर्माता : फिरोज़ खान

निर्देशक : फिरोज़ खान

सह—कलाकार : फिरोज़ खान, रेखा

सन् : 1974

क्र. : 32

फिल्म का नाम : दो ठग

निर्माता : एस.डी. नारंग

निर्देशक : एस.डी. नारंग

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा

सन् : 1975

क्र. : 33

फिल्म का नाम : खुशबू

निर्माता : प्रसन कपूर

निर्देशक : गुलजार

सह—कलाकार : जितेंद्र, शर्मिला टैगोर

सन् : 1998

क्र. : 34

फिल्म का नाम : प्रतिज्ञा

निर्माता : विक्रमजीत प्रोडक्शन्स

निर्देशक : दुलाल गुहा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1975

क्र. : 35

फिल्म का नाम : संन्यासी

निर्माता : सोहनलाल कँवर

निर्देशक : सोहनलाल कँवर

सह—कलाकार : मनोज कुमार

सन् : 1975

क्र. : 36

फिल्म का नाम : शोले

निर्माता : जी.पी. सिप्पी

निर्देशक : रमेश सिप्पी

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार,जया बच्चन, अमजद खान

सन् : 1975

क्र. : 37

फिल्म का नाम : सुनहरा संसार

निर्माता : वंदे सोभनाद्री, एएसआर अंजानयेलु

निर्देशक : सुब्बा राव

सह—कलाकार : राजेंद्र कुमार, माला सिन्हा

सन् : 1975

क्र. : 38

फिल्म का नाम : आप बीती

निर्माता : मोहन कुमार

निर्देशक : मोहन कुमार

सह—कलाकार : शशि कपूर, अशोक कुमार, निरूपा रॉय

सन् : 1976

क्र. : 39

फिल्म का नाम : चरस

निर्माता : रामानंद सागर

निर्देशक : रामानंद सागर

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1976

क्र. : 40

फिल्म का नाम : दस नंबरी

निर्माता : मदन मोहला

निर्देशक : मदन मोहला

सह—कलाकार : मनोज कुमार

सन् : 1976

क्र. : 41

फिल्म का नाम : जानेमन

निर्माता : देवा आनंद

निर्देशक : चेतन आनंद

सह—कलाकार : देवा आनंद

सन् : 1976

क्र. : 42

फिल्म का नाम : माँ

निर्माता : एम.एम.ए. चिनप्पा देवार

निर्देशक : एम.ए. थिरुमुगम

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1976

क्र. : 43

फिल्म का नाम : महबूबा

निर्माता : मुसीर रियाज़

निर्देशक : शक्ति सामंत

सह—कलाकार : राजेश खन्ना

सन् : 1976

क्र. : 44

फिल्म का नाम : नाच उठा संसार

निर्माता : मोहमूद सरोश

निर्देशक : याकूब हुसैन

सह—कलाकार : सिमी ग्रेवाल, शशि कपूर

सन् : 1976

क्र. : 45

फिल्म का नाम : शराफत छोड़ दी मैंने

निर्माता : दामोदर मेनन

निर्देशक : जगदेव भाम्ब्री

सह—कलाकार : फिरोज खान, नीतू सिंह

सन् : 1976

क्र. : 46

फिल्म का नाम : चाचा भतीजा

निर्माता : बलदेव पुष्करण

निर्देशक : मनमोहन देसाई

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, रनधीर कपूर, योगिता बाली

सन् : 1977

क्र. : 47

फिल्म का नाम : धूप छाँव

निर्माता : एस.एन.जैन

निर्देशक : प्रह्लाद शर्मा

सह—कलाकार : संजीव कुमार, योगिता बाली

सन् : 1977

क्र. : 48

फिल्म का नाम : ड्रीम गर्ल

निर्माता : आर.के. चक्रवर्ती और जे.के. बहल

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1977

क्र. : 49

फिल्म का नाम : किनारा

निर्माता : प्राणलाल मेहता, गुलजार

निर्देशक : गुलजार

सह—कलाकार : जितेंद्र और धर्मेंद

सन् : 1977

क्र. : 50

फिल्म का नाम : पलकों की छाँव में

निर्माता : नरिमन आई. बरिया

निर्देशक : मेराज

सह—कलाकार : राजेश खन्ना

सन् : 1977

क्र. : 51

फिल्म का नाम : टिंकू

निर्माता : परवेज़

निर्देशक : नवीन पिक्स

सह—कलाकार : टिंकू, राजेश खन्ना

सन् : 1977

क्र. : 52

फिल्म का नाम : आजाद

निर्माता : प्रमोद चक्रवर्ती

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1978

क्र. : 53

फिल्म का नाम : अपना खून

निर्माता : एस.के. कपूर

निर्देशक : बी. सुभाष

सह—कलाकार : शशि कपूर

सन् : 1977

क्र. : 54

फिल्म का नाम : दिल्लगी

निर्माता : बिक्रम सिंह देओल

निर्देशक : बासु चैटर्जी

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, मिठु मुखर्जी

सन् : 1977

क्र. : 55

फिल्म का नाम : त्रिशूल

निर्माता : गुलशन राय

निर्देशक : यश चोपड़ा

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार, शशि कपूर, राखी

सन् : 1978

क्र. : 56

फिल्म का नाम : दिल का हीरा

निर्माता : मनियन, विद्‌वान, वी. लक्ष्मण

निर्देशक : दुलाल गुहा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1979

क्र. : 57

फिल्म का नाम : हम तेरे आशिक हैं

निर्माता : प्रेम सागर

निर्देशक : प्रेम सागर

सह—कलाकार : जितेंद्र

सन् : 1979

क्र. : 58

फिल्म का नाम : मीरा

निर्माता : प्रेमजी

निर्देशक : गुलजार

सह—कलाकार : विनोद खन्ना, शम्मी कपूर, विद्या सिन्हा

सन् : 1979

क्र. : 59

फिल्म का नाम : रतनदीप

निर्माता : आर. कन्नन जगन्नाथ

निर्देशक : बासु चैटर्जी

सह—कलाकार : गिरीश कर्नाड

सन् : 1979

क्र. : 60

फिल्म का नाम : आस पास

निर्माता : जगदीश कुमार

निर्देशक : जे. ओम प्रकाश

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1980

क्र. : 61

फिल्म का नाम : अलीबाबा और 40 चोर

निर्माता : एफ.सी. मेहरा

निर्देशक : उमेश मेहरा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, ज़ीनत अमान

सन् : 1980

क्र. : 62

फिल्म का नाम : बंदिश

निर्माता : डी.रामा. नायडू

निर्देशक : के. बापियाह

सह—कलाकार : राजेश खन्ना

सन् : 1980

क्र. : 63

फिल्म का नाम : दो और दो पाँच

निर्माता : सी. धनदायूथपति

निर्देशक : राकेश कुमार

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, प्रवीण बॉबी

सन् : 1980

क्र. : 64

फिल्म का नाम : द बर्निंग ट्रेन

निर्माता : बी.आर. फिल्म्स

निर्देशक : रवि चोपड़ा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, जितेंद्र, विनोद खन्ना, विनोद मेहरा, नीतू सिंह, परवीन बॉबी

सन् : 1980

क्र. : 65

फिल्म का नाम : दर्द

निर्माता : श्याम सुंदर शिवदसानी

निर्देशक : अम्ब्रिश सहगल

सह—कलाकार : राजेश खन्ना, पूनम ढिल्लों

सन् : 1981

क्र. : 66

फिल्म का नाम : ज्योति

निर्माता : प्रमोद चक्रवर्ती

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : जितेंद्र, अशोक कुमार

सन् : 1981

क्र. : 67

फिल्म का नाम : क्रांति

निर्माता : मनोज कुमार

निर्देशक : मनोज कुमार

सह—कलाकार : मनोज कुमार दिलीप कुमार, प्रवीण बॉबी, शशि कपूर, शत्रुघ्न सिन्हा

सन् : 1981

क्र. : 68

फिल्म का नाम : क्रोधी

निर्माता : रंजीत वर्क

निर्देशक : सुभाष घई

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, ज़ीनत अमान, शशि कपूर

सन् : 1981

क्र. : 69

फिल्म का नाम : कुदरत

निर्माता : बी.एस. खन्ना

निर्देशक : चेतन आनंद

सह—कलाकार : विनोद खन्ना, राजेश खन्ना, राज कुमार, प्रिया राजवंश

सन् : 1981

क्र. : 70

फिल्म का नाम : मान गए उस्ताद

निर्माता : एस. के. कपूर

निर्देशक : शिबू मित्रा

सह—कलाकार : शशि कपूर

सन् : 1981

क्र. : 71

फिल्म का नाम : मेरी आवाज सुनो

निर्माता : जी.ए. शेषगिरी राव

निर्देशक : एस.वी. राजेंद्र सिंह

सह—कलाकार : जितेंद्र

सन् : 1981

क्र. : 72

फिल्म का नाम : नसीब

निर्माता : मनमोहन देसाई

निर्देशक : मनमोहन देसाई

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन, शत्रुघ्न सिन्हा, ऋ षि कपूर, रीना रॉय, किम

सन् : 1981

क्र. : 73

फिल्म का नाम : सत्ते पे सत्ता

निर्माता : रोमू एन. सिप्पी

निर्देशक : राज सिप्पी

सह—कलाकार : अमितभ बच्चन

सन् : 1981

क्र. : 74

फिल्म का नाम : बगावत

निर्माता : रामानंद सागर

निर्देशक : रामानंद सागर

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, रीना रॉय

सन् : 1982

क्र. : 75

फिल्म का नाम : देश प्रेमी

निर्माता : सुभाष देसाई

निर्देशक : मनमोहन देसाई

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन, उत्तम कुमार

सन् : 1982

क्र. : 76

फिल्म का नाम : जस्टिस चौधरी

निर्माता : जी.ए. शेषगिरी

निर्देशक : के. राघवेंद्र राव

सह—कलाकार : जितेंद्र, श्रीदेवी, मौसमी चैटर्जी

सन् : 1982

क्र. : 77

फिल्म का नाम : फर्ज और कानून

निर्माता : रोजा पिक्चर्स

निर्देशक : के. राघवेंद्र राव

सह—कलाकार : जितेंद्र, रति अग्निहोत्री

सन् : 1982

क्र. : 78

फिल्म का नाम : मेहरबानी

निर्माता : अजीत सिंह देओल

निर्देशक : ए. नारंग

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, सारिका

सन् : 1982

क्र. : 79

फिल्म का नाम : राजपूत

निर्माता : मुशीर रियाज़

निर्देशक : विजय आनंद

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना

सन् : 1982

क्र. : 80

फिल्म का नाम : सम्राट

निर्माता : मदन मोहला

निर्देशक : मोहन सहगल

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, जितेंद्र

सन् : 1982

क्र. : 81

फिल्म का नाम : दो दिशाएँ

निर्माता : आर. रेणुका

निर्देशक : दुलाल गुहा

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1982

क्र. : 82

फिल्म का नाम : अंधा कानून

निर्माता : ए. पूर्णचंद्र राव

निर्देशक : टी. रामा राव

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन, रजनीकांत, रीना रॉय

सन् : 1983

क्र. : 83

फिल्म का नाम : बाबू

निर्माता : वी.आर. परमेश्वरम

निर्देशक : ए.वी. त्रिलोक चंदर

सह—कलाकार : राजेश खन्ना, रति अग्निहोत्री, माला सिन्हा

सन् : 1983

क्र. : 84

फिल्म का नाम : एक नया इतिहास

निर्माता : बी.एस. नारायण

निर्देशक : आशा देवी

सह—कलाकार : विनोद मेहरा

सन् : 1983

क्र. : 85

फिल्म का नाम : नास्तिक

निर्माता : विनोद दोशी

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन

सन् : 1983

क्र. : 86

फिल्म का नाम : रजिया सुलतान

निर्माता : ए.के. मिश्रा

निर्देशक : कमाल अमरोही

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, परवीन बॉबी

सन् : 1983

क्र. : 87

फिल्म का नाम : त़कदीर

निर्माता : बृज

निर्देशक : बृज

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, ज़ीनत अमान

सन् : 1983

क्र. : 88

फिल्म का नाम : दुर्गा

निर्माता : एस.के. कपूर

निर्देशक : शिबू मित्रा

सह—कलाकार : राज बब्बर

सन् : 1984

क्र. : 89

फिल्म का नाम : एक नई पहेली

निर्माता : सुब्बा राव

निर्देशक : के. बालचंदर

सह—कलाकार : कमल हसन, राज कुमार, पद्मिनी कोल्हापुरी

सन् : 1984

क्र. : 90

फिल्म का नाम : हम दोनों

निर्माता : टोनी ग्लाड

निर्देशक : बी.एस. ग्लाड

सह—कलाकार : राजेश खन्ना, रीना रॉय

सन् : 1984

क्र. : 91

फिल्म का नाम : फाँसी के बाद

निर्माता : हर्मेश मल्होत्रा

निर्देशक : हर्मेश मल्होत्रा

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा

सन् : 1984

क्र. : 92

फिल्म का नाम : कैदी

निर्माता : जी. हनुमंथ राव

निर्देशक : एस.एस. रविचंद्र

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, जितेंद्र

सन् : 1984

क्र. : 93

फिल्म का नाम : राज तिलक

निर्माता : अनिल सूरी

निर्देशक : राजकुमार कोहली

सह—कलाकार : सुनील दत्त, राज कुमार, धर्मेंद्र, रीना रॉय, योगिता बाली, सारिका

सन् : 1984

क्र. : 94

फिल्म का नाम : राम तेरे देश

निर्माता : टीटो

निर्देशक : स्वरूप कुमार

सह—कलाकार : शबाना आज़मी

सन् : 1984

क्र. : 95

फिल्म का नाम : सहारा

निर्माता : आर.जे. चक्रवर्ती

निर्देशक : एस.वी. राजेंद्र सिंह

सह—कलाकार : राज कुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि, टीना मुनीम

सन् : 1984

क्र. : 96

फिल्म का नाम : मृगतृष्णा

निर्माता : नहेटा फिल्म्स

निर्देशक : राजेंद्र शुक्ला

सह—कलाकार : योगिता बाली

सन् : 1984

क्र. : 97

फिल्म का नाम : आँधी तूफान

निर्माता : पहलाज निहलानी

निर्देशक : बी. सुभाष

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि

सन् : 1985

क्र. : 98

फिल्म का नाम : रामकली

निर्माता : अशोक

निर्देशक : श्याम रलहान

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, सुरेश ओबेरॉय

सन् : 1985

क्र. : 99

फिल्म का नाम : युद्ध

निर्माता : गुलशन राय

निर्देशक : रवि राय

सह—कलाकार : अनिल कपूर, टीना मुनीम, शत्रुघ्न सिन्हा, जैकी श्रॉफ

सन् : 1985

क्र. : 100

फिल्म का नाम : अंजाम

निर्माता : रमेश तिवारी

निर्देशक : हरिहरन

सह—कलाकार : शशि कपूर

सन् : 1986

क्र. : 101

फिल्म का नाम : एक चादर मैली सी

निर्माता : जी.एम. सिंह, निंद्राजोग

निर्देशक : सुखवंत ढड्डा

सह—कलाकार : ऋ षि कपूर, पूनम ढिल्लों

सन् : 1986

क्र. : 102

फिल्म का नाम : अपने अपने

निर्माता : रमेश बहल

निर्देशक : रमेश बहल

सह—कलाकार : जितेंद्र, रेखा

सन् : 1987

क्र. : 103

फिल्म का नाम : हिरासत

निर्माता : सुनील शर्मा

निर्देशक : सुरेंद्र मोहन

सह—कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती

सन् : 1987

क्र. : 104

फिल्म का नाम : जान हथेली पे

निर्माता : सुदेश कुमार

निर्देशक : आर. झलानी

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1987

क्र. : 105

फिल्म का नाम : कुदरत का कानून

निर्माता : के.सी. बोकाड़िया

निर्देशक : सुरेश बोकाड़िया

सह—कलाकार : जैकी श्रॉफ, राधिका

सन् : 1987

क्र. : 106

फिल्म का नाम : सीतापुर की गीता

निर्माता : एस.के. कपूर

निर्देशक : शिबू मित्रा

सह—कलाकार : शोमा आनंद

सन् : 1987

क्र. : 107

फिल्म का नाम : मोहब्बत के दुश्मन

निर्माता : प्रकाश मेहरा

निर्देशक : प्रकाश मेहरा

सह—कलाकार : राज कुमार, संजय दत्त, फरहा

सन् : 1988

क्र. : 108

फिल्म का नाम : मुलज़िम

निर्माता : जी. हनुमंथ राव

निर्देशक : के.एस.आर. दास

सह—कलाकार : जितेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, किमि काटकर, अमृता सिंह

सन् : 1988

क्र. : 109

फिल्म का नाम : रिहाई

निर्माता : एनडीएफसी

निर्देशक : अरुणा राजे

सह—कलाकार : विनोद खन्ना, नसीरुद्दीन शाह

सन् : 1988

क्र. : 110

फिल्म का नाम : तोहफा मोहब्बत का

निर्माता : मुकेश कुमार

निर्देशक : राम एस. गोविंद

सह—कलाकार : गोविंद

सन् : 1988

क्र. : 111

फिल्म का नाम : विजय

निर्माता : यश राज फिल्म्स

निर्देशक : यश चोपड़ा

सह—कलाकार : राजेश खन्ना, ऋ षि कपूर, अनिल कपूर, मीनाक्षी शेषाद्रि, सोनम

सन् : 1988

क्र. : 112

फिल्म का नाम : देश के दुश्मन

निर्माता : मनमोहन कपूर

निर्देशक : स्वरूप कपूर

सह—कलाकार : राज कुमार

सन् : 1989

क्र. : 113

फिल्म का नाम : देशवासी

निर्माता : राजीव गोस्वामी

निर्देशक : राजीव गोस्वामी

सह—कलाकार : पूनम ढिल्लों, मनोज कुमार

सन् : 1989

क्र. : 114

फिल्म का नाम : पाप का अंत

निर्माता : गौतम बोकाड़िया

निर्देशक : विजय रेड्डी

सह—कलाकार : राजेश खन्ना, गोविंदा, माधुरी दीक्षित

सन् : 1989

क्र. : 115

फिल्म का नाम : सच्चे का बोल बाला

निर्माता : देव आनंद/नवकेतन फिल्म्स

निर्देशक : देव आनंद

सह—कलाकार : देव आनंद, जैकी श्रॉफ, मीनाक्षी शेषाद्रि

सन् : 1989

क्र. : 116

फिल्म का नाम : संतोष

निर्माता : मनोज कुमार

निर्देशक : बलबीर कुमार

सह—कलाकार : मनोज कुमार

सन् : 1989

क्र. : 117

फिल्म का नाम : जमाई राजा

निर्माता : टी. त्रिविकर्मा राव

निर्देशक : ए.के. रेड्डी

सह—कलाकार : अनिल कपूर, माधुरी दीक्षित

सन् : 1990

क्र. : 118

फिल्म का नाम : लेकिन

निर्माता : हृदयनाथ मंगेशकर

निर्देशक : गुलज़ार

सह—कलाकार : विनोद खन्ना, डिंपल कापड़िया

सन् : 1990

क्र. : 119

फिल्म का नाम : षड्यंत्र

निर्माता : शकील खान

निर्देशक : राजन जोहरी

सह—कलाकार : राज बब्बर, पंकज कपूर

सन् : 1990

क्र. : 120

फिल्म का नाम : दिल आशना है

निर्माता : हेमा मालिनी

निर्देशक : हेमा मालिनी

सह—कलाकार : शाहरुख़ खान, दिव्या भारती, डिंपल कापड़िया, सोनू वालिया, अमृता सिंह

सन् : 1990

क्र. : 121

फिल्म का नाम : है मेरी जान

निर्माता : रूपेश कुमार

निर्देशक : रूपेश कुमार

सह—कलाकार : कुमार गौरव, सुनील दत्त

सन् : 1991

क्र. : 122

फिल्म का नाम : इंदिरा

निर्माता : बलराम मोहला

निर्देशक : नृपेन मोहला

सह—कलाकार : सुरेश ओबेरॉय

सन् : 1991

क्र. : 123

फिल्म का नाम : परम वीर चक्र

निर्माता : अशोक कॉल

निर्देशक : अशोक कॉल

सह—कलाकार : नवीन निश्चल

सन् : 1991

क्र. : 124

फिल्म का नाम : माहिर

निर्माता : हरेश बरोत

निर्देशक : लॉरेंस डीसूजा

सह—कलाकार : गाविंदा

सन् : 1995

क्र. : 125

फिल्म का नाम : स्वामी विवेकानंद

निर्माता : सुबी आर. रेड्डी

निर्देशक : जी.वी. अय्यर

सह—कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती

सन् : 1996

क्र. : 126

फिल्म का नाम : हिमालय पुत्र

निर्माता : विनोद खन्ना

निर्देशक : पंकज पराशर

सह—कलाकार : विनोद खन्ना, अक्षय खन्ना

सन् : 1996

क्र. : 127

फिल्म का नाम : हे! राम

निर्माता : राजकमल फिल्म्स इंटरनेशनल

निर्देशक : कमल हसन

सह—कलाकार : कमल हसन, रानी मुखर्जी, गिरीश कर्नाड, नसीरुद्दीन शाह, शाहरुख़ खान

सन् : 1997

क्र. : 128

फिल्म का नाम : सेंसर

निर्माता : नवकेतन फिल्म्स इंटरनेशनल

निर्देशक : देव आनंद

सह—कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, रनधीर कपूर

सन् : 2000

क्र. : 129

फिल्म का नाम : बागबान

निर्माता : बी.आर. फिल्म्स

निर्देशक : रवि चोपड़ा

सह—कलाकार : अमिताभ बच्चन

सन् : 2001

क्र. : 130

फिल्म का नाम :

यश राज फिल्म्स

निर्देशक : यश चोपड़ा

सह—कलाकार : शाहरुख़ खान, प्रीति ज़िटा, अमिताभ बच्चन

सन् : 2003

2. अतिथि भूमिका

क्र. : 1

फिल्म का नाम : गरम मसाला

निर्माता : सी. मोहन

निर्देशक : असपी ईरानी

सह—कलाकार : महमूद, अरुणा ईरानी

सन् : 1972

क्र. : 2

फिल्म का नाम : कुँवारा बाप

निर्माता : अमरलाल पी. छाबरिया

निर्देशक : महमूद

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, विनोद मेहरा, महमूद

सन् : 1974

क्र. : 3

फिल्म का नाम : कहते हैं मुझको राजा

निर्माता : विश्वजीत

निर्देशक : विश्वजीत

सह—कलाकार : विश्वजीत, रेखा

सन् : 1975

क्र. : 4

फिल्म का नाम : गिन्नी और जॉनी

निर्माता : अमरलाल पी. छाबरिया

निर्देशक : महमूद

सह—कलाकार : महमूद

सन् : 1976

क्र. : 5

फिल्म का नाम : बारूद

निर्माता : जुगनू इंटरप्राइजेज

निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

सह—कलाकार : ऋ षि कपूर, शोमा आनंद

सन् : 1976

क्र. : 6

फिल्म का नाम : स्वामी

निर्माता : जया चक्रवर्ती

निर्देशक : बासु चैटर्जी

सह—कलाकार : धर्मेंद्र

सन् : 1977

क्र. : 7

फिल्म का नाम : चला मुरारी हीरो बनने

निर्माता : एडवेंट मूवीज़

निर्देशक : असरानी

सह—कलाकार : असरानी

सन् : 1977

क्र. : 8

फिल्म का नाम : शिरडी के साईंबाबा

निर्माता : सरला चैरिटेबल ट्रस्ट

निर्देशक : मनोज कुमार

सह—कलाकार : मनोज कुमार

सन् : 1977

क्र. : 9

फिल्म का नाम : सिनेमा सिनेमा

निर्माता : शाहब अहमद

निर्देशक : कृष्णा शाह

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, ज़ीनत अमान

सन् : 1978

क्र. : 10

फिल्म का नाम : जनता हवलदार

निर्माता : मनोहर लाल पी. छाबरिया, मनोहर पी. जयसिंह

निर्देशक : महमूद

सह—कलाकार : राजेश खन्ना, योगिता बाली

सन् : 1979

क्र. : 11

फिल्म का नाम : सुराग

निर्माता : जगमोहन मुंध्रा

निर्देशक : जगमोहन मुंध्रा

सह—कलाकार : संजीव कुमार, शबाना आज़मी

सन् : 1982

क्र. : 12

फिल्म का नाम : जय दक्षिणेश्वर काली माँ

निर्माता : अनुराधा पौडवाल

निर्देशक : शांतिलाल सोनी

सह—कलाकार : मृणाल कुलकर्णी

सन् : 1996

3. अप्रकाशित फिल्में

क्र. : 1

फिल्म का नाम : गलियों का बादशाह (no theatrical release, only on VHS)

निर्माता : शेर जंग सिंह

निर्देशक : के. योगी

सह—कलाकार : राज कुमार

क्र. : 2

फिल्म का नाम : देवदास

निर्माता : कैलाश चोपड़ा

निर्देशक : गुलज़ार

सह—कलाकार : धर्मेंद्र, दीना पाठक

क्र. : 3

फिल्म का नाम : चाणक्य चंद्रगुप्त

निर्माता : बी.आर. फिल्म्स

निर्देशक : बी.आर. चोपड़ा

सह—कलाकार : दिलीप कुमार

क्र. : 4

फिल्म का नाम : अमन के फरिश्ते

निर्माता : कादर काश्मीरी

निर्देशक : देव आनंद

सह—कलाकार : देव आनंद

क्र. : 5

फिल्म का नाम : मार्ग

निर्माता : एच.एम. क्रिएशन्स

निर्देशक : महेश भट्ट

सह—कलाकार : विनोद खन्ना

4. हेमा मालिनी द्वारा गाए हुए गानें

क्र. : 1

गाना : देवदास मितवा गाँव...

फिल्म का नाम : हाथ की सफाई

सह—गायक : किशोर कुमार

सन् : 1974

क्र. : 2

गाना : मुझे मत दुआ दे कि मैं बद्दुआ हूँ...

फिल्म का नाम : ड्रीम गर्ल

सह—गायक : किशोर कुमार

सन् : 1977

क्र. : 3

गाना : मेरी गली मर्दों का

फिल्म का नाम : इंदिरा

सह—गायक : —

सन् : 1991

5. धारावाहिक

क्र. : 1

धारावाहिक का नाम : तेरह पन्ने

निर्माता : किरन शांताराम

निर्देशक : विकास देसाई

सन् : 1982

क्र. : 2

धारावाहिक का नाम : नूपुर

निर्माता : एच.एम. वीडियो प्रोक्शंस

निर्देशक : हेमा मालिनी

सन् : 1985

क्र. : 3

धारावाहिक का नाम : अदालत

निर्माता : धीरज कुमार

निर्देशक : धीरज कुमार

सन् : 1991

क्र. : 4

धारावाहिक का नाम : माहिनी

निर्माता : ज़ी टेलिफिल्म्स

निर्देशक : हेमा मालिनी

सन् : 1994

क्र. : 5

धारावाहिक का नाम : नाम गुम जाएगा / अहंकार

निर्माता : एनडीएफसी

निर्देशक : स्टूडियो चट्टोपाध्याय

सन् : 1994

क्र. : 6

धारावाहिक का नाम : रंगोली

निर्माता : एनडीएफसी

निर्देशक : रमेश तलवार

सन् : 1995

क्र. : 7

धारावाहिक का नाम : युग

निर्माता : सती शूरी

निर्देशक : सुनील अग्निहोत्री

सन् : 1996

क्र. : 8

धारावाहिक का नाम : वूमेन ऑफ इंडिया

निर्माता : एच.एम. वीडियो प्रोक्शंस

निर्देशक : लेख टंडन

सन् : 1996

क्र. : 9

धारावाहिक का नाम : आप की सहेली

निर्माता : एच.एम. वीडियो प्रोक्शंस

निर्देशक : दिनेश चौहान

सन् : 1997

क्र. : 10

धारावाहिक का नाम : जय माता दी

निर्माता : सीनेविस्टा

निर्देशक : पुनीत इस्सर

सन् : 1999

क्र. : 11

धारावाहिक का नाम : कामिनी दामिनी

निर्माता : बी.आर. फिल्म्स

निर्देशक : रवि चोपड़ा

सन् : 2002

6. नृत्य नाटक

मीरा

कोरियोग्राफर : भूषण लखंदरी

लेखक : माया गोविंद

संगीत : शैली दत्ता

गायक : कविता कृष्णमूर्ति, अशित देसाई

स्टेज/लाईट : परेश दारू/जयंत सहस्रबुद्धि

रामायण

कोरियोग्राफर : भूषण लखंदरी

लेखक : तुलसीदास द्वारा रचित '*रामायण*' से लिया गया

संगीत : रवींद्र जैन

स्टेज/लाईट : गौतम जोशी/जयंत सहस्रबुद्धि

ध्वनि : मार्कंड मेहता

दुर्गा

कोरियोग्राफर : भूषण लखंदरी

संगीत : रवींद्र जैन

गायक : रवींद्र जैन, येसुदास, सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, हेमलता, सुशील कुमार, अपर्णा मायेकर

ध्वनि : मार्कंड मेहता

सावित्री

कोरियोग्राफ़र : भूषण लखंदरी

गायक : रवींद्र जैन, सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, हेमलता

स्टेज/लाईट : तपस सेन

ध्वनि : मार्कंड मेहता

महालक्ष्मी

कोरियोग्राफ़र : भूषण लखंदरी

गायक : रवींद्र जैन, सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, हेमलता

स्टेज/लाईट : तपस सेन

ध्वनि : मार्कंड मेहता

राधा कृष्णा

कोरियोग्राफ़र : भूषण लखंदरी

गायक : सुरेश वाडकर, रूप कुमार राठौड़, साधना सरगम, कविता कृष्णमूर्ति, महालक्ष्मी अय्यर

स्टेज/लाईट : सुधीर आर्ट्स

गीत गोविंद

कोरियोग्राफ़र : दीपक मज़ूमदार

गायक : सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, महालक्ष्मी अय्यर, हेमा देसाई, सोनाली वाजपेई, देवकी पंडित, अशित देसाई

स्टेज/लाईट : सुधीर आर्ट्स, शिरिश मोहन

द्रौपदी

कोरियोग्राफ़र : भूषण लखंदरी

गायक : सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, रूप कुमार राठौड़, साधना सरगम

स्टेज/लाईट : उमंग कुमार, डेनियल कार्की

ध्वनि : मार्कंड मेहता

यशोदा कृष्णा

कोरियोग्राफ़र : भूषण लखंदरी

संगीत : रवींद्र जैन

गायक : रवींद्र जैन, सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, हेमलता

ध्वनि : मार्कंड मेहता